ज्ञान किरण

संकलन

साध्वी राजीमती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्ञान किरण

आणं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
मेरं सरणं गच्छामि
आयरियं सरणं गच्छामि
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु

संकलन

शासन-गौरव साध्वी राजीमती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज.) 341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226080/224671
e-mail: jainvishvabharati@yahoo.com

Books are available Online at http:/books.jvbharati.org

© जैन विश्व भारती

चौंतीसवां संस्करण : अगस्त, 2017 ई. (प्रतियां 1000)

मूल्य : दो सौ बीस रुपये मात्र

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स
विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

Gyan Kiran
Collection by Shasan Gaurav Sadhvi Rajimati ₹ 220

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी बात

जैनधर्म आत्म-मुक्ति का मार्ग है। भगवान महावीर के शब्दों में मुक्ति के दो उपाय है–ज्ञान और चारित्र। इन दोनों की आराधना करके जीव दुःखों से मुक्त हो सकता है। प्रथम उपाय है–ज्ञान।

- ज्ञान जीवन का ध्येय बताता है।
- ज्ञान अपना हित बताता है।
- ज्ञान अपनी कमजोरियों को दिखाता है।
- ज्ञान अपने घर का रास्ता बताता है।
- ज्ञान जीवन की समस्याओं का समाधान देता है।

इस पुस्तक में ज्ञान के अनेक प्रकारों का संकलन है–

- दैनिक उपासना के प्रयोग
- प्रेक्षाध्यान
- मंत्र-साधना
- पर्व-उपासना
- श्रावक साधना
- जैन-धर्म परिचय
- तात्त्विक जानकारी
- तेरापंथ परिचय
- अणुव्रत साधना
- जीवन विज्ञान

पाठकों में यह लोकप्रिय बनी है, इसका प्रमाण है इसका अनेक बार प्रकाशित होना। यह सब परम-पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद का प्रतिफल है।

यह संशोधित संस्करण अब जैन विश्व भारती द्वारा पुनः प्रकाशित हो रहा है। आशा है पाठक इसका सही उपयोग करके आत्म-दर्शन की यात्रा में गतिशील बनेंगे।

साध्वी राजीमती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

देव श्री अरिहंत है, गुरु सच्चे निर्ग्रन्थ।
आत्म-शुद्धि ही धर्म है, यह है तेरापन्थ॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

	प्रथम प्रकरण : मंगल साधना	**17-42**
1.	नमस्कार महामंत्र	17
2.	मंगल-स्तोत्र	17
3.	मंगल भावना	19
4.	मंगल संकल्प-सूत्र	19
5.	मेरा मन ऐसा हो	20
6.	मंगल-पाठ	20
7.	वन्दन-पाठ	21
8.	वन्दना के लिए–श्रावक के पांच अभिगम	22
9.	वन्दना के कुछ दोष	22
10.	चौबीस तीर्थंकर	23
11.	ग्यारह गणधर	23
12.	सोलह सतियों के नाम	23
13.	ग्यारह आचार्यों के नाम	24
14.	आचार्य वन्दना विधि	24
15.	बनें अर्हम्	25
16.	प्रातः कालीन वन्दना	25

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

17.	सायंकालीन वन्दना	25
18.	सामायिक साधना	26
19.	सामायिक पाठ	26
20.	सामायिक आलोचना पाठ	27
21.	सामायिक का अभिनव प्रयोग	27
22.	संवर पाठ	29
23.	सामायिक के 32 दोष	29
24.	मन के दस दोष	29
25.	वचन के दस दोष	30
26.	काया के बारह दोष	30
27.	पौषध परिभाषा	31
28.	पौषध-पाठ (प्राकृत)	31
29.	पौषध-पाठ (हिन्दी)	32
30.	पौषध-आलोचना पाठ (गद्य)	32
31.	पौषध के दोष	33
32.	अनशन विधि	34
33.	सागारी अनशन	34
34.	यावज्जीवन का अनशन	34
35.	अनशन पाठ	34
36.	अनशन काल में ध्यान देने योग्य बातें	34
37.	पंचपद वन्दना (प्राचीन)	35
38.	पंचपद वन्दना (नवीन)	37
39.	परमेष्ठी वन्दना	38
40.	अर्हत् वन्दना	39

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

द्वितीय प्रकरण : जप साधना **43-81**

1. नमस्कार महामंत्र साधना 43
2. नमस्कार महामंत्र जप कब और कैसे? 46
3. जप-साधना विधि 47
4. मंत्र-साधना-काल की शुद्धियां 47
5. जप-मंत्र 48
6. उपयोगी जप मंत्र 48
7. ग्रह शान्ति के लिए तीर्थंकरों का जाप 53
8. मंत्र सिद्ध करने का मुहूर्त 54
9. ग्रह शान्ति के लिए नमस्कार महामंत्र 54
10. जप-ध्वनियां 54
11. वृहद् उपसर्गहर स्तोत्र 55
12. श्री पैंसठिया छंद 57
13. श्री पैंसठिया यंत्र 57
14. महावीराष्टकम् स्तोत्र 58
15. महावीर-अष्टकम् 61
16. भिक्षु-अष्टकम् 66
17. जय-अष्टकम् 67
18. कालु-अष्टकम् 70
19. तुलसी-अष्टकम् 73
20. महाप्रज्ञ-अष्टकम् 76
21. महाश्रमण-अष्टकम् 79

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तृतीय प्रकरण : श्रावक साधना	**82-107**
1. सच्चे श्रावक की पहचान	82
2. चार प्रकार के श्रावक	82
3. तुंगिया नगरी के श्रावकों के कुछ लक्षण	82
4. भगवान महावीर के दस प्रमुख श्रावक	83
5. स्वास्थ्य रक्षा के नियम	83
6. भोजन शुद्धि	84
7. यदि आप धार्मिक हैं तो जवाब दीजिए	84
8. श्रावक की दैनिक जीवन चर्या	84
9. श्रावक कैसा हो?	86
10. श्रावक के तीन मनोरथ	87
11. श्रावक के अभिनव तीन मनोरथ	87
12. श्रावक के चार विश्राम	87
13. श्रावक धर्म स्थान में इन कार्यों से परहेज करें	88
14. श्रावक व्याख्यान के समय कैसे अनुशासित रहें	88
15. उच्च गति का बन्ध दस निमित्तों से	89
16. दस प्रत्याख्यान विधि	89
17. श्रावक निष्ठा-पत्र	90
18. श्रावक प्रायश्चित्त-विधि	91
19. सन्तों से सामान्य भाषा व्यवहार कैसे करें?	92
20. सम्यक्त्व के लक्षण	93
21. सम्यक्त्वी की पहचान	94
22. गुरु धारणा	94
23. बारह भावना	95
24. सोलह भावनाएं	96

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

25. शील की नवबाड़ 98
26. ब्रह्मचारी के लिए नित्य प्रयोग की बातें 99
27. चौदह नियम साधना 99
28. अणुव्रत साधना 100
29. अणुव्रत के ग्यारह नियम 101
30. वर्गीय-अणुव्रत 102
31. शिक्षक अणुव्रत 102
32. व्यापारी अणुव्रत 102
33. अधिकारी/कर्मचारी अणुव्रत 103
34. श्रमिक अणुव्रत 103
35. श्रमण निर्ग्रन्थों को देने लायक प्रासुक एषणीय 14 प्रकार दान 103
36. साधु को दान देते समय बारह दोषों से बचें 104
37. गोचरी सम्बन्धी आवश्यक जानकारी 104
38. किस गति से कितने मोक्ष? 107

चतुर्थ प्रकरण : जैन धर्म परिचय 108-137

1. जैन धर्म परिचय 108
2. बीस विहरमाण 108
3. बारह चक्रवर्ती 109
4. नौ बलदेव 109
5. नौ वासुदेव 109
6. नौ वासुदेवों के प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव 109
7. अन्य धर्मों से जैन धर्म की भिन्नता 110
8. जैन धर्म के विकास के हेतु 110
9. जैन धर्म के ह्रास के हेतु 111

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10. तीर्थंकर जीवन झांकी 112
11. तीर्थंकर का सामान्य वर्णन 116
12. भगवान महावीर परिचय 117
13. भगवान महावीर के 27 पूर्व भव 120
14. तीर्थंकर नामगोत्र बन्ध के बीस कारण 120
15. तीर्थंकरों के नामकरण का इतिहास 121
16. आगामी चौबीस तीर्थंकर किनके जीव हैं? 124
17. सम्राट् चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न 125
18. सम्राट् भरत के सोलह स्वप्न 127
19. पांचवें आरे की तीस पहचान 128
20. जैन आगमों (सूत्रों) के नाम 130
21. पर्युषण महापर्व संवत्सरी 131
22. पर्युषण-साधना 131
23. क्षमा (खमत-खामणा) 132
24. साधु की पहचान 132
25. मुनि चतुर्मास कहां करे? 133
26. ऐसे जैन विद्यार्थी चाहिए 134
27. जैन जीवन शैली के नौ तत्त्व 134
28. विशेष तिथियां 137

पांचवां प्रकरण : तेरापंथ परिचय 138-150

1. तेरापंथ के आचार्यों की जीवन-झांकी 138
2. आचार्यश्री तुलसी के चातुर्मास एवं मर्यादा-महोत्सव स्थल 142
3. आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चातुर्मास एवं मर्यादा-महोत्सव स्थल 144
4. आचार्यश्री महाश्रमणजी के चातुर्मास एवं मर्यादा-महोत्सव स्थल 144

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. तेरापंथ साध्वीप्रमुखा : एक परिचय 145
6. तेरापंथ साधु-संघ की मौलिक मर्यादाएं 147
7. तेरापंथ की मौलिक मान्यताएं 148
8. आचार्य भिक्षु की धर्म-क्रांति के आधार 149
9. आचार्य भिक्षु की शिक्षाएं और शासनाएं 149
10. तेरापंथ के ऐतिहासिक स्थल 150

छठा प्रकरण : प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा 151-183

1. ध्यान क्या है? 151
2. चित्त चंचल क्यों होता है? 151
3. कमजोरी मिटाने के उपाय 151
4. क्रोध क्यों आता है? 152
5. क्रोध के दुष्परिणाम 152
6. क्रोध शान्त करने के उपाय 153
7. विवेक पड़िमा (प्रतिमा) 153
8. प्रेक्षा संगान 154
9. प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति 154
10. कायोत्सर्ग 166
11. आनन्द भावना 169
12. अनुप्रेक्षा 173
13. अनुप्रेक्षा : प्रायोगिक रूप 173

सातवां प्रकरण : स्वाध्याय साधना 184-282

1. पच्चीस बोल 184
2. श्रावक प्रतिक्रमण 198
3. चौबीसी 230

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. श्री भक्तामर स्तोत्रम् 257
5. विघ्न-हरण 270
6. मुणिन्द मोरा 274
7. भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी 277
8. पुण्य-पाप (आराधना की 8वीं ढाल) 278
9. खमत-खामणा (आराधना की 3 ढाल) 281

आठवां प्रकरण : गीत साधना 283-360

1. प्रहसम परम पुरुष नै समरूं 283
2. महावीर स्तुति 284
3. सिरियारी रो संत 285
4. लाग रह्यो चौमास 288
5. संवत्सरी दिवस 289
6. क्षमा दिवस 290
7. विजय गीत 291
8. प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर 292
9. अणुव्रत गीत (1) 293
10. अणुव्रत गीत (2) 294
11. प्रेक्षाध्यान गीत 295
12. संघ गीत 296
13. चैत्य पुरुष 297
14. स्वरूप चिन्तन 298
15. विमल-विवेक 299
16. अन्तिम बाजी 303
17. प्रायश्चित्त गीत 304

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

18. सोलह सती स्तवन 305
19. परमेष्ठी स्तुति 307
20. महामंत्र महिमा 308
21. तीर्थंकर स्तुति 309
22. वीतराग! भव पार करो 310
23. मंगल वीतराग भावना 311
24. तपस्या री प्रेरणा 312
25. चन्दना री पुकार 313
26. गौतम स्तुति 315
27. आओ-आओ भिक्षु स्वामी! 316
28. भिक्षु रो आसरो 317
29. जय जय श्री तुलसी गुरुवर 318
30. चातुर्मासिक साधना 319
31. पर्युषण मनावां 320
32. खाद्य-संयम दिवस 321
33. खाने में संयम 322
34. सामायिक दिवस 323
35. स्वाध्याय दिवस 324
36. ध्यान दिवस 325
37. मौन दिवस 326
38. अणुव्रत-दिवस 327
39. तपो–गीत 328
40. तपस्या रो रंग 329
41. तपस्या निराली रे 330

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

42.	तपस्या रो हेलो	331
43.	चन्दना का पारणा	332
44.	अक्षय तृतीया	333
45.	निर्वाण ज्योति	334
46.	साधना गीत-1	336
47.	साधना गीत-2	337
48.	बाल शिविर गीत	338
49.	मन नै साफ राखीजै	339
50.	श्रावक-संकल्प	340
51.	शान्ति का आधार	342
52.	स्वागत गीत	343
53.	शिविर-संगान	344
54.	शिविर साधना	345
55.	जिन शासन तेज बढ़ाया रे	346
56.	तीर्थंकर स्तुति	347
57.	जय वीर प्रभु	348
58.	नैय्या पार	349
59.	ओ सांवरिया स्वाम	350
60.	ओ मेरे गुरुदेव!	351
61.	महाप्रज्ञ स्तुति	352
62.	अमृत महोत्सव अभिवन्दना	353
63.	महाश्रमण अभिवन्दना	354
64.	श्रावक-साधना	355
65.	करमां री कहानी	356

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

66. चित्त समाधि गीत 357
67. अपणै घर में 358
68. ध्यान साधना 359
69. अनशन गीत 360

परिशिष्ट **361-368**
1. उद्‌घोष (नारे) 361
2. जैनत्व के प्रतीक 362
3. अनुपूर्वी 363
4. सूर्योदय सूर्यास्त की समय-सारणी 367
5. बारह व्रती श्रावक की साधना 368

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ॐ

देव मेरे दिव्य अर्हन्, श्रेष्ठ सारे लोक में।
साधना-धन साधु मेरे, सुगुरु पथ-आलोक में॥

धर्म वह जो साधना-पथ, केवली उपदिष्ट है।
आत्म-निष्ठामय अमल, सम्यक्त्व मुझको इष्ट है॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

प्रथम प्रकरण : मंगल साधना

नमस्कार महामंत्र

णमो अरहंताणं	अरहन्तों को नमस्कार।
णमो सिद्धाणं	सिद्धों को नमस्कार।
णमो आयरियाणं	आचार्यों को नमस्कार।
णमो उवज्झायाणं	उपाध्यायों को नमस्कार।
णमो लोए सव्वसाहूणं।	लोक के सब सन्तों को नमस्कार।

नमन हमारा अरहन्तों को, सिद्धों को आचार्यों को।
आगम पुरुष उपाध्यायों को और लोक के सब सन्तों को॥

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

नमस्कार पंचक यह पावन, करता सब पापों का नाश।
सभी मंगलों में प्रधान है, प्रकटे भीतर दिव्य प्रकाश॥

मंगल-स्तोत्र

1. मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
   मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्॥
2. मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः,
   मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसी गुरुः।
   महाप्रज्ञोऽस्तु मंगलं, महाश्रमणोऽस्तु मंगलम्,
   तेरापन्थोऽस्तु मंगलम्॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याणकारकम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्॥

4. सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

5. अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा, रत्न-त्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्॥

6. ब्राह्मी चन्दनबालिका, भगवती राजीमती, द्रौपदी।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवा॥
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि।
पद्मावत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्॥

7. विघनहरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु नो नाम।
गुण ओळख समरण कियां, सरै अचिंत्या काम॥

8. भि. भा. रा. ज. म. मा. डा. का. तु.।
महाप्रज्ञ महाश्रमण पुनातु॥

9. अरहंते सिद्धे साहू, धम्मं सरणं सुपवज्जामि।
विघनहरण मंगलमय तेरा, स्मरण सदा अन्तर्यामी॥

10. अमृत–कोदर–रामसुख, पीथल–मोती–हीर।
भीम–दीप–सुख–श्यामजी, भिक्खू–सिख–बड़वीर॥

11. दर्शन ज्ञान चरित्रमय, तीन रतन अनमोल।
इष्ट देव गुरु धर्ममय, तुलसी तत्त्व अतोल॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगल भावना

1.	**श्री संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं आभा-सम्पन्न बनूं
2.	**ह्री संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं लज्जा-सम्पन्न बनूं
3.	**धी संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं बुद्धि-सम्पन्न बनूं
4.	**धृति संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं धैर्य-सम्पन्न बनूं
5.	**शक्ति संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं शक्ति-सम्पन्न बनूं
6.	**शांति संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं शांति-सम्पन्न बनूं
7.	**नन्दी संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं आनन्द-सम्पन्न बनूं
8.	**तेजः संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं तेज-सम्पन्न बनूं
9.	**शुक्लः संपन्नोऽहं स्याम्**	मैं पवित्रता-सम्पन्न बनूं

(बहिनें संपन्नोऽहं स्याम् के स्थान पर संपन्नाऽहं का उच्चारण करें।)

मंगल संकल्प-सूत्र

विकृत स्वभावों और दूषित आदतों के परिवर्तन में 'संकल्प' प्रबलतम माध्यम है। संकल्प रात को सोते समय शरीर को शिथिल करके श्वास की गति के साथ किये जाते हैं।

1. मुझे शान्त जीवन जीना है।
2. मुझे पवित्र जीवन जीना है।
3. मुझे ऊंचा जीवन जीना है।
4. मुझे सादा जीवन जीना है।
5. मुझे सरस जीवन जीना है।
6. मुझे सरल जीवन जीना है।
7. मुझे त्यागमय जीवन जीना है।
8. मुझे प्रेममय जीवन जीना है।

मैं निर्विकार हूं।
मैं ज्योतिर्मय हूं।
मैं आनन्दमय हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मेरा मन ऐसा हो

1. **शान्तं स्यात् मे मनः**	मेरा मन शान्त हो।
2. **पवित्रं स्यात् मे मनः**	मेरा मन पवित्र हो।
3. **प्रियं स्यात् मे मनः**	मेरा मन प्रेममय हो।
4. **अभयं स्यात् मे मनः**	मेरा मन निर्भय हो।
5. **शक्तं स्यात् मे मनः**	मेरा मन शक्तिशाली हो।
6. **शुभं स्यात् मे मनः**	मेरा मन कल्याणमय हो।
7. **व्यसनमुक्तं स्यात् मे मनः**	मेरा मन व्यसनमुक्त हो।

मंगल-पाठ

चत्तारि मंगलं–	मंगल चार हैं :–
अरहंता मंगलं,	अरिहंत मंगल हैं,
सिद्धा मंगलं,	सिद्ध मंगल हैं,
साहू मंगलं,	साधु मंगल हैं,
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।	केवलि-भाषित धर्म मंगल है।
चत्तारि लोगुत्तमा–	चार लोक में उत्तम हैं :–
अरहंता लोगुत्तमा,	अरिहंत लोक में उत्तम हैं,
सिद्धा लोगुत्तमा,	सिद्ध लोक में उत्तम हैं,
साहू लोगुत्तमा,	साधु लोक में उत्तम हैं,
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।	केवलि-भाषित धर्म लोक में उत्तम है।
चत्तारि सरणं पवज्जामि–	मैं चारों की शरण में जाता हूं :–
अरहंते सरणं पवज्जामि	मैं अरिहंतों की शरण में जाता हूं।
सिद्धे सरणं पवज्जामि,	मैं सिद्धों की शरण में जाता हूं,
साहू सरणं पवज्जामि,	मैं साधुओं की शरण में जाता हूं,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।	मैं केवलि-भाषित धर्म की शरण में जाता हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दन-पाठ

तिक्खुत्तो	तीन बार
आयाहिणं	मैं दाईं से बायीं ओर
पयाहिणं करेमि	प्रदक्षिणा करता हूं।
वंदामि	स्तुति करता हूं।
नमंसामि	नमस्कार करता हूं।
सक्कारेमि	सत्कार करता हूं।
सम्माणेमि	सम्मान करता हूं।
कल्लाणं	आप कल्याणकारी हैं।
मंगलं	आप मंगलकारी हैं।
देवयं	आप धर्मदेव हैं।
चेइयं	आप ज्ञानवान हैं।
पज्जुवासामि	सेवा करता हूं (उपासना करता हूं)।
मत्थएण वंदामि।	मस्तक झुकाकर वन्दना करता हूं।

विधि : दोनों हाथ जोड़, खड़े होकर दाईं से बाईं तरफ तीन बार प्रदक्षिणा देते हुए 'करेमि' तक पाठ मन में बोलें, फिर शेष पाठ वन्दन मुद्रा में बैठकर बोलें। मत्थएण वंदामि बोलने के साथ मस्तक झुकाते हुए पंचांग वन्दना करें। अन्त में खड़े होकर सुखसाता पूछते समय–'आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तनुरत्न में सुखसाता है।'

(शुद्ध भाव से वन्दना करने से नीच गोत्र का क्षय तथा उच्च गोत्र का बन्ध होता है)

ऋषभ-अजित-संभव अभिनन्दन, सुमति-पद्मप्रभु-त्राता।
श्री सुपार्श्व-चन्द्रप्रभु सुविधिः शीतल-जिन सुखदाता।
श्रेयांस-वासुपूज्य-ज्ञाता, विमल-अनन्त-धर्म-शांति जिन॥
कुन्थु अर हितकारी, मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि, नेमी।
पार्श्व-वीर-जयकारी, जाऊं इनकी बलिहारी॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दना के लिए–श्रावक के पांच अभिगम

1. सचित्त वस्तु (पुष्प ताम्बूल आदि) पास में न रखना।
2. अचित्त द्रव्य–वन्दना योग्य आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था।
3. वन्दना करते समय खुले मुंह न बोला जाए, ऐसा उपाय करना।
4. मुनिराज के दृष्टिगोचर होते ही हाथ जोड़ना।
5. मुनियों के त्याग के प्रति मन को एकाग्र करना।

वन्दना के कुछ दोष

1. **अनादृत वन्दना**	:	अनादर पूर्वक वन्दना करना।
2. **स्तब्ध वन्दना**	:	अभिमान पूर्वक वन्दना करना।
3. **प्रदुष्ट वन्दना**	:	जिसे वन्दना करते हैं, उसकी त्रुटि को ध्यान में रखते हुए घृणापूर्वक वन्दना करना।
4. **मत्स्य वन्दना**	:	एक को वन्दना करके दूसरे को घूमते हुए वन्दना करना।
5. **गौरवनिमित्त वन्दना**	:	लोग कहेंगे कि यह सामाचारी में कुशल है, इस प्रलोभन से वन्दना करना।
6. **चौर्य वन्दना**	:	लोगों की दृष्टि चुराकर वन्दना करना या मेरा लाघव न हो, अतः चोर की तरह छुपकर वन्दना करना।
7. **प्रत्यनीक वन्दना**	:	आहारादि काल में वन्दना करना।
8. **मैत्री वन्दना**	:	पूर्व सम्बन्ध तथा स्नेहवश वन्दना करना।
9. **दृष्टादृष्ट वन्दना**	:	देखने पर वन्दना करना, दूरी या अन्धकार में नहीं करना।
10. **मूक वन्दना**	:	बिना बोले वन्दना करना।
11. **ढड्ढ़र वन्दना**	:	जोर से बोलते हुए वन्दना करना।
12. **वेदिकाबद्ध वन्दना**	:	हाथों को जांघ या घुटनों के बीच रखकर वन्दना करना।
13. **करमोचन वन्दना**	:	बंधन मानते हुए वन्दना करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौबीस तीर्थंकर

1. भगवान ऋषभ प्रभु
2. भगवान अजित प्रभु
3. भगवान संभव प्रभु
4. भगवान अभिनन्दन प्रभु
5. भगवान सुमति प्रभु
6. भगवान पद्म प्रभु
7. भगवान सुपार्श्व प्रभु
8. भगवान चन्द्र प्रभु
9. भगवान सुविधि प्रभु
10. भगवान शीतल प्रभु
11. भगवान श्रेयांस प्रभु
12. भगवान वासुपूज्य प्रभु
13. भगवान विमल प्रभु
14. भगवान अनन्त प्रभु
15. भगवान धर्म प्रभु
16. भगवान शान्ति प्रभु
17. भगवान कुन्थु प्रभु
18. भगवान अर प्रभु
19. भगवान मल्लि प्रभु
20. भगवान मुनिसुव्रत प्रभु
21. भगवान नमि प्रभु
22. भगवान अरिष्टनेमि प्रभु
23. भगवान पार्श्व प्रभु
24. भगवान महावीर प्रभु

ग्यारह गणधर

1. श्री इन्द्रभूति
2. श्री अग्निभूति
3. श्री वायुभूति
4. श्री व्यक्त
5. श्री सुधर्मा
6. श्री मंडित
7. श्री मौर्यपुत्र
8. श्री अकम्पित
9. श्री अचलभ्राता
10. श्री मेतार्य
11. श्री प्रभास

सोलह सतियों के नाम

1. महासती ब्राह्मी
2. महासती सुन्दरी
3. महासती कौशल्या
4. महासती सीता
5. महासती राजीमती
6. महासती कुन्ती
7. महासती द्रौपदी
8. महासती चन्दनबाला
9. महासती मृगावती
10. महासती पुष्पचूला
11. महासती प्रभावती
12. महासती सुभद्रा
13. महासती दमयन्ती
14. महासती सुलसा
15. महासती शिवा
16. महासती पद्मावती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ग्यारह आचार्यों के नाम

1. आचार्यश्री भीखणजी
2. आचार्यश्री भारीमालजी
3. आचार्यश्री रायचन्दजी
4. आचार्यश्री जीतमलजी
5. आचार्यश्री मघराजजी
6. आचार्यश्री माणकलालजी
7. आचार्यश्री डालचन्दजी
8. आचार्यश्री कालूरामजी
9. आचार्यश्री तुलसीरामजी (गणाधिपति)
10. आचार्यश्री महाप्रज्ञजी
11. आचार्यश्री महाश्रमणजी (वर्तमान)

आचार्य वन्दना विधि

परम आचारकुशल, धर्मोपदेशक, धर्मधुरंधर, बहुश्रुत, मेधावी, सत्यनिष्ठ, श्रद्धा-धृति-शक्ति-शान्ति सम्पन्न, अष्ट गणी-सम्पदा से सुशोभित, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि एवं छत्तीस गुणों के धारक, वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि धर्माचार्यों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं....(तिक्खुत्तो का पाठ बोलें)।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बनें अर्हम्

ॐ अर्हम्, सुगुरु शरणं, विघ्न-हरणं, मिटे मरणं,
सहज हो मन, जगे चेतन, करें दर्शन स्वयं के हम।
बने अर्हम्, बने अर्हम्, बने अर्हम्, बने अर्हम्॥

प्रातः कालीन वन्दना

जीवन-धन तुम जीवन-दाता, कलाकार जीवन-निर्माता।
श्रमण संस्कृति के उद्‌गाता, शरणागत के हो तुम त्राता॥

तरुण तपस्वी, दीर्घ मनस्वी, तपःपूत विभुवर वर्चस्वी।
ओजस्वी प्रभु परम यशस्वी, दिनमणि से अतिशय तेजस्वी॥

विघ्न विनायक मंगल दायक, शान्ति विधायक जन उन्नायक।
युग-युग जीओ शासन नायक, विश्व मैत्री के तुम संगायक॥

(तर्ज : चौपाई)

सायंकालीन वन्दना

युग प्रणेता, युग प्रचेता, युग पुरुष लो वन्दना।
विनयनत बद्धांजलि हम, कर रहे अभिवन्दना॥

धन्य है सौभाग्य तुम से, कुशल अनुशास्ता मिले।
दिव्यजीवन पा तुम्हीं से, भव्य शतदल हैं खिले॥

तपो युग-युग धर्म शासक, जय विजय पग-पग वरो।
तुम्हीं नैया के खेवैया, पार भव जल से करो॥

जानूं जीव अजीव मैं, पुण्य-पाप की बात।
आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष विख्यात॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सामायिक साधना

- **उपकरण** – मुखवस्त्रिका, माला, आसन, पूंजनी और चद्दर।
- **स्थान** – एकान्त या उपासना कक्ष।
- **सावधानी** – खाली पेट अथवा अल्पाहार।
- **साधना** – जप, ध्यान, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग, योगासन।

सामायिक पाठ

करेमि भंते ! सामाइयं	हे भगवान ! मैं सामायिक करता हूं।
सावज्जं जोगं	सावद्य योग (पापकारी प्रवृत्ति) का
पच्चक्खामि	प्रत्याख्यान (त्याग) करता हूं।
जाव-नियमं	सामायिक का जितना काल है
(मुहुत्तं एगं)	(एक मुहूर्त) तक (48 मिनट)
पज्जुवासामि	मैं उपासना करता हूं।
दुविहं	दो करण (करना, कराना)
तिविहेणं	तीन योग से (मन, वचन, काया)
न करेमि	न करूंगा
न कारवेमि	न कराऊंगा
मणसा	मन से
वयसा	वचन से
कायसा	काया (शरीर) से
तस्स	उन पूर्वकृत पापों से
भंते!	हे भगवन !
पडिक्कमामि	निवृत्त होता हूं।
निंदामि	निन्दा करता हूं (आत्म-साक्षी से)
गरिहामि	गुरु-साक्षी से आलोचना करता हूं
अप्पाणं वोसिरामि	आत्मा को पाप से दूर करता हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सामायिक आलोचना पाठ

नौंवें सामायिक व्रत में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं/करती हूं। 1. मन की सावद्य प्रवृत्ति की हो। 2. वचन की सावद्य प्रवृत्ति की हो। 3. शरीर की सावद्य प्रवृत्ति की हो। 4. सामायिक के नियमों का पूरा पालन न किया हो। 5. अवधि से पहले सामायिक को पूरा किया हो। **तस्स मिच्छामि दुक्कडं**–इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हो, निष्फल हो।

सामायिक का अभिनव प्रयोग

वेश-भूषा–सादगी प्रधान हो। महिलाओं में भी सफेद परिधान हो तो अच्छा रहे।

उपकरण–आसन, मुखवस्त्रिका, सफेद चद्दर।

आसन–सबका एक रहे। पद्मासन, सुखासन आदि में इस प्रकार पंक्तिबद्ध बैठा जाए जिससे एक-दूसरे का स्पर्श न हो। (पंक्तिबद्धता के लिए आगे-पीछे व बगल में भी देखना चाहिए।)

विधि–सर्वप्रथम त्रिपदी वंदना करें।

- सामूहिक णमोक्कार मंत्र का उच्चारण करते हुए सामायिक–(सामायिक पाठ) संकल्प करें।
- सामायिक स्वीकार करते ही एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करें। (एक श्वासोच्छ्वास में लोगस्स के एक पद का उच्चारण हो, इस रूप में सम्पूर्ण लोगस्स का कायोत्सर्ग किया जाए) कायोत्सर्ग के बाद सामायिक को चार भागों में विभक्त किया जाए।

---

1. विधि–वन्दना की मुद्रा (घुटनों के बल पर बैठें, दोनों हाथ जुड़े रहें) त्रिपदी वन्दना कराने वाला ॐ ह्रीं श्रीं–इन तीनों शब्दों का उच्चारण करता है। ॐ का उच्चारण हो तब सबके सब एक साथ हाथ जोड़कर घुटनों के बल वन्दना की मुद्रा में स्थिर हो जाएं और 'वंदे' शब्द का उच्चारण करें। ह्रीं का उच्चारण होते ही सबके सब एक साथ 'अर्हम्' कहते हुए जमीन तक मस्तक को झुकाएं और तब तक झुकाए रखें जब तक श्रीं का उच्चारण न हो जाए। श्रीं का उच्चारण होते ही मस्तक को ऊपर उठाते हुए पुनः वन्दना की मुद्रा में लौट आएं। इसी तरह दूसरी बार 'वंदे गुरुवरम्' एवं तीसरी बार 'वंदे सच्चं' का उच्चारण किया जाए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

1. जपयोग का प्रयोग–समय दस मिनट। ध्यान की मुद्रा में 'अ. सि. आ. उ. सा.' मंत्र का एक स्वर से उच्चारण किया जाए। अ. सि. आ. उ. सा.–अरहंत, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय, साहू–पंच परमेष्ठी के प्रथम-प्रथम अक्षरों से निर्मित पंचाक्षरी मंत्र है। पंचाक्षरी मंत्र के उच्चारण में प्रत्येक अक्षर के लिए निर्धारित स्थान ध्यान में रहे। परमेष्ठी के पांच स्थान हैं–

अरहन्त का स्थान–सिर का मध्यभाग

सिद्ध का स्थान–ललाट का मध्यभाग

आचार्य का स्थान–कण्ठ का मध्यभाग

उपाध्याय का स्थान–हृदय

साधु का स्थान–नाभि

(जपयोग करते समय प्रत्येक अक्षर के उच्चारण के साथ मन उस-उस स्थान पर केन्द्रित रहे)

2. ध्यान-योग का प्रयोग–समय दस मिनट। रीढ़ की हड्डी एवं गर्दन को सीधा रखते हुए बिना किसी अकड़न के श्वास को लम्बा, गहरा और मन्द, आसानी से जितना लिया जा सके, लें एवं उसी रूप में छोड़ें। श्वास लेते समय मन को नासाग्र पर टिकाएं। आते-जाते प्रत्येक श्वास को देखें। साथ-साथ यह भी अनुभव करें कि श्वास लेते समय पेट फूलता है और छोड़ते समय सिकुड़ता है।

3. स्वाध्याय योग का प्रयोग–समय पन्द्रह मिनट।

स्वाध्याय योग में वाचन ऐसा हो, जिसमें सबका मन लगे। उदाहरण के रूप में चौबीसी के भजनों का संगान, जैन तत्त्व विद्या का वाचन, णमोक्कार मंत्र का अर्थ आदि किए जा सकते हैं।

4. त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग–समय आसानी से जितना हो सके, तीन से पांच मिनट। इसमें मन से सोचे नहीं, वचन से बोले नहीं और शरीर से हिलें-डुलें नहीं।

- परमेष्ठी वन्दना का सामूहिक एक लय में संगान करें।
- पुनः त्रिपदी वन्दना करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- सामायिक व्रत की आलोचना करें।
- मंगल पाठ के उच्चारण के साथ सामायिक सम्पन्न की जाए।[1]

संवर पाठ

पांच आश्रव–हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह सेवन का दो करण तीन योग से (निर्धारित समय....) तक त्याग करता हूं।

सामायिक के 32 दोष

सामायिक में आसन, मौन, ध्यान, स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्य विशेष किये जाते हैं। यथासंभव किसी एक ही आसन में बैठकर सामायिक का अभ्यास करना चाहिए। सामायिक में 32 बातें वर्जित हैं। उनका वर्णन यहां प्रस्तुत है–

मन के दस दोष

1. **अविवेक–**सामायिक करते समय किसी प्रकार का विवेक न रखना।
2. **यश-कीर्ति–**यश प्राप्त होगा, आदर बढ़ेगा, लोग धर्मात्मा कहेंगे, मेरी प्रशंसा करेंगे–इस भावना से सामायिक करना।
3. **लाभार्थ–**धन आदि के लाभ की इच्छा से सामायिक करना।
4. **गर्व–**मैं बहुत सामायिक करने वाला हूं, मेरे बराबर कौन सामायिक कर सकता है या मैं बड़ा कुलीन हूं, आदि गर्व करना।
5. **भय–**ऊंचे घराने का व्यक्ति होकर भी यदि सामायिक न करूं तो लोग क्या कहेंगे, अथवा किसी अपराध के कारण मिलने वाले राजदण्ड से एवं देनदारी आदि से बचने के लिए सामायिक ले बैठना।
6. **निदान–**सामायिक का कोई भौतिक फल चाहना, जैसे अमुक पदार्थ या संसारी सुख के लिए सामायिक का फल बेच डालना।

---

1. देखें सामायिक पारने का पाठ।
2. सामायिक का अभिनव प्रयोग उसकी विधि के ज्ञाता और अनुभवी के सान्निध्य में करना चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. **संशय**–सामायिक करते-करते इतने दिन हो गये, फिर भी कुछ नहीं मिला इत्यादि सामायिक के फल के सम्बन्ध में संशय करना।
8. **रोष**–सामायिक में क्रोध, मान, माया, लोभ करना। लड़-झगड़ कर या रूठकर सामायिक करना।
9. **अविनय**–सामायिक के प्रति आदर भाव न रखना।
10. **अबहुमान**–बिना श्रद्धा अनादरपूर्वक या दबाव से सामायिक करना।

वचन के दस दोष

1. **कुवचन**–सामायिक में कुत्सित, गन्दे वचन बोलना।
2. **सहसाकार**–बिना बिचारे सहसा हानिकर वचन बोलना।
3. **स्वच्छन्द**–काम-वृद्धि करने वाले गन्दे गीत गाना, गन्दी बातें करना।
4. **संक्षेप**–सामायिक के पाठ को संक्षेप में बोलना।
5. **कलह**–कलह पैदा करने वाले वचन बोलना।
6. **विकथा**–बिना किसी अच्छे उद्देश्य के मनोरंजन की दृष्टि से स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा, देशकथा आदि करना।
7. **हास्य**–सामायिक में हंसी-मजाक करना।
8. **अशुद्ध**–सामायिक का पाठ जल्दी-जल्दी एवं अशुद्ध बोलना।
9. **निरपेक्ष**–सामायिक में सिद्धान्त की उपेक्षा करके वचन बोलना अथवा बिना सावधानी के वचन बोलना।
10. **मुन्मन**–सामायिक के पाठ आदि का स्पष्ट उच्चारण न करना।

काया के बारह दोष

1. **कुआसन**–सामायिक में पैर पर पैर चढ़ाकर अभिमान से बैठना।
2. **चलासन**–स्थिर आसन से न बैठकर बार-बार आसन बदलना।
3. **चलदृष्टि**–दृष्टि स्थिर न रखकर, बार-बार इधर-उधर देखना।
4. **सावद्य क्रिया**–शरीर से स्वयं सावद्य कार्य (पाप युक्त क्रिया)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करना या दूसरों को करने के लिए संकेत करना। घर की रखवाली करना।

5. **आलम्बन**—विशेष कारण के बिना दीवार आदि का सहारा लेना।
6. **आकुंचन प्रसारण**—बिना किसी विशेष प्रयोजन के हाथों पैरों को सिकोड़ना और फैलाना।
7. **आलस्य**—सामायिक में बैठे हुए आलस्य करना, अंगड़ाई लेना।
8. **मोड़न**—हाथ-पैर की अंगुलियां चटकाना, कटका निकालना।
9. **मल**—शरीर का मैल उतारना।
10. **विमासन**—शोकग्रस्त की तरह बैठना या बिना पूंजे शरीर खुजलाना या रात्रि में इधर-उधर आना जाना।
11. **निद्रा**—ऊंघना एवं नींद लेना।
12. **वैयावृत्त्य**—निष्कारण आराम के लिए दूसरों से सेवा लेना। स्वाध्याय करते हुए इधर उधर घूमना या हिलना डुलना अथवा शीत आदि के कारण कांपना।

पौषध परिभाषा

धर्म को पुष्ट करने वाले व्रत-विशेष का नाम पौषध है। एक दिन एक रात के लिए चारों प्रकार के (अशन, पान, खादिम, स्वादिम) आहार का त्याग करना अथवा पानी के सिवाय तीन आहार का त्याग करना उपवास है। उपवास करके पौषध के नियम का पालन करना पौषधोपवास-व्रत कहलाता है। पौषध करने के समय नीचे लिखा पाठ बोलना चाहिए—

पौषध-पाठ (प्राकृत)

एक्कारसमं पोसहोववासव्वयं, असण-पाण-खाइम-साइम-पच्चक्खाणं, अबंभ-पच्चक्खाणं, उम्मुक्कमणि-सुवण्णाइ पच्चक्खाणं, माला वण्णगविलेवणाइ-पच्चक्खाणं, सत्थमूसलाइ-सावज्जजोग-पच्चक्खाणं, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पौषध-पाठ (हिन्दी)

ग्यारहवां पौषध-व्रत।

1. अशन-पान-खादिम-स्वादिम का प्रत्याख्यान।
2. अब्रह्मचर्य का प्रत्याख्यान।
3. मणि, सुवर्ण आदि का प्रत्याख्यान।
4. माला, रंग विलेपन का प्रत्याख्यान।
5. शस्त्र, मूसल आदि का, सावद्य व्यापार का प्रत्याख्यान।

दिन-रात पर्यन्त इस पौषध व्रत का मैं पालन करूंगा।

दो करण तीन योग से सावद्य व्यापार न करूंगा, न कराऊंगा, मन से, वचन से और काया से।

नोट : *पानी पीकर पौषध व्रत लेते समय 'दसवां देशावकाशिक' व्रत बोलें। शेष विधि पूर्ववत् है।*

पौषध-आलोचना पाठ (गद्य)

ग्यारहवें पौषध-व्रत में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूं/करती हूं।

1. शय्या संथारे का (सोने-बैठने के स्थान और बिस्तर विधिवत्) का प्रतिलेखन नहीं किया हो।
2. शय्या, संथारे का विधिवत् प्रमार्जन नहीं किया हो।
3. उच्चार, प्रस्रवण भूमि (मल, मूत्र, खंखार परिष्ठापन करने के स्थान) का विधिवत् प्रतिलेखन नहीं किया हो।
4. उच्चार, प्रस्रवण भूमि का विधिवत् प्रमार्जन नहीं किया हो।
5. पौषध-व्रत के नियमों का विधिवत् पालन नहीं किया हो।

तस्स मिच्छामि दुक्कडं–इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हो, निष्फल हों।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पौषध के दोष

1. पौषध में अव्रती (गृहस्थ) को सत्कार, सम्मान देना।
2. पौषध में शरीर तथा वस्त्रादि उपकरणों को संवारना।
3. पौषध में अपने तथा दूसरे के शरीर का मैल उतारना।
4. पौषध में अधिक निद्रा लेना।
5. पौषध में बिना प्रतिलेखन किए हाथ-पैर फैलाना तथा खाज-खुजली करना।
6. पौषध में राग-द्वेषात्मक बातें करना।
7. पौषध में दूसरों की आलोचना करना।
8. पौषध में व्यापार सम्बन्धी बातें करना।
9. पौषध में विकार दृष्टि से अपने तथा औरों के शरीर को देखना।
10. पौषध में खुले मुंह बोलना।
11. पौषध में हास्य-मजाक तथा शोक-संताप करना।
12. पौषध के लेने तथा पारणे में असावधानी बरतना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनशन विधि

अनशन की पूर्व भूमिका को संलेखना कहते हैं। संलेखना से आत्मा को शुद्ध करने के पश्चात् शारीरिक क्षमता व मनोबल देखकर अनशन किया जाता है। अनशन दो प्रकार का होता है–

1. सागारी (थोड़े काल के लिए)

2. यावज्जीवन (पूर्ण जीवन के लिए)

सागारी अनशन

जब कोई अचानक संकट काल आ जाए या बीमारी आदि की भयंकरता हो, उस समय सागारी अनशन किया जाता है। रात को सोते समय भी प्रातः काल उठने तक सागारी अनशन किया जाता है। इसके लिए निम्नोक्त विधि का उपयोग कर सकते हैं–

आहार, शरीर, उपधि, पचखूं पाप अठार।
मरण पाऊं तो वोसिरे, जीऊं तो आगार॥

यावज्जीवन का अनशन

देह शक्ति क्षीण होते देखकर या आयुष्य निकट आया जानकर साधु, साध्वी या श्रावक, श्राविका की साक्षी से यावज्जीवन अनशन किया जाता है। पूर्वाभिमुख होकर या जिस दिशा में आचार्य देव विराजमान हों उस दिशा में वन्दनासन में वन्दना करके यथाशक्ति तिविहार, चौविहार प्रत्याख्यान कर अनशन करना चाहिए।

अनशन पाठ

मैं अरिहन्त देव, गुरु एवं धर्म की साक्षी से यावज्जीवन तीन/चार आहार का त्याग करता हूं/करती हूं।

अनशन काल में ध्यान देने योग्य बातें

1. ग्रहण किए हुए व्रतों में जान या अनजान में हुई भूलों के लिए सरल भाव से आलोचना करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2. साधु-साध्वियों के प्रति मानसिक, वाचिक एवं कायिक रूप में हुई आशातना के लिए क्षमा-याचना करना।
3. चौरासी लाख जीवयोनि तथा जिनके साथ कटु व्यवहार हुआ हो उनसे व्यक्तिगत खमतखामणा करना। (खमाए बिना मरने वाला विराधक माना गया है।)
4. प्राणातिपात (हिंसा-झूठ) आदि अठारह पापों का यथाशक्ति त्याग करना।
5. देव, गुरु, धर्म रूप त्रिशरण को बार-बार दोहराना।
6. अतीत जन्मों में कृत पापों की आलोचना करना।
7. अपने द्वारा किये गए सुकृत कर्मों की अनुमोदना करना।
8. सद्भाव एवं समता में रमण करना। अन्तिम समय की घोर वेदना में भगवान महावीर, राजर्षि सनत्कुमार, स्कन्दक, गजसुकुमाल आदि महात्माओं की सहनशीलता स्मरण करते हुए परिणामों को सुदृढ़ रखना।
9. अनशन करने के बाद 'नमस्कार महामन्त्र' का जप तथा दस प्रकार की आराधना करते-करते समाधिमरण को प्राप्त करना।

पंचपद वन्दना (प्राचीन)

प्रथम पद–पहले पदे श्री सीमंधरजी स्वामी आदि जघन्य बीस तीर्थंकर देवाधिदेव उत्कृष्ट एक सौ साठ तीर्थंकर देवाधिदेव पंच महाविदेह क्षेत्र में विचरते हैं–अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त बल, अशोक वृक्ष, पुष्पवृष्टि, दिव्य ध्वनि, देवदुन्दुभि, स्फटिक सिंहासन, भामण्डल, छत्र, चामर–इन द्वादश गुणों के धारक, एक हजार आठ शुभ लक्षण युक्त शरीर, चौंसठ इन्द्रों के पूजनीय, चौंतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय से सुशोभित इस प्रकार के श्री अरिहंत भगवान के प्रति हाथ जोड़, मान मोड़ 'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

द्वितीय पद–दूसरे पदे अनन्त सिद्ध पन्द्रह प्रकार के अनन्त चौबीस अष्टकर्मों को क्षय करके मोक्ष पहुंचे–केवल ज्ञान, केवल दर्शन, आत्मिक सुख, क्षायिक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना, अमूर्तित्व, अगुरुलघुत्व,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्तराय रहित–इन अष्टगुण संयुक्त, जन्म-मरण, जरा, रोग, शोक, दुःख दारिद्र्य रहित सर्वदा शाश्वत सुखपूर्वक विराजमान है–ऐसे श्री सिद्ध भगवान के प्रति हाथ जोड़, मान मोड़ 'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

तृतीय पद–तीसरे पदे गुरु पूज्य श्री 1008 श्री श्री महाश्रमणजी आदि, वे आचार्य भगवान कैसे हैं–पंचमहाव्रत पालने वाले, चार कषाय को टालने वाले, पंच आचार को पालने वाले, पंच समिति और तीन गुप्ति से युक्त, पांच इन्द्रियों को जीतने वाले, नव बाड़ सहित ब्रह्मचर्य व्रत को पालने वाले–इन छत्तीस गुणों के धारक, शासन-शृंगार, गच्छाधार, धर्म धुरन्धर, सकल शुभंकर, भुवन भास्कर, मिथ्यात्व नाशक, तीर्थंकर देववत् धर्मोद्योत्कारी ऐसे महापुरुष आचार्यश्री के प्रति हाथ जोड़, मान मोड़ 'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

चतुर्थ पद–चौथे पदे उपाध्यायजी महाराज वे कैसे हैं–ग्यारह अंग और बारह उपांगों का स्वयं अध्ययन करते हैं और दूसरों को अध्ययन करवाते हैं–ऐसे पच्चीस गुणों के धारक श्री उपाध्यायजी महाराज के प्रति हाथ जोड़, मान मोड़ 'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

पंचम पद–पांचवें पदे जघन्य (कम से कम) दो हजार क्रोड़ से अधिक साधु-साध्वी उत्कृष्ट (अधिक से अधिक) नव हजार क्रोड़ साधु-साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्रों में विहार करते हैं, वे महामुनिराज कैसे हैं–पंच महाव्रत के पालनहार, पांच इन्द्रियों के जीतनहार, चार कषाय के टालनहार, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमावन्त, वैराग्यवन्त, मन समाधारणता, वचन समाधारणता, काय समाधारणता, ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न वेदना या मृत्यु आने से उसे समभावपूर्वक सहन करने वाले–इन सत्ताईस गुणों के धारक, बाईस परीषहों को जीतने वाले, बयालीस दोष टालकर आहार-पानी लेने वाले, बावन अनाचारों को टालने-वाले, निर्लोभी, निर्लालची, संसार से उदासीन, मोक्ष के अभिलाषी, संसार से विमुख, मोक्ष के सम्मुख, सचित्त के त्यागी, अचित्त के भोगी, न्योता देने से भोजन नहीं करने वाले, बुलाने से नहीं आने वाले, वायुवत् अप्रतिबन्ध विहारी–इस प्रकार के महा उत्तम मुनिराजों के प्रति हाथ जोड़, मान मोड़ 'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पंचपद वन्दना (नवीन)

णमो अरहंताणं–परम अर्हता सम्पन्न, चार घनघाती कर्म का क्षय कर अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त शक्ति और आठ प्रातिहार्य–इन बारह गुणों से सुशोभित, चौंतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय से युक्त, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक, वर्तमान तीर्थंकर सीमंधर आदि अर्हतों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।'

णमो सिद्धाणं–परम सिद्धि संप्राप्त, अष्टकर्म क्षय कर केवलज्ञान, केवलदर्शन, असंवेदन, आत्मरमण, अटल अवगाहन, अमूर्ति, अगुरुलघु और निरन्तराय–इन आठ गुणों से सम्पन्न, परमात्मा, परमेश्वर, जन्म, मरण, जरा, रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य रहित अनन्त सिद्धों को विनम्रभाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

णमो आयरियाणं–परम आचार-कुशल, धर्मोपदेशक, धर्मधुरन्धर, बहुश्रुत, मेधावी, सत्यनिष्ठ, श्रद्धा-धृति-शक्ति-शान्ति सम्पन्न, अष्ट गणि-सम्पदा से सुशोभित, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि एवं छत्तीस गुणों के धारक वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण आदि धर्माचार्यों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

णमो उवज्झायाणं–परमश्रुत स्वाध्यायी, धर्मसंघ में आचार्य द्वारा नियुक्त, ग्यारह अंग तथा बारह उपांग के धारक, अध्ययन और अध्यापन में कुशल–इन पचीस गुणों से सुशोभित उपाध्यायों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

णमो लोए सव्वसाहूणं–अध्यात्म-साधना में संलग्न, पांच महाव्रत, पंचेन्द्रिय निग्रह, चार कषाय–विवेक, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमा, वैराग्य, मन-वचन-काय समाहरणता, ज्ञान, दर्शन, चारित्र सम्पन्नता, वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता–इन सत्ताईस गुणों से सुशोभित, परीषहजयी, प्रासुक एषणीय भोजी, अर्हत और आचार्य की आज्ञा के आराधक, तपोधन साधु-साध्वियों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक वन्दना–'तिक्खुत्तो आयाहिणं....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परमेष्ठी वन्दना

वन्दना आनन्द-पुलकित, विनयनत हो मैं करूं।
एक लय हो, एक रस हो भाव तन्मयता वरूं॥

णमो अरहंताणं (अरहंतों को मेरा नमस्कार हो। वे कैसे हैं?)

1. सहज निज आलोक से भासित स्वयं संबुद्ध हैं।
धर्म तीर्थंकर शुभंकर, वीतराग विशुद्ध हैं।
गति-प्रतिष्ठा, त्राण-दाता, आवरण से मुक्त हैं।
देव अर्हन् दिव्य योगज अतिशयों से युक्त हैं॥

णमो सिद्धाणं (सिद्धों को मेरा नमस्कार हो। वे कैसे हैं?)

2. बन्धनों की शृंखला से, मुक्त शक्ति-स्रोत हैं।
सहज निर्मल आत्मलय में सतत ओतःप्रोत हैं।
दग्ध कर भव बीज अंकुर अरुज, अज, अविकार हैं।
सिद्ध परमात्मा परम, ईश्वर अपुनरवतार हैं॥

णमो आयरियाणं (धर्माचार्यों को मेरा नमस्कार हो। वे कैसे हैं?)

3. अमलतम आचार धारा में स्वयं निष्णात हैं।
दीप सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं।
धर्म-शासन के धुरन्धर, धीर धर्माचार्य हैं।
प्रथम पद के प्रवर-प्रतिनिधि, प्रगति में अनिवार्य हैं॥

णमो उवज्झायाणं (उपाध्यायों को मेरा नमस्कार हो। वे कैसे हैं?)

4. द्वादशांगी के प्रवक्ता, ज्ञान गरिमा पुंज हैं।
साधना के शान्त उपवन में सुरम्य निकुंज हैं।
सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा।
उपाध्याय महान श्रुतधर, धर्म-शासन सम्पदा॥

णमो लोए सव्वसाहूणं
(लोक के सब साधुओं को मेरा नमस्कार हो। वे कैसे हैं?)

5. सदा लाभ-अलाभ में, सुख-दुःख में मध्यस्थ हैं।
शान्तिमय, वैराग्यमय, आनन्दमय आत्मस्थ हैं।
वासना से विरत आकृति, सहज परम प्रसन्न हैं।
साधना धन साधु अन्तर्भाव में आसन्न हैं॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हत् वन्दना

1. **णमो अरहंताणं,**
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं,
नमन हमारा अरहन्तों को, सिद्धों को, आचार्यों को।
आगम पुरुष उपाध्यायों को, और लोक के सब सन्तों को॥

2. **एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।**
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥
नमस्कार-पंचक यह पावन, करता सब पापों का नाश।
सभी मंगलों में प्रधान है, प्रकटे भीतर दिव्य प्रकाश॥

3. **जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।**
संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा॥
जितने अर्हत् हुए लोक में, होंगे जितने फिर अरहन्त।
उन सबका आधार शान्ति है, जीवों का जैसे यह जगती॥

4. **से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे–**
बंधपमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव।
मैंने सुना और आत्म-अनुभव से जाना,
बन्धन मुक्ति तुम्हारे अपने ही भीतर है॥

5. **पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं**
किं बहिया मित्तमिच्छसि?
पुरुष! स्वयं का मित्र स्वयं तू,
फिर क्या बाहर मित्र खोजता?

6. **पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ,**
एवं दुक्खा पमोक्खसि।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुरुष! स्वयं का ही निग्रह कर,
ऐसे दुःख मुक्त होगा तू।

7. **पुरिसा! तुमंसि नाम सच्चेव,**
जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि।
पुरुष! जिसे हंतव्य मानता,
वह तू ही है, केवल तू ही॥

8. **सव्वे पाणा ण हंतव्वा–**
एस धम्मे धुवे, णिइए सासए।
वध्य नहीं है कोई भी प्राणी इस जग का।
यही अहिंसा धर्म नित्य है, शाश्वत, ध्रुव है।

9. **पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि।**
पुरुष! सत्य का ही अनुचिन्तन अनुशीलन कर।

10. **सच्चं भयवं।**
सत्य स्वयं भगवान रूप है।

11. **सच्चं लोयम्मि सारभूयं।**
सत्य लोक में सारभूत है।

12. **इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं।**
निर्ग्रन्थों का यह प्रवचन ही परम सत्य है।

13. **उट्ठिए णो पमायए।**
जाग गए हो, अब मत करना कभी प्रमाद।

14. **सव्वतो पमत्तस्स भयं,**
सव्वतो अप्पमत्तस्स णत्थि भयं।
जो प्रमत्त है, उसको सभी ओर से भय है।
अप्रमत्त को किसी ओर से भय न सताता।

15. **समया धम्म मुदाहरे मुणी।**
समता धर्म बताया मुनि ने।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

16. **लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए-मरणे तहा।**
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ॥
लाभ-अलाभ, दुःख-सुख में सम, जीवन-मरण मान-अपमान।
स्तुति-निन्दा—इन सब द्वन्द्वों में, सम रहता मुनि प्रज्ञावान॥

17. **अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।**
वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा॥
ऐहिक और पारलौकिक विषयों से रहे अनिश्रित।
कोई करे प्रहार वसौले से या चन्दन-चर्चित॥
मिले मनोगत भोजन, भूखा रहना पड़े किसी क्षण।
इन सबमें सम रहना ही समता का लक्षण॥

18. **अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।**
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ॥
आत्मा ही अपने सुख-दुःख की कर्ता और विकर्ता।
वही मित्र जो सुप्रवृत्त है, दुष्प्रवृत्त रिपु बनती॥

19. **अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूड़सामली।**
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं॥
वैतरणी सरिता आत्मा ही, आत्मा ही है कूट शाल्मली।
है आत्मा ही कामधेनु, यह आत्मा ही नन्दन वन है।

20. **जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।**
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥
जो दस लाख शत्रुओं पर भी, रण में विजय प्राप्त कर लेता।
एक जीतता निज आत्मा को, परम विजय उसकी कहलाती॥

21. **खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।**
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई॥
क्षमादान देता हूं सबको, क्षमा मुझे दे सारे जीव।
सब जीवों से मैत्री मेरी, नहीं किसी से मेरा वैर॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

22. **अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,**
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
मंगलमय मंगल हैं अर्हत्, सिद्ध साधु जन हैं मंगल।
धर्म केवली-भाषित मंगल, ये चारों ही हैं मंगल॥

23. **अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,**
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
परमोत्तम लोकोत्तम अर्हत्, सिद्ध साधुजन लोकोत्तम।
धर्म केवली-भाषित उत्तम, ये चारों ही लोकोत्तम॥

24. **अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू-**
सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।
अर्हतों की और सिद्धों, साधुओं की शरण में।
जा रहा हूं केवली-भाषित धर्म की शरण में॥
स्वस्थ मन से और वाणी, कर्म से अभिवन्दना।
करूं मैं नित अर्हतों की भावभीनी वन्दना॥

वन्दना

भाव-भीनी वन्दना भगवान चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं॥

1. ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य तरुवर लहलहाए॥

2. सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं॥

3. बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रन्थियों को, सुप्त चेतन को जगाएं॥

4. धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं॥*

*लय : लक्ष्य है ऊंचा हमारा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

द्वितीय प्रकरण : जप साधना

नमस्कार महामंत्र साधना

नमस्कार महामंत्र जैन परम्परा का विशिष्ट मंत्र है। इस मंगल-मंत्र द्वारा लाखों नहीं, करोड़ों व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। यह मंगल भावनाओं से भरा मंत्र जगत में मांगल्य की वृद्धि करता है। मांगल्य की भावनाओं को बढ़ाता है। इस मंत्र के पीछे अनन्त साधकों की साधना है, अतः इसकी नियमित साधना से साधक के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

णमो अरहंताणं

(मैं अरहन्तों को नमस्कार करता हूं।)

जिन्होंने राग-द्वेष रूपी कर्म शत्रु का नाश करके केवलज्ञान (ब्रह्मज्ञान) प्राप्त कर लिया है, वे तीर्थंकर भगवान अरहन्त कहलाते हैं।

णमो सिद्धाणं

(मैं सिद्धों को नमस्कार करता हूं)

जो अष्ट कर्मों को सर्वथा क्षय करके निज-आत्मरूप में अवस्थित हो गए हैं, जन्म-मरण की शृंखला को तोड़कर सिद्धि, मोक्ष, निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं।

णमो आयरियाणं

(मैं धर्माचार्यों को नमस्कार करता हूं।)

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य–इन पांच प्रकार के आचारों का जो स्वयं विशेष जागरूकता से पालन करते हैं और अपने शिष्यों से पालन करवाते हैं, वे आचार्य कहलाते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

णमो उवज्झायाणं

(मैं उपाध्यायों को नमस्कार करता हूं।)

विशेषतः धर्म शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन कार्य को सम्पादित करने वाले उपाध्याय कहलाते हैं।

णमो लोए सव्वसाहूणं

(मैं लोक के सब (शुद्ध) साधुओं को नमस्कार करता हूं।)

जो मुनि पंच महाव्रत पालक, अठारह सहस्र गुण धारक तथा परमोपकारक हैं–वे मुनि साधु कहलाते हैं।

नमस्कार के पांच पद, अक्षर हैं पैंतीस।
ग्यारह लघु, चौबीस गुरु, दीर्घ पनर, ह्रस बीस॥

बारह आठ छत्तीस पच्चीसा, साधु सत्ताईस गुणवाला।
एक सौ ने आठ गुणां री, आ गावो गुण माला॥

इस तरह कुल 108 मनकों की माला का जप किया जाता है। 108 गुण पांच पदों की वन्दना में अलग-अलग बताये गये हैं।

एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

यह नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला और सब मंगलों में प्रथम मंगल है।

मंत्र साधना में अरुचि प्रतीत हो तो समझना चाहिए–

- अभी मेरी वृत्तियां इसके लिए तैयार नहीं हैं। जैसे रुचि के बिना किया गया आहार रसोत्पत्ति का कारण न बनकर रोगोत्पत्ति का कारण बनता है।
- 'उसने जप किया और फल मिल गया, मुझे क्यों नहीं मिला?' ऐसा सोचना अव्यावहारिक है। आप अपना हृदय टटोलें, दूसरों से तोलें नहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रंग, केन्द्र और श्वासोच्छ्वास के साथ महामंत्र जपने की विधि

णमो अरहंताणं	— ज्योतिर्मय श्वेत रंग में अरिहंतों का ध्यान
णमो सिद्धाणं	— ज्योतिर्मय अरुण रंग में सिद्धों का ध्यान
णमो आयरियाणं	— ज्योतिर्मय पीले रंग में आचार्यों का ध्यान
णमो उवज्झायाणं	— ज्योतिर्मय हरे रंग में उपाध्यायों का ध्यान
णमो लोए सव्वसाहूणं	— ज्योतिर्मय नीले रंग में साधुओं का ध्यान

	केन्द्र	**स्थान**
णमो अरहंताणं	— ज्ञान-केन्द्र	मस्तक के मध्य भाग पर
णमो सिद्धाणं	— दर्शन-केन्द्र	भृकुटि के मध्य भाग पर
णमो आयरियाणं	— विशुद्धि-केन्द्र	कण्ठ के भाग पर
णमो उवज्झायाणं	— आनन्द-केन्द्र	हृदय के भाग पर
णमो लोए सव्वसाहूणं	— शक्ति-केन्द्र	रीढ़ के अन्तिम भाग पर

श्वासोच्छ्वास विधि

णमो अरहंताणं	— श्वास ग्रहण करते हुए
णमो सिद्धाणं	— श्वास छोड़ते हुए
णमो आयरियाणं	— श्वास ग्रहण करते हुए
णमो उवज्झायाणं	— श्वास छोड़ते हुए
णमो लोए	— श्वास ग्रहण करते हुए
सव्वसाहूणं	— श्वास छोड़ते हुए

नोट : *यदि श्वास इतना लम्बा न हो सके तो एक पद को दो भागों में बांट लें। जैसे श्वास ग्रहण करते हुए णमो और छोड़ते हुए श्वास में अरहंताणं अथवा श्वास को हृदय-चक्र पर रोक कर यथा-शक्ति महामंत्र का जप करें।*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमस्कार महामंत्र जप कब और कैसे?

1. शय्या त्याग करने के तुरन्त बाद महामंत्र स्मृति।
2. स्नानादि आवश्यक क्रियाओं की सम्पन्नता के बाद एकान्त में पूर्ण माला जप।
3. सामायिक पाठ बोलने से पूर्व और पश्चात् नमस्कार महामंत्र का जप।
4. प्रवचन, शास्त्राध्ययन तथा किसी भी प्रकार के स्वाध्याय से पूर्व नमस्कार महामंत्र का अनुस्मरण।
5. महामंत्र से प्रतिक्रमण सूत्र का प्रारम्भ तथा बीच-बीच में कई बार निर्विघ्न कार्य समाप्ति के लिए महामंत्र का स्मरण।
6. नमस्कार महामंत्र से अनशन का प्रारम्भ।
7. किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान तथा आत्मालोचन सम्बन्धी क्रियाओं के साथ अनिवार्य योग।
8. तीनों सन्ध्या-वन्दन के पूर्व पांच नमस्कार महामंत्र का जप।
9. रात को शय्या पर जाते समय नमस्कार महामंत्र का स्मरण।
10. यात्रा, विदाई तथा स्वागत के समय नमस्कार महामंत्र का जप।
11. जन्म, मृत्यु तथा विवाह सम्बन्धित सभी संस्कारों का शुभारम्भ और समापन पर नमस्कार महामंत्र का जप किया जाना चाहिए।
12. स्कूल-प्रवेश, मकान-प्रवेश, भवन-निर्माण, दुकान का मुहूर्त तथा इसी प्रकार के अन्य सभी कार्यों के पूर्व सविधि नमस्कार महामंत्र का अनुष्ठान–जप करना आवश्यक है।
13. जब किसी स्थान पर आपको भय मालूम हो, तब पांच नमस्कार महामंत्र जप कर आगे बढ़ें, भय हट जायेगा और आप अपने आपको सुरक्षित पायेंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जप-साधना विधि

1. जप अनुष्ठान के लिए दृढ़ आस्था और आभ्यन्तर पवित्रता की अत्यन्त आवश्यकता है।
2. जप काल में सीमित द्रव्य, एकासन, आयम्बिल, उपवास आदि आवश्यक होते हैं।
3. मनःस्थैर्य के लिए नियत आसन में बैठकर (पद्मासन, सिद्धासन, सुखासन) नासाग्र या भृकुटि पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।
4. जप काल में नियत समय (पश्चिम रात्रि, प्रातः शौचनिवृत्ति के बाद या पूर्व रात्रि) तथा नियत स्थान का भी अपना स्वतन्त्र महत्त्व है।

मंत्र-साधना-काल की शुद्धियां

1. **द्रव्य-शुद्धि**–विशुद्ध भावना पूर्वक मंत्र जपना।
2. **क्षेत्र-शुद्धि**–एकान्त, कोलाहल, मक्खी-मच्छर रहित स्थान।
3. **समय-शुद्धि**–प्रातः एवं सन्ध्या के समय कम से कम 45 मिनट तक महामंत्र-जप।
4. **आसन-शुद्धि**–काष्ठपट्ट, शिलापट्ट, शुद्ध-भूमि तथा समशीतोष्ण स्थान में किसी एक आसन में बैठकर माला जपना।
5. **विनय-शुद्धि**–उच्चारण शुद्धि तथा जिस मंत्र का जप किया जा रहा है, उसके प्रति परम प्रीति भाव।
6. **मनःशुद्धि**–दूषित वासनाओं का शोधन करके मानसिक एकाग्रता।
7. **वचन-शुद्धि**–लयपूर्वक शुद्ध उच्चारण से जपना।
8. **काय-शुद्धि**–शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर सभी प्रकार से शुद्धतापूर्वक मंत्र जपना।

जब तक मनुष्य के मन में राग-द्वेष की तरंगें चलती हैं, मन, क्रोध, ईर्ष्या और अभिमान से भरा रहता है, तब तक न जप काम करता है और न तप। **–आचार्य तुलसी**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जप-मंत्र

विशिष्ट अक्षरों के संयोजन का नाम मंत्र है। मंत्र अपने ध्वनि संघर्ष के द्वारा विविध शक्तियों को आकर्षित करता है। अतः जीवन विकास क्रम में 'जप' महत्त्वपूर्ण साधना का अंग बन जाता है। कुछ मंत्र एकान्त, आत्मविजय में सहायता करते हैं और कुछ मंत्र भौतिक शक्तियों का आह्वान करते हैं, किन्तु हमारा उद्देश्य आत्म-शुद्धि का रहना चाहिए।

उपयोगी जप मंत्र

1. विशेष मंत्र–

ॐ अ-सि-आ-उ-सा नमः।

(यह नमस्कार मंत्र के पांचों पदों का बीज मंत्र है।)

⊙⊙⊙⊙

2. लोगस्स पाठ

इस पाटी में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है। इस पाटी का कम से कम 7 बार रात को सोते समय ध्यान करना चाहिए। इस मंगल मंत्र के ध्यान से स्वप्न नहीं आते। शासन-सेवक, सभी देव और देवियां इससे प्रसन्न रहते हैं। इसकी पूरी माला फेरी जाए तो विशेष लाभ होता है।

(पाठ पृष्ठ 206 पर देखें)

⊙⊙⊙⊙

3. पैंसठिया छन्द

यह प्रभावशाली मंत्र है। इसका मन में सदा ध्यान रखते हुए 7 बार, 11 बार या 21 बार जाप करना चाहिए।

(छन्द पृष्ठ 59 पर देखें)

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. उपसर्गहर स्तोत्र

1. उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
   विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं॥1॥
2. विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
   तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं॥2॥
3. चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
   नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं॥3॥
4. तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए।
   पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥4॥
5. इय संथुओ महायस! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
   ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद॥5॥

यह भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित महाप्रभावक मंत्र है। इसकी साधना पौषबदी 10 से प्रारम्भ होती है। इसका बीज मंत्र है–

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास विसहर
वसह जिण फुलिंग ह्रीं श्रीं नमः।

इसकी एक माला पद्मासन में बैठकर पूर्वोत्तर दिशा में फेरें फिर 'उपसर्ग स्तोत्र' का जितना पाठ हो सके, उतना पाठ करें। इसके बाद प्रतिदिन 27 बार रात को इसका जाप अनिवार्य है।

⊙⊙⊙⊙

5. पार्श्व-स्तुति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री-चिन्तामणि-कामधेनु-कल्पवृक्ष पुरुषादानीय श्री पार्श्वनाथ-धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय मम मनोवांछितं पूरय-पूरय जय-विजय-करणाय नमः।

(उपवास सहित पौषबदी 10 को यह जाप प्रारम्भ किया जाता है। फिर प्रतिदिन 27 बार जप करना चाहिए।)

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. गौतम-स्तुति- (सुख-शान्तिवर्द्धक मंत्र)

ॐ नमो भगवतो गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण-
महाणसस्स भगवन्! मम मनोरथं पूरय-पूरय स्वाहा॥

⊙⊙⊙⊙

7. विघ्न निवारक मंत्र

नमिऊण असुरसुर-गरुल-भुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहू य॥

⊙⊙⊙⊙

8. संकट निवारक मंत्र

ॐ-अ-भी-रा-शि-को-नमः

इस मंत्र की माला से भूत-प्रेत जनित कष्ट बहुत जल्दी दूर होते हैं। यह मंत्र आज भी अपना चमत्कार दिखाता है। इसमें पांच घोर तपस्वियों की स्तुति है–

1. **अ**-अमीचन्दजी स्वामी
2. **भी**-भीमराजजी स्वामी
3. **रा**-रामसुखजी स्वामी
4. **शि**-शिवजी स्वामी
5. **को**-कोदरजी स्वामी

⊙⊙⊙⊙

9. चमत्कारी मंत्र–'ॐ भिक्षु'

(यह मंत्र श्रद्धावान लोगों के लिए महामंत्र का कार्य करता है। इसका सवा लाख जाप करने से अवश्य चमत्कार होता है। प्रारम्भ भादवा सुदी तेरस या दीपावली से करें।)

⊙⊙⊙⊙

10. सुख शान्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अ-सि-आ-उ-सा सर्व-विघ्न-रोगोपद्रव
विनाशनाय मम ग्रहशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा॥

(यह जाप सुबह शाम 27 बार करना चाहिये।)

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

11. अहिंसा विकास मंत्र

धम्मो-मंगल-मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥

⊙⊙⊙⊙

12. शान्तिस्तुति मंत्र

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं॥

⊙⊙⊙⊙

13. ब्रह्मचर्य विकास मंत्र

देव-दाणव गंधव्वा, जक्ख-रक्खसकिन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं॥

⊙⊙⊙⊙

14. कषाय विजय (आत्म-विजय) मंत्र

एगे जिए जिया पंच, पंच जिये जिया दस।
दसहा हु जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं॥

⊙⊙⊙⊙

15. तनाव मुक्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं भगवते पार्श्वनाथाय हर-हर स्वाहा।

⊙⊙⊙⊙

16. क्रोध आवेश-मुक्ति मंत्र

ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व-क्रोधोपशमनी स्वाहा।

(21 बार)

⊙⊙⊙⊙

17. भय मुक्ति मंत्र

णमो अभयदयाणं।

(10 मिनट)

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

18. घुटन-मुक्ति मंत्र

अप्पणा सच्च मेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए।

(10 मिनट)

⊙⊙⊙⊙

19. रोगनिवारक मंत्र

संती कुंथु अरहो, अरिट्ठनेमी जिणंदपासो य।
समरंताणं णिच्चं, सव्वं रोगं पणासेइ॥

⊙⊙⊙⊙

20. प्रेमभाव वर्धक मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारिणं
परस्पर-विरोध-विनाशनं भवतु।

(प्रतिदिन 1 माला फेरें)

⊙⊙⊙⊙

21. बुद्धि विकास मंत्र

ॐ णमो अरिहं वद-वद वाग्-वादिनी स्वाहा।

⊙⊙⊙⊙

ॐ जय ॐ जय ॐ गुरुदेव,
मंगलकारी तुम स्वयमेव,
ॐ जय तुलसी तुलसी नाम,
ॐ श्रीं ह्रीं अर्हम् शुभ धाम,
ॐ श्रीं ह्रीं अर्हम् सुख धाम,
ॐ श्रीं ह्रीं अर्हम् शिव धाम॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ग्रह शान्ति के लिए तीर्थंकरों का जाप

तीर्थंकरों के नाम परम मांगलिक हैं। इनके जाप से शासन सेवक देव (यक्ष) और देवियां (यक्षिणी) प्रसन्न होते हैं। समय पर वे संकट निवारण के लिए साक्षात् उपस्थित भी होते हैं। प्रतिदिन प्रातः और सायं निम्नोक्त विधि से एक आसन में बैठकर जप करें–

क्र.सं.	ग्रह नाम	दिशा	माला रंग	जाप
1.	सूर्य	पूर्व	लाल	7,000
2.	चन्द्र	उत्तर	श्वेत	11,000
3.	मंगल	पूर्व	लाल	10,000
4.	बुध	पूर्व	पीला	4,000
5.	बृहस्पति	ईशानकोण	पीला	15,000
6.	शुक्र	पूर्व	श्वेत	16,000
7.	शनि	पश्चिम	श्याम	23,000
8.	राहु	पूर्व या पश्चिम	श्याम	18,000
9.	केतु	पूर्व	नीला	7,000

मुख्य-मंत्र

सूर्य – ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मप्रभवे, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
चन्द्र – ॐ ह्रीं श्रीं नमश्चन्द्रप्रभवे, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
मंगल – ॐ ह्रीं श्रीं नमो वासुपूज्यप्रभवे, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
बुध – ॐ ह्रीं श्रीं नमो शांतिनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
बृहस्पति – ॐ ह्रीं श्रीं नमो ऋषभनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
शुक्र – ॐ ह्रीं श्रीं नमो सुविधिनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
शनि – ॐ ह्रीं श्रीं नमो मुनिसुव्रतनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
राहु – ॐ ह्रीं श्रीं नमो नेमिनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा
केतु – ॐ ह्रीं श्रीं नमो पार्श्वनाथाय, मम ग्रहशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंत्र सिद्ध करने का मुहूर्त

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, विशाखा, मृगशिरा—इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र—इन वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा—इन तिथियों में मंत्र सिद्ध करना शुभ होता है।

ग्रह शान्ति के लिए नमस्कार महामंत्र

चन्द्र और शुक्र	– ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं
सूर्य और मंगल	– ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
गुरु (बृहस्पति)	– ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं
बुध	– ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं
शनि, राहु और केतु	– ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं

जप-ध्वनियां

1. नमस्कार महामंत्र—णमो अरहंताणं णमो णमो....4
2. ॐ शान्ति, ॐ शान्ति, ॐ शान्ति शान्ति शान्ति....3
3. ॐ जय शान्ति शान्ति अभिधान, त्रिशला नन्द वीर भगवान।
   जिन वाणी का यह सुविधान, अपने से अपना कल्याण॥
4. ॐ नमोस्तु अरिहंत महान, वन्दे सविधि सिद्ध भगवान।
   अभिनव आचार्योपाध्याय, सब सन्तन के प्रणमूं पाय॥
5. ॐ शान्ति प्रभो! जय शान्ति प्रभो! पार्श्वनाथ महावीर प्रभो।
6. सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वृहद् उपसर्गहर स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा विरचित)

1. उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं॥

शासन पर होने वाले उपसर्गों को दूर करने वाला पार्श्व देवता जिनके चरणों में सेवक है, कर्म-रूप सघन बादलों से जो मुक्त हैं, महाविषधर भुजंग का विष जिनके नाम से दूर होता है, मंगल और कल्याण के घर हैं, उन पार्श्व प्रभु को नमस्कार करता हूं।

2. विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं॥

विषधर के विष को दूर करने वाला भगवान पार्श्वदेव का नाम जो मनुष्य कंठस्थ रखता है, उसके दुष्टग्रह, भीषण रोग, कालज्वर आदि सभी उपद्रव पूर्णरूपेण शान्त हो जाते हैं।

3. चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं॥

प्रभो! तुम्हारे नाम के मंत्र का चमत्कार तो दूर, तुम्हें केवल नमस्कार करने मात्र से ही अपार फल प्राप्त होता है। अतः मनुष्य, तिर्यंच आदि गतियों में भी तुम्हारे भक्तों को दुःख-दौर्भाग्य के कष्ट नहीं सता सकते।

4. तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं॥

प्रभो! चिन्तामणिरत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक महिमाशाली (सम्यक्त्व) श्रद्धा प्राप्त हो जाने पर साधकों को किसी प्रकार का भय नहीं रहता। ऐसे श्रद्धालु बिना किसी विघ्न-बाधा के अजरामर मोक्षधाम को प्राप्त कर लेते हैं।

5. ॐ अमरतरु-कामधेणु, चिंतामणि कामकुम्भमाईए।
सिरीपासनाह-सेवा-गयाण सव्वे वि दासत्तं॥

ॐ—यह नमस्कार मन्त्र का बीज मंत्र है, ऐसा समझना चाहिए। कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि रत्न और काम-कुम्भ आदि ये सभी वस्तुएं पार्श्वनाथ भगवान की सेवा करने वाले का दासत्व स्वीकार करती हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-सोग दोहग्गं।
कल्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह, दंसणेण समफल हेउ स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं स्वामिन्! तुम्हारे दर्शन से मनुष्य के रोग, शोक और दुर्भाग्य नष्ट हो जाते हैं। प्रभो! तुम्हारे दर्शन से कल्प-वृक्ष की ज्यों व्यक्ति की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

7. ॐ ह्रीं नमिऊण पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंदं।
सिरीकामरायकलियं, पास जिणंदं नमंसामि॥

ॐ ह्रीं इस बीज मंत्र को नमस्कार कर ॐ सहित श्री कामराज को परास्त करने वाले पार्श्व जिनेन्द्र को नमस्कार करता हूं।

8. ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर-विज्जामंतेण झाणं झाएज्जा।
धरणेन्द्र पउमादेवी, ॐ ह्रीं क्ष्मल्व्र्युं स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व-विषहर विद्यामंत्र के द्वारा ध्यान ध्याएं। धरणेन्द्र पद्मादेवी ॐ ह्रीं क्ष्मल्व्र्यूं स्वाहा। (यहां बीज मंत्र को नमस्कार किया गया है।)

9. ॐ थुणेमि पासं, ॐ ह्रीं पणमामि परमभत्तीए।
अट्ठक्खर धरणिंदो, पउमावइ पयडिया कित्ती॥

ॐ पंचपरमेष्ठी के बीज मंत्र सहित पार्श्व प्रभु को नमस्कार, ॐ ह्रीं बीज-मंत्र को परम भक्ति से प्रणाम करता हूं, धरणेन्द्र पद्मावती के ये आठ अक्षर परिकीर्तित किये गये हैं।

10. ॐ नट्ठट्ठ-मयट्ठाणे, पणट्ठकम्मट्ठ-नट्ठ संसारे।
परमट्ठ-निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणाधीसरं वन्दे॥

ॐ यह पंचपरमेष्ठी का बीज मंत्र है, इस बीज मंत्र के द्वारा अष्टमद-स्थान प्रणष्ट किये हैं, अष्ट कर्म प्रणष्ट किये हैं, संसार के भय-भ्रमणों को नष्ट किये हैं, ऐसे निश्चित परमार्थ तथा अष्टगुण अधीश्वर को नमस्कार करता हूं।

11. इय संथुओ महायस! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद॥

हे महायशस्वी! इस प्रकार भक्ति-भावना से परिपूर्ण हृदय से मैंने यह तुम्हारी स्तुति की है, अतएव जब तक मोक्ष प्राप्त न हो, तब तक भव-भव में मुझे सम्यक्त्व प्रदान करते रहें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्री पैंसठिया छंद

1. श्री नेमीश्वर संभव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति अभिराम।
अनन्त, सुव्रत, नमिनाथ सुजाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

2. अजितनाथ, चन्दा प्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गम्भीर।
विमल नाथ विमल जग-भाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

3. मल्लिनाथ जिन मंगल रूप, पंचबीस धनुष सुन्दर स्वरूप।
श्री अरनाथ नमूं वर्धमान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

4. सुमति, पद्म प्रभु अवतंस, वासुपूज्य, शीतल श्रेयांस।
कुंथु, पार्श्व, अभिनन्दन भाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

5. इण परे श्री जिनवर संभारिए, दुःख दारिद्र्य विघ्न निवारिए।
पच्चीसे पैंसठ परमाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

6. इण भणतां दुःख नावे कदा, जो निज पासे राखै सदा।
धरिए पंचतणुं मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

7. श्री जिनवर नामे वांछित मिले, मन वांछित सहु आशा फले।
धर्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण॥

श्री पैंसठिया यंत्र

11	3	9	15	16
14	20	1	1	8
	7	13	19	25
18	24	5	6	1
10		17	23	4

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महावीराष्टकम् स्तोत्र

1. यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्-साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

दर्पण की भांति जिनके चैतन्य में उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यात्मक अनन्त जड़-चेतन पदार्थ समानरूप से प्रतिभाषित हो रहे हैं, जो जगत-साक्षी हैं–परम आत्मा हैं, जो सूर्य की भांति मोक्षमार्ग दिखाने में तत्पर हैं, वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

2. अताम्रं यच्चक्षुःकमलयुगलं स्पन्दरहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽऽभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जिनके लालिमा रहित और स्थिर दोनों नेत्र-कमल लोगों को क्रोध के बाह्य और आन्तरिक दोषों की अवगति दे रहे हैं, जिनकी प्रशान्त और अतिविमल आकृति स्पष्ट रूप से प्रतिभाषित हो रही है, वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

3. नमन्नाकेन्द्राली - मुकुट - मणिभा - जालजटिलं,
लसत्पादाम्भोजद्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्वालाशान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जिनके कान्तिमय दोनों चरण-कमल नमस्कार करते हुए इन्द्रों की मुकुट के मणियों की आभा समूह से संक्रान्त हैं, जिनका स्मरण भी प्राणियों की भवज्वाला को शान्त करने के लिए जल के समान समर्थ है, वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जिनकी भक्ति भावना से ओतः-प्रोत होकर प्रसन्न मन वाला मेंढ़क भी सभी गुणों से समृद्ध और सुखों से परिपूर्ण देव बन गया, तो उनके सद्भक्त यदि मोक्ष सुखों को प्राप्त करते हैं, तो इनमें कौन-सी बड़ी बात है; वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

5. कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर् ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत-भवरागोऽद्भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जो देदीप्यमान स्वर्ण का आभास देने वाले शरीर रहित होकर भी ज्ञान-शरीर से युक्त है, जो विविध रूप होते हुए भी एक रूप हैं, जो अजन्मा होते हुए भी नृपश्रेष्ठ सिद्धार्थ के पुत्र हैं, जो जागतिक अनुराग से मुक्त होते हुए भी श्रीसम्पन्न हैं, ऐसे अद्भुतगति वाले भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

6. यदीया वाग्गंगा विविध नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां यां स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजन-मरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जिनकी वाणी रूपी गंगा विविध नय-तरंगों से विमल है, जो अपने अथाह ज्ञान-रूपी जल से जनता को अभिषिक्त कर रही है और आज भी वह गंगा विद्वज्जन रूप हंसों के निमज्जन के लिए सुपरिचित है, वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशमपदराज्याय स जिनः
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जिसका उद्रेक अनिवारित है, जो तीनों लोकों को जीतनेवाला है, ऐसे कामसुभट को जिन्होंने कुमार अवस्था में भी अपने पराक्रम से जीत लिया, जिनमें शाश्वत आनन्दमय वीतराग-पद-प्राप्ति के लिए स्फुरणा हो रही है, वे जिन भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

8. महामोहातंक - प्रशमनपराऽऽकस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर् विदितमहिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणी,
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥

जो महामोह रूपी आतंक–सद्योघाती रोग के उपशमन के लिए तत्पर अकल्पित वैद्य हैं, निरपेक्ष बन्धु हैं, जिनकी महिमा सर्वविदित है, जो मंगलकारी हैं, जो जन्म-मरण से भयभीत भव्यजनों के लिए शरण्य-शरणभूत हैं, जो उत्तम गुणों से सम्पन्न हैं, वे भगवान महावीर स्वामी मेरे नयन पथ में बस जाएं।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
य पठेच्छ्रणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥

मैंने (भागचन्द) भक्तिभाव से प्रेरित होकर इस महावीर अष्टक स्तोत्र की रचना की है, जो व्यक्ति इसे पढ़ता है या सुनता भी है, वह परमगति को प्राप्त होता है।

रचयिता–*मुनि भागचन्दजी*

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महावीर अष्टकम्

1. **अनेकान्तः कान्तः सकलसरितां संगम इव,**
प्रवादे स्याद्वादः सकलवचसामुद्गम इव।
न सत्यं सत्यांशैर्वियुतमिह दृष्टं बुधजनैः,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

भगवान ने सत्य की उपलब्धि के लिए अभिलषणीय 'अनेकान्त' का दर्शन दिया, जो समस्त विचारों की सरिताओं के संगम-स्थल की तरह है। अनेकान्त की अभिव्यक्ति के लिए स्याद्वाद की शैली प्रस्तुत की, जो समस्त वचनों के उद्गम की भांति है। उस ज्ञानी पुरुष ने देखा-जाना कि सत्य सत्यांशों से विकल नहीं होता। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

2. **न रागो नो द्वेषः प्रशमरसपीयूषललितं,**
शरीरं संवृत्तं गरलममृतं विस्मयकथा।
न दृष्टिर्नो दंशः प्रखरफणिनश्चाऽपि सफलः,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

भगवान में न राग था, न द्वेष। शरीर प्रशमरसरूपी अमृत से ललित था। इसलिए गरल भी अमृत में परिणत हो गया, यह विस्मयजनक कथा है। तीव्र विषधर चंडकौशिक ने जहर उगलती हुई दृष्टि से भगवान को देखा और काटा, फिर भी वह सफल नहीं हुआ। शरीर को हानि नहीं पहुंचा सका। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

3. **इदं शस्त्रं भीतिं जनयति जनानामधिमनः,**
इदं सैन्यं दैन्यं जनयति समाजे प्रतिपदम्।
विदेहे देहस्य स्थितिरभयमाप्नोति सहजं,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

नन्दिवर्धन ने भगवान के सामने प्रस्ताव रखा कि आपकी सुरक्षा के लिए मैं अपनी शस्त्रधारी सेना को आपके साथ रखना चाहता हूं। तब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भगवान ने कहा–ये शस्त्र मनुष्यों के मन में भय उत्पन्न करते हैं। यह सेना समाज में पग-पग पर दीनता पैदा करती है। विदेह में देह की स्थिति सहज ही अभय को प्राप्त हो जाती है। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

4. सुरक्षां नो नीता किमु तृणकुटीं भो मुनिवर!,
निजं नीडं पक्षी तनुतनु रहो! रक्षतितमाम्।
तदा ध्यातं स्वात्मा प्रभवति कुटीरं न च परं,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

अभिनिष्क्रमण के पश्चात् भगवान महावीर कुलपति की आज्ञा से आश्रम के तृणकुटीर में रहे। निरन्तर ध्यानावस्थित रहने के कारण उन्होंने कुटीर की ओर ध्यान नहीं दिया। कुटीर की घास गाएं चर गईं, तब कुलपति ने महावीर से कहा–मुनिप्रवर! आपने अपनी तृणकुटी की सुरक्षा क्यों नहीं की? आश्चर्य है कि छोटे से छोटा पक्षी भी अपने नीड़ की रक्षा करता है। तब भगवान ने सोचा–अपनी आत्मा ही अपना कुटीर हो सकता है, दूसरा नहीं। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

5. निमेषार्द्धो नूनं ज्ञपयति न चात्मा बहिरिह,
तथैवार्द्धोन्मेषो ज्ञपयति च तत्त्वं बहिरपि।
विचित्रा मुद्रेयं वरनयनयोर्ध्याननिरता,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

तुम्हारे अर्धनिमीलित नयन ज्ञापित कर रहे हैं कि आत्मा इस शरीर से बाहर नहीं है। उसी प्रकार तुम्हारे अर्ध उन्मीलित नयन ज्ञापित कर रहे हैं कि तत्त्व बाहर भी है। ध्यान में लीन तुम्हारे प्रवर नयनों की यह मुद्रा विचित्र है। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

6. अगम्यः स श्वासः परिमलमुपेतोब्ज सुलभं,
अगम्या सा वाणी प्रसरति सुदूरं सहजतः।
अगम्यो गम्यस्त्वं कथमिति न जाने यतिपते!,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अगम्य है वह श्वास, जो अब्जसुलभ परिमल से युक्त हो। अगम्य है वह वाणी, जो बिना किसी माध्यम के सहज सुदूर फैल जाती हो। हे यतिपते! तुम अगम्य हो। मैं नहीं जानता, फिर तुम गम्य कैसे हो गये? वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

7. न कालस्यैकान्तो न खलु नियतेर्मुख्यपदवी,
स्वकीयं कर्तृत्वं प्रबलपुरुषार्थेन फलितम्।
व्रतानां संदेशः श्रुतिमधिगतो मन्त्रमभवत्,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

(कालवादी दार्शनिक एकान्ततः काल को और नियतिवादी दार्शनिक एकान्ततः नियति को ही प्रधान मानते थे।) तुम्हारे सिद्धान्त में न एकान्ततः काल को मुख्य स्थान प्राप्त है और न ही एकान्ततः नियति को। स्वयं का कर्तृत्व प्रबल पुरुषार्थ से फलता है। तुम्हारा व्रतों का संदेश कानों का विषय होकर मंत्र बन गया। वह धीर महावीर प्रतिपल मेरे चित्त में स्फुरित होता रहे।

8. अनन्तानन्देन क्वचिदपि न कष्टानुभवनं,
अनन्तं तज्ज्ञानं विदितमभितो विश्वमखिलम्।
अनन्ता सा शक्तिः क्वचिदपि न किञ्चित् प्रतिहता,
महावीरो धीरः स्फुरतु मम चित्ते प्रतिपलम्।।

अनन्त था वह आनन्द, जिससे कहीं भी तुम्हें कष्ट का अनुभव नहीं हुआ। अनन्त था वह ज्ञान, जिससे तुमने चारों दृष्टियों (द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव) से सकल विश्व को जाना। अनन्त थी वह शक्ति, जो कहीं किञ्चित् भी प्रतिहत नहीं हुई। वह धीर महावीर मेरे चित्त में प्रतिपल स्फुरित होता रहे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु-अष्टकम्

आचार्य भिक्षु के 188वें निर्वाणोत्सव पर

सिरियारी में आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा समुच्चारित

1. अकम्पः संकल्पः क्वचिदपि न केनापि चलितः,
न चित्ते चांचल्यं न च विपथगामीन्द्रियगणः।
समं सोढा गालिः क्वचन घनमुष्टेः प्रहरणं,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

तेरापंथ के आद्यप्रणेता आचार्य भिक्षु दृढ संकल्प के धनी थे। कोई भी व्यक्ति उनके संकल्प को किसी भी परिस्थिति में प्रकम्पित नहीं कर सका। उनके चित्त में न किसी प्रकार की चंचलता थी और न इन्द्रियों की उत्पथगामिता। कहीं उनको गालियां मिलीं तो कहीं सघन मुष्टि का प्रहार। दोनों को उन्होंने समभावपूर्वक सहन किया। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें–बस जायें।

2. न रागो न द्वेषो घटितघटनासु प्रतिकृतः,
विरोधः सद्भावे परिणतिमुपागात् प्रतिपदम्।
न लेशः क्लेशानां समजनि निमेषं सहचरः,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

उनके मन में घटित घटनाओं की प्रतिक्रिया से होने वाला न राग था और न द्वेष, इसलिए पग-पग पर होने वाला विरोध सहज ही सद्भाव में परिणत हो गया। उनको पलभर के लिए भी लेशमात्र क्लेश नहीं हुआ। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें–बस जायें।

3. अलब्धेऽप्याहारे सुमतिरचलन्नो क्षणमपि,
न लब्धं सुस्थानं तदपि पथि नीते स्थिरमतिः।
न कष्टं तत्कष्टं भवति यदि चित् स्पष्टमुदिता,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्षों तक उन्हें पूरा आहार-पानी नहीं मिला, फिर भी उनका धैर्य क्षणभर के लिए भी विचलित नहीं हुआ। वर्षों तक उन्हें रहने योग्य स्थान नहीं मिला, फिर भी उनकी सुस्थिर मति स्वीकृत पथ का अनुगमन करती रही, उस पर निश्चल रही। (उन्हें कभी कष्ट का अनुभव नहीं हुआ।) यह सत्य है कि चेतना का स्पष्ट जागरण हो जाने पर कष्ट, कष्ट नहीं लगता। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें—बस जायें।

4. सदा स्वच्छो भावो जिनवचनभावैरपमलः,
कृतादर्शा प्रज्ञा मतिविभवमाक्रम्य सुगता।
न चेर्ष्या नो निन्दा गहनतमनिष्ठा स्वचरिते,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

उस आर्य पुरुष की निर्मल भावधारा जिनवचनों से अनुप्राणित होकर सदा निर्मल बनी रही। बुद्धि-वैभव का अतिक्रमण कर आदर्श से फलित होने वाली प्रज्ञा को उन्होंने प्राप्त किया। उनमें अपने चारित्र के प्रति गहरी निष्ठा थी, इसलिए मन में किसी के प्रति न ईर्ष्या का भाव था और न निन्दा का भाव। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें—बस जायें।

5. न सा काम्या बुद्धिर्भवति खलु या बंधनिरता,
प्रशस्यां तां मन्ये भवति च यतश्चिद् विकसिता।
स्वचैतन्ये निष्ठा प्रशमसुखवृष्टेरनुभवः,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

आचार्य भिक्षु ने कहा—मैं उस बुद्धि को अच्छा मानता हूं, जिससे चैतन्य का विकास हो सके, किन्तु वह बुद्धि मेरे लिए ग्राह्य नहीं हो सकती, जो बान्धने वाली हो, इस प्रकार उनके मन में अपने चैतन्य के प्रति निष्ठा और समता सुख की वृष्टि करने वाला अनुभव था। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें—बस जायें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. ज्वरो यस्याध्वानं सततमविगानं विहितवान्,
निराशा संन्यस्ता सरिति रवितापेन सुतराम्।
प्रकाशः संप्राप्तो गहनतिमिरे चैत्यनिलये,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

राजनगर में आचार्य भिक्षु को ज्वर का प्रकोप हुआ, जिसने उनके मार्ग को सदा के लिये प्रशस्त बना दिया। सिरियारी की नदी की तप्त बालुका में उन्होंने आतापना ली, जिससे उनकी निराशा सतत मिटती चली गई। केलवा के मन्दिर की 'अंधेरी ओरी' के सघन अंधकार में उन्हें प्रकाश मिला। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें–बस जायें।

7. अगम्यं यन्नाम प्रबलतपसा सञ्चितयशो
न शेषाः संक्लेशा विलयमुपयान्ति स्मरणतः।
नयन् ॐ ऐं ॐ ॐ अमलमनसार्हं सवलयं,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

आचार्य भिक्षु का पुण्य नाम अगम्य है। उन्होंने घोर तपस्या की। उनका नाम यशस्वी बन गया। जो व्यक्ति पवित्र मन से 'अर्हम्' का वलय बनाता हुआ 'ॐ ऐं ॐ भिक्षु' इस नाममंत्र का जप करता है, उसके समस्त संक्लेश विलीन हो जाते हैं। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें–बस जायें।

8. मतिः सिद्धा शुद्धा भवतु प्रतिबुद्धा प्रतिपलं,
मनो हित्वा भ्रान्तिं व्रजतु सुखदां शान्तिममलाम्।
सदा ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्फुरतु नितरां भावनिचये,
प्रसन्नात्मा भिक्षुर्नयनमवतारं नयतु मे।।

उनकी अनुकम्पा से मेरी मति सिद्ध, शुद्ध और प्रतिबुद्ध हो, मेरा मन भ्रान्ति को छोड़कर सुखप्रद और विमल शान्ति को प्राप्त करे, मेरी भावधारा में सदा 'ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं' (ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं भिक्षुः) का मंत्र स्फुरित हो। ऐसे निर्मलचेता भिक्षुस्वामी मेरे नयनों में अवतरित हो जायें–बस जायें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय-अष्टकम्

1. प्रतिष्ठां संप्राप्ता मतिरतितरामाशु फलदा,
चिदात्मा सिद्धात्मा दिशि विदिशि दृष्टिर्गतिमती।
अदृष्टं संदृष्टं सहजमुदितास्तत्त्वरुचयः,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

जिनकी फल देने वाली मति शीघ्र ही प्रतिष्ठित हो गई। जो चिन्मय आत्मा, सिद्ध आत्मा थे। जिनकी दृष्टि दिशाओं, विदिशाओं में गतिशील हो गई। जिन्होंने अदृष्ट को समीचीनतया देखा। जिनकी तत्त्वरुचि सहज ही अभिव्यक्त हो रही थी। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

2. यदैकाग्र्यं रम्यं कुशलजनवीक्षामुपगतं,
न वा नृत्यं बाधाजनकमभवत् यत् क्षणमपि।
चिरंजीवी तेरापथ इति जनोक्तिः श्रुतिमिता,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

पाली के बाजार में नृत्य हो रहा था। एक दिन दुकान में मुनि जय लेखन का कार्य कर रहे थे। जनसमूह नाटक देख रहा था। एक कुशल व्यक्ति ने सोचा–यह छोटा मुनि जरूर नाटक देखेगा, पर वह व्यक्ति उस मुनि की मनोहरी एकाग्रता को देखता रहा। उसने उपस्थित जनसमूह से कहा–जिस पंथ में इतनी एकाग्रता वाला मुनि है, वह तेरापंथ चिरजीवी होगा। यह जनोक्ति एक कान से दूसरे कान तक पहुंच गई। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

3. यदीयं वैराग्यं समजनि वयोद्वन्द्वविजयि,
यदीयं वैराग्यं समजनि निजैर्द्वन्द्वविजयि।
यदीयं वैराग्यं समजनि विशिष्टं स्वचरितैः,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वय ने कहा–अभी तुम छोटे हो, मुनि कैसे बनोगे? वैराग्य ने कहा–मैं मुनि बनूंगा। इस विवाद में वैराग्य विजयी बन गया। परिवार के सदस्यों ने कहा–अभी तुम दीक्षा नहीं ले सकते। वैराग्य ने कहा–मैं दीक्षा ले सकता हूं। इस विवाद में वैराग्य विजयी बन गया। जिसका वैराग्य अपने चरित्र से विशिष्ट बन गया, वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

4. व्यवस्थायां साम्यं कुशलपटुयोगेन विहितं,
न वृद्धोऽहंकारो न खलु ममकारोऽपि प्रकृतः।
विनीतानां गीतं विनय-नयवृत्तं बहुतमं,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

जिसने कौशल और पटुता के योग से व्यवस्था में साम्य का प्रवर्तन किया, उस व्यवस्था में न कोई अहंकार का स्थान था और न ममकार का। जिसने विनीत साधु-साध्वियों के विनय और नीति से युक्त जीवनवृत्त का बार-बार संगान किया। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

5. महो मर्यादाया न च दृशिगतं नो श्रुतमपि,
प्रकल्पोऽयं नव्यः कथमुदयमावाप मनसि।
चिरायुष्कः संघः शुभमुपगतः प्राणपवनं,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

मर्यादा का महोत्सव न देखा और न सुना। यह नया प्रकल्प कैसे मन में आया? उसकी कल्याणकारी प्राण-पवन को प्राप्त कर संघ चिरजीवी हो रहा है। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

6. द्वितीयोऽयं भिक्षुर्मतमिदमनेकैर्बुधजनैः,
मनीषानैपुण्यं प्रकटमनुभूतं बुधजनैः।
कृतज्ञानां पंक्तौ गुरुमिति विविक्तं बुधजनैः,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनेक बुद्धिमान् लोगों ने माना–यह (जयाचार्य) दूसरा भिक्षु है। अनेक बुद्धिमान् लोगों ने स्पष्टता से अनुभव किया–इनकी मनीषा में निपुणता है। अनेक बुद्धिमान् लोगों ने यह विश्लेषण किया–कृतज्ञ व्यक्तियों की पंक्ति में यह गुरु है। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

7. मयोक्तं तद् भाष्यं विशदमतिगम्यं सुनिपुणं,
विधाताऽसौ भावीत्यवगतमिदं गम्यमधुना।
अपूर्णा मे वाञ्छा न खलु बत दृष्टं गुरुमुखं,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

आचार्य भिक्षु ने जान लिया था कि मेरे द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का सूक्ष्म विवेचनापूर्ण भाष्य, जो विशद बुद्धिवालों के द्वारा गम्य हो सकता है, मेरे स्वर्गवास के अनन्तर जन्म लेने वाला यह शिशु करेगा। इसका आज हम अनुमान कर सकते हैं। जयाचार्य ने कहा–मेरे मन में कोई आकांक्षा अपूर्ण नहीं रही। एक ही आकांक्षा अपूर्ण रही कि मैं तुम्हारा मुख नहीं देख सका। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

8. अमूल्यं साहित्यं विविधविषयस्पर्शि रचितम्,
अमोघं मंत्राणां विरचनमहो! विघ्नशमनम्।
अमूल्यं सद्ध्यानं भवतु सफलं भैक्षवगणे,
स्वयं धन्यः पुण्यो जयतु जयनामा मुनिपतिः।।

जिसने नाना विषयों को स्पर्श करने वाले अमूल्य साहित्य की रचना की, आश्चर्यकारी विघ्ननाशक अमोघ मंत्रों की रचना की, भिक्षु शासन में अमूल्य और समीचीन ध्यान (लेश्याध्यान) पद्धति का विकास किया, वह सफल हो। वे स्वयं धन्य और पवित्र मुनिपति जयाचार्य विजयी बने।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कालु-अष्टकम्

आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित

1. अमाप्यं वात्सल्यं नयननलिने मूर्तिमगमत्,
अनेके संबुद्धाः प्रतिपदमितास्तोषमतुलम्।
श्रुतं नाहं वच्मि स्वकमनुभवं वच्मि मुदितः,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

जिनका अमाप्य वात्सल्य नयनकमल में मूर्तिमान् बन गया, साकार बन गया, जिसे प्राप्त कर अनेक संबुद्ध व्यक्तियों ने पग-पग पर अतुलनीय तुष्टि का अनुभव किया है। मैं सुनी हुई बात नहीं कह रहा हूं, अपनी अनुभूत बात प्रसन्नता के साथ बता रहा हूं। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

2. जयाल्लब्धा शक्तिर्विनतिमहता श्रीमघवता,
ततोऽसौ संक्रान्ता स्फटिकविमले कालुहृदये।
प्ररोहे संन्यस्ता सकलकलया कालुगुरुणा,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

विनम्रता से महान् बने हुए तेरापंथ धर्मसंघ के पांचवें आचार्यश्री मघवा ने चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य से शक्ति प्राप्त की। मघवा की वह शक्ति स्फटिक के समान निर्मल अष्टमाचार्य कालु के हृदय में संक्रान्त हो गई। पूज्यवर कालुगुरु ने समस्त कलापूर्ण रीति से उस शक्ति को विकास के अंकुर में संन्यस्त कर दिया, नियोजित कर दिया। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

3. प्रणम्या सा शास्तिः प्रभवति यतो दिक्पथगतिः,
प्रणम्या सा शास्तिः श्रवणविरसा चापि सरसा।
यदादौ चान्तेऽपि प्रवहति वरा प्रेमसलिला,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वह अनुशासन प्रणम्य है, जिससे दिशा प्राप्त होती है और पथ की गति प्राप्त होती है। वह अनुशासन प्रणम्य है, जो सुनने में विरस होते हुए भी सरस है, परिणाम में रसमय है, जिसके आदि और अन्त में प्रवर प्रेम का सलिल प्रवाहित है। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

4. सुलब्धं तच्चक्षुः सुकृतिमतिलभ्यं गुरुतरं,
सुदूरं संदृष्टं किमिह भविता बौद्धिकयुगे।
अलब्धं लब्धं स्याद् भवति फलितोऽयं सुरतरुः,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

गुरुवर कालु ने वह चक्षु प्राप्त किया था, जो पुण्यवान व्यक्तियों की मति द्वारा प्राप्य है और जो गुरुतर है—गरिमासम्पन्न है। उन्होंने उस चक्षु से सुदूर को देखा कि आने वाले बौद्धिक युग में क्या होने वाला है। दूरदर्शन के द्वारा अलब्ध भी लब्ध होता है और उससे विद्या का सुरतरु फलित हो जाता है। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

5. सुधन्यं तत् स्थानं प्रवरमहनीयास्पदमभूत्,
स्थितो यस्मिन् विद्याध्ययननिरतः शासनपतिः।
विचित्रं छात्रोऽसौ गुरुरपि सलक्ष्यं कृतमतिः,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

वह स्थान धन्य है, जो प्रवर महिमा-मंडित स्थान बन गया, जहां विद्याध्ययन में निरत होकर शासनपति विराजमान हुए। लोगों ने देखा—आश्चर्य है कि ये गुरु होते हुए भी लक्ष्यपूर्वक अपनी मति को अर्पित कर छात्र बने हुए हैं। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

6. सुरक्षा संघस्य प्रथममिह दायित्वमुचितं,
द्वितीयं दायित्वं विनयनययोग्यस्य चयनम्।
अमेयं कर्तृत्वं गणिपदविशेषं प्रथयति,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य का पहला औचित्यपूर्ण दायित्व है–संघ की सुरक्षा। दूसरा दायित्व है–विनय तथा नय (नीति) से योग्य शिष्य का चयन करना, उत्तराधिकारी का मनोनयन। उसका अमेय (अमाप्य) कर्तृत्व आचार्य पद के वैशिष्ट्य का विस्तार करता है। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

7. सुधीनां शिष्याणामजनि शुभसम्पत् फलवती,
विशिष्टं सौभाग्यं विलसति विशिष्टा ग्रहगतिः।
तृतीयं नेत्रं यत् परमपुरुषार्थेन विशदं,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

पूज्यवर कालुगणी के कर्तृत्व से विद्वान् शिष्यों की शुभ सम्पदा फलवती हो गई, प्राप्त हो गई। उनका सौभाग्य विशिष्ट था, ग्रहों की गति भी विशिष्ट थी। उन्होंने उत्कृष्ट पुरुषार्थ के द्वारा अपने तीसरे नेत्र को निर्मल बना लिया। स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

8. अहं मन्ये भाग्यं शिरसि निहितः पाणिरमलः,
परं भाग्यं लब्धः सुमुनितुलसी देवकृपया।
महाप्रज्ञः स्वामिन्! शिशुरपि सुदृष्टोऽस्मि सुदृशा,
स्वयं सिद्धः कालुर्भवतु सुतरां सिद्धिफलदः।।

पूज्यवर कालुगणी ने अपना पवित्र हाथ मेरे सिर पर रखा, इसे मैं अपना भाग्य मानता हूं। पूज्य कालुगणी की कृपा से मुझे मुनि तुलसी जैसे विद्यागुरु प्राप्त हुए, इसे भी मैं अपना परम भाग्य मानता हूं। हे स्वामिन्! मैं यह शिशु महाप्रज्ञ (दीक्षा लेते ही) आपकी शुभ दृष्टि से अच्छी प्रकार से देखा गया हूं। वे स्वयंसिद्ध गुरुवर कालु सम्यक् प्रकार से हमें सिद्धि का फल दें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी-अष्टकम्

(आचार्यश्री महाप्रज्ञ रचित)

1. सदानन्दस्पन्दः प्रवहति मनोहारिवदने,
प्रशस्तं वात्सल्यं स्फुरति सुखदं नेत्रयुगले।
विकासे विन्यस्ता विमलविपुला दृष्टिरनिशं,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

जिनके मनोहारी मुख पर सदा आनन्द का स्पन्दन प्रवाहित रहता था, जिनके दोनों नेत्रों में सुखद और प्रशस्त वात्सल्य स्फुरित होता था, जिनकी विमल और विशाल दृष्टि निरंतर विकास कार्यों में लगी रहती थी, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

2. अनन्तं माहात्म्यं वचनविषयं केन विहितं,
स्वयं सिद्धा वाणी सहजमतिमानाप्तपुरुषः।
समृद्धो वाक्सिद्धेरतनुमहिमा सिद्धपुरुषः,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

उनका माहात्म्य अनन्त था। कौन उसे अपनी वाणी का विषय बना सका? उसका प्रतिपादन कर सका? उनकी वाणी स्वयं सिद्ध थी। उनकी मति नैसर्गिक थी। वे आप्तपुरुष थे। उन्हें वचनसिद्धि प्राप्त थी। उससे वे समृद्ध थे। उनकी महिमा अपार थी। वे सिद्धपुरुष थे। ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

3. कृता धर्मक्रान्तिर्निरसनमिता भ्रान्तिरखिला,
प्रतिष्ठां सम्प्राप्तं पुनरपि यतो मूल्यममलम्।
स धर्मः किं धर्मो यदि न मनुजो नीतिनिपुणः,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसी।।

उन्होंने धर्मक्रान्ति की, जिससे धर्म के विषय में होने वाली सब भ्रान्तियां टूट गईं। नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा हुई। उनका अभिमत था

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

—वह धर्म क्या धर्म है, जो मनुष्य को नीतिनिपुण नहीं बनाता, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

4. मनःपीठासीनः प्रथयसि मनःशान्तिमतुलां,
वचःश्रेण्यारूढः सृजसि वचसो गौरवमलम्।
मनोवाक्कायानां कथमिव सुयोगोऽजनि महान्,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

स्मृति के क्षण में प्रभो! तुम मन की पीठ पर आसीन होते हो, तब अतुल मानसिक शान्ति का विस्तार करते हो। स्तुति के क्षण में प्रभो! तुम वचनश्रेणी में आरूढ़ होते हो, तब स्तुतिकार के वचन की गरिमा का सृजन करते हो। तुम्हारे व्यक्तित्व में मन, वचन और काया का यह महान् सुयोग कैसे हुआ, आश्चर्य है। (इसका तात्पर्य है कि तुम्हारे मन में दूसरों को मानसिक शान्ति देने की, तुम्हारी वाणी में दूसरों की वाणी को आदेय बनाने की और तुम्हारी काया में दूसरों को सौन्दर्यानुभूति कराने की क्षमता है, यह महान् योग कैसे हुआ?) ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

5. अपूर्वा श्रीसम्पत् प्रतिपदमहोभावमुखरा,
अपूर्वा ह्रीसम्पत् सहजमनुशास्तिं जनयति।
अपूर्वा धीसम्पत् स्मृतिरपि विचित्राशयवती,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

अपूर्व थी तुम्हारी श्रीसम्पदा (आभा की सम्पदा), जो देखने वालों को पग-पग पर अहोभाव से मुखर बना देती थी। अपूर्व थी तुम्हारी ह्रीसम्पदा (आत्मानुशासन की सम्पदा), जो सहज ही अनुशासन की भावना का सृजन करती थी। अपूर्व थी तुम्हारी धीसम्पदा (बुद्धि की सम्पदा) और स्मृति भी, जो विचित्र-विलक्षण आशय वाली बनी हुई थी, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. **अपूर्वा सा भक्तिर्जिनवरवचः ख्यातिमगमद्,**
अपूर्वा सा शक्तिः प्रबलपुरुषार्थे प्रकटिता।
अपूर्वा सा शास्तिः प्रगतिमधिरूढा फलवती,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

अपूर्व थी तुम्हारी वह भक्ति, जिससे जिनवर की वाणी प्रख्यात हुई। अपूर्व थी तुम्हारी वह शक्ति, जो प्रबल पुरुषार्थ में प्रकट हुई। अपूर्व थी तुम्हारी वह शासनपद्धति, जिसने प्रगति का आरोहण किया और वह फलवती बनी, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

7. **विकासस्य श्वासः प्रतिपलमनायाससमुदितः,**
प्रतीक्षासंलीना इव नवनवोन्मेषनिवहाः।
समीक्षानैपुण्यं सुकृतिसुलभं दुर्लभतमं,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

तुमने विकास का जो श्वास लिया, वह प्रतिपल अनायास ही गतिशील होता रहा। नए-नए उन्मेषों के समूह मानो आगे बढ़ने की प्रतीक्षा करने में लीन हो रहे थे। तुम्हारी समीक्षा की कुशलता भाग्यशाली के लिए ही सुलभ है। समीक्षा की ऐसी शक्ति का विकास होना दुर्लभतम है, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

8. **श्रिये श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं जपतु तुलसीनामवलये,**
ह्रिये ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः भवतु शिवनिष्ठा श्रुतवती।
धिये ऐं ऐं ऐं ऐं स्फुरतु सततं कण्ठकमले,
जगद्वन्द्यः स्वामी विशदचरितो नाम तुलसीः।।

श्रीसम्पदा के लिए 'तुलसी' नाम का मानसिक वलय बनाकर श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं का जप चलता रहे। ह्रीसम्पदा के लिए ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः का जप चलता रहे। उससे कल्याणनिष्ठा श्रुतवती बने। बौद्धिक सम्पन्नता के लिए कण्ठकमल में ऐं ऐं ऐं ऐं का जप स्फुरित रहे, ऐसे विशद चरित्र वाले गुरुवर्य तुलसी स्वामी जगद्वन्द्य हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ-अष्टकम्

(आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित)

1. पुनीतान्तःप्रज्ञा गहनतम-तत्त्वेषु निपुणा,
श्रुतस्वाध्यायेन सुविदितरहस्यो विभुवरः।
प्रशस्या शास्त्राणां सुषमतर-सम्पादन-सृतिः,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आपकी पुनीत अन्तःप्रज्ञा गहनतम तत्त्वों को जानने में निपुण है। आपने आगमों के स्वाध्याय से उनके रहस्यों को भलीभांति आत्मसात् कर लिया है। आपके द्वारा विहित आगमों के सुसम्पादन का कार्य प्रशस्य है, श्लाघ्य है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

2. विशुद्धा सम्भाषा विनयति विबाधाः प्रतिपदं,
प्रकाण्डं पाण्डित्यं श्रवति मुखपद्मात् प्रवचने।
प्रभावी व्याहारो जनयति समाधिं जनचये,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आपका पवित्र संभाषण वार्तालाप पग-पग पर बाधाओं का अपनयन करता है। प्रवचन में आपका प्रकाण्ड पाण्डित्य मुख रूपी कमल से (मकरन्द की भांति) झरता है। आपकी प्रभावशाली वाणी जनसमूह में समाधि (शान्ति) उत्पन्न करती है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

3. गभीरं साहित्यं सुमतिविदुषां प्रीतिजनकं,
प्रदत्ते सौहित्यं पठनपर-लोकाय विपुलम्।
विशिष्टश्लोकानां विरचनमकार्याशुकविना,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आपका गम्भीर साहित्य बुद्धिमान् और विद्वान् लोगों के लिए आह्लादजनक है तथा पठनशील व्यक्तियों को विपुल तृप्ति देता है। आपने आशु-कविता के माध्यम से विभिन्न छन्दों में विशिष्ट श्लोकों की रचना की है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. **तनावग्रस्तोऽयं विविधभययुक्तश्च मनुजः,**
विधत्ते सन्तापं प्रशमसमभावाद् विरहितः।
शुभं प्रेक्षाध्यानं सहजसुखदं विश्ववरदं,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आज का यह मनुष्य तनावग्रस्त और विभिन्न प्रकार के भयों से युक्त है। वह शान्ति और समता के अभाव में सन्ताप का अनुभव कर रहा है। ऐसी स्थिति में सहज सुख देने वाली तथा विश्व के लिए वरदान स्वरूप प्रेक्षाध्यान की प्रशस्त पद्धति आप द्वारा प्रणीत है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

5. **विकासो बुद्धेः स्याद् विशदतरभावेन सहितः।**
पवित्रा लेश्या चेत् प्रखरमतिलाभोऽपि सुफलः।
शिवा शिक्षाक्षेत्रे बुधनरमता जीवनकला,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

यदि विशदभावों के साथ बुद्धि का विकास होता है तथा लेश्या (भावधारा) पवित्र होती है तो बुद्धि की प्रखरता भी सुफलदायी होती है। इसी विचारधारा से शिक्षा के क्षेत्र में कल्याणकारी तथा विद्वज्जनों-शिक्षाविदों द्वारा सम्मत जीवन-विज्ञान (जीने की कला) का आयाम आपके द्वारा प्रवर्तित हुआ, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

6. **अहिंसा-शक्तीनां भवतु समवायः सुखकरः,**
सदा यात्रा भूयात् विविधजनताया हितकृते।
जगत्यां तेजस्ते प्रहरतुतमां व्याप्ततिमिरं,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आप द्वारा समायोजित 'अहिंसा समवाय' अहिंसक शक्तियों का सुखकर समवाय हो। आपकी यात्रा सदा विविध प्रकार के जनसमूह के हित के लिए हो। आपकी तेजस्विता जगत् में व्याप्त अन्धकार-बुराइयों पर प्रहार करने वाली व विनष्ट करने वाली हो, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. दयाभावः पुण्यो विलसतितरां पूतहृदये,
प्रकामं वात्सल्यं प्रवहति सुधातुल्यममलम्।
प्रसन्ना मुद्रेयं स्फुरति वदने शान्तिजननी,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आपका पवित्र हृदय निर्मल करुणाभाव से परिपूर्ण है। आपके नेत्रों से अमृत के समान स्वच्छ अत्यधिक वात्सल्य प्रवाहित होता है। आपके मुख पर स्फुरित होने वाली यह प्रसन्नमुद्रा शान्ति उत्पन्न करने वाली है, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

8. शरच्चन्द्रश्वेतो गणगगनभानुर्गतमलः,
सुलब्धा प्रख्यातिः प्रणयन-कलायां कविकुले।
प्रदत्तं विज्ञेभ्यः कठिनतरपृच्छा-प्रतिवचः,
महाप्रज्ञः पूज्यो जिनपतिसरूपो गुरुवरः।।

आप शरदऋतु के चन्द्रमा के समान धवल हैं, गण-आकाश में चमकते हुए सूर्य हैं। आपने साहित्य-निर्माण कला में विद्वत्समूह में विशिष्ट ख्याति अर्जित की है। आपने विज्ञजनों के जटिल प्रश्नों के उत्तर सहजता और सरलता से दिये हैं, ऐसे पूज्य गुरुवर महाप्रज्ञ तीर्थंकर के तुल्य हैं।

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाश्रमण अष्टकम्

(साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा द्वारा रचित)

1. श्रेयस्करः सुखकरः सुमतिप्रदाता,
सर्वप्रियो हितकरः सुसमाधिदाता।
सत्यव्रती श्रमरतिश्च महातपस्वी,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जो श्रेयस्कर हैं, सुख के स्रष्टा हैं, सुमति (श्रेष्ठ मति) प्रदाता हैं, सबके प्रिय हैं, हित सम्पादित करने वाले हैं, समस्याओं के सम्यक् समाधायक हैं, सत्य जिनका व्रत है, श्रम जिन्हें प्रिय है, जो महातपस्वी हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

2. धत्ते क्षमां श्रयति मुक्तिमनाविलां वै,
पुष्णाति नित्यमृजुतां सह मार्दवेन।
जागर्त्यहो! श्रमणधर्मसुसाधनाय,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जो क्षमाशील हैं, जिनकी अनासक्ति विशद है, ऋजुता और मुदुता पुष्ट है, जो सदैव श्रमण धर्म की साधना के प्रति जागरूक हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

3. स्वात्मोपलब्धिरिति लक्ष्यमिदं महीयः
लक्ष्यं द्वितीयमनिशं खलु संघसेवा।
श्री-जैन-शासन-विकास विवर्धना च,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जिनके दो महान् लक्ष्य हैं। पहला लक्ष्य है–आत्मोपलब्धि और दूसरा लक्ष्य है–तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा एवं जैनशासन की श्रीवृद्धि, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. **कीदृग् भवेन्मुनिरयं प्रथितो हि प्रश्नः,**
कल्याणभाग् मुनिरसौ मुदितः प्रमाणम्।
आदर्शरूपममलं यतिनां पुरस्तात्,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

मुनि कैसा होना चाहिए? इस सन्दर्भ में मुनि के मानकों की चर्चा करते हुए आचार्यश्री तुलसी ने मुनि मुदित (आचार्यश्री महाश्रमण) को प्रमाण रूप प्रस्तुत करते हुए कहा—मुनि हो तो इसके जैसे भद्र होना चाहिए। यह मुनियों के लिए विशद आदर्श रूप है, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

5. **शान्तः सुनीतिकुशलो विमलो विशिष्टः,**
सौभाग्य-पौरुषयुतः प्रखरः प्रवक्ता।
साम्ये स्थितः स्थिरमतिध्रुवयोगयुक्तः,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जो शान्त और नीति निपुण हैं, विमल हैं, वैशिष्ट्य प्राप्त हैं, जिनके जीवन में भाग्य और पुरुषार्थ की युति है, जो प्रखर वक्ता हैं, साम्ययोगी, स्थितप्रज्ञ और ध्रुव योग से युक्त हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

6. **वर्यो विनेयनिवहे विदितो वदान्यः,**
सभ्योऽन्तरंगसमितौ मुदितो मुमुक्षुः।
आराधको गुरुदृशः सुसमर्पितात्मा,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

मुनि मुदित जो शिष्य समुदाय में श्रेष्ठ, प्रख्यात, उदार और अंतरंग समिति के सदस्य रहे हैं, जो गुरुदृष्टि के आराधक और पूर्ण समर्पित रहे हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. सर्वं समीक्ष्य कुरुते प्रकृतं विलोक्य,
किं वा भविष्यति मया करणीयमस्ति।
संभावितं समुचितं प्रविलोकमानः,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जो अपने कृत कार्य को ध्यान में रख उसकी समीक्षा करके कार्य करते हैं, जो भविष्य में मेरे लिए क्या करणीय है, इस पर दृष्टि रखते हुए समुचित संभावनाएं खोजते हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

8. गांभीर्य-धैर्यसहितोऽवहितो नितान्त-
माध्यात्मिको मितवचा विदुषां वरेण्यः।
तेजोमयो जितभयो ननु पापभीरुः,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

जिनमें गम्भीरता, धीरता जैसे विशिष्ट गुण हैं, जिनकी एकाग्रता उत्कर्ष पर है एवं जो आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धारक हैं, जो मितभाषी एवं विद्वज्जनों में अग्रणी हैं, जो तेजस्वी, अभय और पापभीरु हैं, ऐसे पवित्र एवं प्रभास्वर व्यक्तित्व के धारक आचार्यश्री महाश्रमण हमें पवित्र करें।

⊙⊙⊙⊙

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तृतीय प्रकरण : श्रावक साधना

सच्चे श्रावक की पहचान

1. जिसने 'मैं कौन हूं' इसकी खोज आरम्भ कर दी है।
2. जो शान्त और सहज जीवन जीने का आदी है।
3. जो आन्तरिक क्रान्ति के लिए नित्य नये प्रयोग करता रहता है।
4. जिसके जीवन में मानसिक कम से कम उलझनें हैं।

चार प्रकार के श्रावक

1. **माता-पिता तुल्य**–माता-पिता समान श्रमण-संघ का सदा हित चिन्तन तथा साधु-साध्वियों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाला।
2. **भाई तुल्य**–आवश्यकता उत्पन्न होने पर आपत्ति काल में संघ सेवा का दायित्व बोध करने वाला।
3. **मित्र तुल्य**–प्रीतिवश संघ की सेवा करने वाला।
4. **सौत तुल्य**–साधु-सन्तों की कमियों को सदा देखते रहने वाला।

तुंगिया नगरी के श्रावकों के कुछ लक्षण

1. वे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और दीप्तिमान थे।
2. उनके आश्रय में अनेक व्यक्ति जीवनयापन करते थे।
3. समाज में उनका विशेष प्रभाव था। वे किसी से पराभूत नहीं थे।
4. वे जीव अजीव आदि नौ तत्त्वों के विशेषज्ञ थे।
5. निर्ग्रन्थ प्रवचन में उन्हें किसी प्रकार की शंका नहीं होती थी।
6. वे किसी चमत्कार को देखकर भी अन्य दर्शन में जाने की आकांक्षा नहीं करते थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. उनका रोम-रोम निर्ग्रन्थ प्रवचन में अनुरक्त था।
8. उनके द्वार सदा साधुओं के लिए खुले रहते थे।
9. वे अष्टमी चतुर्दशी अमावस्या और पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पौषध व्रत करते थे।
10. वे श्रमण निर्ग्रन्थों को विधिवत अशनपान आदि सब प्रकार का दान देते थे।

(भगवती सूत्र 2/5/सूत्र 94)

भगवान महावीर के दस प्रमुख श्रावक

1. आनन्द	2. कामदेव
3. चूलणीपिता	4. सुरादेव
5. चुल्लशतक	6. कुण्डकौलिक
7. शकडालपुत्र	8. महाशतक
9. नन्दिनीपिता	10. लेयिकपिता

उपासक दशा

स्वास्थ्य रक्षा के नियम

1. बाल सूर्य में नहीं खाना (नवकारसी करना)।
2. बार-बार नहीं खाना।
3. क्रोध में नहीं खाना।
4. खाते समय नहीं बोलना।
5. खाने के तुरन्त बाद पानी नहीं पीना।
6. ठूंस-ठूंस कर नहीं खाना।
7. रात को नहीं खाना।
8. भोजन के बाद सौ कदम शान्त भाव से चलना।
9. भोजन के बाद दायीं करवट नहीं सोना।
10. ब्रह्म वेला में शय्या त्याग करना।
11. इन्द्रियों को अत्यधिक नहीं थकाना।
12. मिताहार दीर्घायु का कारण है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भोजन शुद्धि

1. मांस आदि अभक्ष्य वस्तु न खायें।
2. मिठाई व तली हुई वस्तुएं न खाएं।
3. भूख न हो, खाने की रुचि न हो तो खाना न खाएं।
4. भोजन करते समय कल्पना और स्मृति को स्थान न दें।
5. भोजन के समय मौन रखें।
6. चलते-चलते खाना न खाएं।
7. 'खाने को पीना चाहिए और पानी को खाना चाहिए' इस लोकोक्ति का अर्थ है कि खाने को इतना चबाया जाये कि खाना तरल हो जाये और पानी गाढ़ा बन जाये।

यदि आप धार्मिक हैं तो जवाब दीजिए

1. क्या आपने कभी आन्तरिक पराधीनता की अनुभूति की है?
2. क्या आपको कल्याणकारी कार्य करते समय समाज और परिवार का भय सताता है?
3. जब आप सोते हैं तब कितनी बार करवटें बदलते हैं?
4. किसी इच्छा के प्रबल होने पर आपके मन में बेचैनी कितने समय तक रहती है?
5. मन की अशान्ति मिटाने के लिए आपके पास कोई अनुभूत प्रयोग है?
6. स्वयं के द्वारा निर्मित समस्या का समाधान स्वयं में है, क्या आपके चरण इस दिशा में गतिमान हैं?
7. क्या आप आय से अधिक व्यय करने की दुश्चिन्ता मोल लिए हुए हैं?

श्रावक की दैनिक जीवन चर्या

1. मैं मन की शान्ति के लिए प्रतिदिन प्रातः आसन, मंत्र-जाप और ध्यान का अभ्यास करूंगा।
2. मैं प्रतिदिन पन्द्रह मिनट सत्साहित्य का स्वाध्याय करूंगा।
3. मैं आत्म-तेज बढ़ाने के लिए प्रतिदिन एक घंटा मौन करूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. मैं सप्ताह में कम-से-कम एक बार सामूहिक प्रार्थना, सामायिक, सन्तदर्शन तथा गोष्ठी में भाग लूंगा।
5. मैं प्रतिदिन सोते समय शुभ संकल्पों को दोहराऊंगा।
6. गृहस्थ जीवन में पूरी प्रामाणिकता निभाई जा सकती है, इस पर मैं नित्य नये प्रयोग करूंगा।
7. मेरे कारण कहीं परिवार में अशान्ति तो नहीं बढ़ रही है, प्रतिदिन इसका चिन्तन करूंगा।
8. विसर्जन पद्धति से ममत्व का भाव घटता है, अतः विसर्जन करूंगा।

प्रातः उठकर मैं करूं, महामंत्र का जाप।
और करूं शुभ भावना, कट जाए सब पाप॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक कैसा हो?

1. **अक्षुद्र**–जिसका जीवन-व्यवहार अक्षुद्र अर्थात् गम्भीर हो।
2. **रूपवान**–शरीर व इन्द्रियों से सक्षम व मजबूत अस्थि-संस्थान वाला हो।
3. **प्रकृति सौम्य**–जिसके स्वभाव में शान्ति और सहिष्णुता का भाव हो।
4. **लोकप्रिय**–अपने व्यवहारों से समाज में लोकप्रियता प्राप्त की हो।
5. **अक्रूर**–जो क्रूरता प्रभावित दमन और शोषण को प्रश्रय नहीं देता हो।
6. **पापभीरु**–पापात्मक कार्यों को करते संकोच का जिसे अनुभव हो।
7. **अशठ**–जिसके जीवन में छल, प्रपंच, माया, धूर्तता न हो।
8. **सुदक्ष**–जो सभी आवश्यक कार्य कुशलता पूर्वक करता हो तथा जिसकी कार्यविधि सभी के लिए अनुकरणीय हो।
9. **लज्जालु**–अकरणीय कार्यों से दूर रहकर सदाचारी हो।
10. **दयालु**–क्षमा, दया, करुणा, प्रेम आदि के भाव रखता हो।
11. **मध्यस्थ**–राग और द्वेष-वश किसी का पक्ष नहीं लेकर जो न्याय का आदान प्रदान करता हो।
12. **गुणानुरागी**–गुणवान व्यक्तियों का बहुमान, निर्गुण व्यक्तियों की उपेक्षा तथा गुण संग्रह में तत्पर रहता हो।
13. **सत्कथ**–विवेक ही धर्म है, यह सोचकर सदा सत्य बोलता हो।
14. **सुपक्षयुक्त**–जो अपनी धर्म यात्रा में परिवार को अनुकूल बनाये रखने में समर्थ हो।
15. **सुदीर्घदर्शी**–जो सुदूर भावी परिणामों को सोचकर चलता हो।
16. **विशेषज्ञ**–जिसे हेय-ज्ञेय तथा उपादेय पदार्थों की विशेष जानकारी हो।
17. **वृद्धानुयायी**–वृद्धों के अनुभवों का जो अनुगमन करता हो।
18. **विनीत**–मोक्ष प्राप्ति का मूल विनय है। यह सोचकर सबके प्रति जो विनम्र व्यवहार करता हो।
19. **कृतज्ञ**–जो अपने धर्माचार्य को परम उपकारी मानता हो।
20. **परहितकारी**–जो औरों को न्याय मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता हो।
21. **लब्ध-लक्ष्य**–जिसे अपने लक्ष्य का विवेक व स्थिरता प्राप्त हो गयी हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक के तीन मनोरथ

1. कब मैं अल्पमूल्य एवं बहुमूल्य परिग्रह का प्रत्याख्यान करूंगा।
2. कब मैं मुण्ड हो गृहस्थपन छोड़ साधुव्रत स्वीकार करूंगा।
3. कब मैं अन्तिम समय में संलेखना व अनशन कर, मृत्यु की इच्छा न करता हुआ समाधि मरण को प्राप्त करूंगा।

श्रावक के अभिनव तीन मनोरथ

1. **कदा नु अहं आवेशमुक्तो भविष्यामि।**
   –कब मैं आवेश-मुक्त बनूंगा/बनूंगी।
2. **कदा नु अहं अप्रामाणिकतामुक्तो भविष्यामि।**
   –कब मैं अप्रामाणिकता मुक्त बनूंगा/बनूंगी।
3. **कदा नु अहं रूढ़िमुक्तो भविष्यामि।**
   –कब मैं रूढ़ि-मुक्त बनूंगा/बनूंगी।

चार विश्राम

जैसे भारवाहक के चार विश्राम हैं–

1. गठरी को बायें से दायें कन्धे पर रखना।
2. देह-चिन्ता से निवृत्त होने के लिए उसे नीचे रखना।
3. सार्वजनिक स्थान में विश्राम करना।
4. स्थान पर पहुंचकर उसे उतार देना।

वैसे ही श्रावक के चार विश्राम हैं–

1. शीलव्रत, गुणव्रत तथा उपवास ग्रहण करना।
2. सामायिक तथा देशावकाशिक व्रत लेना।
3. अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पौषध करना।
4. अन्तिम मारणान्तिक-संलेखना व्रत लेना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक धर्म स्थान में इन कार्यों से परहेज करें

1. जूते-चप्पल तथा गन्दे पैरों सहित धर्मस्थान में नहीं जाना चाहिए।
2. धर्मस्थान में भोजन नहीं करना चाहिए और मुंह में पान-सुपारी नहीं रखनी चाहिए।
3. सबसे बाद में आकर आगे नहीं बैठना चाहिए।
4. निन्दा, अवज्ञा, कलह तथा वाद-विवाद नहीं करना चाहिए।
5. व्याख्यान आदि प्रसंगों पर परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए।
6. धर्मस्थान में नींद, हंसी-मजाक तथा विवाह आदि की चर्चा नहीं करनी चाहिए।
7. साधु-संतों की सेवा के समय दीवार का सहारा लेकर, पैर फैलाकर, पांव पर पांव चढ़ाकर नहीं बैठना चाहिए।
8. स्थान की शोभा सामायिक करना, माला फेरना, पुस्तक पढ़ना, मौन व ध्यान तथा तत्त्व चर्चा करना है।

श्रावक व्याख्यान के समय कैसे अनुशासित रहें

1. व्याख्यान के प्रारम्भ और अन्त में खड़े होना चाहिए।
2. व्याख्यान में परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए।
3. व्याख्यान में माला अनुपूर्वी नहीं करनी चाहिए।
4. व्याख्यान में प्रश्न नहीं करना चाहिए।
5. व्याख्यान में यदि बच्चे रोते हों तो उस स्थान को छोड़ देना चाहिए।
6. आते-जाते लोगों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।
7. व्याख्यान के अन्त में कोई एक नियम ग्रहण करना चाहिए।
8. यथा संभव सामायिक में ही व्याख्यान सुनना चाहिए।
9. यथा संभव व्याख्यान में मौन की साधना करनी चाहिए।

भोजन से पहले करे, तीन बार नवकार।
छोटा तप नवकारसी, जैनों का आचार॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उच्च गति का बन्ध दस निमित्तों से

1. संतों के दर्शन न होने पर पश्चात्ताप करने से।
2. प्रवचन न सुन सकने पर पश्चात्ताप करने से।
3. दान देते समय अशुद्ध होने पर पश्चात्ताप करने से।
4. शक्ति होते हुए न पढ़ने पर पश्चात्ताप करने से।
5. साधर्मिक की सम्भाल न करने पर पश्चात्ताप करने से।
6. अनुकूल योग होने पर भी सुपात्र दान न देने पर पश्चात्ताप करने से।
7. पूर्व और पश्चिम रात्रि में साधु और श्रावक धर्म की चिंतवना न करने पर पश्चात्ताप करने से।
8. सामायिक तथा प्रतिक्रमण शुद्ध न होने पर पश्चात्ताप करने से।
9. साधु-साध्वियों की सार-सम्भाल न करने पर पश्चात्ताप करने से।
10. त्यागी मुनियों को विहार कराने न जाने पर पश्चात्ताप करने से।

दस प्रत्याख्यान विधि

1. **नमस्कार सहिता**–सूर्योदय के पश्चात् एक मुहूर्त तक कुछ नहीं खाना।
2. **पौरूषी**–एक प्रहर दिन चढ़े तब तक कुछ नहीं खाना।
3. **पुरिमार्ध**–आधे दिन तक कुछ नहीं खाना।
4. **एकाशन**–दिन में सिर्फ एक बार, एक जगह बैठकर एक घंटे से अधिक नहीं खाना।
5. **एकल ठाणा**–दिन में एक बार, एक जगह मौन पूर्वक एक घण्टे से अधिक नहीं खाना।
6. **नीवी (निर्विगय)**–एकाशन में दूध, दही आदि छ विगय का त्याग।
7. **आयंबिल**–एक धान्य (अलूणा व लूखा) एक घंटे से अधिक बैठकर नहीं खाना।
8. **उपवास**–तिविहार या चौविहार त्याग करना।
9. **अभिग्रह**–अभिग्रह की अवधि सूर्योदय से 12 बजे तक है, तब तक न फले तो पारणा करने में आपत्ति नहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10. **चरम प्रत्याख्यान–**दिन अस्त होने के 48 मिनिट पूर्व खाने पीने का त्याग।

नोट : 1. नमस्कार सहिता 2. पौरूषी 3. पुरिमार्ध 4. चरम प्रत्याख्यान 5. अभिग्रह–ये पांच चौविहार किये जाये, शेष पांच तिविहार किये जा सकते हैं।

श्रावक को वर्ष में एक बार दस प्रत्याख्यान अवश्य करने चाहिए।

श्रावक निष्ठा-पत्र

तेरापंथ श्रावक संघ अनुशासन एवं समर्पण की दृष्टि से एक अद्भुत धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु द्वारा की गयी मर्यादाएं उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा की गयी उनकी संपुष्टि तथा श्रमण संघ द्वारा की गयी अनुपालना उसका मुख्याधार रहा है। श्रावकों के लिए भी ऐसी कुछ मर्यादाओं की अपेक्षा लम्बे समय से अनुभव की जा रही थी। आचार्य भिक्षु के 180वें निर्वाणोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री तुलसी द्वारा एक निष्ठा-पत्र प्रस्तुत किया गया, उससे एक चिर अपेक्षित आवश्यकता की संपूर्ति हुई है। उस निष्ठा-पत्र को यहां अविकल रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. मैं आचार्य भिक्षु की मर्यादा, तेरापंथ धर्म-शासन तथा शासनपति के प्रति समर्पित रहूंगा।
2. मैं शासन की अखण्डता के लिए सतत जागरूक रहूंगा।
   दलबन्दी को प्रोत्साहन नहीं दूंगा।
3. मैं शासन से बहिर्भूत व्यक्ति (टालोकर) को प्रश्रय नहीं दूंगा।
4. मैं आचार्य की आज्ञा के प्रतिकूल प्रवृत्ति को समर्थन नहीं दूंगा।
5. मैं शासन के किसी साधु-साध्वी में दोष जान पड़े तो स्वयं उसे या आचार्य को जताऊंगा, प्रचारित नहीं करूंगा।
6. मैं अपने खान-पान की शुद्धि को बनाये रखूंगा।
7. मैं प्रतिदिन एक सामायिक या कम से कम 20 मिनट धर्मोपासना करूंगा।

आचार्यश्री तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक प्रायश्चित्त-विधि

साधु-साध्वियों का योग हो तो उन्हीं के पास आलोचना करके प्रायश्चित्त लेना चाहिए। किसी कारणवश उनका योग न हो तो भगवान की साक्षी से निम्नलिखित विधि के अनुसार प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए–

1. एक सामायिक में एक सचित्त कांटा आदि निकले तो 25 बार नमस्कार मंत्र का जाप, दो निकले तो 50 बार, इसी प्रकार बढ़ाते रहें।
2. वर्षा आदि के कारण से सामायिक में कच्चे पानी के छींटे लगे हों तो साधारण छींटों के लिए एक माला और ज्यादा लगे तो 3,4,5 माला फेरें।
3. लघु शंका आदि के कारण रात को सामायिक में अछाया लगे तो 3,4 नमस्कार महामंत्र की माला फेरें।
4. सामायिक में कृमि, कीड़ी, मक्खी आदि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय एवं चतुरिन्द्रिय जीव की विराधना हो तो 2,3,4 नमस्कार महामंत्र की माला फेरें।
5. सामायिक में खुले मुंह बोला जाये तथा छींक-उबासी आते समय यतना न रहे तो एक माला फेरें। भूल से जल्दी पूरी कर ली जाये तो एक सामायिक तथा जान बूझकर अधूरी पारे तो तीन सामायिक करें।
6. नवकारसी, प्रहरसी आदि भूल से टूट जाये तो जितना समय शेष हो उतना पुनः करें और जान बूझकर तोड़ी हो तो एक-एक की तीन सामायिक करें।
7. पांच तिथियों के दिन हरी-सब्जी, रात्रि भोजन एवं अब्रह्मचर्य का त्याग यदि भूल से टूटे तो दूसरे दिन उनका पालन करना तथा जान कर तोड़े गये हो तो एक-एक दिन के बदले तीन-तीन दिन उनका पालन करें।
8. उपवास में भूल से कच्चा पानी पीया जाये तो तीन सामायिक करें।
9. कच्चा पानी, हरी साग-सब्जी व रात्रि भोजन का यावज्जीवन के लिए त्याग हो और वह यदि जानकर तोड़ा गया हो तो एक तेला। इससे अधिक बार दोष लगा हो तो यथासंभव तपस्या बढ़ाएं।
10. यावज्जीवन कुशील सेवन का त्याग हो, उसमें जितनी बार दोष लगे, उतनी ही बार एक-एक तेला करना चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

11. प्रतिक्रमण का नियम हो और भूल से न कर पाये तो दूसरे दिन करें।
12. प्रतिदिन 14 नियम चितारने का संकल्प हो और न चितार पायें तो एक दिन का एकाशन करें।
13. किसी द्रव्य का जिस दिन त्याग हो और भूल से उस दिन वह खा लिया जाये तो दूसरे दिन न खायें या एक प्रहरसी करें।

नोट : त्याग किया हुआ काम भूल से कर लें और फिर याद आ जाये तो दुबारा न दोहरायें। जैसे रात्रि भोजन का त्याग है, भूल से मुंह में सुपारी डाल ली हो तो याद आने पर तुरन्त निकाल दें।

आचार्यश्री तुलसी

सन्तों से सामान्य भाषा व्यवहार कैसे करें?

	अशुद्ध		शुद्ध
1.	*आप कब आये?*	–	आप कब पधारे?
2.	*आप कब जाओगे?*	–	आप कब विहार करेंगे?
3.	*आप मेरे घर ठहरें।*	–	मुझे शय्यातर का लाभ दिराएं।
4.	*आप कितने लोग हैं?*	–	आप कितने ठाणे हैं?
5.	*यहां कितने दिन रहने का प्रोग्राम है?*	–	यहां कितने दिन विराजने का भाव है?
6.	*आप बहुत जल्दी चलकर आये हैं।*	–	आप उग्र विहार करके पधारे हैं।
7.	*आपका स्वास्थ्य कैसा है?*	–	आपके सुखसाता है?
8.	*आप कहां ठहरे हैं?*	–	आपका ठिकाना कहां है?
9.	*रास्ते में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?*	–	विहार में कोई परीषह तो नहीं हुआ?
10.	*हमारा गांव अच्छा है।*	–	हमारा क्षेत्र साताकारी है।
11.	*हमें याद करते रहना।*	–	हमारे पर कृपा दृष्टि रखना।
12.	*हमें आशीर्वाद दें।*	–	हमें मंगल पाठ सुनाएं।
13.	*सॉरी, मुझे खेद है।*	–	मैं आपको खमाता हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

14. *आपके सम्बन्धी लोग आये हैं।* – आपके न्यातिले आये हैं।

15. *साथ वाला आदमी कहां है?* – काशीद कहां है?

16. *सुबह हमारे घर भिक्षा के लिए पधारें।* – प्रथम प्रहर की गोचरी हमारे यहां करायें।

17. *सन्तों की वाणी 'तहत्' कहकर झेलें।*

सम्यक्त्व के लक्षण

सम्यक्त्व के पांच लक्षण हैं–

1. शम–क्रोध, आदि कषायों की शान्ति।
2. संवेग–मोक्ष की अभिलाषा।
3. निर्वेद–संसार से विरति।
4. अनुकम्पा–प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव।
5. आस्तिक्य–आत्मा, कर्म आदि में विश्वास।

सम्यक्त्व के पांच दूषण हैं–

1. शंका–तत्त्वों में सन्देह करना।
2. कांक्षा–कुमत की वाञ्छा करना।
3. विचिकित्सा–धर्म के फल में सन्देह करना।
4. परपाषण्डप्रशंसा–मिथ्यादृष्टि और व्रतभ्रष्ट पुरुषों की प्रशंसा करना।
5. परपाषण्डपरिचय–मिथ्यादृष्टि और व्रतभ्रष्ट पुरुषों का परिचय करना।

सम्यक्त्व के पांच भूषण हैं–

1. स्थैर्य–धर्म में स्थिर रहना।
2. प्रभावना–धर्म की महिमा बढ़ाना।
3. भक्ति–भक्ति करना।
4. कौशल–धर्म की जानकारी प्राप्त करना।
5. तीर्थसेवा–साधु-संघ की उपासना करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्यक्त्वी की पहचान

1. **भेद विज्ञान** – जड़-चेतन की भिन्नता का बोध
2. **आत्मौपम्य बुद्धि** – सबको अपने बराबर समझना
3. **आग्रह की अल्पता** – सत्य के प्रति सहज दृष्टि
4. **पापभीरुता** – पापात्मक प्रवृत्तियों में सतत जागरूकता
5. **क्रोधादि कषायों की अल्पता** – समभाव

(आचार्य कुन्दकुन्द)

गुरु धारणा

अरहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं॥

- मेरे धर्मदेव अरहंत भगवान महावीर स्वामी हैं।
- मेरे धर्मगुरु आचार्यश्री महाश्रमण हैं।
- मेरा धर्म जैन धर्म तेरापंथ है।
- मैं देव, गुरु और धर्म के प्रति दृढ़ आस्था रखूंगा।

मैं आत्म शुद्धि/जीवन-विकास के लिए निम्नांकित संकल्पों को स्वीकार करता हूं–

1. मैं शराब, मांस और अण्डे का सेवन नहीं करूंगा।
2. मैं नशा-मुक्त जीवन जीने का प्रयत्न करूंगा।
3. मैं आवेशवश आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
4. पर-हत्या नहीं करूंगा।
5. भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।
6. मैं हरे-भरे बड़े वृक्ष जड़ से नहीं काटूंगा।
7. मैं प्रतिदिन नमस्कार मंत्र की एक माला जपूंगा अथवा इक्कीस बार स्मरण करूंगा।
8. मैं यथासंभव संवत्सरी का उपवास/व्रत करूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बारह भावना

1. अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥

2. अशरण भावना

दल-बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती बिरियां जीव को, कोई न राखनहार॥

3. संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा-वश धनवान।
कहू न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान॥

4. एकत्व भावना

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूं या जीव को, साथी सगो न कोय॥

5. अन्यत्व भावना

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय॥

6. अशुचि भावना

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥

7. आस्रव भावना

जग वासी घूमें सदा, मोह नींद के जोर।
सब लूटे नहीं दीसता, कर्म-चोर चहुं ओर॥

8. संवर भावना

मोह नींद जब उपशमे, सतगुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रुकें, तब कुछ बने उपाय॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9. निर्जरा भावना

ज्ञान-दीप तप-तैल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥

10. लोक भावना

चौदह रज्जू उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान।
तामे जीव अनादि तें, भरमत है बिन ज्ञान॥

11. बोधि-दुर्लभ भावना

धन-जन कंचन राज-सुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान॥

12. धर्म भावना

जाचे सतगुरु देय सुख, चिन्तित चिन्ता रेन।
बिन जाचे बिन चिन्तये, धर्म सदा सुख देन॥

सोलह भावनाएं

अनित्य भावना

- काल सामने है खड़ा, पंखी पर ज्यों बाज।
  रावण जैसे भूप का, उठा ले गया ताज॥

अशरण भावना

- रोग, शोक और मरण में, शरण बनेगा कौन?
  सारे साथी देखना, खड़े रहेंगे मौन॥

संसार भावना

- नाना योनि में लिया, जन्म अनन्ती बार।
  नरक-ताप, तिर्यंच में, कष्ट सहे अनपार॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एकत्व भावना

- एकाकी नर जनमता, मरता है वह एक।
  कर्म अकेला भोगता, विकट कर्म की रेख॥

अनित्य भावना

- पुत्र, मित्र कलत्र, धन, मान और अपमान।
  है आत्मा से भिन्न सब, फिर किसका अभिमान॥

अशौच भावना

- है शरीर मल-मूत्र से, भरा हुआ अत्यन्त।
  क्यों करते अनुराग तुम, कहते सारे संत॥

आश्रव भावना

- धागे से कपड़ा बने, मिट्टी से घर देख।
  कर्म-सूत्र से कर रहे, बन्धन जीव अनेक॥

संवर भावना

- कर्मों के आगमन को, संवर करता बंध।
  रोग-नाश करती दवा, त्यों संवर निर्द्वन्द्व॥

निर्जरा भावना

- संचित कर्म प्रभाव से, आत्मा बनी अशुद्ध।
  शुभ भावों के योग से, बन जाये अब शुद्ध॥

धर्म भावना

- नरक-कूप से जीव को, बाहर करता धर्म।
  राग, द्वेष जिसमें नहीं, यही धर्म का मर्म॥

लोक भावना

- लोक-पुरुष धर्मादि षट्-द्रव्यों का समवाय।
  कर्ता कोई है नहीं, शाश्वत इसका न्याय॥

बोधि-दुर्लभ भावना

- सम्यग् दर्शन रत्न की, प्राप्ति दुर्लभ जान।
  महावीर की देशना, सुनने से कल्याण॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैत्री भावना

- जन-जन का उत्थान हो, भाव रहे दिन रात।
  शत्रु नहीं कोई यहां, सब हैं मेरे भ्रात॥

प्रमोद भावना

- देख सुखी संसार को, करे न मन में द्वेष।
  ईर्ष्यालु दुःखी सदा, नित्य भोगता क्लेश॥

करुणा भावना

- दीन दुःखी जन देखकर, जागे करुणा भाव।
  रोग, शोक से मुक्त हो, पार लगाये नाव॥

मध्यस्थ भावना

- सब मेरे अनुकूल हो, यह नहीं संभव बात।
  किन्तु रहूं मध्यस्थ मैं, होगा फल साक्षात॥

रचयित्री : *साध्वी राजीमती*

शील की नवबाड़

1. विविक्त स्थान
2. विकथा वर्जन
3. एकासन वर्जन
4. दृष्टि संयम
5. श्रुति संयम
6. स्मृति संयम
7. खाद्यपेय का संयम
8. अतिभोजन वर्जन
9. विभूषा वर्जन
10. इन्द्रिय विषयों का संवर (कोट)

(उत्तराध्ययन 16/1/10)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ब्रह्मचारी के लिए नित्य प्रयोग की बातें

1. ध्यान से वीर्य का ऊर्ध्वीकरण करना।
2. सौन्दर्य के प्रसाधन, सुगन्धित द्रव्यों तथा सायं स्नान से बचाव।
3. सत्साहित्य का विशेष वाचन।
4. भोग की नश्वरता का चिन्तन।
5. सिद्ध-पुरुषों का सम्पर्क।
6. उत्कट ब्रह्मचारी स्थूलिभद्र मुनि का पुनः पुनः स्मरण एवं ध्यान।
7. प्रतिदिन नियमित योगाभ्यास (सिद्धासन, गोरक्षासन, गोमुखासन, गुदा- ताड़न, शीर्षासन या सर्वांगासन का अभ्यास, अश्विनी-मुद्रा तथा योग मुद्रा का अभ्यास)

चौदह नियम साधना

श्रावक को अपने जीवन में खाद्य, पेय और अन्य भोगोपभोग विषयक प्रवृत्तियों में मर्यादा (सीमा) निश्चित करनी चाहिए। संयम से जीवन अनुशासित होता है।

1. **सचित्त–**प्रतिदिन अन्न, फल, पानी आदि के रूप में जिन सचित्त वस्तुओं का सेवन करते हैं उनकी सीमा निश्चित करना। प्रस्तुत सीमा-संख्या, तोल-माप के रूप में की जाती है।
2. **द्रव्य–**खाने-पीने की वस्तुओं की सीमा, जैसे–भोजन सामग्री में इतनी (गणना) संख्या से अधिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करूंगा।
3. **विगय–**घी, तेल, दूध, दही, गुड़ और मिठाई–इन छह विगय की सीमा करना।
4. **पन्नी–**जूते-मोजे, चप्पल आदि की सीमा रखना, जैसे–मैं आज दो जोड़ी से अधिक नहीं पहनूंगा।
5. **ताम्बूल–**पान, सुपारी, इलायची, चूर्ण आदि मुखवास के द्रव्यों की सीमा करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. **वस्त्र**–प्रतिदिन पहनने के वस्त्रों की सीमा निश्चित करना। जैसे–मैं आज तीन जोड़ी वस्त्र से ज्यादा धारण नहीं करूंगा।
7. **कुसुम**–फूल, इत्र व अन्य सुगन्धित वस्तुओं की सीमा रखना। जैसे–मैं आज दो सुगन्धित पदार्थों के अतिरिक्त उपयोग नहीं करूंगा।
8. **वाहन**–जहाज, कार, रेल, स्कूटर आदि वाहनों की सीमा रखना।
9. **शयन**–शय्या (घर) स्थान एवं बिछौनों की सीमा रखना।
10. **विलेपन**–केसर, चन्दन आदि लेप करने वाले पदार्थों की सीमा रखना।
11. **अब्रह्मचर्य**–मैथुन सेवन की सीमा रखना।
12. **दिशा**–छहों दिशाओं में यातायात व अन्य जो भी प्रवृत्तियां की जाती हैं, उनकी सीमा करना।
13. **स्नान**–स्नान व जल की मात्रा की सीमा रखना।
14. **भक्त**–अशन (आहार), पान (पानी), खादिम (मेवा), स्वादिम (ताम्बूल) की सीमा रखना।

अणुव्रत साधना

लक्ष्य

- जाति, रंग, सम्प्रदाय, देश और भाषा का भेद भाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्म-संयम की प्रेरणा।
- मैत्री, एकता, शान्ति, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणुव्रत के ग्यारह नियम

1. मैं किसी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।
   - आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
   - भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।
2. मैं किसी पर आक्रमण नहीं करूंगा।
   - आक्रामक नीति का समर्थन भी नहीं करूंगा।
   - विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूंगा।
3. मैं हिंसात्मक उपद्रवों एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
4. मैं मानवीय एकता में विश्वास रखूंगा।
   - जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानूंगा।
   - अस्पृश्य नहीं मानूंगा।
5. मैं धार्मिक सहिष्णुता का भाव रखूंगा।
6. मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
   - मैं अपने लाभ के लिए दूसरे को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
   - छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।
7. मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा निर्धारण करूंगा।
8. मैं चुनाव के सम्बन्ध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।
9. मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।
10. मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊंगा।
    - मादक तथा नशीले पदार्थों–जैसे शराब, गांजा, चरस, हेरोईन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।
11. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।
    - हरे भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
    - पानी का अपव्यय नहीं करूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वर्गीय-अणुव्रत

विद्यार्थी अणुव्रत

- मैं परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूंगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगा व अश्लील साहित्य नहीं पढ़ूंगा, अश्लील चल-चित्र नहीं देखूंगा।
- मैं मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं रुपये या अन्य प्रलोभन से मत (वोट) न लूंगा और न दूंगा।
- मैं दहेज से अनुबन्धित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूंगा और न भाग लूंगा।
- मैं माता-पिता व गुरुजनों के प्रति विनम्र रहूंगा।
- मैं बड़े वृक्ष नहीं काटूंगा और प्रदूषण नहीं फैलाऊंगा।

शिक्षक अणुव्रत

- मैं विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ उसके चरित्र विकास का भी ध्यान रखूंगा।
- मैं अवैध उपायों से विद्यार्थी के उत्तीर्ण होने में सहायक नहीं बनूंगा।
- मैं अपने विद्यालय में दलगत राजनीति को स्थान नहीं दूंगा और न इसके लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करूंगा।
- मैं मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं अणुव्रत प्रसार में अपना योग दूंगा।

व्यापारी अणुव्रत

- मैं व्यापार में प्रामाणिक रहूंगा।
- मैं किसी वस्तु में मिलावट कर या नकली को असली बताकर नहीं बेचूंगा।
- मैं तौल माप में कमी-बेशी नहीं करूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- मैं चोर-बाजारी नहीं करूंगा।
- मैं राज्य-निषिद्ध वस्तु का व्यापार व आयात-निर्यात नहीं करूंगा।
- मैं सौंपी या धरी (बन्धक) वस्तु के लिए इन्कार नहीं करूंगा।

अधिकारी/कर्मचारी अणुव्रत

- मैं रिश्वत नहीं लूंगा।
- मैं अपने प्राप्त अधिकारों का अनुचित प्रयोग नहीं करूंगा।
- मैं अपने कर्तव्य पालन में जान-बूझकर विलम्ब नहीं करूंगा।
- मैं मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।

श्रमिक अणुव्रत

- मैं अपने कार्य में प्रामाणिकता रखूंगा।
- मैं हिंसात्मक उपद्रव एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं मद्यपान, धूम्रपान और नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं जुआ नहीं खेलूंगा।
- मैं बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, मृत्यु-भोज आदि कुरीतियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

श्रमण निर्ग्रन्थों को देने लायक प्रासुक एषणीय 14 प्रकार का दान

1. **अशन-दान**–अचित्त आहार।
2. **पान-दान**–अचित्त पानी।
3. **खाद्य-दान**–मेवा आदि।
4. **स्वाद्य-दान**–मुखवास।
5. **वस्त्र-दान**–कपड़ा।
6. **प्रतिग्रह-दान**–मिट्टी, काष्ठ, प्लास्टिक के बर्तन।
7. **कम्बल-दान**–ऊनी वस्त्र।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. **पाद प्रौंछन-दान**–रजोहरण आदि।
9. **औषध-दान**–जिसमें एक द्रव्य हो।
10. **भेषज-दान**–जिसमें अनेक द्रव्य हो।
11. **पीठ-दान**–छोटा पट्टा तथा बाजोट।
12. **फलक-दान**–बड़ा पट्टा आदि।
13. **शय्या-दान**–निरवद्य स्थान, मकान।
14. **संस्तारक-दान**–तृण आदि का बिछौना।

(भगवती 2/94)

साधु को दान देते समय बारह दोषों से बचें

1. अनादर से देना।
2. अशुद्ध देना।
3. कपट से देना।
4. चेहरा बदल कर देना।
5. निकम्मी वस्तु देना।
6. अत्यधिक देरी लगाना।
7. असम्मानजनक शब्द बोलकर देना।
8. स्वयं शुद्ध होते हुए भी औरों से दिलाना।
9. न्यूनाधिक भाव से देना।
10. अहंकार करते हुए देना।
11. देकर पश्चात्ताप करना।
12. लालच से देना।

गोचरी सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

जैन मुनि की भिक्षा विधि को 'गोचरी' कहा जाता है। जैसे गाय अच्छी-बुरी घास का भेद किये बिना एक ओर से दूसरी ओर चली जाती है, किसी भी पौधे को जड़ से नहीं उखाड़ती। वैसे ही साधु छोटे-बड़े कुल का भेद न करते हुए एवं प्रिय-अप्रिय आहार में राग-द्वेष न करते हुए अनेक घरों से थोड़ा-थोड़ा ग्रहण कर अपना काम चलाते हैं।

जैन मुनि की भिक्षा विधि की अनेक मर्यादाएं हैं। वे शुद्ध भिक्षा ग्रहण करते हैं।

शुद्ध भिक्षा से तात्पर्य है–

1. जिस घर से साधु भिक्षा ले उस घर में मांस, मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थों का खुला व्यवहार न होता हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2. साधु के निमित्त बना हुआ, खरीदा हुआ आदि न हो।
3. साधु को दी जाने वाली वस्तु सचित्त पानी, सचित्त वनस्पति, सचित्त नमक, अग्नि आदि का स्पर्श न करती हो।
4. भिक्षा देने वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार की सचित्त वस्तु से संपृक्त न हो।

सचित्त-अचित्त क्या है?

सचित्त अर्थात् सजीव। जैसे गेहूं, बाजरा आदि धान्य तथा नमक, जीरा, हरे शाक, हरी सब्जियां, जल, अग्नि आदि।

अचित्त अर्थात् निर्जीव। जैसे रोटी, दाल (टुकड़े की हुई), मेवा, मिष्टान्न, उबली हुई सब्जियां आदि।

सूझता-असूझता क्या है?

सूझता-असूझता ये दोनों शब्द जैन परम्परा के साधुओं की भिक्षाचरी से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द है। सूझता अर्थात् शुद्ध, असूझता अर्थात् अशुद्ध। सूझता असूझता द्रव्य भी होता है, घर भी होता है और व्यक्ति भी होता है।

1. सूझती वस्तु उसे कहते हैं जो सचित्त पदार्थ पर रखी हुई न हो, सचित्त का स्पर्श न होता हो, सचित्त से ढकी हुई न हो। बीज आदि का मिश्रण न हो। पूर्व कर्म एवं पश्चात् कर्म (भिक्षा देने से पहले की गयी हिंसा–पूर्व कर्म एवं भिक्षा देने के बाद होने वाली हिंसा–पश्चात् कर्म जैसे देने से पहले एवं देने के बाद कच्चे पानी से हाथ, बर्तन आदि धोना) दोष से युक्त न हो।
2. सूझता व्यक्ति वह होता है जिसके पास भिक्षा देते समय कोई सचित्त वस्तु–पान, इलायची आदि न हो। जिसके हाथ सचित्त से संपृक्त न हो। जिसके कपड़ों में कांटा आदि न लगा हो।
3. उस समय घर असूझता हो जाता है जब भिक्षा देने वाला व्यक्ति देते समय किसी पदार्थ के फूंक मार दे, जेब में सचित्त पदार्थ एवं कपड़ों में कांटा आदि हो, ऊपर से गिराता हुआ दे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घर असूझता होने पर उस दिन उस जगह से उस घर की कोई भी वस्तु उस स्थान से साधु के लिए अकल्पनीय होती है।

4. दान देते समय गोचरी के लिए बिजली को ऑन-ऑफ करने से दाता असूझता समझा जाता है। साधु-सन्तों के लिए फ्रीज से निकालकर तत्काल वस्तु बहराना अकल्पनीय है।

नितपिण्ड और सित्पिण्ड क्या है?

पहले दिन जिस घर अथवा स्थान से भिक्षा ली हुई हो, दूसरे दिन उस घर की भिक्षा नितपिण्ड भिक्षा कहलाती है। यह भिक्षा साधु के लिए सामान्यतः वर्जनीय है।

साधु रोटी, राबड़ी, छाछ और पानी–इन चार पदार्थों के अतिरिक्त कोई भी वस्तु मांगकर नहीं ले सकता, पर बीमारी की अवस्था में औषधि के रूप में दूध, चाय आदि वस्तुएं मांगकर ली जा सकती हैं एवं नितपिण्ड भी ली जा सकती है।

शय्यातर कौन होता है?

शय्या का अर्थ है–मकान। मकान का दान देकर तरने वाला शय्यातर होता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि जिसके मकान में साधु रहते हैं उस घर का मालिक शय्यातर कहलाता है। जिस दिन साधु उस घर में प्रवेश करें, उस दिन उस घर की गोचरी की जा सकती है, पर दूसरी रात या उससे अधिक उसी मकान में सोना होता हो तो अगले दिन उस घर से कोई भी वस्तु नहीं ली जा सकती।

गोचरी के बयालीस दोषों में से कतिपय दोष

1. **आधाकर्म** – साधु का उद्देश्य रखकर बनाना।
2. **मिश्रजात** – अपने और साधु के लिए एक साथ बनाना।
3. **क्रीत** – साधु के लिए खरीदकर लाना।
4. **प्रामित्य** – साधु के लिए उधार लाना।
5. **परिवर्तित** – साधु के लिए अट्टा-सट्टा करके लाना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. **मालापहृत** – ऊपर की मंजिल से या छींके आदि से उतार कर देना।
7. **अनिसृष्ट** – दूसरे व्यक्तियों के हिस्से की चीज बिना आज्ञा देना।
8. **अध्यवपूरक** – अपने लिए बनाए जाने वाले भोजन में और बढ़ा देना।
9. **प्रक्षित** – सचित्त का संघट्टा होने पर आहार देना।
10. **उन्मिश्र** – सचित्त से मिश्रित आहार देना।
11. **प्राभृतिका** – बहराने के लिए जीमनवार आदि आगे-पीछे करना।

किस गति से कितने मोक्ष?

- प्रथम, द्वितीय, तृतीय नरक से जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- चतुर्थ से–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-4
- भवनपति देव–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- भवनपति देवियां–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-5
- पृथ्वी, अप्काय–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-4
- वनस्पतिकाय–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-6
- पंचेन्द्रिय तिर्यंच–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- मनुष्य–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-20
- मनुष्य स्त्री–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- पंचेन्द्रिय तिर्यंच स्त्री–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- वाणव्यंतर देव–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- वाणव्यंतर देवियां–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- ज्योतिषी देवी–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-10
- ज्योतिषी देव–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-20
- वैमानिक देव–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-108
- वैमानिक देवियां–जघन्य-1,2,3 / उत्कृष्ट-20

पण्णवणा पद–20वां

नोट–अनन्तर भव से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चतुर्थ प्रकरण : जैन धर्म परिचय

जैन धर्म परिचय

राग-द्वेष को जीतने वाले महापुरुष को जिन कहते हैं। जिन को भगवान मानने वाले भक्त जैन कहलाते हैं तथा जिन भगवान के द्वारा जो धर्म प्रवर्तित होता है उसका नाम जैन धर्म है। तीर्थंकर का एक अर्थ है प्रवचन, भगवद्-वाणी। दूसरा अर्थ है–साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चतुर्विध धर्म-संघ। उसकी स्थापना करने वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर को भगवान, जिन, अर्हत्, देवाधिदेव आदि कहा जाता है। इस अवसर्पिणी काल में भगवान ऋषभ प्रथम तीर्थंकर हुए तथा भगवान महावीर अन्तिम। इनमें 22 तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंशीय थे। केवल दो हरिवंशीय (मुनिसुव्रत प्रभु एवं अरिष्टनेमि प्रभु) हुए।

बीस विहरमाण

1. श्री सीमन्धर स्वामी
2. श्री युगमन्धर स्वामी
3. श्री बाहु स्वामी
4. श्री सुबाहु स्वामी
5. श्री सुजाति स्वामी
6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी
7. श्री ऋषभानन स्वामी
8. श्री अनन्तवीर्य स्वामी
9. श्री सुरप्रभु स्वामी
10. श्री विशालधर स्वामी
11. श्री वज्रधर स्वामी
12. श्री चन्द्रानन स्वामी
13. श्री चन्द्रबाहु स्वामी
14. श्री भुजंग स्वामी
15. श्री ईश्वर स्वामी
16. श्री नेमिप्रभ स्वामी
17. श्री वीरसेन स्वामी
18. श्री महाभद्र स्वामी
19. श्री देवयश स्वामी
20. श्री अजितवीर्य स्वामी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बारह चक्रवर्ती

1. भरत	7. अर
2. सगर	8. कुरुवंशज सुभूम
3. मघवा	9. महापद्म
4. राजशार्दूल (सनत्कुमार)	10. राजशार्दूल (हरिषेण)
5. शान्ति	11. नरपति जय
6. कुन्थु	12. ब्रह्मदत्त

नौ बलदेव

1. अचल	6. आनन्द
2. विजय	7. नन्दन
3. भद्र	8. पद्म
4. सुप्रभ	9. राम
5. सुदर्शन	

नौ वासुदेव

1. त्रिपृष्ठ	6. पुरुषपुंडरीक
2. द्विपृष्ठ	7. दत्त
3. स्वयंभू	8. नारायण
4. पुरुषोत्तम	9. कृष्ण
5. पुरुषसिंह	

नौ वासुदेवों के प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव

1. अश्वग्रीव	6. बलि
2. तारक	7. प्रभराज
3. मेरक	8. रावण
4. मधुकैटभ	9. जरासंध
5. निशुंभ	

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्य धर्मों से जैन धर्म की भिन्नता

1. सृष्टि निर्माता कोई ईश्वर विशेष नहीं है।
2. संसार प्रवाह अनादि-अनन्त है।
3. धर्म की आराधना में जात-पांत का भेद नहीं है।
4. धर्म की आराधना में स्त्री और पुरुष को समान अधिकार है।
5. मनुष्य अपने सुख-दुःख का स्वयं उत्तरदायी है।
6. साधना के द्वारा प्रत्येक आत्मा ईश्वर बन सकती है।
7. जैन दर्शन में एकेश्वरवाद के विपरीत अनेकेश्वरवाद की परम्परा है।
8. सच्चा जैन अपने भगवान से कभी कुछ नहीं मांगता।
9. भक्तिवाद के स्थान पर पुरुषार्थवाद की स्थापना।
10. जैन राजाओं ने अपने शासनकाल में विधर्मी प्रजा को कभी नहीं सताया।
11. जैन-अहिंसा अपने उपासकों को कर्तव्य पालन से कभी नहीं रोकती।
12. **मुख्य सिद्धान्त–**समानता, आत्मानुशासन, आत्मनिर्णय का अधिकार, सापेक्षता, आत्मकर्तृत्व, अपरिग्रहवाद।
13. **साधना–**समता, संयम, तपस्या और त्याग।

जैन धर्म के विकास के हेतु

1. **मध्यम मार्ग–**जैन आचार्यों ने गृहस्थ के लिए अणुव्रतों का विधान कर उनकी सामयिक अपेक्षाओं का द्वार बन्द नहीं किया।
2. **समन्वय–**जैन धर्म में भिन्न-भिन्न विचारों का सापेक्ष दृष्टि से समन्वय होने के कारण यह विभिन्न विचारधारा के लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर सका।
3. **समाहार–**जैन धर्म ने जातिवाद की तात्त्विकता मान्य नहीं की, इसलिए सभी जाति के लोग उसे अपनाते रहे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. **परिवर्तन की क्षमता**–जैन समाज में देश और काल के अनुसार परिवर्तन का अवकाश रहा।
5. **सैद्धान्तिक सहिष्णुता**–दूसरे धर्मों के सिद्धान्तों को सहने की क्षमता।
6. **भाषा**–जन-भाषा का प्रयोग।
7. **अहिंसा**–अहिंसा का व्यवहार में प्रयोग।
8. **प्रामाणिकता**–गृहस्थ अहिंसा-पालन के साथ-साथ देश के विकास और रक्षा के लिए अपने कर्तव्य के प्रति बहुत जागरूक रहे हैं।
9. **नेतृत्व**–सशक्त और कुशल आचार्यों का नेतृत्व।

जैन-धर्म के ह्रास के हेतु

1. बाह्य कर्मकांडों की प्रचुरता, शक्ति पूजा का अभाव।
2. व्यक्तिवादी मनोवृत्ति–दूसरों की हानि से मुझे क्या? मैं दूसरों के लिए कर्म क्यों बांधूं।
3. प्रभावशाली आचार्यों का लम्बा व्यवधान।
4. अन्य धर्मों का बढ़ता हुआ प्रभाव।
5. राज्याश्रय का मनोभाव।
6. अहिंसा आदि नियमों की कठोरता।
7. नृत्यादि मनोरंजकता का अभाव।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर जीवन झांकी

क्र.सं.	तीर्थंकर का नाम	पिता का नाम	पिता की गति	माता का नाम	माता की गति
1.	ऋषभ प्रभु	नाभि	नागकुमार	मरूदेवी	सिद्ध
2.	अजित प्रभु	जितशत्रु	(दूसरे देवलाक ईशान में)	विजया	सिद्ध
3.	संभव प्रभु	जितारि		सेना	सिद्ध
4.	अभिनंदन प्रभु	संवर	‘’ ‘’	सिद्धार्था	‘’
5.	सुमति प्रभु	मेघप्रभु	‘’ ‘’	मंगला	‘’
6.	पद्म प्रभु	धर	‘’ ‘’	सुसीमा	‘’
7.	सुपार्श्व प्रभु	प्रतिष्ठसेन	‘’ ‘’	पृथ्वी	‘’
8.	चन्द्र प्रभु	महासेन	‘’ ‘’	लक्ष्मणा	‘’
9.	सुविधि प्रभु	सुग्रीव	(तीसरे देवलोक सनत्कुमार में)	रामा	(तीसरे देवलोक नन्दासनत्कुमार में)
10.	शीतल प्रभु	दृढ़रथ		नन्दा	
11.	श्रेयांस प्रभु	विष्णु	‘’ ‘’	विष्णुदेवी	‘’ ‘’
12.	वासुपूज्य प्रभु	वसुपूज्य	‘’ ‘’	जया	‘’ ‘’
13.	विमल प्रभु	कृतवर्मा	‘’ ‘’	श्यामा	‘’ ‘’
14.	अनन्त प्रभु	सिंहसेन	‘’ ‘’	सुयशा	‘’ ‘’
15.	धर्म प्रभु	भानु	‘’ ‘’	सुव्रता	‘’ ‘’
16.	शान्ति प्रभु	विश्वसेन	‘’ ‘’	अचिरा	‘’ ‘’
17.	कुन्थु प्रभु	सूरसेन	(चौथे देवलोक माहेन्द्र में)	श्री देवी	(चौथे देवलोक देवीमाहेन्द्र में)
18.	अर प्रभु	सुदर्शन			
19.	मल्लि प्रभु	कुम्भ	‘’ ‘’	प्रभावती	‘’ ‘’
20.	मुनिसुव्रत प्रभु	सुमित्र	‘’ ‘’	पद्मावती	‘’ ‘’
21.	नमि प्रभु	विजय	‘’ ‘’	वप्रा	‘’ ‘’
22.	अरिष्टनेमि प्रभु	समुद्र विजय	‘’ ‘’	शिवा	‘’ ‘’
23.	पार्श्व प्रभु	अश्वसेन	‘’ ‘’	वामा	‘’ ‘’
24.	महावीर प्रभु	सिद्धार्थ	बारहवें देवलोक में	त्रिशला	बारहवें देवलोक में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर का नाम	जन्म भूमि	जन्म तिथि	दीक्षा तिथि	केवलज्ञान तिथि	नक्षत्र
ऋषभप्रभु	अयोध्या	चैत्र कृ. 8	चैत्र कृ. 8	फाल्गुन कृ.11	उत्तराषाढा
अजितप्रभु	अयोध्या	माघ शु. 8	माघ शु. 9	पौष शु. 11	रोहिणी
संभवप्रभु	श्रावस्ती	मार्गशीर्ष शु.14	मार्गशीर्ष शु.15	कार्तिक कृ. 5	मृगशीर्ष
अभिनंदनप्रभु	अयोध्या	माघ शु. 2	माघ शु. 12	पौष शु. 14	अभिजित
सुमतिप्रभु	अयोध्या	बैशाख शु. 8	बैशाख शु. 9	चैत्र शु. 11	मघा
पद्मप्रभु	कोशाम्बी	कार्तिक कृ. 12	कार्तिक कृ. 13	चैत्र शु. 15	चित्रा
सुपार्श्वप्रभु	वाराणसी	ज्येष्ठ शु. 12	ज्येष्ठ शु. 13	फाल्गुन कृ. 6	विशाखा
चन्द्रप्रभु	चन्द्रपुरी	पौष कृ. 12	पौष कृ. 13	फाल्गुन कृ. 7	अनुराधा
सुविधिप्रभु	काकन्दी	मार्गशीर्ष कृ. 5	मार्गशीर्ष कृ. 6	कार्तिक शु. 3	मूल
शीतलप्रभु	भद्दिलपुर	माघ कृ. 12	माघ कृ. 12	पौष कृ. 14	पूर्वाषाढ़ा
श्रेयांसप्रभु	सिंहपुर	फाल्गुन कृ. 12	फाल्गुन कृ. 13	माघ कृ. 15	श्रवण
वासुपूज्यप्रभु	चम्पापुरी	फाल्गुन कृ. 14	फाल्गुन कृ. 15	माघ शु. 2	शतभिषा
विमलप्रभु	कम्पिलपुर	माघ शु. 3	माघ शु. 4	पौष शु. 6	उत्तरभाद्रपद
अनन्तप्रभु	अयोध्या	बैशाख कृ. 13	बैशाख कृ. 14	बैशाख कृ. 14	रेवती
धर्मप्रभु	रत्नपुर	माघ शु. 3	माघ शु. 13	पौष शु. 15	पुष्य
शान्तिप्रभु	हस्तिनापुर	ज्येष्ठ कृ. 13	ज्येष्ठ कृ. 14	पौष शु. 9	भरणी
कुन्थुप्रभु	हस्तिनापुर	बैशाख कृ. 14	बैशाख कृ. 5	चैत्र शु. 3	कृत्तिका
अरप्रभु	हस्तिनापुर	मार्गशीर्ष शु. 10	मागशीर्ष शु. 11	कार्तिक शु. 12	रेवती
मल्लिप्रभु	मिथिला	मार्गशीर्ष शु. 11	मार्गशीर्ष शु. 11	मार्गशीर्ष शु.11	अश्विनी
मुनिसुव्रतप्रभु	राजगृह	ज्येष्ठ कृ. 8	फाल्गुन शु. 12	फाल्गुन कृ.12	श्रवण
नमिप्रभु	मिथिला	श्रावण कृ. 8	आषाढ़ कृ. 9	मार्गशीर्ष शु.11	अश्विनी
अरिष्टनेमिप्रभु	सौर्यपुर	श्रावण शु. 5	श्रावण शु. 6	अश्विन कृ.15	चित्रा
पार्श्वप्रभु	वाराणसी	पौष कृ. 10	पौष कृ. 11	चैत्र कृ. 4	विशाखा
महावीरप्रभु	क्षत्रिय कुंडग्राम	चैत्र शु. 13	मार्गशीर्ष कृ. 10	बैशाख शु. 10	हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर नाम	शरीर मान	दीक्षा साथी	छद्मस्थ काल	साधक जीवन	आयुमान
ऋषभप्रभु	500 धनुष	4000	1000 वर्ष	1 लाख पूर्व	84 लाख पूर्व
अजितप्रभु	450 धनुष	1000	बारह वर्ष	1 लाखपूर्व 1 पुर्वांगकम	72 लाख पूर्व
संभवप्रभु	400 धनुष	1000	चौदह वर्ष	1 लाखपूर्व 4 पुर्वांगकम	60 लाख पूर्व
अभिनंदनप्रभु	350 धनुष	1000	18 वर्ष	1 लाखपूर्व 8 पुर्वांगकम	50 लाख पूर्व
सुमतिप्रभु	300 धनुष	1000	बीस वर्ष	1 लाखपूर्व 12 पुर्वांगकम	40 लाख पूर्व
पद्मप्रभु	250 धनुष	1000	6 मास	1 लाखपूर्व 16 पुर्वांगकम	30 लाख पूर्व
सुपार्श्वप्रभु	200 धनुष	1000	नौ मास	1 लाखपूर्व 20 पुर्वांगकम	20 लाख पूर्व
चन्द्रप्रभु	150 धनुष	1000	तीन मास	1 लाखपूर्व 24 पुर्वांगकम	10 लाख पूर्व
सुविधिप्रभु	100 धनुष	1000	चार मास	1 लाखपूर्व 28 पुर्वांगकम	2 लाख पूर्व
शीतलप्रभु	90 धनुष	1000	तीन मास	25,000 पूर्व	1 लाख पूर्व वर्ष
श्रेयांसप्रभु	80 धनुष	1000	दो मास	21,000,00 वर्ष	84 लाख वर्ष
वासुपूज्यप्रभु	70 धनुष	600	एक मास	54 लाख वर्ष	72 लाख वर्ष
विमलप्रभु	60 धनुष	1000	दो मास	15 लाख वर्ष	60 लाख वर्ष
अनन्तप्रभु	50 धनुष	1000	तीन वर्ष	साढ़े सात लाख वर्ष	30 लाख वर्ष
धर्मप्रभु	45 धनुष	1000	दो वर्ष	ढाई लाख वर्ष	10 लाख वर्ष
शान्तिप्रभु	40 धनुष	1000	एक वर्ष	25000 वर्ष	1 लाख वर्ष
कुन्थुप्रभु	35 धनुष	1000	सोलह वर्ष	23750 वर्ष	95000 वर्ष
अरप्रभु	30 धनुष	1000	तीन वर्ष	21000 वर्ष	84000 वर्ष
मल्लिप्रभु	25 धनुष	300	एक अहोरात्र	54900 वर्ष	55000 वर्ष
मुनिसुव्रतप्रभु	20 धनुष	1000	ग्यारह मास	7500 वर्ष	30000 वर्ष
नमिप्रभु	15 धनुष	1000	नौ मास	2500 वर्ष	10000 वर्ष
अरिष्टनेमिप्रभु	10 धनुष	1000	चौवन दिन	700 वर्ष	1000 वर्ष
पार्श्वप्रभु	9 हाथ	300	चौरासी दिन	70 वर्ष	100 वर्ष
महावीरप्रभु	7 हाथ	एकाकी	12 वर्ष 6 मास 15 दिन	42 वर्ष	72 वर्ष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	तीर्थंकर का नाम	लक्षण चिह्न	निर्वाण स्थल	निर्वाण साथी	निर्वाण तिथि
1.	ऋषभ प्रभु	वृषभ	अष्टापद	10,000	माघ कृ. 13
2.	अजित प्रभु	हाथी	सम्मेद शिखर	1,000	चैत्र शु. 5
3.	संभव प्रभु	घोड़ा	सम्मेद शिखर	1,000	चैत्र शु. 5
4.	अभिनन्दन प्रभु	वानर	सम्मेद शिखर	1,000	बैशाख शु. 8
5.	सुमति प्रभु	क्रौंच	सम्मेद शिखर	1,000	चैत्र शु. 9
6.	पद्म प्रभु	पद्मकमल	सम्मेद शिखर	308	मार्गशीर्ष कृ.11
7.	सुपार्श्व प्रभु	स्वस्तिक	सम्मेद शिखर	500	फाल्गुन कृ. 7
8.	चन्द्र प्रभु	चन्द्रमा	सम्मेद शिखर	1,000	भाद्रपद कृ. 7
9.	सुविधि प्रभु	मगर	सम्मेद शिखर	1,000	भाद्रपद शु. 9
10.	शीतल प्रभु	श्रीवत्स	सम्मेद शिखर	1,000	बैशाख कृ. 2
11.	श्रेयांस प्रभु	गैंडा (खंगी)	सम्मेद शिखर	1,000	श्रावण कृ. 3
12.	वासुपूज्य प्रभु	भैंसा	चम्पा	600	आषाढ़ शु. 14
13.	विमल प्रभु	शूकर	सम्मेद शिखर	6,000	आषाढ़ कृ. 7
14.	अनन्त प्रभु	बाज(श्येन)	सम्मेद शिखर	7,000	चैत्र शु. 5
15.	धर्म प्रभु	वज्र	सम्मेद शिखर	108	ज्येष्ठ शु. 5
16.	शान्ति प्रभु	हरिण	सम्मेद शिखर	900	ज्येष्ठ कृ. 13
17.	कुन्थु प्रभु	छाग(बकरा)	सम्मेद शिखर	1,000	बैशाख कृ. 1
18.	अर प्रभु	नन्दावर्त	सम्मेद शिखर	1,000	मार्गशीर्ष शु.10
19.	मल्लि प्रभु	कलश	सम्मेद शिखर	1,000	फाल्गुन शु.12
20.	मुनिसुव्रत प्रभु	कछुआ	सम्मेद शिखर	1,000	ज्येष्ठ कृ. 9
21.	नमि प्रभु	नीलकमल	सम्मेद शिखर	1,000	बैशाख कृ. 10
22.	अरिष्टनेमि प्रभु	शंख	उज्जयन्त गिरि	536	आषाढ़ शु. 8
23.	पार्श्व प्रभु	फणी	सम्मेद शिखर	33	श्रावण शु. 8
24.	महावीर प्रभु	सिंह	पावापुरी	0	कार्तिक कृ. 15

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर का सामान्य वर्णन

1. सब तीर्थंकर एक देव-दूष्य वस्त्र से दीक्षित हुए।
2. **विहार क्षेत्र–**ऋषभ, अरिष्टनेमि, पार्श्व और महावीर ये चार अनार्य क्षेत्र में भी विचरे, शेष केवल आर्य क्षेत्र में।
3. **ज्ञानोत्पाद–**23 तीर्थंकरों को नये सूर्य की नई किरणों के साथ एक रात्रिक प्रतिमा में कैवल्य प्राप्त हुआ। महावीर को–सायं।
4. **किस तपस्या में ज्ञान पाया?** वासुपूज्य ने-1 उपवास में। पार्श्व, ऋषभ, अरनाथ, मल्लि–तेले में। शेष ने बेले में।
5. **तीर्थ-स्थापन–**23 तीर्थंकरों ने तीर्थ-स्थापन प्रथम समवसरण में किया, महावीर ने दूसरे में।
6. **राजगृह में प्रवास–**राजगृह में 23 तीर्थंकरों का शुभागमन व समवसरण हुआ, सिवाय वासुपूज्य प्रभु के।
7. सुमति साहार दीक्षित हुए। वासुपूज्य उपवास से, पार्श्व, मल्लि तीन उपवास (तेले) से। शेष सब दो उपवास (बेले) से दीक्षित हुए।

महावीर-वाणी

- **संयम गोयम! मा पमायए**
  क्षण मात्र प्रमाद मत करो।
- **पढ़मं नाणं तओ दया**
  पहले ज्ञान फिर दया-आचरण।
- **नापुट्ठो वागरे किंची, पुट्ठो वा नलियं वए–**
  बिना पूछे मत बोलो और पूछने पर असत्य मत बोलो।
- **कोहं असच्चं कुव्वेज्जा–**
  क्रोध को निष्फल करो।
- **सच्चम्मि धिइं कुव्वहा–**
  सत्य पर डटे रहो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भगवान महावीर परिचय

1.	च्यवन	– प्राणत देवलोक
2.	गर्भ प्रवेश तिथि	– आषाढ़ शुक्ला 6
3.	गर्भ संहरण तिथि	– आश्विन कृष्णा 13
4.	जन्म तिथि	– चैत्र शुक्ला 13
5.	जन्म स्थान	– क्षत्रियकुण्डपुर
6.	नाम	– वर्धमान, महावीर, देवार्य, ज्ञातनन्दन, वीर, सन्मति
7.	वर्ण	– स्वर्ण (तप्त स्वर्ण के समान)
8.	चिह्न	– सिंह
9.	पिता का नाम	– सिद्धार्थ राजा
10.	माता का नाम	– त्रिशला देवी
11.	मामा का नाम	– गणतन्त्र अध्यक्ष चेटक
12.	वंश	– इक्ष्वाकु
13.	गोत्र	– काश्यप
14.	पत्नी का नाम	– यशोदा देवी
15.	पुत्री का नाम	– प्रियदर्शना
16.	भाई का नाम	– नन्दीवर्धन
17.	बहन का नाम	– सुदर्शना
18.	कुमार काल	– 30 वर्ष
19.	शरीर प्रमाण	– 7 हाथ प्रमाण
20.	गृहवास में ज्ञान	– मति, श्रुत, अवधिज्ञान
21.	दीक्षा तिथि	– मार्गशीर्ष कृष्णा 10
22.	दीक्षा स्थल	– क्षत्रियकुण्डपुर
23.	दीक्षा के समय तप	– दो दिन की तपस्या
24.	दीक्षा पर्याय	– 42 वर्ष
25.	दीक्षा वृक्ष	– अशोक वृक्ष

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

26. दीक्षा परिवार	– अकेले दीक्षित
27. साधना काल	– 12 वर्ष 6 मास, 15 दिन
28. प्रथम देशना स्थल	– जृंभक ग्राम (देवों के बीच में)
29. प्रथम देशना तिथि	– बैशाख शुक्ला 10
30. द्वितीय देशना तिथि	– बैशाख शुक्ला एकादशमी
31. द्वितीय देशना स्थल	– पावापुरी
32. अन्तिम देशना स्थल	– पावापुरी हस्तिपाल राजा की शाला
33. प्रथम पारणा स्थल	– कोल्लाग सन्निवेश
34. प्रथम पारणा दाता	– बहुल ब्राह्मण
35. केवलज्ञान तिथि	– बैशाख शुक्ला दशमी
36. केवलज्ञान स्थल	– ऋजुबालुका नदी के किनारे
37. केवलज्ञानोत्पत्ति	– दो दिन के उपवास में
38. केवलज्ञान का समय	– दिन का अन्तिम प्रहर
39. तीर्थोत्पत्ति	– दूसरे समवसरण में तीर्थ व संघ की उत्पत्ति
40. आयु	– 72 वर्ष
41. गणधर	– इन्द्रभूति आदि 11 गणधर
42. केवलज्ञानी	– 700
43. अवधिज्ञानी	– 1300
44. मनःपर्यवज्ञानी	– 500
45. वादी	– 400
46. साधु सम्पदा	– 14000
47. साध्वी सम्पदा	– 36000
48. श्रावक संख्या	– 1,59,000
49. श्राविका संख्या	– 3,18,000
50. चातुर्मास संख्या	– 42
51. निर्वाण कल्याणक तिथि	– कार्तिक कृष्णा अमावस्या
52. निर्वाण भूमि	– पावापुरी (बिहार)
53. मोक्ष परिवार	– एकाकी सिद्ध

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

54. अन्तर मान – पार्श्वनाथ तीर्थंकर के परिनिर्वाण के 250 वर्ष बाद, भगवान महावीर के परिनिर्वाण का अन्तर।

55. मोक्षासन – पर्यंकासन।

56. भव संख्या (सम्यक्त्व की प्राप्ति के पश्चात्) – 27 (नयसार के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति)

57. तीर्थंकर गोत्र बांधने के लिए 20 बोलों की आराधना की।

58. पूर्व भव का श्रुतज्ञान – ग्यारह अंग का अध्ययन।

भगवान महावीर की घोर तपस्या

निर्जल तपस्या	तप संख्या	दिन	पारणे
6 महीने	1 बार	180	1
5 महीने 25 दिन	1 बार	175	1
4 महीने की	9 बार	1080	9
3 महीने की	2 बार	180	2
2 महीने 15 दिन	2 बार	150	2
2 महीने	6 बार	360	6
1 महीना 15 दिन	2 बार	90	2
1 महीना की	12 बार	360	12
15 दिन की	72 बार	1080	72
3 दिन (तेले) की	12 बार	36	12
2 दिन (बेले) की	229 बार	458	228
भद्र प्रतिमा	1 बार	2	1
महाभद्र प्रतिमा	1 बार	4	1
सर्वतोभद्र प्रतिमा	1 बार	10	1

भगवान ने साधक जीवन में तपस्या काल के कुल 4515 दिन में सिर्फ 349 दिन आहार किया। भगवान ने बेले के दिन दीक्षा ली थी, इसलिए एक उपवास और जोड़ दें तो कुल 4166 दिन तपस्या में बीते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भगवान महावीर के 27 पूर्व भव

1. नयसार (मनुष्य)
2. सौधर्म देव
3. मरीचि (राजकुमार)
4. ब्रह्म स्वर्ग के देव
5. कौशिक ब्राह्मण
6. पुष्यमित्र ब्राह्मण
7. सौधर्म देव
8. अग्निहोत्र ब्राह्मण
9. ईशान देव
10. अग्निभूति ब्राह्मण
11. सनत्कुमार देव
12. भारद्वाज ब्राह्मण
13. माहेन्द्र देव
14. स्थावर ब्राह्मण
15. ब्रह्मकल्प के देव
16. विश्वभूति (मनुष्य)
17. महाशुक्र कल्प के देव
18. वासुदेव (मनुष्य)
19. सातवीं नरक
20. सिंह भव
21. चौथी नरक
22. विमल राजकुमार
23. प्रिय मित्र चक्रवर्ती
24. महाशुक्र कल्प के देव
25. नन्दन राजकुमार
26. प्राणत देवलोक
27. देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला की कुक्षि में भगवान महावीर

तीर्थंकर नामगोत्र बन्ध के बीस कारण

1. अरिहन्त भक्ति
2. सिद्ध भक्ति
3. प्रवचन भक्ति
4. गुरु भक्ति
5. स्थविर भक्ति
6. तपस्वी वत्सलता
7. विनय सम्पन्नता
8. तपो भावना
9. समाधि भावना
10. श्रुत भक्ति
11. बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति
12. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग (सतत जागरूकता)
13. छह आवश्यक निर्मलता
14. खणलव वैराग्य-भावना
15. दर्शन-विशुद्धि
16. शीलव्रत निरतिचारता
17. त्याग भावना
18. वैयावृत्यकरणता
19. अपूर्व ज्ञान ग्रहण भावना
20. प्रवचन भावना

(दिन में एक बार इन भावनाओं को याद करते रहना चाहिए।)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकरों के नामकरण का इतिहास

बालक जब उत्पन्न होता है तब वह अनाम होता है। जन्म के कुछ दिनों बाद उसका नामकरण होता है। नामकरण का हेतु है—पहचान। कभी-कभी नामकरण के पीछे कोई घटना विशेष भी जुड़ जाती है। कभी-कभी शारीरिक वर्ण, चिह्न, स्वप्न, दोहद आदि के आधार पर भी बालक का नामकरण कर दिया जाता है। इस अवसर्पिणी काल में जैन-धर्म में ऋषभ आदि चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। उनके नामकरण के पीछे भी कोई न कोई हेतु रहा है।

1. **ऋषभ प्रभु**—भगवान ऋषभ की माता मरूदेवा ने पहला स्वप्न 'वृषभ' का देखा था। भगवान ऋषभ की दोनों जांघों पर 'वृषभ' का चिह्न था, अतः उनका नाम वृषभ रखा गया। ऋषभ और वृषभ दोनों एकार्थक हैं।

2. **अजित प्रभु**—भगवान अजित के माता-पिता द्यूत-क्रीड़ा करते थे। उसमें उनके पिता की ही विजय होती थी। जब से अजित गर्भ में आये तब से उनकी माता द्यूत-क्रीड़ा में विजित होने लगी, अतः उन्होंने अपने पुत्र का नाम अजित रखा।

3. **संभव प्रभु**—जब भगवान संभव गर्भ में आये तब अधिक धान्य उत्पन्न हुआ, अतः उनका नाम संभव रखा गया।

4. **अभिनन्दन प्रभु**—भगवान अभिनन्दन जब गर्भ में आये तब से इन्द्र उन्हें बार-बार वन्दन करने लगा, अतः उनका नाम अभिनन्दन रखा गया।

5. **सुमति प्रभु**—भगवान सुमति जब गर्भ में आये तब से उनकी माता में निर्णायक बुद्धि उत्पन्न हुई, अतः उनका नाम सुमति रखा गया।

6. **पद्मप्रभु**—भगवान पद्‌मप्रभु जब गर्भ में आये तब उनकी माता को कमल की शय्या पर सोने का दोहद हुआ। किसी देव ने कमल की शय्या का निर्माण कर उसका दोहद पूर्ण किया। भगवान का वर्ण भी पद्‌म जैसा था, अतः उनका नाम पद्‌मप्रभु रखा गया।

7. **सुपार्श्व प्रभु**—भगवान सुपार्श्व जब गर्भ में आये तब उनकी माता के दोनों पार्श्व (काख के नीचे वाला भाग) सुन्दर हो गये, अतः उनका नाम सुपार्श्व रखा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. चन्द्रप्रभु—भगवान चन्द्रप्रभु जब गर्भ में आये थे तब उनकी माता को चन्द्र का दोहद हुआ एवं उनका वर्ण भी चन्द्रमा जैसा था, अतः उनका नाम चन्द्रप्रभु रखा गया।

9. सुविधि प्रभु—भगवान सुविधि जब गर्भ में आए तब उनकी माता सभी कार्यों में कुशलता प्राप्त करने लगी, अतः उनका नाम सुविधि रखा गया।

10. शीतल प्रभु—भगवान शीतल के पिता पित्त-दाह से पीड़ित थे। औषधोपचार से भी वह शान्त नहीं हुआ। जब से भगवान शीतल माता के गर्भ में आए तब से उनका पित्त-दाह रोग शान्त हो गया, अतः उनका नाम शीतल रखा गया।

11. श्रेयांस प्रभु—भगवान श्रेयांस के पिता के पास परम्परागत एक देव-परिगृहीत शय्या थी। उसकी पूजा की जाती थी। जो उस पर बैठता, देवता उसे कष्ट देता। जब भगवान श्रेयांस गर्भ में आए तब उनकी माता को उस शय्या पर बैठने का दोहद हुआ। वह उस पर बैठ गयी। तीर्थंकर को गर्भस्थ जानकर देव ने उसे कष्ट नहीं दिया। इस प्रकार गर्भ के प्रभाव से माता की सुरक्षा हुई, अतः उसने अपने पुत्र का नाम श्रेयांस रखा।

12. वासुपूज्य प्रभु—भगवान वासुपूज्य जब गर्भ में आये तब इन्द्र बार-बार उनकी माता की पूजा करने लगा, अतः उनका नाम वासुपूज्य रखा गया एवं वासुपूज्य के गर्भ में आने पर वैश्रमण देव रत्नों से राजकुल को भरने लगे, अतः उनका नाम वासुपूज्य रखा गया।

13. विमल प्रभु—भगवान विमल के गर्भ में आने पर उनकी माता का शरीर तथा बुद्धि निर्मल हो गयी, अतः उनका नाम 'विमल' रखा गया।

14. अनन्त प्रभु—भगवान अनन्त जब गर्भ में आये तब उनकी माता ने अति विशाल रत्न जटित माला को स्वप्न में देखा था, अतः उनका नाम अनन्त रखा गया।

15. धर्म प्रभु—भगवान धर्म जब गर्भ में आए तब उनकी माता विशेष रूप से धर्म-परायण हुई, अतः उनका नाम धर्म रखा गया।

16. शान्ति प्रभु—भगवान शान्ति जब गर्भ में आए तब एक उपद्रव शांत हुआ था, अतः उनका नाम शान्ति रखा गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

17. कुन्थु प्रभु—भगवान कुन्थु जब गर्भ में आये तब उनकी माता सुन्दर और उन्नत विशाल भू-भाग पर रत्नमय स्तूप को स्वप्न में देखकर जागृत हुई, अतः उनका नाम कुन्थु रखा गया।

18. अर प्रभु—भगवान अर जब गर्भ में आये तब उनकी माता ने स्वप्न में एक सुन्दर और विशाल अर (चक्र) को देखा, अतः उनका नाम अर रखा गया।

19. मल्लि प्रभु—भगवान मल्लि जब गर्भ में आये तब उनकी माता को सब ऋतुओं के सुगन्धित फूलों की माला से बनी शय्या पर सोने का दोहद हुआ, अतः उनका नाम मल्लि रखा गया।

20. मुनिसुव्रत प्रभु—भगवान मुनिसुव्रत जब गर्भ में आए तब उनकी माता सुव्रत (व्रत परायण) हुई, अतः उनका नाम सुव्रत रखा गया।

21. नमि प्रभु—भगवान नमि जब गर्भ में आए तब शत्रु राजाओं ने उनके नगर पर आक्रमण कर दिया। गर्भ के प्रभाव से उनकी माता के मन में महल की अट्टालिका (छत) पर जाने की इच्छा हुई। वे छत पर गयी और उन्हें देखकर गर्भ के प्रभाव से शत्रु राजा नत हो गये, अतः उनका नाम नमि रखा गया।

22. अरिष्टनेमि प्रभु—भगवान अरिष्टनेमि जब गर्भ में आए तब उनकी माता ने स्वप्न में एक अरि रत्नमय नेमि (चक्र) उछलता हुआ देखा, अतः उनका नाम अरिष्टनेमि रखा गया।

23. पार्श्व प्रभु—भगवान पार्श्व जब गर्भ में आये तब स्वप्न में उनकी माता ने गर्भ के प्रभाव से घोर अन्धकार में भी एक बार सात सिर वाले सर्प को शय्या के पास से जाते हुए देखा। उसने शय्या से बाहर निकली हुई राजा की भुजा को शय्या पर लाते हुए कहा यह सर्प जा रहा है। राजा ने पूछा—तुमने कैसे जाना? उसने कहा—मैं देख रही हूं। राजा ने दीपक के प्रकाश से देखा तो सर्प ही दिखाई दिया। राजा ने सोचा—इस घोर अंधकार में भी इसने गर्भ के अतिशय प्रभाव से ही सर्प को देखा है, अतः उन्होंने अपने पुत्र का नाम पार्श्व रखा।

24. वर्धमान प्रभु—भगवान वर्धमान जब गर्भ में आये तब से ज्ञात कुल में विशेष रूप से धन की वृद्धि हुई, अतः उनका नाम वर्धमान रखा गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आगामी चौबीस तीर्थंकर किनके जीव हैं?

1. श्री महापद्म – श्रेणिक का जीव
2. श्री सूरदेव – सुपार्श्व का जीव
3. श्री सुपार्श्व – उदक का जीव
4. श्री स्वयंप्रभ – पोट्टिल अनगार का जीव
5. श्री सर्वानुभूति – दृढ़ायु का जीव
6. श्री देवपुत्र – कार्तिक का जीव
7. श्री उदक – शंख का जीव
8. श्री पेढ़ालपुत्र – नन्द का जीव
9. श्री पोट्टिल – सुनन्द का जीव
10. श्री शतक – शतक का जीव
11. श्री मुनिसुव्रत – देवकी का जीव
12. श्री सर्वभाविद् – सत्यकी का जीव
13. श्री अमम – वासुदेव का जीव
14. श्री निष्कषाय – बलदेव का जीव
15. श्री निष्पुलाक – रोहिणी का जीव
16. श्री निर्गम – सुलसा का जीव
17. श्री चित्रगुप्त – रेवती का जीव
18. श्री समाधि – मृगाली का जीव
19. श्री संवर – भयाली का जीव
20. श्री अनिवर्ति – कृष्णद्वीपायन का जीव
21. श्री विजय – नारद का जीव
22. श्री विमल – अम्मड़ का जीव
23. श्री देवोपपात – दारुमड का जीव
24. श्री अनन्त विजय – स्वातिबुद्ध का जीव

नोट–समवायांग सूत्र से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्राट चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न

पाटली पुत्र के महाराज चन्द्रगुप्त की महारानी का नाम प्रियदर्शना था। राजा धर्मनिष्ठ था। एक दिन पौषध में सोलह स्वप्न देखे। स्वप्न देखकर मन में आश्चर्य, भय तथा कौतूहल भी हुआ कि इनका क्या फल होगा। उन दिनों भद्रबाहु स्वामी जो कि चौदह पूर्व के ज्ञाता थे, वे वहां पधारे। अवसर देखकर राजा ने इनसे अर्थ पूछना चाहा। आचार्यश्री ने जो अर्थ बताया, उस आधार पर बने ग्रंथ का नाम 'व्यवहार चूलिका' है। उसमें वर्णित स्वप्नार्थ यों हैं–

प्रथम स्वप्न–कल्पवृक्ष की शाखा टूटी हुई देखी।

अर्थ–राजा लोग संयम नहीं लेंगे।

दूसरा स्वप्न–असमय सूर्य को अस्त होते देखा।

अर्थ–वर्तमान में जन्में लोगों को केवलज्ञान प्राप्ति नहीं होगी।

तीसरा स्वप्न–चन्द्रमा चालनी बन गया।

अर्थ–जैन शासन विभिन्न सम्प्रदायों तथा समाचारियों में विभाजित हो जायेगा।

चौथा स्वप्न–अट्टहास करते भूत-भूतिनी को नाचते देखा।

अर्थ–स्वच्छन्दताचारी व ढोंगी साधुओं का सम्मान बढ़ेगा।

पांचवां स्वप्न–बारह फन वाला काला सर्प देखा।

अर्थ–बारह वर्ष का दुष्काल पड़ेगा। साधुओं को आहार मिलना दुष्प्राप्य हो जायेगा। ऐसी स्थिति में स्वाध्याय के अभाव से ज्ञान विलुप्त हो जायेगा।

छठा स्वप्न–देवताओं का विमान लौटते देखा।

अर्थ–विशिष्ट लब्धियां विलुप्त हो जायेंगी।

सातवां स्वप्न–कचरे के ढेर पर कमल खिला हुआ देखा।

अर्थ–जैन शासन की बागडोर ऐसे व्यक्तियों के हाथ में आ जायेगी जो उसमें सौदेबाजी चलाएंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आठवां स्वप्न–पतंगियों को उद्योत करते देखा।

अर्थ–धर्म आडम्बरों में ही शेष रह जायेगा।

नवां स्वप्न–तीन दिशाओं में समुद्र सूखा हुआ है। केवल दक्षिण दिशा में थोड़ा सा जल है, वह भी मटमैला सा।

अर्थ–तीर्थंकरों का विहार हुआ है, वहां प्रायः धर्म का ह्रास होगा केवल दक्षिण में धर्म प्रचार होगा।

दसवां स्वप्न–सोने के थाल में कुत्ता खीर खा रहा था।

अर्थ–उत्तम श्रीहीन होंगे। पापाचारी आनन्द करेंगे।

ग्यारहवां स्वप्न–हाथी पर बन्दर बैठा देखा।

अर्थ–लौकिक और लोकोत्तर पक्षों में अधर्मी और आचारहीन व्यक्तियों को सम्मान व उच्च पद मिलेगा।

बारहवां स्वप्न–समुद्र मर्यादा छोड़कर भागा जा रहा था।

अर्थ–उत्तम व्यक्ति भी पेट पालने के लिए मर्यादाहीन हो जाएंगे।

तेरहवां स्वप्न–एक विशाल रथ में छोटे-छोटे बछड़े जुते हुए थे।

अर्थ–छोटे-छोटे बालक संयम के रथ को खींचेंगे।

चौदहवां स्वप्न–महामूल्य रत्न को तेजहीन देखा।

अर्थ–साधुओं का परस्पर कलह, अविनय आदि के कारण चरित्र का तेज घट जाएगा।

पन्द्रहवां स्वप्न–राजकुमार को बैल की पीठ पर चढ़ा देखा।

अर्थ–क्षत्रिय आदि विशिष्ट वर्ग जिन-धर्म छोड़कर मिथ्यात्व के पीछे लगेंगे, दुर्जनों का विश्वास करेंगे।

सोलहवां स्वप्न–दो काले हाथियों को युद्ध करते देखा।

अर्थ–पिता-पुत्र और गुरु-शिष्य परस्पर विग्रह करेंगे। अतिवृष्टि और अनावृष्टि होगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्राट भरत के सोलह स्वप्न

प्रथम स्वप्न–प्रभो! मैंने पहाड़ पर चढ़ते हुए 23 सिंह देखे हैं।

अर्थ–23 तीर्थंकरों के समय साधु धर्म में दृढ़ रहेंगे। इसके बाद उनकी गूंज सुनाई देती रहेगी।

दूसरा स्वप्न–एक सिंह देखा जिसके पीछे अनेक हिरण चल रहे थे।

अर्थ–24वें तीर्थंकर भगवान के पीछे हिरण की तरह अनुयायी गमन करेंगे। पौरुष कम होगा। पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे, परन्तु पालन क्षमता धीरे-धीरे घटती जाएगी।

तीसरा स्वप्न–एक अश्व देखा, जो भार से दबा जा रहा था।

अर्थ–अश्व मुनि का प्रतीक है। पांचवें आरे के मुनि शक्ति और सत्ता के प्रभाव से दबते जाएंगे।

चौथा स्वप्न–बकरियों का समूह सूखी पत्तियां खा रहा था।

अर्थ–अतिवृष्टि, अनावृष्टि के कारण पशु अभक्ष्य खाने लगेंगे, फलतः बकरी की तरह जानवर दुर्बल होंगे।

पांचवां स्वप्न–हाथी की पीठ पर बन्दर को बैठे देखा।

अर्थ–हाथी सत्ता का प्रतीक है। सत्ता निम्न वर्ग के लोगों के हाथ में चली जाएगी। क्षत्रिय कमजोर हो जाएंगे। सत्ताधारी छली, प्रपंची, चरित्रहीन होंगे।

छठा स्वप्न–हंस को अनेक कौए मिलकर सता रहे हैं।

अर्थ–जैन सन्तों को विरोधी–त्रास देंगे। झूठे आक्षेप लगाएंगे।

सातवां स्वप्न–प्रेत घर-घर नाच रहा है।

अर्थ–प्रेत-देवताओं की पूजा बढ़ेगी।

आठवां स्वप्न–तालाब मध्य से सूखा और किनारा पानी से छलछलाता देखा।

अर्थ–आर्यावर्त्त धर्म संस्कृति का केन्द्र है। वहां धर्म सूख जाएगा। उसके आस-पास के क्षेत्र धर्म केन्द्र रहेंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नवां स्वप्न–रत्नों का ढेर मिट्टी से ढका हुआ है।

अर्थ–ज्ञान और श्रद्धारूपी रत्न अज्ञान और अश्रद्धा से दब जायेगा। साधुओं में धीरे-धीरे शुक्ल ध्यान नष्ट हो जाएगा।

दसवां स्वप्न–कुत्ता मिठाई खा रहा है, लोग श्रद्धा से पूजा कर रहे हैं।

अर्थ–अच्छे लोग सेवा करेंगे, नीच व्यक्ति उच्चता प्राप्त करेंगे।

ग्यारहवां स्वप्न–जवान बैल तड़पता हुआ मेरे पास से निकला।

अर्थ–युवक लोग जैन मुनि बनेंगे, परन्तु शिथिलाचार के कारण स्वयं बदनाम होंगे, जिन शासन को बदनाम करेंगे।

बारहवां स्वप्न–दो बैलों को कन्धे से कन्धा मिलाकर जाते हुए देखा।

अर्थ–धर्मप्रचार के लिए अकेला कोई साहस नहीं कर सकेगा।

तेरहवां स्वप्न–चन्द्रमा पर धुंध छाई हुई देखी।

अर्थ–आत्मा पर आवरण बढ़ेगा, धीरे-धीरे तत्त्वज्ञान नष्ट होगा।

चौदहवां स्वप्न–सूर्य मेघ से ढका हुआ देखा।

अर्थ–कोई सर्वज्ञ नहीं होगा।

पन्द्रहवां स्वप्न–छाया हीन सूखा पेड़ देखा।

अर्थ–धर्म का पेड़ तृष्णा के ताप से सूख जाएगा।

सोलहवां स्वप्न–सूखे पत्तों का ढेर देखा।

अर्थ–औषधि, जड़ी-बूटियां प्रभावहीन होंगी। वैद्य लोभी होंगे। रोग बढ़ेंगे।

पांचवें आरे की तीस पहचान

1. नगर, ग्राम जितने छोटे-छोटे होंगे।
2. ग्राम श्मशान की बस्ती जितने होंगे।
3. कुटुम्ब में कलह, ईर्ष्या बहुत होगी।
4. राजा यम जैसे निर्दय होंगे।
5. प्रधान कर्मचारी लंचा-रिश्वत विशेष लेंगे।
6. सेवक, स्वामी का द्रोही होगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. सास-सर्पिणी समान, वधू-डाइन समान होगी।
8. कई कुलीन स्त्रियां निर्लज्ज होंगी।
9. पुत्र और शिष्य स्वेच्छाचारी होंगे।
10. मेह कम आयेंगे, बाढ़ विशेष।
11. दुर्जन धन-सुख तथा सम्मान पाएंगे।
12. सज्जन अल्प-ऋद्धि तथा अल्प मान पाएंगे।
13. परराष्ट्र, रोग, मृत्यु तथा दुर्भिक्ष का भय अधिक होगा।
14. चोर, मूर्ख तथा कुन्थु जीव विशेष होंगे।
15. ब्राह्मण, धन लोभी तथा होम ज्यादा करेंगे।
16. शिष्य गुरुकुल-वास त्यागी होंगे, विनयी शिष्य कम होंगे।
17. मंद धर्म-कषाय वासित होंगे, गन्दे पानी जैसे अशुद्ध होंगे।
18. अल्प बलशाली सम्यक्त्वी होंगे।
19. महा-शक्तिशाली मिथ्यात्वी होंगे।
20. देव दर्शन दुर्लभ होंगे।
21. विद्या, मन्त्र तथा औषधि का प्रभाव कम होगा।
22. गोरस, मधुरस तथा गन्ध द्रव्यों में कमी होगी।
23. बल, धन-धान्य तथा आयुष्य अल्प-स्थायी होंगे।
24. साधु-श्रावक की उत्कृष्ट पडिमा व्यवच्छिन्न हो जाएगी।
25. गुरु शिष्य को सम्यक् प्रकार से सूत्र नहीं पढ़ाएंगे।
26. शिष्य कलह और असमाधि-हेतु होंगे।
27. आराधक साधु कम और मूढ़ विशेष होंगे।
28. आचार्य अपनी गतिविधि को अधिक महत्त्व देंगे। यति तन्त्र-मन्त्र के उद्यमी होंगे, जमीन के लिए झगड़ा करेंगे, कुटुम्बियों की तरह व्यवहार करेंगे तथा भले साधुओं से भिड़ जाएंगे, इत्यादि।
29. म्लेच्छ राजा बलवान होंगे।
30. हिन्दू राजाओं में बल कम होगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जैन आगमों (सूत्रों) के नाम

11 अंग सूत्र, 12 उपांग सूत्र, 4 मूल सूत्र, 4 छेद सूत्र, 1 आवश्यक सूत्र **(कुल 32)**

11 अंग सूत्र

1. आचारांग	2. सूत्रकृतांग	3. स्थानांग
4. समवायांग	5. भगवती	6. ज्ञाताधर्मकथा
7. उपासकदशा	8. अन्तकृत्दशा	9. अनुत्तरोपपातिकदशा
10. प्रश्नव्याकरण	11. विपाकसूत्र	

12 उपांग सूत्र

1. औपपातिक	2. राजप्रश्नीय	3. जीवाभिगम
4. प्रज्ञापना	5. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	6. चन्द्रप्रज्ञप्ति
7. सूर्यप्रज्ञप्ति	8. निरयावलिका	9. कल्पवतंसिका
10. पुष्पिका	11. पुष्पचूलिका	12. वृष्णिदशा

4 मूल सूत्र

1. दशवैकालिक 2. उत्तराध्ययन 3. अनुयोगद्वार 4. नन्दी

4 छेद सूत्र

1. निशीथ 2. व्यवहार 3. बृहत्कल्प 4. दशाश्रुतस्कन्ध

1 आवश्यक सूत्र

1. प्रतिक्रमण सूत्र।

नोट : भगवान की मूल वाणी आगम सूत्र कहलाती है, उत्तरवर्ती आचार्यों के द्वारा जो ग्रन्थ तैयार किए गये हैं, वे शास्त्र कहलाते हैं।

अर्हतों के अनुभवों का आगमों में सार है।
वह हमारी साधना का प्राणमय आधार है।
सूत्र आगम, अर्थ आगम, तदुभयागम रम्य है।
विविध नय की दृष्टियों से सहज, सरल, सुगम्य है।
—आचार्य तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पर्युषण महापर्व संवत्सरी

संवत्सरी–एक संवत्सर यानि एक वर्ष के बाद आने वाले महानतम दिन को व्यवहार से 'संवत्सरी' कह दिया गया है।

वस्तुतः इस पर्व का नाम है–'पर्युषण'। भगवान महावीर ने चतुर्मास के 50 दिन बीतने पर और 70 दिन बाकी रहने पर पर्युषण पर्व का आराधन किया, ऐसा समवायांग में उल्लेख है। तिथियों की घट-बढ़ के कारण कभी-कभी इधर 49 दिन और उधर 71 दिन हो जाते हैं।

पर्युषण का अर्थ–परि-उपसर्ग, वस् धातु और अन् प्रत्यय–इन तीनों के संयोग से पर्युषण शब्द निष्पन्न हुआ है। परि-समन्तात् समग्रतया उषणं वसनं निवास करणं अर्थात् सम्पूर्ण रूप से निवास करना। विभाव से हटकर स्वभाव में रमण करना। शास्त्रों में यह पर्व एक ही दिन का स्वीकृत हुआ है, सात दिन तो पर्व की सम्यक् आराधना की तैयारी के लिए पूर्वाचार्यों के द्वारा नियत किये गये हैं, अतः वे भी उपेक्षणीय नहीं हैं। जैसे बलवान पर धावा बोलने के लिए बल का संचय करना आवश्यक है, उसी प्रकार रागादि शत्रुओं की घात के लिए सात दिन आध्यात्मिक बल संग्रह के समझने चाहिए। यह पर्व मात्र जैन संस्कृति का ही नहीं, मानव संस्कृति का पर्व है।

पर्युषण-साधना

1. प्रातः कालीन प्रवचन-श्रवण
2. आधा घण्टा स्वाध्याय।
3. आधा घण्टा प्रेक्षाध्यान या जप।
4. द्रव्यों का परिमाण।
5. रात्रि भोजन का परित्याग।
6. ब्रह्मचर्य का पालन।
7. अणुव्रत साधना।
8. कम से कम पांच सामायिक।
9. एक घंटा मौन।
10. सामूहिक प्रतिक्रमण।
11. सचित्त का परित्याग।
12. सिनेमा, नाटक, ताश आदि का परित्याग।
13. पौषध साधना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्षमा (खमत-खामणा)

क्षमा का अर्थ है—सहना।

सहने को अपना धर्म मानकर विरोधी भाव को सहना क्षमा है।

सहना पड़े वह सामर्थ्य हीनता है।

क्षमा शक्तिशाली का अस्त्र है।

अपनी शक्ति के उन्माद पर नियन्त्रण रखना क्षमा है। जो दूसरों को क्षमा देना नहीं जानता वह 'तुच्छ' है। दूसरों से क्षमा लेना नहीं जानता, वह उद्दण्ड है। शान्ति उसे मिलती है जिसके हृदय में क्षमा लहराये। दूसरों की कमजोरियों, अपराधों और भूलों को भुला सके, वही आनन्द का स्रोत बन सकता है। अपने अपराधों के लिए क्षमा मांगने में जो न सकुचाये, वह महान है। शान्ति दूत वही है, जो अपनी भूलों से उत्पन्न वेदना को भुला देने का नम्र अनुरोध करे।

- क्षमा वही व्यक्ति कर सकता है, जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहज सरलता हो और जीवन को अभिभूत करने वाली मृदुता हो।
- जो क्षमा करना नहीं जानता, वह न निज पर शासन कर सकता है न अन्य व्यक्तियों पर।
- शब्दोच्चारण के साथ मन में जमा हुआ शत्रुता का भाव समाप्त हो जाना ही क्षमायाचना है।
- क्षमाशील वह होता है, जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिन्तनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की छलना न करने का संकल्प करता है।

—आचार्य तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधु की पहचान

1. वे अनगार होते हैं, जिनके कोई घर नहीं होता।
2. वे पांच महाव्रतों का पालन करते हैं।
3. वस्त्र-पात्र आदि उपकरण सीमित मात्रा में रखते हैं।
4. उनके पात्र लकड़ी, मिट्टी, तुम्बा प्लाष्टिक आदि के होते हैं।
5. सामान्यतया किसी वाहन का प्रयोग नहीं करते।
6. वे स्वावलम्बी होते हैं।
7. भिक्षावृत्ति उनकी चर्या का मुख्य अंग है।
8. वे प्रासुक आहार पानी का उपयोग करते हैं।

मुनि चतुर्मास कहां करे?

1. जहां कीचड़, गन्दगी कम हो।
2. जहां शौचादि का स्थान उपयुक्त हो।
3. जहां औषधि तथा अनुभवी वैद्यों का योग हो।
4. जहां एकान्त स्थान की अनुकूलता हो।
5. जहां सुपाच्य एवं पौष्टिक भोजन की सुलभता हो।
6. जहां के लोग सज्जन प्रकृति के हों।
7. जहां के श्रावक सम्पन्न हों।
8. जहां के शासक न्यायप्रिय हों।
9. जहां अन्य धर्मावलम्बी उदार दृष्टि वाले हों।
10. जहां स्वाध्याय, ध्यान की सुविधा हो।
11. जहां सूक्ष्म जीव-जन्तु (सम्मूर्च्छिम) कम हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऐसे जैन विद्यार्थी चाहिए

1. जो प्रतिदिन प्रातः नमस्कार महामन्त्र का जप करता है।
2. जो गांव में विराजित चारित्रात्माओं के प्रतिदिन दर्शन करता है।
3. जो रात को सोते समय अपने इष्ट का स्मरण करता है।
4. जो बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस तथा अण्डे का सेवन नहीं करता है।
5. जो यथासंभव अष्टमी, चतुर्दशी को रात को नहीं खाता है, तथा सचित्त का वर्जन करता है।
6. जो अपने द्वारा हुई भूलों का चिन्तन व प्रायश्चित्त करता है एवं पक्ष में एक बार किसी भी कटु व्यवहार के लिए खमत-खामणा करता है।
7. जो प्रतिदिन योगासन, प्रेक्षाध्यान करता है।
8. जो प्रतिदिन धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करता है।
9. जो विनय और नम्रता का निरन्तर विकास करता है।

जैन जीवन शैली के नौ तत्त्व

1. समानता एवं सम्यक् दर्शन

सम्यक् दर्शन के फलित हैं–

- सम्यक् दृष्टिकोण का विकास।
- विधायक दृष्टिकोण का विकास।
- तीव्रतम क्रोध, मान, माया और लोभ का उपशमन।

2. अनेकान्त

अनेकान्त की शैली को जीने के फलित हैं–

- सापेक्ष दृष्टिकोण का विकास।
- समन्वय की मनोवृत्ति का विकास।
- विवादास्पद प्रसंग में सामंजस्य स्थापित करने वाली मनोवृत्ति का विकास।
- अनाग्रह और विनम्रतापूर्वक मनोवृत्ति का विकास।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. अहिंसा

अहिंसा की जीवन-शैली के फलित हैं–

- संवेदनशीलता का विकास।
- पर्यावरण के प्रदूषण की रोकथाम।
- प्राणीमात्र के प्रति मैत्री का क्रमिक विकास।

4. समण संस्कृति, शान्त वृत्ति एवं श्रम

समण संस्कृति की जीवन शैली के फलित हैं–

- मानवीय एकता।
- जातीय घृणा और छुआछूत की समाप्ति
- शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व।
- संतुलित व्यवहार।
- स्वावलम्बन का विकास।

5. इच्छा-परिमाण और मनोनुशासनम्

इस प्रक्रिया के छह अंग हैं–

- आहार का अनुशासन।
- शरीर का अनुशासन।
- इन्द्रिय का अनुशासन।
- श्वास का अनुशासन।
- इच्छा का अनुशासन।
- मन का अनुशासन।

6. सम्यक् आजीविका

सम्यक् आजीविका के फलित हैं–

- व्यवसाय-शुद्धि, प्रामाणिकता।
- शराब आदि मादक तथा मांस, मत्स्य, अण्डा आदि अभक्ष्य पदार्थों के व्यापार का वर्जन।
- तस्करी का वर्जन।
- खाद्य पदार्थों में मिलावट का वर्जन।
- शस्त्र के व्यवसाय का वर्जन।
- जंगलों की कटाई का वर्जन।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. सम्यक् संस्कार एवं समता की उपासना

सम्यक् संस्कार की जीवन-शैली के फलित हैं–

- अभिवादन, पत्र-व्यवहार आदि में जय जिनेन्द्र का प्रयोग।
- गृहसज्जा आदि में जैन संस्कृति-सूचक चिह्न, वाक्य आदि को प्राथमिकता।

8. आहार-शुद्धि और व्यसन-मुक्ति

आहार-शुद्धि और व्यसन-मुक्ति के फलित हैं–

- स्वस्थ और संतुलित जीवन।
- शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में वृद्धि।
- अपराधी मनोवृत्ति से बचाव।

9. साधर्मिक वात्सल्य

साधर्मिक वात्सल्य की जीवन शैली के फलित हैं–

- जन-जन में अहिंसा के प्रति आकर्षण।
- जातीय सद्भाव।
- साम्प्रदायिक सद्भाव।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विशेष तिथियां

1.	वर्षीतप प्रारम्भ दिवस	– चैत्र कृष्णा 8
2.	भगवान महावीर का जन्म	– चैत्र शुक्ला 13
3.	आचार्यश्री महाप्रज्ञजी-स्वर्गवास दिवस	– वैशाख कृष्णा 11
4.	अक्षय तृतीया	– वैशाख शुक्ला 3
5.	आचार्यश्री महाश्रमणजी का जन्म दिवस	– वैशाख शुक्ला 9
6.	भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस	– वैशाख शुक्ला 10
7.	आचार्यश्री महाश्रमणजी पट्टोत्सव	– वैशाख शुक्ला 10
8.	आचार्यश्री महाश्रमणजी दीक्षा दिवस	– वैशाख शुक्ला 14
9.	आचार्यश्री तुलसी महाप्रयाण दिवस	– आषाढ़ कृष्णा 3
10.	आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जन्म दिवस	– आषाढ़ कृष्णा 13
11.	भगवान महावीर का च्यवन दिवस	– आषाढ़ शुक्ला 6
12.	तेरापंथ स्थापना दिवस	– आषाढ़ शुक्ला 15
13.	जयाचार्य निर्वाण दिवस (पर्युषण प्रारंभ)	– भाद्रपद कृष्णा 12
14.	संवत्सरी महापर्व	– भाद्रपद शुक्ला 4-5
15.	आचार्यश्री कालूगणी का स्वर्गवास दिवस	– भाद्रपद शुक्ला 6
16.	आचार्यश्री तुलसी पट्टोत्सव (विकास दिवस)	– भाद्रपद शुक्ला 9
17.	आचार्यश्री भिक्षु स्वर्गवास दिवस (चरमोत्सव)	– भाद्रपद शुक्ला 13
18.	भगवान महावीर निर्वाण दिवस (दीपावली)	– कार्तिक कृष्णा 15
19.	आचार्यश्री तुलसी जन्मदिवस (अणुव्रत दिवस)	– कार्तिक शुक्ला 2
20.	भगवान महावीर का दीक्षा दिवस	– मार्गशीर्ष कृष्णा 10
21.	पार्श्वनाथ भगवान का जन्म दिवस	– पौष कृष्णा 10
22.	तेरापंथ मर्यादा महोत्सव	– माघ शुक्ला 7

व्यक्ति के जन्म का कोई उद्देश्य नहीं हो सकता, क्योंकि जन्म उसके वश की बात नहीं है, पर जीवन का उद्देश्य अवश्य होना चाहिए। निरुद्देश्य जीवन की कोई कीमत नहीं होती।

–आचार्य तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पांचवां प्रकरण : तेरापंथ परिचय

तेरापंथ के आचार्यों की जीवन-झांकी

1. आचार्यश्री भीखणजी (भिक्षु)

जन्म–कंटालिया (राजस्थान), आषाढ़ शुक्ला 13	सं. 1783
माता-पिता–पिता–शाह बल्लुजी, माता–दीपांजी	
द्रव्य दीक्षा–बगड़ी (राजस्थान), मार्गशीर्ष कृष्णा 12	सं. 1808
भाव दीक्षा–केलवा (राजस्थान), आषाढ़ पूर्णिमा,	सं. 1817
स्वर्गवास–सिरियारी (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 13	सं. 1860

2. आचार्यश्री भारीमालजी

जन्म–मुहां ग्राम (राजस्थान),	सं. 1804
माता-पिता–पिता–किशनोजी लोढ़ा, माता–धारिणी	
द्रव्य दीक्षा –बागोर (राजस्थान),	सं. 1813
भाव दीक्षा–केलवा (राजस्थान) आषाढ़ पूर्णिमा	सं. 1817
युवाचार्य पद–बिठौड़ा (राजस्थान), मार्गशीर्ष कृष्णा 7	सं. 1832
आचार्य पद–सिरियारी, भाद्रपद शुक्ला 13	सं. 1860
स्वर्गवास–राजनगर, माघ कृष्णा 8	सं. 1878

3. आचार्यश्री रायचन्दजी

जन्म–बड़ी रावलियां (राजस्थान)	सं.1847
माता-पिता–पिता–शाह चतरोजी बम्ब, माता–कुशालांजी	
दीक्षा–बड़ी रावलियां (राज.), चैत्र पूर्णिमा 9	सं. 1857
युवाचार्य पद–केलवा (राजस्थान), बैशाख कृष्णा 9	सं. 1878
आचार्य पद–राजनगर (राजस्थान), माघ कृष्णा 9	सं. 1878
स्वर्गवास–छोटी रावलियां (राज.), माघ कृष्णा 14	सं. 1908

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. आचार्यश्री जयाचार्य

जन्म–रोयट (राजस्थान), आश्विन शुक्ला 14	सं. 1860
माता-पिता–पिता-आइदानजी गोलछा, माताकल्लुजी	
दीक्षा–जयपुर (राजस्थान), माघ कृष्णा 7	सं. 1869
युवाचार्य पद–नाथद्वारा (राजस्थान), आषाढ़	सं. 1894
आचार्य पद–बीदासर (राजस्थान), माघ पूर्णिमा	सं. 1908
स्वर्गवास–जयपुर (राजस्थान), भाद्रपद कृष्णा 12	सं. 1938

5. आचार्यश्री मघवागणी

जन्म–बीदासर (राजस्थान), चैत्र शुक्ला 11	सं. 1897
माता-पिता–पिता–पूरणमलजी बेगवानी, माता–बन्नाजी	
दीक्षा–लाडनूं (राजस्थान), मार्गशीर्ष कृष्णा 12	सं. 1908
युवाचार्य पद–चूरू (राजस्थान), आश्विन कृष्णा 13	सं. 1920
आचार्य पद–जयपुर (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 2	सं. 1938
स्वर्गवास–सरदारशहर (राजस्थान), चैत्र कृष्णा 5	सं. 1949

6. आचार्यश्री माणकगणी

जन्म–जयपुर (राजस्थान) भाद्रपद कृष्णा 4	सं. 1912
माता-पिता–पिता–हुकमीचंदजी श्रीमाल खारड़, माता–छोटांजी	
दीक्षा–लाडनूं (राजस्थान), फाल्गुन शुक्ला 11	सं. 1928
युवाचार्य पद–सरदारशहर (राज.) चैत्र कृष्णा 2	सं. 1949
आचार्य पद–सरदारशहर (राज.) चैत्र कृष्णा 8	सं. 1949
स्वर्गवास–सुजानगढ़ (राज.), कार्तिक कृष्णा 3	सं. 1954

7. आचार्यश्री डालगणी

जन्म–उज्जैन (मध्य प्रदेश),आषाढ़ शुक्ला 4	सं. 1909
माता-पिता–पिता–कानिरामजी, माता–जड़ावांजी	
दीक्षा–इन्दौर (म. प्रदेश), भाद्रपद कृष्णा 12	सं. 1923
आचार्य पद–लाडनूं (राजस्थान), माघ कृष्णा 2	सं. 1954
स्वर्गवास–लाडनूं (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 12	सं. 1966

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. आचार्यश्री कालूगणी

जन्म–छापर (राजस्थान), फाल्गुन शुक्ला 2 सं. 1933
माता-पिता–पिता–मूलचंदजी कोठारी, माता–छोगांजी
दीक्षा–बीदासर (राजस्थान), आश्विन शुक्ला 3 सं. 1944
आचार्य पद–लाडनूं (राजस्थान), भाद्रपद पूर्णिमा सं. 1966
स्वर्गवास–गंगापुर (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 6 सं. 1993

9. युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी (गणाधिपति गुरुदेव)

जन्म–लाडनूं, कार्तिक शु. 2 (20-10-1914) सं. 1971
माता-पिता–पिता–झूमरमलजी खटेड़, माता–वदनाजी
दीक्षा–लाडनूं (राजस्थान), पौष कृष्णा 5 सं. 1982
युवाचार्य पद–गंगापुर (राजस्थान), भाद्रपद शु. 3 सं. 1993
आचार्य पद–गंगापुर (राजस्थान), भाद्रपद शु. 9 सं. 1993
युगप्रधान पद–बीदासर (राजस्थान), माघ शुक्ला 7 सं. 2027
धवल समारोह (धर्मशासना के 25 वर्ष)
प्रथम चरण–सं. 2018, भाद्रपद शुक्ला 9, बीदासर (राजस्थान)
द्वितीय चरण–सं. 2018 फाल्गुन कृष्णा 10, गंगाशहर (राजस्थान)
षष्टिपूर्ति समारोह–सं. 2031, दिल्ली
दीक्षा–कल्याणक समारोह (मुनि जीवन के 50 वर्ष)
–सं. 2032, पौष कृष्णा 5, लाडनूं (राजस्थान)
अमृत महोत्सव (धर्मशासना के 50 वर्ष)
–सं. 2042 आमेट (राजस्थान)
भारत ज्योति–राजस्थान विद्यापीठ कुल का सर्वोच्च अलंकरण
–माघ शुक्ला पंचमी, सं. 2042, उदयपुर (राजस्थान)
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार–सं. 2050, दिल्ली
गणाधिपति उपाधि–सुजानगढ़ (राज.), माघ शुक्ला 7 सं. 2050
स्वर्गवास–गंगाशहर (राज.), आषाढ़ कृ. 3 सं. 2054 (दि. 23-6-97)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10. आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जन्म–टमकोर (राजस्थान), आषाढ़ कृष्णा 13 सं. 1977
माता-पिता–पिता–तोलाराम चोरड़िया, माता–बालुजी
दीक्षा–सरदारशहर (राजस्थान), माघ शुक्ला 10 सं. 1987
महाप्रज्ञ उपाधि–गंगाशहर (राज.), कार्तिक शुक्ला 13 सं. 2035
युवाचार्य पद–राजलदेसर (राज.) माघ शुक्ला 7 सं. 2035
आचार्य पद–सुजानगढ़ (राज.) माघ शुक्ला 7 सं. 2050
पदाभिषेक–दिल्ली, माघ शुक्ला 6 सं. 2051
स्वर्गवास–सरदारशहर (राज.) वैशाख शुक्ला 11 सं. 2067
(दि. 9 मई 2010)

11. आचार्यश्री महाश्रमण

जन्म–सरदारशहर (राजस्थान) वैशाख शुक्ला 9 सं. 2019
माता-पिता–पिता–झूमरमलजी दूगड़, माता–नेमादेवी
दीक्षा–सरदारशहर (राज.) वैशाख शुक्ला 14 सं. 2031
(आचार्यश्री तुलसी की आज्ञा से, मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' के द्वारा)
महाश्रमण पद–लाडनूं (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 9 सं. 2046
युवाचार्य पद–गंगाशहर (राजस्थान), भाद्रपद शुक्ला 12सं. 2054
(दि. 14-09-1997) आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा
आचार्य पद–सरदारशहर (राजस्थान) वैशाख शुक्ला 9 सं. 2067
(दि. 23 मई 2010)

'जो माता-पिता अपनी सन्तान को संस्कारी नहीं बनाते हैं, वे केवल जन्मदाता माता-पिता हैं। सही अर्थ में माता-पिता वे हैं जो अपनी सन्तान को सद्संस्कारों में ढालने का प्रयत्न करते हैं।'

–आचार्य तुलसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्यश्री तुलसी के चातुर्मास एवं मर्यादा-महोत्सव स्थल

क्र.सं.	संवत्	चातुर्मास स्थल	मर्यादा महोत्सव स्थल
1.	1993	गंगापुर	ब्यावर
2.	1994	बीकानेर	गंगाशहर-1
3.	1995	सरदारशहर-1	रतनगढ़-1
4.	1996	बीदासर-1	सरदारशहर-1
5.	1997	लाडनूं-1	लाडनूं-1
6.	1998	राजलदेसर-1	सरदारशहर-2
7.	1999	चूरू-1	श्रीडूंगरगढ़-1
8.	2000	गंगाशहर-1	गंगाशहर-2
9.	2001	सुजानगढ़-1	सुजानगढ़-1
10.	2002	श्रीडूंगरगढ़-1	सरदारशहर-3
11.	2003	राजगढ़	चूरू
12.	2004	रतनगढ़	बीदासर-1
13.	2005	छापर	राजलदेसर-1
14.	2006	जयपुर-1	जयपुर
15.	2007	हांसी	भिवानी
16.	2008	दिल्ली-1	सरदारशहर-4
17.	2009	सरदारशहर-2	सरदारशहर-5
18.	2010	जोधपुर-1	राणावास
19.	2011	बम्बई	बम्बई-1
20.	2012	उज्जैन	भीलवाड़ा
21.	2013	सरदारशहर-3	सरदारशहर-6
22.	2014	सुजानगढ़-2	लाडनूं-2
23.	2015	कानपुर	सैन्थिया
24.	2016	कलकत्ता	हांसी
25.	2017	राजनगर	आमेट
26.	2018	बीदासर-2	भीनासर
27.	2019	उदयपुर	राजनगर
28.	2020	लाडनूं-2	लाडनूं-3
29.	2021	बीकानेर-2	बालोतरा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्र.सं.	संवत्	चातुर्मास स्थल	मर्यादा महोत्सव स्थल
30.	2022	दिल्ली-2	हिसार
31.	2023	बीदासर-3	बीदासर-2
32.	2024	अहमदाबाद	बम्बई-2
33.	2025	मद्रास	चिदम्बरम्
34.	2026	बैंगलोर	हैदराबाद
35.	2027	रायपुर	बीदासर-3
36.	2028	लाडनूं-3	गंगाशहर-2
37.	2029	चूरू-2	मोमासर
38.	2030	हिसार	दिल्ली-1
39.	2031	दिल्ली-3	श्रीडूंगरगढ़-2
40.	2032	जयपुर-2	लाडनूं-4
41.	2033	सरदारशहर-4	पड़िहारा
42.	2034	लाडनूं-4	सुजानगढ़-2
43.	2035	गंगाशहर-2	राजलदेसर-2
44.	2036	लुधियाना	संगरूर
45.	2037	लाडनूं-5	सरदारशहर-7
46.	2038	दिल्ली-4	गंगाशहर-3
47.	2039	राणावास	नाथद्वारा
48.	2040	बालोतरा	बीदासर-4
49.	2041	जोधपुर-2	जसोल
50.	2042	आमेट	उदयपुर
51.	2043	लाडनूं-6	रतनगढ़-2
52.	2044	दिल्ली-5	दिल्ली-2
53.	2045	श्रीडूंगरगढ़-2	छापर
54.	2046	लाडनूं-7	लाडनूं-5
55.	2047	पाली	सुधरी (बगड़ी)
56.	2048	लाडनूं-8	लाडनूं-6
57.	2049	लाडनूं-9	बीदासर-5
58.	2050	राजलदेसर-2	सुजानगढ़-3
59.	2051	दिल्ली-6	दिल्ली-3
60.	2052	लाडनूं-10	लाडनूं-7
61.	2053	लाडनूं-11	

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव स्थल

क्र.सं.	संवत्	चातुर्मास स्थल	मर्यादा-महोत्सव स्थल
1.	2051	दिल्ली-1	दिल्ली
2.	2052	लाडनूं-1	लाडनूं-1
3.	2053	लाडनूं-2	चाड़वास
4.	2054	गंगाशहर	नोखा
5.	2055	सरदारशहर	टोहाना
6.	2056	दिल्ली-2	तारानगर
7.	2057	लाडनूं-3	गंगाशहर-1
8.	2058	बीदासर	पचपदरा
9.	2059	अहमदाबाद	मुम्बई
10.	2060	सूरत	जलगांव
11.	2061	सिरियारी	लाडनूं-2
12.	2062	दिल्ली-3	धूरी
13.	2063	भिवानी	गंगाशहर-2
14.	2064	उदयपुर	आसीन्द
15.	2065	जयपुर	बीदासर
16.	2066	लाडनूं-4	श्रीडूंगरगढ़

आचार्यश्री महाश्रमणजी के चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव स्थल

क्र.सं.	संवत्	चतुर्मास स्थल	मर्यादा-महोत्सव स्थल
1.	2067	सरदारशहर	राजलदेसर
2.	2068	केलवा	आमेट
3.	2069	जसोल	टापरा
4.	2070	लाडनूं	गंगाशहर
5.	2071	दिल्ली	कानपुर–यूपी
6.	2072	विराटनगर (नेपाल)	किशनगंज–बिहार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ साध्वीप्रमुखा : एक परिचय

1. साध्वीप्रमुखा सरदारांजी

जन्म	– चूरू (राजस्थान) आश्विन	सं. 1865
दीक्षा	– उदयपुर (राजस्थान), मार्गशीर्ष कृष्णा 4	सं. 1897
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री जीतमलजी द्वारा	सं. 1910
स्वर्गवास	– बीदासर (राजस्थान) पौष शुक्ला 8	सं. 1927

2. साध्वीप्रमुखा गुलाबांजी

जन्म	– बीदासर (राजस्थान)	सं. 1901
दीक्षा	– बीदासर (राजस्थान), फाल्गुन कृष्णा 6	सं. 1908
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री जीतमलजी द्वारा	सं. 1927
स्वर्गवास	– जोधपुर (राजस्थान) पौष कृष्णा 9	सं. 1942

3. साध्वीप्रमुखा नवलांजी

जन्म	– रामसिंहजी का गुड़ा (राजस्थान)	सं. 1885
दीक्षा	– पाली (राजस्थान), चैत्र शुक्ला 3	सं. 1904
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री मघराजजी द्वारा	सं. 1942
स्वर्गवास	– बीदासर (राजस्थान) आषाढ़ कृष्णा 5	सं. 1954

4. साध्वीप्रमुखा जेठांजी

जन्म	– चूरू (राजस्थान)	सं. 1901
दीक्षा	– चूरू (राजस्थान), आषाढ़ शुक्ला 3	सं. 1919
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री डालचंदजी द्वारा	सं. 1954
स्वर्गवास	– राजलदेसर (राजस्थान) कार्तिक शुक्ला 10	सं. 1981

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. साध्वीप्रमुखा कानकंवरजी

जन्म	– श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान)	सं. 1930
दीक्षा	– बीदासर (राजस्थान), आश्विन शुक्ला 3	सं. 1944
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री कालूगणी द्वारा चूरू (राज.)	सं. 1981
स्वर्गवास	– राजलदेसर (राजस्थान) भाद्रपद कृष्णा 5	सं. 1993

6. साध्वीप्रमुखा झमकूजी

जन्म	– रतननगर, थेलासर,(राज.)कार्तिक कृष्णा 13	सं. 1944
दीक्षा	– लाडनूं (राज.) कार्तिक शुक्ला 5 आचार्यश्री डालचंदजी द्वारा	सं. 1965
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री तुलसी द्वारा, भाद्रपद शुक्ला 9	सं. 1993
स्वर्गवास	– शार्दूलपुर (राजस्थान) आषाढ़ कृष्णा 6	सं. 2003

7. साध्वीप्रमुखा लाडांजी

जन्म	– लाडनूं (राजस्थान), श्रावण शुक्ला 3	सं. 1960
दीक्षा	– लाडनूं (राजस्थान), पौष कृष्णा 5	सं. 1982
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री तुलसी द्वारा, आषाढ़ कृष्णा 7	सं. 2003
स्वर्गवास	– बीदासर (राजस्थान) चैत्र शुक्ला 13	सं. 2027

8. महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी

जन्म	– कलकत्ता (प. बंगाल) श्रावण कृष्णा 13 मूल निवास–लाडनूं (राजस्थान)	सं. 1998
दीक्षा	– केलवा (राजस्थान), आषाढ़ पूर्णिमा	सं. 2017
प्रमुखा पद	– आचार्यश्री तुलसी द्वारा, गंगाशहर (राज.) माघ कृष्णा 13	सं. 2028
महाश्रमणी पद	– आचार्यश्री तुलसी द्वारा राजलदेसर (राज.) माघ शुक्ला 7	सं. 2035

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ साधु-संघ की मौलिक मर्यादाएं

1. सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
2. विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
3. अपने शिष्य न बनाएं।
4. आचार्य, योग्य व्यक्ति को ही दीक्षित करें। दीक्षित करने पर यदि कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।
5. आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी चुने तो सब साधु- साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।
6. श्रद्धा या आचार के बोल को लेकर गण में भेद न डालें।

   दलबन्दी न करें। आचार्य व बहुश्रुत साधु कहे वह मान लें अथवा केवली-गम्य कर दें।
7. गण में शुद्ध साधुपन सरधे वह गण में रहें किन्तु छल-कपटपूर्वक गण में न रहें। जिसका मन साक्षी दे, भली-भांति साधुपन पलता जाने, गण में तथा अपने आपमें साधुपन माने तो गण में रहें किन्तु वंचना-पूर्वक गण में न रहे।
8. गण में किसी साधु-साध्वी के प्रति अनास्था उपजे, शंका उपजे वैसी बात न करें।
9. किसी साधु-साध्वी में दोष जान पड़े तो तत्काल उसे या आचार्य को जता दें, किन्तु उसका प्रचार न करें, दोषों को चुन-चुनकर इकट्ठा न करें।
10. किसी साधु-साध्वी को जाति आदि को लेकर ओछी जबान न बोलें।
11. गण के पुस्तक पन्नों आदि पर अपना अधिकार न करें।
12. गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्ति से सम्पर्क न करें।
13. पद के लिए उम्मीदवार न बनें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ की मौलिक मान्यताएं

1. दया और अहिंसा एक है। जीव जो अपने आयुष्य बल के आधार पर जीते हैं, वह दया या अहिंसा नहीं है। जो मरते हैं, वह हिंसा नहीं है। जो व्यक्ति जीवों को मारता है, वह हिंसक है और जो नहीं मारता, वह अहिंसक है।
2. पुण्य का स्वतन्त्र बन्ध नहीं होता। पुण्य निर्जरा (धर्म) के साथ ही होता है।
3. आचार्यश्री भिक्षु ने सभी सांसारिक कार्यों को एक ही दृष्टि से नहीं देखा। उन्होंने कहा–कुछ सांसारिक कार्य ऐसे होते हैं जो प्रत्यक्षतः बुरे होते हैं, निन्दनीय होते हैं। कुछ जिनका व्यवहार के धरातल पर मूल्य होता है, जो अच्छे होते हैं, प्रशंसनीय होते हैं।
4. प्रत्येक व्यक्ति का धार्मिक आचरण अच्छा होता है। आचरण की अच्छाई और बुराई जाति विशेष या देश-विशेष से सम्बन्धित नहीं होती।
5. दान देना मात्र धर्म नहीं है। जिस दान में राग-द्वेष नहीं, वही दान, धर्म कोटि का दान है। शेष दान व्यवहार कोटि का है।
6. धर्म त्याग में है, भोग में नहीं।
7. धर्म को खरीदा नहीं जा सकता। जहां धर्म का विनिमय होता है, वहां अध्यात्म धर्म नहीं होता, व्यवहार हो सकता है।
8. लौकिक धर्म और लोकोत्तर धर्म को एक मानना भूल है।
9. मिश्र-धर्म की मान्यता गलत है।
10. बड़े जीवों की रक्षा के लिए छोटे जीवों को मारना अधर्म है, पाप है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य भिक्षु की धर्म-क्रांति के आधार

आचार्य भिक्षु स्थानकवासी समाज से अलग हुए, उसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे–

1. भगवान महावीर का वेश भी वन्दनीय है।
2. इस समय शुद्ध साधुपन नहीं पाला जा सकता।
3. व्रत और अव्रत को पृथक्-पृथक् न मानना।
4. मिश्र धर्म की मान्यता–एक ही क्रिया में पुण्य और पाप दोनों को स्वीकारना।
5. लौकिक दया और दान को लोकोत्तर दया और दान से पृथक् न मानना।
6. जिस कार्य के लिए भगवान महावीर की आज्ञा नहीं है, वहां धर्म मानना।
7. दोषपूर्ण आचार की स्थापना करना।
8. स्थापित स्थान में रहना।
9. उद्दिष्ट आहार लेना।
10. साधु के निमित्त खरीदी वस्तुओं का उपयोग करना।

. नित्य-प्रति एक घर से भोजन लेना।

1. वस्त्र-पात्र पुस्तक आदि का प्रतिलेखन न करना।

13. अभिभावकों की आज्ञा प्राप्त किये बिना गृहस्थ को दीक्षित करना।
14. मर्यादा से अधिक वस्त्र-पात्र रखना।
15. गृहस्थों से अपने लिए प्रतियां लिखवाना।

आचार्य भिक्षु की शिक्षाएं और शासनाएं

. मर्यादाएं हृदय को साक्षी बनाकर पालो।

2. संकोचवश संघ में मत रहो।
3. नियमानुवर्ती बनो। स्वेच्छाचारिता मत बरतो।
4. आचार्य के कार्य में हस्तक्षेप मत करो।
5. आचार से सम्बन्ध रखो, व्यक्ति से नहीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. किसी दोष को मत फैलाओ। सम्बन्धित व्यक्ति से या आचार्य से कहो।

7. बड़ों का सम्मान करो। छोटों के साथ वात्सल्य रखो।

8. रोगी साधु-साध्वी की अग्लान और निःस्वार्थ भाव से सेवा करो। उसकी परिचर्या में न्यूनता मत लाओ।

9. दलबन्दी मत करो।

10. गण-गणी के सम्बन्धों को पुष्ट करो।

. सबको अपना-अपना संविभाग दो। अपने संविभाग से संतुष्ट रहो।

1. पद की आकांक्षा मत करो।

13. निःस्वार्थ भाव से संघ की सेवा करो।

तेरापंथ के ऐतिहासिक स्थल

. कंटालिया	– आचार्यश्री भिक्षु जन्म स्थल
2. सुधरी(बगड़ी)	– आचार्यश्री भिक्षु का अभिनिष्क्रमण स्थल (जैतसिंहजी की छतरी)
3. केलवा	– आचार्यश्री भिक्षु दीक्षा स्थल
4. राजनगर	– आचार्यश्री भिक्षु का बोधि स्थल
5. सिरियारी	– आचार्यश्री भिक्षु स्वर्गवास स्थल
6. जयपुर	– श्रीमज्जयाचार्य का स्मारक (रामनिवास बाग)
7. लाडनूं	– आचार्यश्री तुलसी जन्म-स्थल
	– जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय
	– पारमार्थिक शिक्षण-संस्था
	– वृद्ध साध्वियों का स्थिरवास-स्थल
8. दिल्ली	– अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर, महरौली
9. राणावास	– शिक्षण केन्द्र
10. गंगाशहर	– आचार्यश्री तुलसी समाधि स्थल
11. सरदारशहर	– आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल
12. राजसमंद	– तुलसी साधना शिखर व अणुव्रत विश्वभारती

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छठा प्रकरण : प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा

ध्यान क्या है?

- किसी एक बिन्दु पर मन को स्थिर करना।
- बाहर से भीतर की ओर लौटना।
- जो छिपा है उसे उद्घाटित करना।
- निर्विचार अन्तर्यात्रा।
- प्रत्येक क्षण अप्रमत्त जागरूक रहना।
- हर घटना में अपनी उपस्थिति का अनुभव करना।
- जो शक्ति और आनन्द से भरता है।
- जो हर परिस्थिति में शान्त और सन्तुलित रहने की क्षमता प्रदान करता है।

चित्त चंचल क्यों होता है?

- लक्ष्यहीन जीवन जीने से।
- कृत्रिम जीवन-व्यवहारों से।
- कषाय के योग व आसक्ति से।
- भौतिक आकर्षणों की अधिकता से।
- जीवन में आध्यात्मिकता की कमी से।
- वृत्तियों का बिना विवेक के दमन करने से।
- भूतकाल के अश्रेयस्कर प्रसंगों के चिन्तन एवं चिन्ता से।
- भविष्य की अस्वाभाविक व असम्यक् कल्पनाओं व आकांक्षाओं से।

कमजोरी मिटाने के उपाय

- **शारीरिक कमजोरी**–प्रसन्नता, आसन, प्राणायाम।
- **आर्थिक कमजोरी**–व्यापार में प्रामाणिकता, मितव्ययिता, सन्तुलित परिश्रम।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- **सामाजिक कमजोरी**–संगठन, वात्सल्य भाव, मैत्री भाव।
- **मानसिक कमजोरी**–संतोष, सत्संकल्प, स्वाध्याय, ध्यान।
- **आत्मिक कमजोरी**–कषाय-मुक्तता, व्यसन-मुक्तता, ध्यान।

क्रोध क्यों आता है?

- अहं पर चोट होने से।
- प्रतिकूल परिस्थितियों से प्रभावित होने से।
- स्नायुओं की कमजोरी से।
- तामसिक तथा उत्तेजक आहार से।

क्रोध के दुष्परिणाम

- यकृत, तिल्ली और गुर्दे विकृत होते हैं।
- रक्तचाप बढ़ता, घटता है।
- आंतों में घाव होते हैं।
- पाचक रस अल्प मात्रा में बनता है।
- ज्ञान तन्तु कमजोर होते हैं।
- चित्त मलिन होता है।

क्रोध शान्त करने के उपाय

- अपनी भूल स्वीकार करना।
- स्वर बदलना, अनुप्रेक्षा करना।
- श्वासोच्छ्वास की गति पर मन को स्थिर करना।
- कुछ मिनटों के लिए श्वास को रोकना।
- मौन रहना, चिन्तन करना।
- दूसरी जगह पर उठकर चले जाना।
- क्षमा का संकल्प करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विवेक पड़िमा (प्रतिमा)

महाप्राण ध्वनि 9 बार, कायोत्सर्ग पांच मिनट

अनुचिन्तन करें–

1. मैं क्रोध नहीं हूं – क्रोध मेरा स्वभाव नहीं है।
2. मैं मान नहीं हूं – मान मेरा स्वभाव नहीं है।
3. मैं माया नहीं हूं – माया मेरा स्वभाव नहीं है।
4. मैं लोभ नहीं हूं – लोभ मेरा स्वभाव नहीं है।
5. मैं भय नहीं हूं – भय मेरा स्वभाव नहीं है।
6. मैं शोक नहीं हूं – शोक मेरा स्वभाव नहीं है।
7. मैं घृणा नहीं हूं – घृणा मेरा स्वभाव नहीं है।
8. मैं काम नहीं हूं – काम मेरा स्वभाव नहीं है।
9. मैं मिथ्यात्व नहीं हूं – मिथ्यात्व मेरा स्वभाव नहीं है।

अतीत का प्रतिक्रमण करें–

1. यदि मैंने क्रोध किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
2. यदि मैंने मान किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
3. यदि मैंने माया की हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
4. यदि मैंने लोभ किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
5. यदि मैंने भय का संवेदन किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
6. यदि मैंने शोक किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
7. यदि मैंने घृणा की हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
8. यदि मैंने काम का आसेवन किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
9. यदि मैंने मिथ्यात्व का व्यवहार किया हो तो मनसा वाचा कर्मणा तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रेक्षा संगान

प्रेक्षा श्रद्धां यायात्	– प्रेक्षा श्रद्धा की कोटि में पहुंचे।
श्रद्धा वीर्यं यायात्	– श्रद्धा पराक्रम की कोटि में पहुंचे।
वीर्यं चरणं यायात्	– पराक्रम आचरण की कोटि में पहुंचे।
अन्तर्भावे मे, चिन्तायां मे	– मेरे अन्तःकरण में, मेरे चिन्तन में।
आचरणे में, व्यवहारे मे	– मेरे आचरण में, मेरे व्यवहार में।
समता भूयात्, समता भूयात्	– समता हो, समता हो।
नवसूर्यो मे उदयं यायात्	– मेरे जीवन में नया सूरज उगे।
उदयं यायात्	– नये प्रभात का उदय हो।
तेजो लेश्या उदयं यायात्	– मेरे जीवन में तेजो लेश्या प्रकट हो।
उदयं यायात्	– अध्यात्म की किरणें फूटें।

प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति

ध्यान की पूर्व तैयारी–सावधान, ध्यान के लिए तैयार हो जाएं।

ध्यानासन–जिस आसन में लम्बे समय तक सुविधापूर्वक स्थिरता से बैठ सकें, उस ध्यानासन का चुनाव करें। जैसे–पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन या वज्रासन।

किसी एक मुद्रा (ब्रह्म-मुद्रा या ज्ञान-मुद्रा) का चुनाव करें–

ब्रह्म-मुद्रा–दोनों हथेलियों को नाभि के नीचे स्थापित करें। बायीं हथेली नीचे और दायीं ऊपर रहे। (अथवा)

ज्ञान-मुद्रा–दोनों हाथों को घुटनों पर टिकायें। अंगूठे और तर्जनी के अग्र भाग को मिलायें। शेष तीनों अंगुलियां सीधी रहे।

आंखों को बिना दबाव दिये, कोमलता से बंद करें।

अर्हम् की ध्वनि–प्रारंभ में अर्हम् की नौ बार ध्वनि करें।

अर्हम्-ध्वनि की विधि–पहले पूरा श्वास भरकर उसे धीरे-धीरे छोड़ते समय अर्हम् का उच्चारण इस प्रकार करें–'अ' कार का उच्चारण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करते समय चित्त नाभि पर केन्द्रित करें, (समय दो सेकंड) 'हँ' का उच्चारण करते समय चित्त को आनन्द केन्द्र पर केन्द्रित करें। (समय 4 सेकंड) 'म्' की ध्वनि करते समय चित्त को विशुद्धि केन्द्र तक ले जाएं, (समय 6 सेकण्ड)। अन्तिम नाद के समय चित्त को ज्ञानकेन्द्र पर टिकाएं (समय 1 सेकण्ड) एक सेकण्ड का समय प्रारम्भ में नाद के लिए रहे।

ध्येय-सूत्र

संपिक्खए अप्पगमप्पएणं का उच्चारण तीन बार करें।

आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें। स्वयं, स्वयं को देखें।

अपने आपको देखने के लिए ही प्रेक्षा-ध्यान का अभ्यास करें।

ध्यान का संकल्प–मैं चित्त-शुद्धि के लिए प्रेक्षा-ध्यान का प्रयोग कर रहा हूं। (तीन बार दोहराएं)

ध्यान का पहला चरण–कायोत्सर्ग

शरीर को स्थिर, शिथिल और तनाव-मुक्त करें। मेरु-दंड और गर्दन सीधी रहे। अकड़न न हो। मांस-पेशियों को ढीला छोड़ें। शरीर की पकड़ को छोड़ें।

पांच मिनट तक काय-गुप्ति का अभ्यास करें। प्रतिमा की भांति शरीर को स्थिर रखें। हलन-चलन न करें। पांच मिनट तक पूरी स्थिरता।

कायोत्सर्ग के दो अर्थ हैं–शरीर का शिथिलीकरण और अपने प्रति जागरूकता। प्रत्येक अवयव के प्रति जागरूक बनें। चित्त को पैर से सिर तक क्रमशः शरीर के प्रत्येक भाग पर ले जाएं। पूरे भाग में चित्त की यात्रा करें।

शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें। प्रत्येक मांसपेशी और प्रत्येक स्नायु शिथिल हो जाये। पूरे शरीर की शिथिलता को साधें। गहरी एकाग्रता। पूरी जागरूकता। कायोत्सर्ग....

*(जब नये साधकों को अभ्यास कराना हो तो–दाहिने पांव के अंगूठे से क्रमशः सिर तक प्रत्येक भाग का नाम लेते हुए शिथिल कराएं। जैसे–

* कोष्ठक में दिए गए शब्द निर्देश देते समय नहीं बोले।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दाहिने पैर के अंगूठे पर चित्त को ले जाएं—पूरे भाग में चित्त को घुमाएं, चित्त की यात्रा करें। शिथिलता का सुझाव दें—शिथिल हो जाएं। (तीन बार)....शिथिल हो रहा है। (तीन बार) अनुभव करें। शिथिल हो गया है (तीन बार)—इस प्रकार पूरे कायोत्सर्ग की विधि में दिए गये 'प्रत्येक अंगुली, पंजा, तलुवा' आदि अवयवों के नामों को क्रमशः बोल कर पूरे शरीर को शिथिल कराएं।)

(दो मिनट बाद) अनुभव करें—शरीर का एक-एक भाग शिथिल होता जा रहा है। शरीर के प्रत्येक भाग में हलकेपन का अनुभव करें। पैर से सिर तक पूरा शरीर शिथिल हो गया है।

पूरे ध्यान काल तक कायोत्सर्ग की मुद्रा बनी रहे। शरीर को अधिक से अधिक स्थिर और निश्चल रखने का अभ्यास करें।

पांच मिनट अन्तर मौन का अभ्यास करें। कंठ का कायोत्सर्ग करें। चित्त को स्वर-यन्त्र पर केन्द्रित करें। स्वर-यन्त्र की शिथिलता को साधें।

ध्यान का दूसरा चरण—अन्तर्यात्रा

प्रथम विकल्प—(नए साधकों को यह प्रयोग कराएं)

चित्त को शक्ति-केन्द्र पर ले जाएं। ऊपर उठाएं, सुषुम्ना के मार्ग से ज्ञान केन्द्र तक लाएं, फिर उसी मार्ग से शक्ति केन्द्र तक नीचे लाएं। नीचे से ऊपर, ऊपर से नीचे, सुषुम्ना में चित्त की यात्रा चले। सुषुम्ना में होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। पूरी चेतना को सुषुम्ना में समेट लें। (एक दो मिनट के बाद)

चित्त की गति को श्वास की गति के साथ जोड़ें। श्वास छोड़ते समय चित्त को नीचे से ऊपर ले जाएं और श्वास लेते समय चित्त को ऊपर से नीचे लाएं।

(प्रारम्भ में ब्लडप्रेशर मापने के यन्त्र के उदाहरण से पारे की तरह चित्त को ऊपर-नीचे घुमाने की बात समझा दें। प्रशिक्षण के समय इस बात को स्पष्ट कर दें।)

दूसरा विकल्प—(अभ्यास की परिपक्वता के पश्चात् यह प्रयोग कराएं)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चित्त को शक्ति केन्द्र पर ले जायें, ऊपर उठाएं, सुषुम्ना के मार्ग से आनन्द-केन्द्र तक लाएं। फिर उसी मार्ग से नीचे लाएं। सुषुम्ना में चित्त की यात्रा चले। पूरा ध्यान अन्तर्यात्रा के पथ पर रहे। आनन्द केन्द्र से शक्ति केन्द्र और शक्ति केन्द्र से आनन्द केन्द्र पर चित्त की यात्रा चले। वहां होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

चित्त की गति को श्वास की गति के साथ जोड़ें। श्वास लेते समय चित्त को आनन्द-केन्द्र से शक्ति-केन्द्र की ओर ले जाएं। श्वास छोड़ते समय चित्त को शक्ति-केन्द्र से आनन्द केन्द्र की ओर लाएं।

तीसरा विकल्प–(परिपक्वता के पश्चात् यह प्रयोग कराएं।) उपरोक्त विधि से चित्त को शक्ति-केन्द्र से क्रमशः प्रत्येक चैतन्य-केन्द्र की यात्रा करते हुए पुनः शक्ति केन्द्र पर लाएं।

ध्यान का तीसरा चरण–(1) दीर्घ श्वास प्रेक्षा

श्वास की गति को मन्द करें। लम्बा श्वास लें, लम्बा श्वास छोड़ें। श्वास लयबद्ध और सम-ताल चले। 'पहली बार श्वास को लेने और छोड़ने में जितना समय लगे, दूसरी बार भी उतना ही समय लगे, तीसरी बार भी उतना ही समय लगे।'–इस सुझाव को प्रारम्भ में एक-दो बार दिया जाये।

श्वास के कम्पन नाभि तक पहुंचे। श्वास लेते समय पेट की मांसपेशियां फूलती है, छोड़ते समय सिकुड़ती हैं। चित्त को नाभि पर केन्द्रित करें और पेट की मांसपेशियों के फूलने और सिकुड़ने का अनुभव करें तथा उसके द्वारा प्रत्येक आते और जाते श्वास का अनुभव करें। प्रत्येक श्वास की जानकारी बनी रहे।

गहरी एकाग्रता और पूरी जागरूकता के साथ दीर्घश्वासप्रेक्षा का अभ्यास करें।....अभ्यास की निरन्तरता को बनाये रखें।

(कुछ समय बाद) चित्त को नाभि से हटाकर दोनों नथुनों के भीतर सन्धि-स्थल पर केन्द्रित करें। पूरा व लम्बा, लयबद्ध श्वास चालू रखते हुए आते-जाते प्रत्येक श्वास का अनुभव करें, प्रेक्षा करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(बीच-बीच में यह सुझाव देते रहें।) पूरा, लम्बा, लयबद्ध श्वास चालू रहे। प्रत्येक श्वास को जानते हुए लें, जानते हुए छोड़ें। चित्त की सारी शक्ति श्वास को देखने में लगा दें। केवल श्वास का अनुभव करें....

(एक-दो बार यह सुझाव दें–) यदि विकल्प आते हैं तो उन्हें रोकने का प्रयत्न न करें। केवल द्रष्टाभाव से देखें और बीच-बीच में श्वास संयम का प्रयोग करें या जीभ को उलटकर तालु से लगा दें। श्वास के प्रति पूर्ण जागरूक रहें। केवल श्वास का ही अनुभव करें।

ध्यान का तीसरा चरण–(2) समवृत्ति श्वास प्रेक्षा

(1) श्वास की गति को मन्द करें। पूरा, लम्बा श्वास लें, पूरा, लम्बा श्वास छोड़ें। श्वास को लयबद्ध और समताल करें। श्वास को लेने में जितना समय लगे, उतना ही समय श्वास को छोड़ने में लगे।

बाएं नथुने से श्वास लें, दायें से निकालें, फिर दायें से लें और बाएं से निकालें। संकल्प-शक्ति के द्वारा ऐसा करें। यदि संकल्प-शक्ति के सहारे न कर सकें तो अंगुली और अंगूठे के सहारे करें। (प्रशिक्षण के समय अंगुली और अंगूठे का प्रयोग बता दें)

श्वास के साथ चित्त को जोड़ें। चित्त और श्वास दोनों साथ-साथ चले। केवल श्वास का अनुभव करें। समवृत्ति श्वास प्रेक्षा।

(कुछ समय बाद बीच-बीच में यह सुझाव देते रहें) चित्त और श्वास साथ-साथ चले। श्वास भीतर, चित्त भीतर। श्वास बाहर, चित्त बाहर।)

(2) श्वास संयम के साथ समवृत्ति श्वास प्रेक्षा–

1. बाएं नथुने से श्वास लें और उसे भीतर रोकें।
2. दायें नथुने से निकालें और उसे बाहर रोकें।
3. दायें से लें और उसे भीतर रोकें।
4. बाएं से निकालें और उसे बाहर रोकें।

प्रत्येक आवृत्ति में इस प्रकार चार बार श्वास संयम का प्रयोग करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह ध्यान रहे कि जितने समय तक सुविधा से रोक सकते हैं, उतने समय तक ही रोकें। एक सेकण्ड से पांच सेकण्ड तक। जबरदस्ती बिल्कुल न करें। श्वास के प्रति जागरूक रहें।

ध्यान का तीसरा चरण–(3) शरीर प्रेक्षा

(शरीर प्रेक्षा में हमें शरीर को देखना है। खुली आंखों से नहीं, चित्त से। आंखें बन्द रहेंगी। चित्त को शरीर के प्रत्येक अवयव पर ले जाकर वहां पर होने वाले परिणमन, स्पन्दन, प्रकंपन या संवेदन आदि को द्रष्टाभाव से देखना है। कपड़े का स्पर्श, पसीना, खुजली, दर्द आदि जो कुछ अनुभव हो, उसे देखना है, केवल देखना है। उसका अनुभव करना है–इस बात को प्रशिक्षण में स्पष्ट कर दें तथा प्रयोग के साथ बताएं)

चित्त को दाएं पैर के अंगूठे पर केन्द्रित करें। पूरे भाग में चित्त की यात्रा करें। वहां होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। केवल जानें और अनुभव करें। प्रियता और अप्रियता से मुक्त रहकर केवल द्रष्टाभाव से देखें।

इसी तरह अंगुलियां...पंजा....तलवा....एड़ी....टखना.... पिण्डली... घुटना.... साथल.... और कटिभाग।

(प्रत्येक अवयव पर आधा से एक मिनिट प्रेक्षा कराएं) (प्राण के प्रकम्पनों को....द्रष्टाभाव से देखें–इस वाक्य को प्रत्येक अवयव के साथ बोलना जरूरी नहीं है। बीच-बीच में एक-दो बार दोहराएं।)

इसी प्रकार बायां पैर....(प्रत्येक अवयव का नाम लेकर आधा से एक मिनट तक प्रेक्षा कराएं) अधोलोक की यात्रा सम्पन्न।

अब मध्यलोक की यात्रा प्रारम्भ करें। पेडू के पूरे भाग में चित्त की यात्रा करें–दायें-बायें, आगे-पीछे, बाहर-भीतर–प्रत्येक भाग में चित्त को केन्द्रित करें और वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। केवल द्रष्टाभाव से देखें।....(एक-दो मिनट बाद) इसी तरह पेट के पूरे भाग की प्रेक्षा करें।....(एक से दो मिनट)

अब पेट के प्रत्येक भीतरी अवयव की प्रेक्षा करें। दोनों गुर्दे.... बड़ी आंत.... छोटी आंत.... अग्न्याशय (पेन्क्रियाज)....पक्वाशय (डियोडिनम)....आमाशय....तिल्ली (स्प्लीन)....(लिवर) और तनुपट (डायाफ्राम).... (प्रत्येक अवयव पर 20 से 30 सेकंड रुकें।)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अब वक्षस्थल (छाती) के पूरे भाग की यात्रा करें–दाएं-बाएं, आगे-पीछे, बाहर और भीतर, प्रत्येक भाग में चित्त को केन्द्रित करें और वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। अब वक्षस्थल के प्रत्येक अवयव की प्रेक्षा करें–हृदय....दायीं पसलियां....बायीं पसलियां....दायां फेफड़ा.... बायां फेफड़ा। ....पीठ का पूरा भाग–मेरुदण्ड, सुषुम्ना, सुषुम्ना-शीर्ष....।

अब दोनों हाथों की प्रेक्षा करें। दायां हाथ....अंगूठा.... अंगुलियां....हथेली.... मणिबंध (कलाई)....कलाई से कुहनी तक.... कुहनी से कन्धे तक की प्रेक्षा करें। इसी प्रकार बाएं हाथ के अंगूठे से कन्धे तक एक-एक भाग की प्रेक्षा करें।....

कंठ.... स्वरयन्त्र.... गर्दन.... प्रत्येक भाग पर क्रमशः चित्त की यात्रा करें और प्रेक्षा करें। मध्यलोक की यात्रा सम्पन्न।

अब ऊर्ध्वलोक की यात्रा प्रारम्भ करें–ठुड्डी.... होंठ....मुंह.... मसूढ़े....दांत....जीभ....तालु....दायां कपोल.... बायां कपोल.... नाक.... दायीं आंख.... बायीं आंख.... दायीं कनपटी, दायां कान.... बायीं कनपटी, बायां कान....ललाट.... और सिर। प्रत्येक भाग की प्रेक्षा करें। ऊर्ध्वलोक की यात्रा सम्पन्न।

अब एक साथ पूरे शरीर की प्रेक्षा करें। जो आसानी से खड़े-खड़े कर सकते हैं, खड़े-खड़े करें।

चित्त में यह क्षमता है कि वह एक बिन्दु पर केन्द्रित हो सकता है और पूरे शरीर में एक साथ फैल सकता है। चित्त को पैर के दोनों अंगूठों पर केन्द्रित करें। पूरे शरीर के आकार में फैलाते हुए पैर से सिर तक शीघ्रता से ले जाएं। उसी गति से सिर से पैर तक लाएं। बीच-बीच में श्वास-संयम के साथ शरीर-प्रेक्षा का प्रयोग करें। शरीर के कण-कण का स्पर्श करें। शरीर का कण-कण चेतना और प्राण के स्पर्श से झंकृत हो उठे। अनुभव करें, जैसे पूरे शरीर में बिजली की धारा दौड़ रही है। कपड़े का स्पर्श, पसीना, खुजली, स्पन्दन, दर्द जो कुछ हो रहा है, उसका तटस्थ भाव से अनुभव करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अब धीमी गति से चित्त की यात्रा चले। कहीं पीड़ा, अवरोध हो उस पर कुछ क्षणों के लिए रुकें। केवल जानें। पूर्ण समभाव रहे। (तीन मिनट)

ध्यान का तीसरा चरण—(4) चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा

(चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा जागरण की प्रक्रिया है। सुप्त चैतन्य केन्द्रों को प्रेक्षा के द्वारा जागृत करना है। चैतन्य-केन्द्र-प्रेक्षा में प्रत्येक केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित करें और वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। गहरी एकाग्रता, पूरी जागरूकता बनी रहे। केवल देखें।—यह सुझाव प्रारम्भ में एक-दो बार दें।)

1. **शक्ति केन्द्र**—चित्त को शक्ति केन्द्र—पृष्ठरज्जु के निचले सिरे पर केन्द्रित करें। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। केवल शक्ति केन्द्र के प्रति पूर्ण जागरूक रहें। पूरी एकाग्रता बनी रहे।

2. **स्वास्थ्य केन्द्र**—चित्त को स्वास्थ्य केन्द्र—पेडू के मध्य भाग पर केन्द्रित करें। आगे से पीछे सुषुम्ना तक चित्त के प्रकाश को पूरे भाग में फैलाएं। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

3. **तैजस केन्द्र**—चित्त को तैजस केन्द्र—नाभि के स्थान पर केन्द्रित करें। आगे से पीछे सुषुम्ना तक पूरे भाग में चित्त को फैलाएं। जैसे टॉर्च का प्रकाश सीधी रेखा में फैलता है, वैसे ही चित्त के प्रकाश को सीधी रेखा में पीछे तक फैलाएं। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। गहरी एकाग्रता के साथ अनुभव करें, जिससे स्वतः ही श्वास-संयम हो जाये।

4. **आनन्द केन्द्र**—चित्त को आनन्द केन्द्र—हृदय के पास (दोनों फुप्फुस के बीच में) जो गड्ढ़ा है वहां पर केन्द्रित करें। आगे से पीछे सुषुम्ना तक टॉर्च के प्रकाश की भांति चित्त के प्रकाश को फैलाएं और वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। बीच-बीच में श्वास-संयम का प्रयोग करें।

5. **विशुद्धि केन्द्र**—चित्त को विशुद्धि केन्द्र—कण्ठ के मध्य भाग पर केन्द्रित करें। आगे से पीछे सुषुम्ना तक चित्त के प्रकाश को पूरे भाग में फैलाएं। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। बीच-बीच में श्वास-संयम का प्रयोग करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. ब्रह्म केन्द्र–चित्त को ब्रह्म केन्द्र–जीभ के अग्र भाग पर केन्द्रित करें। जीभ अधर में रहे। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

7. प्राण केन्द्र–चित्त को प्राण केन्द्र–नासाग्र पर केन्द्रित करें। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

8. अप्रमाद केन्द्र–चित्त को अप्रमाद केन्द्र–दोनों कानों पर–भीतरी मध्य और बाहरी भाग पर तथा आस-पास के भाग पर केन्द्रित करें। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

9. चाक्षुष केन्द्र–चित्त को चाक्षुष केन्द्र–दोनों आंखों के भीतर केन्द्रित करें, वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

10. दर्शन केन्द्र–चित्त को दर्शन केन्द्र–दोनों आंखों और भृकुटियों के मध्य भाग पर केन्द्रित करें। भीतर गहराई तक चित्त को ले जाएं। आगे से पीछे–मस्तिष्क के पीछे की दीवार तक चित्त के प्रकाश को फैला दें। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। गहरी एकाग्रता और पूरी जागरूकता के साथ केवल अनुभव करें, प्रेक्षा करें। बीच-बीच में श्वास-संयम का प्रयोग करें।

11. ज्योति केन्द्र–चित्त को ज्योति केन्द्र–ललाट के मध्य भाग पर केन्द्रित करें। भीतर गहराई में चित्त को ले जाएं। आगे से पीछे मस्तक के पीछे के भाग तक पूरे भाग में चित्त के प्रकाश को फैलाएं। वहां होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। बीच-बीच में श्वास-संयम का प्रयोग करें।

12. शान्ति केन्द्र–चित्त को शान्ति केन्द्र–सिर के अग्र भाग में केन्द्रित करें। जैसे दीये का प्रकाश चारों दिशाओं में फैलता है, वैसे ही चित्त के प्रकाश को शान्ति केन्द्र पर फैलाएं और उसे गहराई तक ले जाएं। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

13. ज्ञान केन्द्र–चित्त को ज्ञान केन्द्र–सिर के ऊपर के भाग, चोटी के स्थान पर केन्द्रित करें। दीये के प्रकाश की भांति पूरे भाग में चित्त के प्रकाश को फैलाएं। गहराई तक चित्त को ले जाएं। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अब एक साथ सभी चैतन्य केन्द्रों की प्रेक्षा करें। जो खड़े-खड़े कर सकते हैं वे खड़े-खड़े करें। चित्त को शक्ति-केन्द्र पर ले जाएं, फिर क्रमशः स्वास्थ्य-केन्द्र, तैजस-केन्द्र, आनन्द-केन्द्र....आदि सभी केन्द्रों पर होते हुए पुनः शक्ति केन्द्र पर ले आएं। वृत्ताकार में सभी चैतन्य केन्द्रों पर चित्त की यात्रा चले। तेजी के साथ चित्त को सभी चैतन्य केन्द्रों पर घुमाएं और वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें।

(दो-तीन मिनट)

ध्यान का तीसरा चरण–(5) लेश्या-ध्यान

प्रत्येक मनुष्य के शरीर के चारों तरफ एक आभामण्डल होता है। उसके रंग भाव-परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं। भाव और आभा-मण्डल का गहरा संबंध है। हम भावशुद्धि के द्वारा आभामण्डल को विशुद्ध बना सकते हैं और आभामण्डल की विशुद्धि से भाव की विशुद्धि को जाना जा सकता है। (यह जानकारी पहले प्रयोग के समय या प्रशिक्षण के समय दें।)

आनन्द केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान

अनुभव करें–अपने चारों ओर पन्ने की भांति चमकते हुए हरे रंग का प्रकाश फैल रहा है। हरे रंग के परमाणु फैल रहे हैं। अब इस हरे रंग का श्वास लें। अनुभव करें–प्रत्येक श्वास के साथ हरे रंग के परमाणु शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। चित्त को आनन्द केन्द्र पर केन्द्रित करें। वहां पर चमकते हुए हरे रंग का ध्यान करें।

(कुछ समय बाद) अनुभव करें–आनन्द केन्द्र से हरे रंग के परमाणु निकलकर शरीर के चारों ओर फैल रहे हैं। पूरा आभामण्डल हरे रंग के परमाणुओं से भर रहा है। उन्हें देखें, अनुभव करें।....अनुभव करें, भाव धारा निर्मल हो रही है, भाव धारा निर्मल हो रही है, भाव धारा निर्मल हो रही है।)

विशुद्धि केन्द्र पर नीले रंग का ध्यान

अनुभव करें–अपने चारों ओर मयूर की गर्दन की भांति चमकते हुए नीले रंग का प्रकाश फैल रहा है। नीले रंग के परमाणु फैल रहे हैं। अब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इस नीले रंग का श्वास लें। अनुभव करें–प्रत्येक श्वास के साथ नीले रंग के परमाणु शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। चित्त को विशुद्धि केन्द्र पर केन्द्रित करें। वहां पर चमकते हुए नीले रंग का ध्यान करें।

(कुछ समय बाद) अनुभव करें–विशुद्धि केन्द्र से नीले रंग के परमाणु निकलकर शरीर के चारों ओर फैल रहे हैं। पूरा आभामण्डल नीले रंग के परमाणुओं से भर रहा है। उन्हें देखें, अनुभव करें।....अनुभव करें– वासनाएं अनुशासित हो रही हैं, वासनाएं अनुशासित हो रही हैं, वासनाएं अनुशासित हो रही हैं।

दर्शन केन्द्र पर अरुण रंग का ध्यान

अनुभव करें–अपने चारों ओर बाल सूर्य की भांति चमकते हुए अरुण रंग का प्रकाश फैल रहा है। अरुण रंग के परमाणु फैल रहे हैं। अब इस अरुण रंग का श्वास लें, अनुभव करें–प्रत्येक श्वास के साथ अरुण रंग के परमाणु शरीर के भीतर जा रहे हैं। चित्त को दर्शन केन्द्र पर केन्द्रित करें। वहां पर चमकते हुए अरुण रंग का ध्यान करें।

(कुछ समय बाद) अनुभव करें–दर्शन केन्द्र से अरुण रंग के परमाणु निकलकर शरीर के चारों ओर फैल रहे हैं। पूरा आभामण्डल अरुण रंग के परमाणुओं से भर रहा है। उन्हें देखें, अनुभव करें.... अनुभव करें–अन्तर्दृष्टि जाग रही है, अन्तर्दृष्टि जाग रही है, अन्तर्दृष्टि जाग रही है।

आनन्द जाग रहा है, आनन्द जाग रहा है, आनन्द जाग रहा है।

ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान*

अनुभव करें–अपने चारों ओर सूर्यमुखी के फूल या स्वर्ण की भांति चमकते हुए पीले रंग का प्रकाश फैल रहा है–पीले रंग के परमाणु फैल रहे हैं। अब इस पीले रंग का श्वास लें। अनुभव करें–प्रत्येक श्वास के साथ पीले रंग के परमाणु शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। चित्त को ज्ञान केन्द्र पर केन्द्रित करें। वहां पर चमकते हुए पीले रंग का ध्यान करें।

* नोट : यह ध्यान चक्षुष् केन्द्र पर भी कराया जा सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(कुछ समय बाद) अनुभव करें–ज्ञान केन्द्र से पीले रंग के परमाणु निकलकर शरीर के चारों ओर फैल रहे हैं। पूरा आभामण्डल पीले रंग के परमाणु से भर रहा है। उन्हें देखें–अनुभव करें। ....अनुभव करें–ज्ञान-तंतु विकसित हो रहे हैं, ज्ञान-तंतु विकसित हो रहे हैं, ज्ञान-तंतु विकसित हो रहे हैं।

ज्योति केन्द्र पर श्वेत रंग का ध्यान

अनुभव करें–अपने चारों ओर पूर्णिमा के चन्द्रमा के प्रकाश की भांति चमकता हुआ श्वेत रंग का प्रकाश फैल रहा है–श्वेत रंग के परमाणु फैल रहे हैं। अब इस श्वेत रंग का श्वास लें। अनुभव करें–प्रत्येक श्वास के साथ श्वेत रंग के परमाणु शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। चित्त को ज्योति केन्द्र पर केन्द्रित करें। वहां पर चमकते हुए श्वेत रंग का ध्यान करें।

(कुछ समय बाद) अनुभव करें–ज्योति केन्द्र से श्वेत रंग के परमाणु निकलकर शरीर के चारों ओर फैल रहे हैं। पूरा आभामण्डल श्वेत रंग के परमाणुओं से भर रहा है। उन्हें देखें, अनुभव करें। अनुभव करें–क्रोध शांत हो रहा है। आवेश और आवेग शांत हो रहे हैं, वासनाएं शांत हो रही हैं, पूर्ण शान्ति मिल रही है। अनुभव करें–पूर्ण शान्ति मिल रही है, पूर्ण शान्ति मिल रही है।

ध्यान का चौथा चरण–ज्योति केन्द्र प्रेक्षा

चित्त को ललाट के मध्य भाग में ज्योति केन्द्र पर केन्द्रित करें और वहां पर श्वेत रंग का ध्यान करें, जैसे पूर्णिमा का चांद उग रहा है, उसकी श्वेत रश्मियां ज्योति केन्द्र पर गिर रही है अथवा किसी भी चमकती हुई श्वेत वस्तु का आलम्बन लें। ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का साक्षात्कार करें।....

अनुभव करें–पूर्णिमा के चांद की श्वेत किरणें ज्योति केन्द्र पर गिर रही हैं। अनुभव करें–क्रोध शांत हो रहा है। आवेश और आवेग शांत हो रहे हैं। वासनाएं शांत हो रही हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(दो या तीन मिनट के बाद) अब चित्त को पूरे ललाट पर फैलाएं, पूरे ललाट पर श्वेत रंग का ध्यान करें। अनुभव करें कि पूरे ललाट में भीतर तक श्वेत रंग के परमाणु प्रवेश कर रहे हैं। पूरा ललाट श्वेत रंग के परमाणुओं से भर गया है।

शान्ति व आनन्द का अनुभव करें।

(तीन दीर्घ श्वास के साथ प्रयोग सम्पन्न करें।)

विवेक सूत्र

(1) अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए।
(स्वयं सत्य खोजें, सबके साथ मैत्री करें।)

(2) आहंसु विज्जा चरणं पमोक्खं।
(दुःख-मुक्ति के लिए विद्या और आचार का अनुशीलन करें।)

शरण सूत्र : अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मंसरणं पवज्जामि।

श्रद्धा सूत्र : वन्दे सच्चं, वन्दे सच्चं, वन्दे सच्चं।

विधि—वन्दनासन की मुद्रा में पहले पूरा श्वास भरें, श्वास छोड़ते हुए **वन्दे** बोलते हुए सिर सामने रहे, **सच्चं** बोलते हुए नीचे जमीन तक झुकें, फिर श्वास भरते हुए ऊपर उठें। यह क्रम तीन बार दोहराएं।

कायोत्सर्ग

(कायोत्सर्ग खड़े रहकर, बैठकर और लेटकर तीनों मुद्राओं में किया जाता है। खड़े रहकर करना उत्तम कायोत्सर्ग, बैठकर करना मध्यम कायोत्सर्ग और लेटकर करना सामान्य कायोत्सर्ग है।)

1. खड़े रहकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा : सीधे खड़े हों। दोनों हाथ साथल से सटे रहें। दोनों पैरों के मध्य आधा फुट का फासला रखें। मेरुदण्ड और गर्दन को सीधा रखें। सिर थोड़ा झुका हुआ। ठुड्डी छाती से चार अंगुल ऊपर हो।

2. बैठकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा : सुखासन में बैठें। मेरुदण्ड और गर्दन को सीधा रखें। ठुड्डी छाती से चार अंगुल ऊपर हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ब्रह्म मुद्रा—बायीं हथेली नाभि के नीचे और दाहिनी हथेली बायीं हथेली के ऊपर स्थापित करें। अंगूठे एक-दूसरे से सटे रहेंगे।

3. लेटकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा : पीठ के बल लेटें। दोनों पांवों के मध्य एक फुट का फासला रखें। दोनों हाथों को शरीर के समानान्तर आधा फुट की दूरी पर फैलाएं। हथेलियां आकाश की तरफ खुली रखें। गर्दन और सिर को ढ़ीला छोड़ दें। आंखें कोमलता से बन्द रहे। शरीर स्थिर एवं शिथिल रहे।

पहला चरण : कायोत्सर्ग के लिए तैयार हो जाएं। कायोत्सर्ग का प्रारम्भ खड़े-खड़े होगा। लेटने जितने स्थान की व्यवस्था कर, खड़े-खड़े कायोत्सर्ग का संकल्प करें।

'**तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्गं**'।

'मैं शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त होने के लिए कायोत्सर्ग का संकल्प करता हूं।'

कायोत्सर्ग की अवधि निश्चित करने का निर्देश दें। (3 मिनट)

दूसरा चरण : सीधे खड़े हों। दोनों हाथ घुटनों से सटे रहें। एड़ियां मिली हुई, पंजा खुला रहे। श्वास भरते हुए हाथों को ऊपर की ओर ले जाएं। पंजों पर खड़े होकर पूरे शरीर को तनाव दें। श्वास छोड़ते हुए हाथों को घुटनों के पास ले आएं और शिथिलता का अनुभव करें।

(इस प्रकार तीन आवृत्ति द्वारा क्रमशः तनाव और शिथिलता की स्थिति का अनुभव कराएं।)

तीसरा चरण : पीठ के बल लेटें। दोनों पांवों को मिलाएं। दोनों हाथों को सिर की ओर फैलाएं। जितना तनाव दे सकें, तनाव दें। साथ में मूल बन्ध का प्रयोग करें। फिर शरीर को शिथिल छोड़ दें। (इस प्रकार तीन आवृत्तियों द्वारा क्रमशः तनाव और शिथिलता की स्थिति का अनुभव कराएं।)

पैरों के बीच में एक फुट का फासला रहे। हाथों को शरीर के समानान्तर आधा फुट दूर रखें। कायोत्सर्ग की मुद्रा में आ जाएं, आंखें

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बन्द, श्वास मन्द। शरीर को स्थिर रखें। प्रतिमा की भांति अडोल रहें। पूरे कायोत्सर्ग काल तक पूरी स्थिरता।

प्रत्येक अवयव में सीसे की भांति भारीपन का अनुभव करें 1 मिनट। प्रत्येक अवयव में रुई की भांति हलकेपन का अनुभव करें–1 मिनट।

चौथा चरण : श्वास मन्द और शान्त। दायें पैर के अंगूठे पर चित्त को केन्द्रित करें। शिथिलता का सुझाव दें–अंगूठे का पूरा भाग शिथिल हो जाये....। अंगूठा शिथिल हो रहा है। अनुभव करें–अंगूठा शिथिल हो गया है। इसी प्रकार अंगुली, पंजा, तलवा, एड़ी, टखना, पिण्डली, घुटना, साथल तथा कटिभाग को क्रमशः शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें।

इसी प्रकार बायें पैर के अंगूठे से कटिभाग तक प्रत्येक अवयव पर ध्यान केन्द्रित करें, शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें– 7 मिनट।

पेडू का पूरा भाग, पेट के भीतरी अवयव–दोनों गुर्दे, बड़ी आंत, छोटी आंत, पक्वाशय, अग्न्याशय, आमाशय, तिल्ली, यकृत, तनुपट।

छाती का पूरा भाग–हृदय, दायां फेफड़ा, बायां फेफड़ा, पसलियां पीठ का पूरा भाग–मेरुदण्ड, सुषुम्ना, गर्दन। दाएं हाथ का अंगूठा, अंगुलियां, हथेली, मणिबन्ध से कुहनी और कुहनी से कन्धा। इसी प्रकार बाएं हाथ के प्रत्येक अवयव पर ध्यान केन्द्रित करें। (3 मिनट)

कंठ, स्वर-यन्त्र, ठुड्डी, होंठ, मसूढ़े, दांत, जिह्वा, तालु, दायां कपोल, बांया कपोल, नाक, दायीं कनपटी, दायां कान, बायीं कनपटी, बायां कान, दायीं आंख, बायीं आंख, ललाट और सिर प्रत्येक अवयव पर चित्त को केन्द्रित करें। प्रत्येक अवयव को शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें। (5 मिनट)

शरीर के प्रत्येक अवयव के प्रति जागरूक रहें। शरीर के चारों ओर श्वेत रंग के प्रवाह का अनुभव करें। शरीर के कण-कण में शान्ति का अनुभव करें–(तीन मिनट)।

पांचवां चरण : पैर के अंगूठे से सिर तक चित्त और प्राण की यात्रा करें। (तीन बार सुझाव दें)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुभव करें–पैर से सिर तक चैतन्य पूरी तरह से जागृत हो गया है....प्रत्येक अवयव में प्राण का अनुभव करें।

तीन दीर्घ श्वास के साथ कायोत्सर्ग सम्पन्न करें। दीर्घ श्वास के साथ प्रत्येक अवयव में सक्रियता का अनुभव करें। बैठने की मुद्रा में आएं। शरण सूत्र का उच्चारण करें। **वन्दे सच्चं** से कायोत्सर्ग सम्पन्न करें। (कोई व्यक्ति अगर कायोत्सर्ग सम्पन्न करने पर न लौटे तो उसका स्पर्श न करें, जगायें भी नहीं। प्रशिक्षक स्वयं निरीक्षण करें) (5 मिनट)

आनन्द भावना

आनन्दो मे वर्षति वर्षति – मेरे अन्तःकरण में आनन्द बरस रहा है।

नो मे दुखं, नो मे दुःखम् – मुझे कोई दुःख नहीं है, कोई दुःख नहीं है।

शांतं चित्तं लब्धं लब्धम् – चित्त शान्त हो गया है, शान्त हो गया है।

नो मे तापः, नो मे तापः – कोई ताप नहीं है, कोई ताप नहीं है।

शक्ति-स्रोतः प्रादुर्भूतम् – भीतर में शक्ति का स्रोत फूट गया है।

नो मे दैन्यं, नो मे दैन्यम् – दीनता मिट गई है, दीनता मिट गई है।

अंतश्चक्षुः लब्धं लब्धम् – अन्तःचक्षु खुल गया है, खुल गया है।

नो मे रात्रिः, नो मे रात्रिः – अब मेरे सामने रात या अन्धकार नहीं है।

नो मे दुःखं, नो मे तापः – मुझे न दुःख है, न ताप।

नो मे दैन्यं, नो मे रात्रिः – अब न दीनता है, न रात।

शांतः क्रोधः, शांतं मानम् – क्रोध भी शान्त है, मान भी शान्त।

शांता माया, शान्तो लोभः – माया भी शान्त है, लोभ भी शान्त।

शांतं पापं, उदिता शान्तिः – पाप शान्त हो गया है, शान्ति प्रकट हो गई है।

उदिता ऋजुता, उदिता मृदुता – ऋजुता जनम गई है, मृदुता आ गई है।

उदिता तुष्टिः, उदितो धर्मः – संतोष उतर रहा है, धर्म का उदय हो गया है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नो मे दुःखं, नो मे तापः	– मुझे कोई दुःख नहीं है, कोई ताप नहीं है।
नो मे दैन्यं, नो मे रात्रिः	– दीनता मिट गई है, रात समाप्त हो गई है।
उदितो धर्मः, मुदितं चित्तम्	– धर्म का उदय हो गया, चित्त प्रमुदित है।
मुदितं चित्तं, मुदितं चित्तम्	– चित्त प्रमुदित है, चित्त प्रमुदित है।

अनित्य-अनुप्रेक्षा

(**नोट–**अनित्य-अनुप्रेक्षा करने से पहले अर्हं की ध्वनि और ध्येय सूत्र का उच्चारण करें तथा कायोत्सर्ग की मुद्रा में यह प्रयोग करें।)

(यह विसम्बन्ध का प्रयोग है, स्थूल से सूक्ष्म की तरफ चलें। फिर सूक्ष्म से स्थूल की तरफ वापस लौटें। सारे सम्बन्धों को देखते चले जाएं।)

जिस स्थान (मकान या गांव) पर बैठे हैं, यह मात्र संयोग है। जिसका संयोग होता है उसका निश्चित वियोग होता है। स्थान के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। स्थान से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

जिस कमरे में बैठे हैं, यह मात्र संयोग है। जो संयोग होता है उसका निश्चित वियोग होता है। कमरे के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। कमरे से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

जिस आसन पर बैठे हैं, यह मात्र संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। आसन के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। आसन से अपनी भिन्नता अनुभव करें।

शरीर पर जो वस्त्र पहने हुए हैं, यह मात्र संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। वस्त्र के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। वस्त्र से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

यह शरीर मात्र एक संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। शरीर के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। शरीर से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

शरीर में होने वाले ये रोग, मात्र एक संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। रोग के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। रोग से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

ये मन की उलझनें, मानसिक समस्याएं मात्र एक संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। मानसिक समस्याओं के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। समस्याओं से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

ये उपाधियां, आवेग-आवेश, क्रोध, अहंकार जितनी उपाधियां हैं, मात्र संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होगा है। उपाधियों के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। उपाधियों से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

ये स्वभाव, आदतें (लड़ने की आदत, नशे की आदत, अलग-अलग प्रकार की आदतें) मात्र संयोग है। जो संयोग होता है उसका निश्चित वियोग होता है। स्वभाव, आदतों के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। स्वभाव, आदतों से अपनी भिन्नता का अनुभव करें। कोई भी आदत शाश्वत नहीं है। वह बदली जा सकती है।

यह सूक्ष्म शरीर (कर्म-शरीर) जहां से उपाधियां आती हैं, मात्र संयोग है। जो संयोग होता है, उसका निश्चित वियोग होता है। सूक्ष्म शरीर के साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते सूक्ष्म शरीर के स्तर पर आएं। कर्म शरीर से अपनी भिन्नता का अनुभव करें।

मेरा चैतन्य स्थान, आसन, वस्त्र, शरीर, रोग, मानसिक उलझनें, उपाधियां, आदतें, सूक्ष्म शरीर इन सबसे भिन्न है। इन सबके साथ संयोग से जुड़ा हुआ है। जो संयोग होता है उसका निश्चित वियोग होता है, इनके

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साथ संयोग का अनुचिन्तन करें। अनुचिन्तन करते-करते अनुभव के स्तर पर आएं। चेतना से इन सबकी भिन्नता का अनुभव करें।

जिस क्रम से चले थे, अब फिर सब संयोगों को पार कर उसी क्रम में लौटें। सूक्ष्म शरीर, आदतें, उपाधियां, मानसिक उलझनें, रोग, शरीर, कपड़े, आसन, स्थान प्रत्येक का अनुचिन्तन करते-करते पुनः स्थान पर आएं।

इमं सरीरं अणिच्चं, इमं सरीरं अणिच्चं, इमं सरीरं अणिच्चं—यह शरीर अनित्य है। प्रति क्षण अनेक कोशिकाएं मिट रही हैं, नई बन रही हैं। कभी आशा, कभी निराशा, नाना प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं।

इमे रोगा अणिच्चं—ये रोग अनित्य हैं, स्थायी नहीं हैं, चले जाने वाले हैं।

इमे मणोरोगा अणिच्चा—ये मानसिक उलझनें मिट जाने वाली हैं।

इमे भावा अणिच्चा—ये स्वभाव चले जाने वाले हैं।

ये सारे सम्बन्ध संयोग हैं, इनको देखते चले जाएं, पर संयोग मूर्च्छा न बन जाए। तब बाद में जो कुछ बचेगा, वह मैं हूं। चिन्तन करें। अनुचिन्तन करें। गहराई से चिन्तन करें....।

आत्म-विकास के पांच सूत्र

1. **अपनी पूर्णता और स्वतन्त्रता का अनुभव**—जो परमात्मा है वह मैं हूं और जो मैं हूं वही परमात्मा है।
2. **जड़-चेतन भिन्नता**—मैं भिन्न हूं, शरीर भिन्न है, मैं चेतन हूं, वह अचेतन है।
3. **आनन्द का अनुभव**—आनन्द बाहर से नहीं आता, मैं आनन्द का अक्षय कोष हूं। पदार्थ के संयोग से जो सुख आता है वह मौलिक सुख नहीं है।
4. **पुद्गल विरक्ति**—पुद्गल से पुद्गल को तृप्ति मिलती है, मुझे नहीं।
5. **ध्येय और ध्याता का एकत्व**—ध्येय परमात्मा पद है, वह मुझ से भिन्न नहीं है। ध्यान से एक दिन ध्येय का साकार हो जाएगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुप्रेक्षा

मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने के लिए उसे बार-बार निर्देश या सुझाव देना आवश्यक है। पूरी एकाग्रता और तन्यमता से जो बात दोहराई जाती है उसे मस्तिष्क मान लेता है। इसका प्रयोग पुरानी आदतों को बदलने तथा नई आदत का निर्माण करने के लिए किया जाता है। सुझाव देने में जप की पद्धति का प्रयोग करें तथा मस्तिष्क के 'लिम्बिक सिस्टम' पर ध्यान केन्द्रित कर सुझाव दें।

अनुप्रेक्षा : प्रायोगिक रूप

1. सत्य 2. मानवीय एकता 3. भेद-विज्ञान 4. मृदुता 5. मानसिक-संतुलन 6. आत्मानुशासन 7. प्रामाणिकता 8. अनासक्ति 9. करुणा 10. शक्ति 11. अभय 12. ऋजुता 13. सहिष्णुता 14. मैत्री।

1. सत्य की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. लयबद्ध दीर्घश्वास – 5 मिनट
3. सूक्ष्म भस्त्रिका – 4 मिनट
4. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
5. शान्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - 'मैं सत्य के प्रति आस्थावान रहूंगा।'
   - 'असत्य नहीं बोलूंगा। पूर्वाग्रह से बचूंगा।'

इस शब्दावली की 12 मिनट तक पुनरावृत्ति करें। 4 मिनट उच्चारण पूर्वक, 4 मिनट मंद उच्चारण पूर्वक और 4 मिनट मानसिक अनुचिन्तन के रूप में।

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2. मानवीय एकता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. लयबद्ध दीर्घश्वास – 5 मिनट
3. सूक्ष्म भस्त्रिका – 4 मिनट
4. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
5. विशुद्धि केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–

- मैं जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंचा-नीचा नहीं मानूंगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।

इस शब्दावली की 12 मिनट तक पुनरावृत्ति करें। 4 मिनट उच्चारण पूर्वक, 4 मिनट मंद उच्चारण पूर्वक और 4 मिनट मानसिक अनुचिन्तन के रूप में।

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

3. भेद विज्ञान की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. आनन्द केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित करें।
4. पूरक के साथ 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न' इस पद की अनुप्रेक्षा करें। तीन मिनट उच्चारणपूर्वक।
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - शरीर परिग्रह है। • वह मूर्च्छा का मूल है।
   - जो व्यक्ति शरीर-मूर्च्छा या देहासक्ति को कम करता है, उसके कष्ट कम और दुःख स्वल्प हो जाते हैं।
   - मैं भेद विज्ञान की साधना के द्वारा शरीर मूर्च्छा को कम करूंगा। (10 मिनट)
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. मृदुता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. हरे रंग का श्वास लें। अनुभव करें चारों ओर हरे रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे हरे रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।
4. शान्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें।
   - मृदुता का भाव पु हो रहा है।
   - अहं का भाव क्षीण हो रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)

5. **अनुचिन्तन करें–**
   - व्यक्ति और वस्तु के प्रति मेरा व्यवहार विनम्र होना चाहिए।
   - सत्य के प्रति विनम्र भाव जो मैं कहता हूं, वही सत्य है, इस आग्रह से बचने का मनोभाव।
   - मुझे अपने अहं का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।
   - कृतज्ञता के लिए साधुवाद–धन्यवाद देना, सत्य की प्रवृत्ति का अनुमोदन करना, जीवन की सफलता का आवश्यक तत्त्व है।
   - अपनी भूल के लिए खेद प्रकट करना, अप्रिय व्यवहार हो जाने पर क्षमायाचना करना, अपने आपको बड़ा बनाने का उपाय है।

   इन सबके प्रति मैं जागरुक बना रहूंगा–(2 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

5. मानसिक सन्तुलन की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. हरे रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर हर रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे हरे रंग के परमाणु श्वास से साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं। (5 मिनट)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. दर्शन केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - आवेश अनुशासित हो रहा है।
   - मानसिक सन्तुलन बढ़ रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - अस्वस्थ मन शरीर को अस्वस्थ बनाता है।
   - शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मानसिक स्वास्थ्य बहुत जरूरी है।
   - अस्वाभाविक आकांक्षा, असहिष्णुता और अवांछनीय घुटन मन को असन्तुलित बना देती है।
   - मानसिक असन्तुलन सफलता की बहुत बड़ी बाधा है।
   - समस्या का सामना करना और मानसिक सन्तुलन खोना एक बात नहीं है।
   - मैं अपने मन को इतना साध लूंगा कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह सन्तुलित रह सके। (10 मिनट)
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

6. आत्मानुशासन की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. पीले रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर पीले रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे पीले रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।
4. शान्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें।
   - नियन्त्रण की क्षमता बढ़ रही है।
   - मन की चंचलता कम हो रही है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. **अनुचिन्तन करें–**

- अनुशासन या नियन्त्रण के बिना समाज नहीं चल सकता।
- जब आत्म नियन्त्रण सशक्त होता है, तब बाहरी नियन्त्रण की अपेक्षा कम होती है।
- आत्म नियन्त्रण की शिथिलता होने पर बाहरी नियंत्रण की मात्रा बढ़ जाती है।
- मैं नहीं चाहता कि बाहरी नियन्त्रण के द्वारा मेरी स्वतन्त्रता पर अंकुश लगे।

'अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।' इस सत्य को मैंने समझा है, इसलिए मैं संकल्प करता हूं कि आत्मानुशासन का विकास करूंगा।

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

7. प्रामाणिकता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. सफेद रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर सफेद रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे सफेद रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।
4. ज्योति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें।
   - मेरी संकल्प शक्ति का विकास हो रहा है।
   - प्रामाणिकता का भाव पुष्ट हो रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - अप्रामाणिकता एक असाधारण आवेग है। यह बहुत बड़ी बुराई है।
   - जो भावना से परिपक्व होता है, वही अप्रामाणिक व्यवहार करता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- मैं अप्रामाणिकता की वृत्ति पर विजय पा सकता हूं।
- जिस क्षण अप्रामाणिक व्यवहार करने की बात मन में आयेगी, उसी क्षण मैं उसे बदलने का अभ्यास करूंगा।
- मैं अपने आपको भावित करता रहूंगा, कोई भी परिस्थिति मुझे अप्रामाणिक नहीं बना सकती। मैं अपने विवेक को काम में लूंगा।
- आवेश के आधार पर काम नहीं करूंगा।
- मेरा दृढ़ निश्चय है कि मैं निरंतर प्रामाणिकता का विकास करूंगा। (10 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

8. अनासक्ति की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. नीले रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर नीले रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे नीले रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं। (5 मिनट)
4. शान्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें।
   - अनासक्ति का विकास हो रहा है।
   - पदार्थ के प्रति मूर्च्छा का भाव क्षीण हो रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें।
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - मैं पदार्थ की प्रकृति को जानता हूं। वह मेरे लिए उपयोगी है। उससे मुझे सुविधा मिलती है, किन्तु सुख और शान्ति नहीं।
   - सुख और शान्ति मेरे आंतरिक गुण हैं। मैं संकल्प करता हूं कि पदार्थ के प्रति मूर्च्छित नहीं बनूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैं सदा अपने प्रति जागरूक रहूंगा।–(10 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

9. करुणा की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि - 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग - 5 मिनट
3. गुलाबी रंग का श्वास लें। अनुभव करें चारों ओर गुलाबी रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।
4. आनन्द केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - सम्यग् दृष्टिकोण का विकास हो रहा है।
   - करुणा का भाव पुष्ट हो रहा है।

     इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें।
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - क्रोध, अहंकार और लोभ के आवेग मनुष्य को क्रूर बनाते हैं।
   - कोई नहीं चाहता कि मेरे साथ अप्रिय व्यवहार हो, फिर मुझे दूसरों के प्रति अप्रिय व्यवहार नहीं करना चाहिए।
   - मुझे अच्छा जीवन जीने और सामुदायिक जीवन को शान्तिमय बनाने के लिए करुणा का विकास करना है।
   - मैं संकल्प करता हूं कि मुझ में करुणा का भाव पुष्ट होगा–
     (10 मिनट)
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

10. शक्ति की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. अरुण रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर अरुण रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे अरुण रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. फुफ्फुस पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - मेरी शक्ति का विकास हो रहा है।
   - दुर्बलता क्षीण हो रही है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - आकांक्षा मन को दुर्बल बनाती है। दुर्बल मन में शक्ति का विकास नहीं होता। इसलिए आकांक्षा के चक्रजाल में नहीं फसूंगा।
   - निःस्पृह भाव का विकास करूंगा।
   - मनोबल बढ़ेगा, शक्ति जागृत होगी। (10 मिनट)
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

11. अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. गुलाबी रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर गुलाबी रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे गुलाबी रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं–(5 मिनट)
4. आनन्द केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - अभय का भाव पुष्ट हो रहा है।
   - भय का भाव क्षीण हो रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - भय से विकसित शक्तियां कुण्ठित हो जाती हैं, नई शक्तियां विकसित नहीं हो पाती, इसलिए मुझे अभय होने का अभ्यास करना चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- जो डरता है उसे सभी डराते हैं।
- भय आदमी को कमजोर बनाता है।
- कमजोर आदमी का कोई सहयोग नहीं करता।
- शक्ति के विकास के लिए अभय की साधना करूं, यह मेरा दृढ़ निश्चय है।
- मैं निश्चित ही भय से छुटकारा पा लूंगा। (10 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें—(2 मिनट)

12. ऋजुता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. अरुण रंग का श्वास लें। अनुभव करें—चारों ओर अरुण रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे अरुण रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं—(5 मिनट)
4. दर्शन केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें—
   - ऋजुता का भाव पुष्ट हो रहा है।
   - वक्रता का भाव क्षीण हो रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें। फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें—**
   - ऋजुता और सत्य दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं। जहां ऋजुता है, वहां सत्य है और जहां सत्य है, वहां ऋजुता है। ऋजुता को छोड़कर सत्य की कल्पना नहीं की जा सकती। ऋजु व्यक्ति ही अपने भावों को दूसरों तक पहुंचा सकता है और दूसरों के भावों को सम्यग् ग्रहण कर सकता है।
   - ऋजु व्यक्ति ही कथनी और करनी की दूरी को कम कर सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- ऋजुता एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है।
- मेरा संकल्प है कि मैं इसे अपने में विकसित करूंगा। (10 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें–(2 मिनट)

13. सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. नीले रंग का श्वास लें। अनुभव करें–चारों ओर नीले रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे नीले रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।–(5 मिनट)
4. ज्योति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें–
   - सहिष्णुता का भाव पुष्ट हो रहा है।
   - मानसिक सन्तुलन बढ़ रहा है।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें–**
   - शारीरिक संवेदन–
     - ○ ऋतु-जनित संवेदन
     - ○ रोग-जनित संवेदन
   - मानसिक संवेदन–
     - ○ सुख-दुःख
     - ○ अनुकूलता-प्रतिकूलता
   - भावात्मक संवेदन–
     - ○ विरोधी विचार
     - ○ विरोधी स्वभाव
     - ○ विरोधी रुचि
   - ये तीनों प्रकार के संवेदन मुझे प्रभावित करते हैं। किन्तु इसके प्रभाव को कम करना है।
   - यदि इनका प्रभाव बढ़ा तो शक्तियां क्षीण होंगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

- जितना इनसे कम प्रभावित होऊंगा, उतनी ही मेरी शक्तियां बढ़ेगी। इस प्रकार सहिष्णुता का विकास करना मेरे जीवन की सफलता का महामन्त्र है। (10 मिनट)

6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें—(2 मिनट)

14. मैत्री की अनुप्रेक्षा का प्रयोग

1. महाप्राण ध्वनि – 2 मिनट
2. कायोत्सर्ग – 5 मिनट
3. सफेद रंग का श्वास लें। अनुभव करें—चारों ओर सफेद रंग के परमाणु फैले हुए हैं। वे सफेद रंग के परमाणु श्वास के साथ भीतर प्रवेश कर रहे हैं।—(5 मिनट)
4. पूरे ललाट पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें—
   - सब मेरे मित्र हैं।
   - मैं सबके साथ मैत्री का प्रयोग करूंगा।

   इस शब्दावली का 9 बार उच्चारण करें, फिर इसका 9 बार मानसिक जप करें। (6 मिनट)
5. **अनुचिन्तन करें—**
   - शत्रुता का भाव भय पैदा करता है और भय शरीर एवं मन को दुर्बल बनाता है, इसलिए मुझे मैत्री भाव का विकास करना चाहिए।
   - जैसे ही शत्रुता का भाव आता है, प्रसन्ता गायब हो जाती है।
   - अपनी प्रसन्नता को सुरक्षित रखने के लिए मैत्री भाव का विकास करना चाहिए।—(10 मिनट)
6. महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग सम्पन्न करें—(2 मिनट)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सातवां प्रकरण : स्वाध्याय साधना

पच्चीस बोल

पहला बोल : गति चार

1. नरक गति
2. तिर्यंच गति
3. मनुष्य गति
4. देव गति

दूसरा बोल : जाति पांच

1. एकेन्द्रिय
2. द्वीन्द्रिय
3. त्रीन्द्रिय
4. चतुरिन्द्रिय
5. पंचेन्द्रिय

तीसरा बोल : काया छह

1. पृथ्वीकाय
2. अप्काय
3. तेजस्काय
4. वायुकाय
5. वनस्पतिकाय
6. त्रसकाय

चौथा बोल : इन्द्रिय पांच

1. स्पर्शनेन्द्रिय
2. रसनेन्द्रिय
3. घ्राणेन्द्रिय
4. चक्षुरिन्द्रिय
5. श्रोत्रेन्द्रिय

पांचवां बोल : पर्याप्ति छह

1. आहार-पर्याप्ति
2. शरीर-पर्याप्ति
3. इन्द्रिय-पर्याप्ति
4. श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति
5. भाषा-पर्याप्ति
6. मनःपर्याप्ति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छठा बोल : प्राण दस

1. श्रोत्रेन्द्रिय प्राण
2. चक्षुरिन्द्रिय प्राण
3. घ्राणेन्द्रिय प्राण
4. रसनेन्द्रिय प्राण
5. स्पर्शनेन्द्रिय प्राण
6. मनोबल
7. वचनबल
8. कायबल
9. श्वासोच्छ्वास प्राण
10. आयुष्य प्राण

सातवां बोल : शरीर पांच

1. औदारिक शरीर
2. वैक्रिय शरीर
3. आहारक शरीर
4. तैजस शरीर
5. कार्मण शरीर

आठवां बोल : योग पन्द्रह

मनोयोग के चार भेद

1. सत्य-मनोयोग
2. असत्य मनोयोग
3. मिश्र-मनोयोग
4. व्यवहार-मनोयोग

वचनयोग के चार भेद

5. सत्य-वचनयोग
6. असत्य-वचनयोग
7. मिश्र-वचनयोग
8. व्यवहार-वचनयोग

काययोग के सात भेद

9. औदारिक-काययोग
10. औदारिक-मिश्र-काययोग
11. वैक्रिय-काययोग
12. वैक्रिय-मिश्र-काययोग
13. आहारक-काययोग
14. आहारक-मिश्र-काययोग
15. कार्मण-काययोग

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नौवां बोल : उपयोग बारह

पांच ज्ञान

1. मतिज्ञान
2. श्रुतज्ञान
3. अवधिज्ञान
4. मनःपर्यवज्ञान
5. केवलज्ञान

तीन अज्ञान

6. मति अज्ञान
7. श्रुत अज्ञान
8. विभंग अज्ञान

चार दर्शन

9. चक्षु दर्शन
10. अचक्षु दर्शन
11. अवधि दर्शन
12. केवल दर्शन

दसवां बोल : कर्म आठ

1. ज्ञानावरणीय कर्म
2. दर्शनावरणीय कर्म
3. वेदनीय कर्म
4. मोहनीय कर्म
5. आयुष्य कर्म
6. नाम कर्म
7. गोत्र कर्म
8. अंतराय कर्म

ग्यारहवां बोल : गुणस्थान चौदह

1. मिथ्यादृष्टि गुणस्थान
2. सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान
3. मिश्रदृष्टि गुणस्थान
4. अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान
5. देशविरति गुणस्थान
6. प्रमत्त-संयत गुणस्थान
7. अप्रमत्त-संयत गुणस्थान
8. निवृत्ति बादर गुणस्थान
9. अनिवृत्ति बादर गुणस्थान
10. सूक्ष्म-सम्पराय गुणस्थान
11. उपशांत मोह-गुणस्थान
12. क्षीण मोह गुणस्थान
13. सयोगी केवली गुणस्थान
14. अयोगी केवली गुणस्थान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बारहवां बोल : पांच इन्द्रियों के तेईस विषय

1. श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है–**शब्द।** वह तीन प्रकार का होता है–
   1. जीव शब्द
   2. अजीव शब्द
   3. मिश्र शब्द
2. चक्षुरिन्द्रिय का विषय है–**वर्ण।** वह पांच प्रकार का होता है–
   1. कृष्ण वर्ण
   2. नील वर्ण
   3. रक्त वर्ण
   4. पीत वर्ण
   5. श्वेत वर्ण
3. घ्राणेन्द्रिय का विषय है–**गन्ध।** वह दो प्रकार का होता है–
   1. सुगंध
   2. दुर्गंध
4. रसनेन्द्रिय का विषय है– **रस।** वह पांच प्रकार का होता है–
   1. तिक्त रस
   2. कटु रस
   3. कषाय रस
   4. आम्ल रस
   5. मधुर रस
5. स्पर्शनेन्द्रिय का विषय है–**स्पर्श।** वह आठ प्रकार का होता है–
   1. शीत स्पर्श
   2. उष्ण स्पर्श
   3. स्निग्ध स्पर्श
   4. रुक्ष स्पर्श
   5. कर्कश स्पर्श
   6. मृदु स्पर्श
   7. गुरु स्पर्श
   8. लघु स्पर्श

तेरहवां बोल : दस प्रकार के मिथ्यात्व

1. धर्म को अधर्म समझना
2. अधर्म को धर्म समझना
3. मार्ग को कुमार्ग समझना
4. कुमार्ग को मार्ग समझना
5. जीव को अजीव समझना
6. अजीव को जीव समझना
7. साधु को असाधु समझना
8. असाधु को साधु समझना
9. मुक्त को अमुक्त समझना
10. अमुक्त को मुक्त समझना

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौदहवां बोल : नौ तत्त्व के एक सौ पन्द्रह भेद

1. जीव तत्त्व के चौदह भेद

सूक्ष्म एकेन्द्रिय के दो भेद

1. अपर्याप्त 2. पर्याप्त

बादर एकेन्द्रिय के दो भेद

3. अपर्याप्त 4. पर्याप्त

द्वीन्द्रिय के दो भेद

5. अपर्याप्त 6. पर्याप्त

त्रीन्द्रिय के दो भेद

7. अपर्याप्त 8. पर्याप्त

चतुरिन्द्रिय के दो भेद

9. अपर्याप्त 10. पर्याप्त

असंज्ञी-पंचेन्द्रिय के दो भेद

11. अपर्याप्त 12. पर्याप्त

संज्ञी-पंचेन्द्रिय के दो भेद

13. अपर्याप्त 14. पर्याप्त

2. अजीव तत्त्व के चौदह भेद

धर्मास्तिकाय के तीन भेद

1. स्कंध 2. देश 3. प्रदेश

अधर्मास्तिकाय के तीन भेद

4. स्कंध 5. देश 6. प्रदेश

आकाशास्तिकाय के तीन भेद

7. स्कंध 8. देश 9. प्रदेश

काल का एक भेद

10 काल

पुद्‌गलास्तिकाय के चार भेद

11. स्कंध 13. प्रदेश

12. देश 14. परमाणु

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. पुण्य तत्त्व के नौ भेद

1. अन्न-पुण्य	6. मन-पुण्य
2. पान-पुण्य	7. वचन-पुण्य
3. लयन (स्थान)-पुण्य	8. काय-पुण्य
4. शय्या-पुण्य	9. नमस्कार-पुण्य
5. वस्त्र-पुण्य	

4. पाप तत्त्व के अठारह भेद

1. प्राणातिपात पाप	10. राग पाप
2. मृषावाद पाप	11. द्वेष पाप
3. अदत्तादान पाप	12. कलह पाप
4. मैथुन पाप	13. अभ्याख्यान पाप
5. परिग्रह पाप	14. पैशुन्य पाप
6. क्रोध पाप	15. पर-परिवाद पाप
7. मान पाप	16. रति-अरति पाप
8. माया पाप	17. माया-मृषा पाप
9. लोभ पाप	18. मिथ्यादर्शनशल्य पाप

5. आस्रव तत्त्व के बीस भेद

1. मिथ्यात्व आस्रव	11. श्रोत्रेन्द्रिय-प्रवृत्ति आस्रव
2. अव्रत आस्रव	12. चक्षुरिन्द्रिय-प्रवृत्ति आस्रव
3. प्रमाद आस्रव	13. घ्राणेन्द्रिय-प्रवृत्ति आस्रव
4. कषाय आस्रव	14. रसनेन्द्रिय-प्रवृत्ति आस्रव
5. योग आस्रव	15. स्पर्शनेन्द्रिय-प्रवृत्ति आस्रव
6. प्राणातिपात आस्रव	16. मन-प्रवृत्ति आस्रव
7. मृषावाद आस्रव	17. वचन-प्रवृत्ति आस्रव
8. अदत्तादान आस्रव	18. काय-प्रवृत्ति आस्रव
9. मैथुन आस्रव	19. भण्डोपकरण रखने में अयत्ना करना आस्रव
10. परिग्रह आस्रव	20. शुचि-कुशाग्र मात्र दोष सेवन आस्रव

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6. संवर तत्त्व के बीस भेद

1. सम्यक्त्व संवर
2. व्रत संवर
3. अप्रमाद संवर
4. अकषाय संवर
5. अयोग संवर
6. प्राणातिपात-विरमण संवर
7. मृषावाद-विरमण संवर
8. अदत्तादान-विरमण संवर
9. अब्रह्मचर्य-विरमण संवर
10. परिग्रह-विरमण संवर
11. श्रोत्रेन्द्रिय-निग्रह संवर
12. चक्षुरिन्द्रिय-निग्रह संवर
13. घ्राणेन्द्रिय-निग्रह संवर
14. रसनेन्द्रिय-निग्रह संवर
15. स्पर्शनेन्द्रिय-निग्रह संवर
16. मनो-निग्रह संवर
17. वचन-निग्रह संवर
18. काय-निग्रह संवर
19. भण्डोपकरण रखने में अयत्ना न करना संवर
20. शुचि-कुशाग्रमात्र दोष-सेवन न करना संवर

7. निर्जरा तत्त्व के बारह भेद

1. अनशन
2. ऊनोदरी
3. भिक्षाचरी
4. रसपरित्याग
5. काय-क्लेश
6. प्रतिसंलीनता
7. प्रायश्चित्त
8. विनय
9. वैयावृत्य
10. स्वाध्याय
11. ध्यान
12. कायोत्सर्ग

8. बंध तत्त्व के चार भेद

1. प्रकृति-बन्ध
2. स्थिति-बन्ध
3. अनुभाग-बन्ध
4. प्रदेश-बन्ध

9. मोक्ष तत्त्व के चार भेद

1. ज्ञान
2. दर्शन
3. चारित्र
4. तप

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पन्द्रहवां बोल : आत्मा आठ

1. द्रव्य आत्मा	5. ज्ञान आत्मा
2. कषाय आत्मा	6. दर्शन आत्मा
3. योग आत्मा	7. चारित्र आत्मा
4. उपयोग आत्मा	8. वीर्य आत्मा

सोलहवां बोल : दण्डक चौबीस

सात नारकी का दण्डक एक पहला

भवनपति देवों के दण्डक दस

असुरकुमार	का	दण्डक	दूसरा
नागकुमार	का	दण्डक	तीसरा
सुपर्णकुमार	का	दण्डक	चौथा
विद्युतकुमार	का	दण्डक	पांचवां
अग्निकुमार	का	दण्डक	छठा
द्वीपकुमार	का	दण्डक	सातवां
उदधिकुमार	का	दण्डक	आठवां
दिक्कुमार	का	दण्डक	नौवां
वायुकुमार	का	दण्डक	दसवां
स्तनितकुमार	का	दण्डक	ग्यारहवां
पृथ्वीकाय	का	दण्डक	बारहवां
अप्काय	का	दण्डक	तेरहवां
तेजस्काय	का	दण्डक	चौदहवां
वायुकाय	का	दण्डक	पन्द्रहवां
वनस्पतिकाय	का	दण्डक	सोलहवां
द्वीन्द्रिय	का	दण्डक	सत्तरहवां
त्रीन्द्रिय	का	दण्डक	अठारहवां
चतुरिन्द्रिय	का	दण्डक	उन्नीसवां
तिर्यंच-पंचेन्द्रिय	का	दण्डक	बीसवां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मनुष्य-पंचेन्द्रिय	का	दण्डक	इक्कीसवां
व्यन्तर-देवों	का	दण्डक	बाईसवां
ज्योतिष-देवों	का	दण्डक	तेईसवां
वैमानिक-देवों	का	दण्डक	चौबीसवां

सत्तरहवां बोल : लेश्या छह

1. कृष्ण लेश्या
2. नील लेश्या
3. कापोत लेश्या
4. तेजो लेश्या
5. पद्म लेश्या
6. शुक्ल लेश्या

अठारहवां बोल : दृष्टि तीन

1. सम्यक्-दृष्टि
2. मिथ्या-दृष्टि
3. सम्यक्-मिथ्या दृष्टि

उन्नीसवां बोल : ध्यान चार

1. आर्त ध्यान
2. रौद्र ध्यान
3. धर्म्य ध्यान
4. शुक्ल ध्यान।

बीसवां बोल : षट् द्रव्यों का ज्ञान

1. धर्मास्तिकाय

द्रव्य से–एक द्रव्य

क्षेत्र से–लोक-परिमाण

काल से–आदि-अन्त रहित अर्थात् अनादि और अनन्त

भाव से–अरूपी

गुण से–गतिशील पदार्थों की गति में अपेक्षित सहायता करना।

2. अधर्मास्तिकाय

द्रव्य से–एक द्रव्य।

क्षेत्र से–लोक-परिमाण।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

काल से–अनादि और अनन्त।
भाव से–अरूपी।
गुण से–पदार्थों के स्थिर रहने में अपेक्षित सहायता करना।

3. आकाशास्तिकाय

द्रव्य से–एक द्रव्य।
क्षेत्र से–लोक-अलोक-परिमाण।
काल से–अनादि और अनन्त।
भाव से–अरूपी।
गुण से–भाजन गुण। समस्त पदार्थों को अवकाश देना, स्थान देना।

4. काल

द्रव्य से–अनन्त द्रव्य।
क्षेत्र से–अढ़ाई द्वीप-परिमाण।
काल से–अनादि और अनन्त।
भाव से–अरूपी।
गुण से–वर्तन गुण।

5. पुद्गलास्तिकाय

द्रव्य से–अनन्त द्रव्य।
क्षेत्र से–लोक-परिमाण।
काल से–अनादि और अनन्त।
भाव से–रूपी।
गुण से–गलन-मिलन स्वभाव।

6. जीवास्तिकाय

द्रव्य से–अनन्त-द्रव्य।
क्षेत्र से–लोक-परिमाण।
काल से–अनादि और अनन्त।
भाव से–अरूपी।
गुण से–चैतन्य गुण।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

इक्कीसवां बोल : राशि दो

1. जीव राशि
2. अजीव राशि

बाईसवां बोल : श्रावक के बारह व्रत

1. अहिंसा अणुव्रत
2. सत्य अणुव्रत
3. अस्तेय अणुव्रत
4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत
5. अपरिग्रह अणुव्रत
6. दिग् परिमाण व्रत
7. भोगोपभोग-परिमाण व्रत
8. अनर्थदण्ड-विरमण व्रत
9. सामायिक व्रत
10. देशावकाशिक व्रत
11. पौषधोपवास व्रत
12. यथासंविभाग व्रत

तेईसवां बोल : साधु के पांच महाव्रत

1. अहिंसा-महाव्रत
2. सत्य-महाव्रत
3. अस्तेय-महाव्रत
4. ब्रह्मचर्य-महाव्रत
5. अपरिग्रह-महाव्रत

चौबीसवां बोल : भांगा 49

तीन करण तीन योग से।
तीन करण—करना, कराना, अनुमोदन करना।
तीन योग—मन, वचन, काया ।

अंक 11 का भांगा 9

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है—एक करण और दूसरे अंक 1 का अर्थ है—एक योग। अर्थात् एक करण और एक योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे—

(क) 1. करूं नहीं मन से ।
2. करूं नहीं वचन से ।
3. करूं नहीं काया से ।

(ख) 4. कराऊं नहीं मन से ।
5. कराऊं नहीं वचन से ।
6. कराऊं नहीं काया से ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(ग) 7. अनुमोदूं नहीं मन से ।

8. अनुमोदूं नहीं वचन से ।

9. अनुमोदूं नहीं काया से ।

अंक 12 का भांगा 9

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है-एक करण एवं दूसरे अंक 2 का अर्थ है-दो योग। अर्थात् एक करण एवं दो योग से 9 भांगे हो सकते हैं जैसे–

(क) 1. करूं नहीं–मन से, वचन से ।

2. करूं नहीं–मन से, काया से ।

3. करूं नहीं–वचन से, काया से ।

(ख) 4. कराऊं नहीं मन से, वचन से ।

5. कराऊं नहीं–मन से, काया से ।

6. कराऊं नहीं–वचन से, काया से ।

(ग) 7. अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से ।

8. अनुमोदूं नहीं–मन से, काया से ।

9. अनुमोदूं नहीं–वचन से, काया से ।

अंक 13 का भांगा 3

यहां पहले अंक 1 का अर्थ है–एक करण एवं दूसरे अंक 3 का अर्थ है–तीन योग। अर्थात् एक करण एवं तीन योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे–

(क) करूं नहीं–मन से, वचन से, काया से ।

(ख) कराऊं नहीं–मन से, वचन से, काया से ।

(ग) अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से, काया से ।

अंक 21 का भांगा 9

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है दो करण एवं दूसरे अंक 1 का अर्थ है–एक योग। अर्थात् दो करण एवं एक योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(क) 1. करूं नहीं, कराऊं नहीं–मन से ।

2. करूं नहीं, कराऊं नहीं–वचन से।

3. करूं नहीं, कराऊं नहीं–काया से ।

(ख) 4. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से ।

5. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से ।

6. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–काया से ।

(ग) 7. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से।

8. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से।

9. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–काया से।

अंक 22 का भांगा 9

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है–दो करण और दूसरे अंक 2 का अर्थ है–दो योग। अर्थात् दो करण एवं दो योग से 9 भांगे हो सकते हैं, जैसे–

(क) 1. करूं नहीं, कराऊं नहीं–मन से, वचन से ।

2. करूं नहीं, कराऊं नहीं–मन से, काया से ।

3. करूं नहीं, कराऊं नहीं–वचन से, काया से।

(ख) 4. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से।

5. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, काया से।

6. करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से, काया से।

(ग) 7. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से।

8. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, काया से।

9. कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से, काया से।

अंक 23 का भांगा 3

यहां पहले अंक 2 का अर्थ है–दो करण एवं दूसरे अंक 3 का अर्थ है तीन योग। अर्थात् दो करण एवं तीन योग से 3 ही भांगे हो सकते हैं, जैसे–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं–मन से, वचन से, काया से।

(ख) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से काया से।

(ग) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से काया से।

अंक 31 का भांगा 3

यहां पहले अंक 3 का अर्थ तीन करण एवं दूसरे अंक 1 का अर्थ है–एक योग अर्थात् तीन करण एवं एक योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे–

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से।

(ख) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से ।

(ग) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–काया से।

अंक 32 का भांगा 3

यहां पहले अंक 3 का अर्थ है–तीन करण एवं दूसरे अंक 2 का अर्थ है–दो योग अर्थात् तीन करण एवं दो योग से 3 भांगे हो सकते हैं, जैसे–

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से।

(ख) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, काया से।

(ग) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–वचन से, काया से।

अंक 33 का भांगा 1

यहां पहले अंक 3 का अर्थ है–तीन करण एवं दूसरे अंक 3 का अर्थ है–तीन योग अर्थात् तीन करण एवं तीन योग से 1 ही भांगा हो सकता है, जैसे–

1. करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं–मन से, वचन से, काया से।

पच्चीसवां बोल : चारित्र पांच

1. सामायिक चारित्र
2. छेदोपस्थापनीय चारित्र
3. परिहार विशुद्धि चारित्र
4. सूक्ष्म सम्पराय चारित्र
5. यथाख्यात चारित्र

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक प्रतिक्रमण

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पंच णमुक्कारो सव्वपाव पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

वन्दन-विधि

(चित्र नं. 1 की तरह बैठकर व झुककर प्रदक्षिणा देते हुए)

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

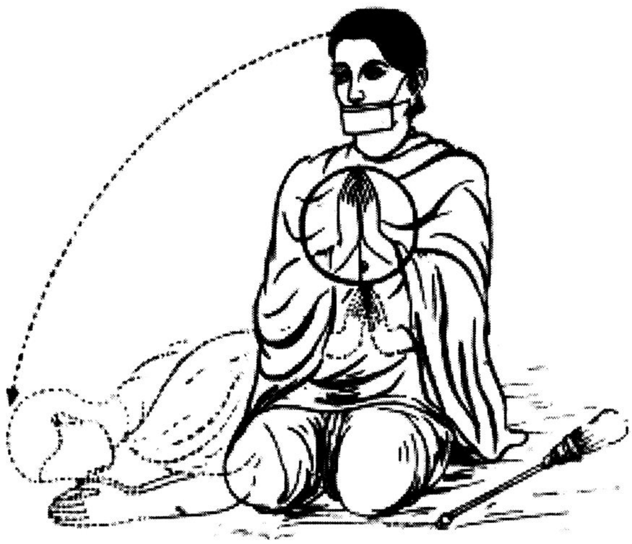

चित्र नं. 1

(वन्दना तथा प्रदक्षिणा देने की विधि)

(चित्र नं. 2 की तरह खड़े होकर)

'मत्थएण वंदामि' चउवीसत्थव की आज्ञा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ईर्यापथिक-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिंग-पणग-दगमट्टी-मक्कडा-संताणासंकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया जो मे देवसिओ[1] अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

चित्र नं. 2

प्रतिक्रमण में खड़े रहने की विधि

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्त-करणेणं विसोहीकरणेणं विसल्ली-करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं[2]।

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

चित्र नं. 3

ध्यान में स्थित रहने की विधि

1. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।
2. ध्यान प्रारंभ (चित्र नं. 3 की तरह)।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चतुर्विंशति-स्तव

1. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥

2. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥

3. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥

4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥

5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥

6. कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥

7. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

(ध्यान समाप्त)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चतुर्विंशति-स्तव

1. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥

2. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥

3. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥

4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥

5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥

6. कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥

7. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

शक्र-स्तुति

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिस-सीहाणं पुरिसवर-पुंडरीयाणं पुरिस-वरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं जीवदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्म-वरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरण-गई-पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं

चित्र नं. 4
शक्र स्तुति करने की विधि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुय-मणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तयं सिद्धि-गइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जियभयाणं।

चतुर्विंशति-स्तव समाप्त

'मत्थएण वंदामि' चउवीसत्थव समाप्त, पहले सामायिक आवश्यक की आज्ञा।

(चित्र नं. 2 की तरह खड़े होकर)

प्रतिक्रमण-प्रतिज्ञा

आवस्सई इच्छाकारेण संदिसह भयवं! देवसियं[1] पडिक्कमणं ठाएमि देवसिय[2]-णाण-दंसण-चरित्ताचरित्त-तवअइयारचिंतवणट्ठं करेमि काउस्सग्गं।

नमस्कार सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

मंगल-सूत्र

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

---

1. दैवसिक प्रतिक्रमण में देवसियं, रात्रिक प्रतिक्रमण में राइयं, पाक्षिक प्रतिक्रमण में देवसियं पक्खियं, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में देवसियं चाउमासियं पक्खियं, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में देवसियं संवच्छरियं।
2. देवसिय, राइय, देवसिय पक्खिय, देवसिय चाउमासिय पक्खिय, देवसिय संवच्छरिय।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सामायिक-प्रतिज्ञा

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं (मुहुत्तं एगं) पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावग-धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्त-करणेणं विसोहीकरणेणं विसल्ली-करणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं।*

ध्यान प्रारम्भ निन्नानवे अतिचारों का (चित्र नं. 3 की तरह)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्ञान के 14 अतिचार

अमल अन्त:करण से अतिचार की आलोचना।
कर रहा हूं सरलता से हृदय-ग्रन्थि विमोचना॥

सूत्र के अध्ययन में, अक्षर-विपर्यय जो हुआ।
पद-विपर्यय , यति-विपर्यय[1], कृति-विपर्यय[3] जो हुआ॥

घोष में या विनय में बहुमान में स्खलना हुई।
काल के अतिगमन[4] से स्वाध्याय में छलना[5] हुई॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शन के 5 अतिचार

लक्ष्य के प्रति चित्त में सन्देह या भय छा गया।[6]
जो नहीं है लक्ष्य उसके प्रति हृदय ललचा गया॥[7]

धर्म-फल की प्राप्ति में मानस अगर विचलित हुआ।[8]
और मिथ्या-दर्शनों में भाव यदि विकलित हुआ॥[9]
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

---

1. पद को आगे पीछे कहना।
2. रुकने के स्थान पर न रुकना।
3. आगम पाठ का विपर्यास।
4. अतिक्रमण।
5. स्वाध्याय का विधिवत् न करना।
6. शंका
7. कांक्षा
8. विचिकित्सा
9. पर-पाषण्ड प्रशंसा, पर-पाषण्ड संस्तव

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चारित्र के अतिचार

1. अहिंसा अणुव्रत के पांच अतिचार

निष्करुण हो प्राणियों को कष्ट जो मैंने दिया।
पीटकर या बांध अंगोपांग का छेदन किया॥
लादकर अतिभार पशुओं पर स्वयं निर्दय बना।
जीविका-विच्छिन्न कर यह हृदय पापों से सना॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

2. सत्य अणुव्रत के पांच अतिचार

पुष्ट आधारों बिना आरोप जो सहसा किया।
हास्य, भय या क्रोध को अतिमात्र यदि प्रश्रय दिया॥
मर्म खोला हो किसी का, गलत पथ-दर्शन किया।
लेख झूठा लिख किसी को बात में ही ठग लिया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

3. अचौर्य अणुव्रत के पांच अतिचार

ग्रहण कर अस्तेय का व्रत जो चुराई वस्तु ली।
चोर के चोरीकरण में योग सम्मति अगर दी॥
राज्य के प्रतिषिद्ध का आयात या निर्यात भी।
कुछ दिखाया, कुछ दिया या की मिलावट हो कभी॥
तोल में या माप में प्रामाण्य जो बरता नहीं।
और लंचा[1]-ग्रहण में कर्तव्य की जड़ता रही॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत के पांच अतिचार

स्वादलोलुप, दृष्टिलोलुप-वृत्ति को प्रश्रय दिया।
तीव्र भोगासक्ति से व्यवहार कोई भी किया॥

---

1. रिश्वत

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यदि रहा कामुक-दशा-उद्दीप्त वातावरण में।
और आयी हो शिथिलता ब्रह्मव्रत-आचरण में॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

5. अपरिग्रह अणुव्रत के पांच अतिचार

अर्थ के व्यवहार[1] में की वंचना यदि जानकर।
उच्चता अपनी दिखाई दीन पर को मानकर॥
त्याग में स्वीकृत परिधि का यदि अतिक्रम जो किया।
व्यसन, रूढ़ि, प्रदर्शनों में व्यर्थ वित्त बहा दिया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

6. दिग्व्रत के पांच अतिचार

राज्य-शासित देश, सीमा का अतिक्रम जो किया।
और शोषण हेतु निर्हेतुक अभिक्रम[3] जो किया।
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

7. भोगोपभोग-परिमाण व्रत के बीस अतिचार

तृप्ति अल्प, अनल्प हिंसा का किया व्यवहार हो।
बार, मात्रा का अतिक्रम कर किया आहार हो ॥
अनुकरण-प्रियता दिखाई वस्तु के उपभोग में।
और स्वेच्छाचारिता की अर्थहीन प्रयोग में॥
जीविका का हेतु जो व्यवसाय वह अनिवार्य है।
किन्तु श्रावक के लिए अतिवाद अव्यवहार्य है॥
महाहिंसा[4] और वन को काटना[5] अज्ञान है।
यथासम्भव त्याज्य मन से सभी कर्मादान हैं॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

---

1. नाइट क्लब, डिस्कोथिक आदि 2. लेन देन 3. अभियान 4. अंगार कर्म 5. वन कर्म।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8. अनर्थदंड विरमण व्रत के पांच अतिचार

हास्य-युक्त अशिष्ट वाणी का किया विनियोग हो।
और कायिक चपलता का साथ उसके योग हो॥
व्यर्थ की वाचालता, आया कलह का वेग हो।
हो गया यदि निष्प्रयोजन, वस्तु का अतिरेक हो॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

9. सामायिक व्रत के पांच अतिचार

साम्य के अभ्यास में मन मलिनता यदि आ गई।
वचन, काया पर कलुषता की घटा यदि छा गई॥
सहज कृत-संकल्प का विस्मरण जैसा हो गया।
काल-मर्यादाकलन में चित्त स्थिरता खो गया।
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

10. देशावकाशिक व्रत के पांच अतिचार

सावधिक संकल्प सीमा का अतिक्रम जो किया।
दिवसचर्या रात्रिचर्या का व्यतिक्रम जो किया।
प्रेष्य[1] द्वारा यदि किया व्यवसाय वर्जित देश में।
वस्तु का आयात या निर्यात भावावेश में॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

11. पौषधोपवास व्रत के पांच अतिचार

पूर्ण पौषध की यथाविधि की न हो आराधना।
स्थान या उत्सर्ग-विधि की, की न सम्यक् साधना॥
की न प्रतिलेखन प्रमार्जन की सविधि अनुपालना।
धर्म जागरिका-विषय में की न यदि परिचालना॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

---

1. निर्धारण 2. प्रतिनिधि

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

12. यथासंविभाग व्रत के पांच अतिचार

यदि प्रमाद, प्रवंचना से देय को दूषित किया।
नाम, शोभा, ख्याति, मत्सर भाव से यदि हो दिया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

13. संलेखना के पांच अतिचार

ऐहलौकिक पारलौकिक वस्तु में प्रियता रही।
और जीवन-मरण में आसक्ति की धारा बही॥
काम-भोगों के लिए यदि चित्त व्याकुल हो गया।
भीति और प्रमाद से चैतन्य मेरा सो गया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।
पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत यही जीवन-निधि।
सतत संयम-साधना से पूर्ण हो श्रावक-विधि॥
साधना में अति-व्यतिक्रम, अति अनाचरणं कृतं।
विफल हों सब पाप स्वीकृत करूं मिथ्या दुष्कृतं।
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अठारह पाप

1. प्राणातिपात	6. क्रोध	11. द्वेष	16. रति-अरति[3]
2. मृषावाद	7. मान	12. कलह	17. मायामृषा
3. अदत्तादान	8. माया	13. अभ्याख्यान	18. मिथ्यादर्शनशल्य
4. मैथुन	9. लोभ	14. पैशुन्य[1]	
5. परिग्रह	10. राग	15. परपरिवाद	

यदि मैंने अठारह पाप सेवन किये हों, तो जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि आलोइउं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ

1. कलंक लगाना 2. चुगली 3. असंयम से प्रेम और संयम से अप्रेम।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावग-धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमस्कार सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

(ध्यान समाप्त)

'मत्थएण वंदामि' पहला आवश्यक समाप्त, दूसरा 'चतुर्विंशति-स्तव' आवश्यक की आज्ञा।

चतुर्विंशति-स्तव

1. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
   अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥
2. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
   पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥
3. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
   विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥
4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
   वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥
5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
   चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥
6. कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
   आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥
7. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
   सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

'मत्थएणं वंदामि', दूसरा आवश्यक समाप्त, 'तीसरे वंदना' आवश्यक की आज्ञा।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए[*]। अणुजाणह मे मिउग्गहं[*]। निसीहि[1] अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो?[2] जत्ता भे[*] जवणिज्जं च भे[*] खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3] आवस्सियाए[4] पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ[*] अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए[*]। अणुजाणह मे मिउग्गहं[*]। निसीहि[1] अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो?[2] जत्ता भे[*] जवणिज्जं च भे[*] खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3] आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ[*] अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

---

* चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. 5 की तरह और बैठने पर चित्र नं. 6 की तरह वंदना करें।
1. चित्र नं. 6 की तरह बैठकर।
2. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो।
3. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं।
4. चित्र नं 5 की तरह खड़े। नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा नहीं होना।
5. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए आसायणाए।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चित्र नं. 5
वंदना आवश्यक में खड़े रहकर व
बैठकर वंदना करने की विधि

चित्र नं. 6
वंदना आवश्यक में बैठकर
वंदना करने की विधि

'मत्थएण वंदामि' तीसरा आवश्यक समाप्त, चौथे 'प्रतिक्रमण' आवश्यक की आज्ञा

आलोचना-सूत्र

(चित्र नं. 7 की तरह बैठकर)

तस्स सव्वस्स देवसियस्स[1] अइयारस्स दुच्चिंतिय-दुब्भासिय-दुच्चिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं

1. देवसियस्स राइयस्स, देवसियस्स पक्खियस्स, देवसियस्स चाउमासियस्स पक्खियस्स, देवसियस्स संवच्छरियस्स।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

चित्र नं. 7
प्रतिक्रमण आवश्यक में
बैठने की विधि

ईर्यापथिक-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिंगपणग-दगमट्टी-मक्कड़ा-संताणासंकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

रत्नत्रय

साधना रत्न-त्रयी की विनयनत हो मैं करूं।
एक लय हो एक रस हो भाव-तन्मयता वरूं॥

ज्ञान, दर्शन, चरण की पावन त्रिवेणी में नहा।
देव! मैं निर्मल बनूं यह स्वप्न मानस में रहा॥

प्राप्त सम्यग् ज्ञान मुझको और दर्शन भी मिला।
आचरण का सुमन सुन्दर हृदय-वनिका में खिला॥

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्ञान

आगमे तिविहे पन्नत्ते त्तं जहा–सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे।

अर्हतों के अनुभवों का आगमों में सार है।
वह हमारी साधना का प्राणमय आधार है॥

सूत्र आगम, अर्थ आगम, तदुभयागम रम्य है।
विविध नय की दृष्टियों से सहज सरल सुगम्य है॥

ज्ञान के 14 अतिचार

अमल अन्त:करण से अतिचार की आलोचना।
कर रहा हूं सरलता से हृदय-ग्रन्थि विमोचना॥

सूत्र के अध्ययन में अक्षर-विपर्यय जो हुआ।
पद-विपर्यय, यति-विपर्यय, कृति-विपर्यय जो हुआ॥

घोष में या विनय में, बहुमान में स्खलना हुई।
काल के अतिगमन से स्वाध्याय में छलना हुई॥

जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शन-सम्यक्त्व

अरहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं॥

देव मेरे दिव्य अर्हन्, श्रेष्ठ सारे लोक में।
साधना-धन साधु मेरे सुगुरु पथ-आलोक में॥

धर्म वह जो साधना-पथ केवली उपदिष्ट है।
आत्म-निष्ठामय अमल सम्यक्त्व मुझको इष्ट है॥

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्यक्त्व के लक्षण

शान्त हैं आवेग सारे, शान्ति मन में व्याप्त है।
मुक्त होने की हृदय में प्रेरणा पर्याप्त है[1]॥
वृत्ति में वैराग्य[3] अन्तर्भाव में करुणा विमल[4]।
अटल आस्था, ये सभी सम्यक्त्व के लक्षण सबल[5]॥

सम्यक्त्व के भूषण

लक्ष्य में स्थिरता निरंतर भक्ति-भावित भावना।
धर्म शासन की करूं निःस्वार्थ सतत प्रभावना।
जैन तत्त्वज्ञान में हो सहज जिज्ञासा प्रबल।
संघ-सेवा, ये सभी सम्यक्त्व के भूषण अमल॥

दर्शन के 5 अतिचार

लक्ष्य के प्रति चित्त में संदेह या भय छा गया।
जो नहीं है लक्ष्य उसके प्रति हृदय ललचा गया॥
धर्म-फल की प्राप्ति में मानस अगर विचलित हुआ।
और मिथ्या-दर्शनों में भाव यदि विकलित हुआ॥

जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

बारह व्रत और अतिचार

1. अहिंसा अणुव्रत

पढमं अणुव्वयं थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं
धन्य हैं मुनिवर महाव्रत पालते सद्भाव से।
सर्व हिंसा त्याग कर वे जी रहे समभाव से॥
है महाव्रत साध्य मेरा किन्तु वह दुःसाध्य है।
पर अणुव्रत-मार्ग मध्यम सरल और सुसाध्य है॥

---

1. शम, 2. संवेग, 3. निर्वेद, 4. अनुकम्पा, 5. आस्था।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वत्व-रक्षा के लिए मैं भाव से प्रतिबद्ध हूं।
देश की हित-सिद्धि के दायित्व से आबद्ध हूं॥
देहधारी हूं, अत: आरम्भ भी अनिवार्य है।
किन्तु यह संकल्पजा हिंसा सदा परिहार्य है॥

अहिंसा अणुव्रत के 5 अतिचार

निष्करुण हो प्राणियों को कष्ट जो मैंने दिया।
पीटकर या बांध अंगोपांग का छेदन किया॥
लादकर अतिभार पशुओं पर स्वयं निर्दय बना।
जीविका विच्छिन्न कर यह हृदय पापों से सना॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

2. सत्य अणुव्रत

बीयं अणुव्वयं थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं
ताप और प्रकाश जैसे भिन्न हो सकते नहीं।
क्या अहिंसा सत्य वैसे भिन्न हो सकते कहीं?
फिर अहिंसक के लिए यह सत्य तो अनिवार्य है।
सरलता की सिद्धि का यह व्रत मुझे स्वीकार्य है॥
मैं नहीं दूंगा कभी झूठी गवाही जानकर।
ना धरोहर को नकारूंगा स्वयं की मानकर॥
भूमि विक्रय और विक्रय वस्तुओं का हो भले।
वर-वधू सम्बन्ध में ना झूठ मेरे में पले॥

सत्य अणुव्रत के 5 अतिचार

पुष्ट आधारों बिना आरोप जो सहसा किया।
हास्य, भय या क्रोध को अतिमात्र यदि प्रश्रय दिया॥
मर्म खोला हो किसी का, गलत पथ-दर्शन किया।
लेख झूठा लिख किसी को बात में ही ठग लिया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. अचौर्य अणुव्रत

तइयं अणुव्वयं थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं
सत्य-निष्ठा के बिना क्या नीति-निष्ठा है कहीं?
नीति-निष्ठा के बिना फिर सत्य-निष्ठा भी नहीं॥
हो अटल संकल्प मेरा नित्य प्रामाणिक रहूं।
दूसरों के स्वत्व के अपहरण से बचता रहूं॥

अचौर्य अणुव्रत के 5 अतिचार

ग्रहण कर अस्तेय का व्रत जो चुराई वस्तु ली।
चोर के चोरीकरण में योग, सम्मति अगर दी॥
राज्य के प्रतिषिद्ध का आयात या निर्यात भी।
कुछ दिखाया, कुछ दिया या की मिलावट हो कभी॥
तोल में या माप में प्रामाण्य जो बरता नहीं।
और लंचा-ग्रहण में कर्तव्य की जड़ता रही।
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत

चउत्थं अणुव्वयं थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं
ब्रह्मचर्य पवित्रता की साधना का सेतु है।
ऊर्ध्वगामी चेतना का यह विलक्षण हेतु है॥
यथासंभव वस्ति-संयम खाद्य-संयम से करूं।
प्राण-जय, इन्द्रिय-विजय से वासना को मैं हरूं॥

ब्रह्मचर्य अणुव्रत के 5 अतिचार

स्वादलोलुप दृष्टिलोलुप-वृत्ति को प्रश्रय दिया।
तीव्र भोगासक्ति से व्यवहार कोई भी किया॥
यदि रहा कामुक-दशा-उद्दीप्त वातावरण में।
और आयी हो शिथिलता ब्रह्मव्रत-आचरण में॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. अपरिग्रह अणुव्रत

पंचमं अणुव्वयं थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं

अर्थ-संग्रह मान्य केवल जीविका-निर्वाह में।
अर्थ की आसक्ति लाती दोष भाव-प्रवाह में॥
व्यक्तिगत संग्रह बढ़ाता व्यसन और विलास को।
क्रूरता, छलना, अनैतिक साधनों की प्यास को॥
भावना है कब परिग्रह का विसर्जन मैं करूं।
और इस दुस्तर नदी को चाहता हूं मैं तरूं॥
अतः अपरिग्रह अणुव्रत हृदय से स्वीकार्य है॥
न्याय, समता की प्रतिष्ठा के लिए अनिवार्य है॥

अपरिग्रह अणुव्रत के 5 अतिचार

अर्थ के व्यवहार में की वंचना यदि जानकर।
उच्चता अपनी दिखाई दीन पर को मानकर॥
त्याग में स्वीकृत परिधि का यदि अतिक्रम जो किया।
व्यसन, रूढ़ि, प्रदर्शनों में व्यर्थ वित्त बहा दिया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

6. दिग्व्रत

छट्ठं दिसिपरिमाण-वयं

अपर के अधिकार, हित का हरण करना हेय है।
इसलिए दिग्गमन का व्रत श्रेय है, आदेय है॥
नियत सीमा से परे सोद्देश्य मैं जाऊं नहीं।
व्यर्थ यातायात के श्रम में उलझ पाऊं नहीं॥

दिग्व्रत के 5 अतिचार

राज्य-शासित देश-सीमा का अतिक्रम जो किया।
और शोषण-हेतु निर्हेतुक अभिक्रम जो किया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7. भोगोपभोग-परिमाणव्रत विरति

सत्तमं भोगोपभोग-परिमाण-वयं :

भोग के साधन विपुल हैं, अतुल मन की लालसा।
लालसा की पूर्ति में आरम्भ है भूचाल-सा।
खाद्य-संयम, वस्त्र-संयम वस्तु का संयम सधे।
भोग या उपभोग का संयम सफलता से बढ़े॥

भोगोपभोग-परिमाणव्रत के 20 अतिचार

तृप्ति अल्प, अनल्प हिंसा का किया व्यवहार हो।
बार, मात्रा का अतिक्रम कर किया आहार हो॥
अनुकरण-प्रियता दिखाई वस्तु के उपभोग में।
और स्वेच्छाचारिता की अर्थहीन प्रयोग में॥
जीविका का हेतु जो व्यवसाय वह अनिवार्य है।
किन्तु श्रावक के लिए अतिवाद अव्यवहार्य है।
महाहिंसा और 'वन को काटना' अज्ञान है।
यथासंभव त्याज्य मन से सभी कर्मादान हैं॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

8. अनर्थदंड विरमणव्रत

अट्ठमं अणट्ठदंड-वेरमण-वयं

दूसरों की अहित-चिंता चित्त का दुर्ध्यान है।
स्व-प्रमादाचरण हिंसा-पंथ में प्रस्थान है॥
द्यूत, चौर्यादि प्रशिक्षण, शस्त्र का अनुदान है।
यह अनर्थक-दण्ड इसका पूर्ण प्रत्याख्यान है॥

अनर्थदंड विरमणव्रत के 5 अतिचार

हास्य-युक्त अशिष्टवाणी का किया विनियोग हो।
और कायिक चपलता का साथ उसके योग हो॥

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व्यर्थ की वाचालता, आया कलह का वेग हो।
हो गया यदि निष्प्रयोजन, वस्तु का अतिरेक हो॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

9. सामायिक व्रत

नवमं सामाइय-वयं

धर्म है समता, विषमता पाप का आधार है।
जैन शासन के निरूपण का यही बस सार है॥
त्याग कर सावद्य-चर्या सुखद सामायिक करूं।
लीन अपने आप में हो, मैं भवोदधि को तरूं॥

सामायिक व्रत के 5 अतिचार

साम्य के अभ्यास में मन-मलिनता यदि आ गई।
वचन, काया पर कलुषता की घटा यदि छा गई॥
सहज कृत-संकल्प का विस्मरण जैसा हो गया।
काल-मर्यादाकलन में चित्त स्थिरता खो गया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

10. देशावकाशिक व्रत

दसमं देशावगासिय-वयं

त्याग हिंसा आदि का सामान्य आजीवन किया।
और यातायात-सीमा हेतु दिग्व्रत भी लिया॥
एक निश्चित समय तक उनको नियन्त्रित मैं करूं।
स्वल्पकालिक त्यागमय देशावकाशिक व्रत वरूं॥

देशावकाशिक व्रत के 5 अतिचार

सावधिक संकल्प-सीमा का अतिक्रम जो किया।
दिवसचर्या रात्रिचर्या का व्यतिक्रम जो किया॥

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रेष्य द्वारा यदि किया व्यवसाय वर्जित देश में।
वस्तु का आयात या निर्यात भावावेश में॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

11. पौषधोपवास व्रत

एगारसमं पडिपुण्णपोसहोववास-वयं

पर्व-तिथि में पूर्ण पौषध, साथ में उपवास हो।
त्याग कर सावद्य-चर्या अन्तरात्म-निवास हो॥
रात्रि-दिन पर्यन्त मैं मुनि-वेश-भूषा में रहूं।
मोह-ममता से विलग, समभाव से सब कुछ सहूं॥

पौषधोपवास व्रत के 5 अतिचार

पूर्ण पौषध की यथाविधि की न हो आराधना।
स्थान या उत्सर्ग-विधि की, की न सम्यक् साधना॥
की न प्रतिलेखन प्रमार्जन की सविधि अनुपालना।
धर्म-जागरिका विषय में की न यदि परिचालना॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

12. यथासंविभाग व्रत

बारसमं जहासंविभाग-वयं

मैं सदा आरंभजीवी, मुनि अहिंसा-शूर हैं।
मैं परिग्रह में निरत हूं, साधु उससे दूर हैं॥
प्रवर संयम-साधना में संविभागी मैं बनूं।
खाद्य-संयम, वस्तु-संयम का सहज साधक बनूं॥
वस्त्र, भोजन, पात्र, औषध सहज मेरे पास है॥
और रहने के लिए आवास में अवकाश है।
धन्य वह दिन मुनिप्रवर को ये समर्पित मैं करूं।
भावना के प्रबल बल से शीघ्र भवसागर तरूं॥

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यथासंविभाग-व्रत के 5 अतिचार

यदि प्रमाद, प्रवंचना से देय को दूषित किया।
नाम, शोभा, ख्याति, मत्सर भाव से यदि हो दिया।
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

संलेखना

मारणांतिय संलेखना

देह की संलेखनामय मृत्यु पावन पर्व है।
दीर्घकालिक साधना का सफल सात्विक गर्व है॥
मृत्यु की सन्निकटता या देह-शक्ति क्षीण हो।
प्रवर तप के आचरण में भावना संलीन हो॥

संलेखना के 5 अतिचार

इहलौकिक पारलौकिक वस्तु में प्रियता रही।
और जीवन-मरण में आसक्ति की धारा बही॥
काम-भोगों के लिए यदि चित्त व्याकुल हो गया।
भीति और प्रमाद से चैतन्य मेरा सो गया॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत यही जीवन-निधि।
सतत संयम-साधना से पूर्ण हो श्रावक-विधि॥
साधना में अति-व्यतिक्रम, अति-अनाचरणं कृतं।
विफल हों सब पाप स्वीकृत करूं मिथ्या दुष्कृतं॥
जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं'

अभ्युत्थान-सूत्र

तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अब्भुट्ठिओमि[1] आराहणाए विरओमि विराहणाए सव्वं तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउवीसं।

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

1. चित्र नं. 2 की तरह खड़े होकर।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए[*]। अणुजाणह मे मिउग्गहं[*]। निसीहि[1] अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो?[2] जत्ता भे[*] जवणिज्जं च भे[*] खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3] आवस्सियाए[4] पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ[*] अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए[*]। अणुजाणह मे मिउग्गहं[*]। निसीहि[1] अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो?[2] जत्ता भे[*] जवणिज्जं च भे[*] खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3] आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ[*] अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

✻ चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. 5 की तरह और बैठने पर चित्र नं. 6 की तरह वंदना करें।

1. चित्र नं. 6 की तरह बैठकर।
2. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो।
3. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं।
4. चित्र नं 5 की तरह खड़े। नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा नहीं होना।
5. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए आसायणाए।

✻ देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्षमा-याचना-सूत्र (खड़े होकर)

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई॥
पूज्य-पूजा का व्यतिक्रम जान या अनजान में।
की अवज्ञा लघुजनों की मग्न हो अभिमान में॥
चाहता हूं मैं क्षमा, मुझको क्षमा दें वे सभी।
मित्र सब हैं, शत्रुता का भाव लाऊं ना कभी॥

जीव-योनि

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेजस्काय, सात लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चतुरिन्द्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य की जाति-चार गति, चौरासी लाख जीव-योनि पर राग-द्वेष आया हो तो **जो मे देवसिओ* अइयारो कओ 'तस्स मिच्छामि दुक्कडं**'।

'मत्थएण वंदामि' चौथा आवश्यक सम्पन्न, पांचवें कायोत्सर्ग आवश्यक की आज्ञा।

कायोत्सर्ग संकल्प सूत्र

देवसिय -अइयार-विसोहणट्ठं करेमि काउस्सग्गं।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ* अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ

---

1. देवसिय, राइय, देवसिय पक्खिय, देवसिय चाउमासिय पक्खियं, देवसिय संवच्छरिय।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि अव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावग-धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ होज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं।*

ध्यान प्रारम्भ (चित्र नं. 3 की तरह)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

चतुर्विंशति-स्तव

'लोगस्स का दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमण में 4, पाक्षिक में 12, चातुर्मासिक में 20 और सांवत्सरिक में 40 का ध्यान करें'

चतुर्विंशति-स्तव

1. **लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।**
   अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥

2. **उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।**
   पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥

3. **सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।**
   विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥

---

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥

5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥

6. कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥

7. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

(ध्यान समाप्त)

चतुर्विंशति-स्तव

1. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥

2. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥

3. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥

4. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥

5. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजर-मरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥

6. कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥

7. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए! अणुजाणह मे मिउग्गहं।* निसीहि[1] अहोकायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो[2]? जत्ता भे?* जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3]! आवस्सियाए[4] पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए[6] जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि!

वन्दना-सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए! अणुजाणह मे मिउग्गहं।* निसीहि[1] अहोकायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो[2]? जत्ता भे?* जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं[3]! आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए[5] तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए[6] जो मे देवसिओ* अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि!

---

* चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. 5 की तरह और बैठने पर चित्र नं. 6 की तरह वंदना करें।

1. चित्र नं. 6 की तरह बैठकर।
2. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो।
3. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं।
4. चित्र नं 5 की तरह खड़े। नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा नहीं होना।
5. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए आसायणाए।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'मत्थएण वंदामि'। पांचवां आवश्यक समाप्त, छठे 'प्रत्याख्यान' आवश्यक की आज्ञा।

अतीत का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक तथा भविष्यत काल का प्रत्याख्यान।

सामायिक, चतुर्विंशति-स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान–इन छहों आवश्यकों में जाने-अनजाने, जो कोई अतिचार-दोष लगा हो तथा पाठ का उच्चारण करते समय मात्रा, अनुस्वार, अक्षर हीन, अधिक, ऊंचा, नीचा, आगे-पीछे कहा हो तो **जो मे देवसिओ*** **अइयारो कओ** '**तस्स मिच्छामि दुक्कडं**'।

शक्र स्तुति

(चित्र नं. 4 की तरह बैठकर)

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिस-सीहाणं पुरिसवर-पुंडरीयाणं पुरिस-वरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं जीवदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्म-वरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरण-गई-पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुय-मणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तयं सिद्धि-गइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जियभयाणं।

* देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

1. देवसिक तथा रात्रिक प्रतिक्रमण में कम-से-कम एक दिन तक, पाक्षिक में एक पक्ष तक, चातुर्मास में चार मास तक, सांवत्सरिक में एक वर्ष तक के लिए कोई प्रत्याख्यान करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शक्र स्तुति

(चित्र नं. 4 की तरह बैठकर)

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिस-सीहाणं पुरिसवर-पुंडरीयाणं पुरिस-वरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं जीवदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्म-वरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरण-गई-पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुय-मणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तयं सिद्धि-गइनामधेयं ठाणं संपाविउकामाणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

पहला नमोत्थुणं सिद्ध भगवान के प्रति, दूसरा नमोत्थुणं अरिहंत भगवान के प्रति। तीसरा नमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स थवत्थुई मंगलं श्री श्री श्री 1008 आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति।

('नमस्कार सूत्र' का पांच बार पाठ करें)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

पंचपद-वन्दना

णमो अरहंताणं–परम अर्हता सम्पन्न, चार घनघाती कर्म का क्षय कर, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत शक्ति और आठ प्रातिहार्य–इन बारह गुणों से सुशोभित, चौंतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय से युक्त, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक, वर्तमान तीर्थंकर सीमंधर आदि अर्हतों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना–तिक्खुत्तो आयाहिणं....।

णमो सिद्धाणं–परम सिद्धि संप्राप्त, अष्टकर्म क्षय कर केवलज्ञान, केवलदर्शन, असंवेदन, आत्मरमण, अटल अवगाहन, अमूर्ति, अगुरुलघु और निरंतराय–इन आठ गुणों से सम्पन्न, परमात्मा, परमेश्वर, जन्म,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मरण, जरा, रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य रहित अनंत सिद्धों को विनम्रभाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना–तिक्खुत्तो आयाहिणं....।

णमो आयरियाणं–परम आचार-कुशल, धर्मोपदेशक, धर्मधुरंधर, बहुश्रुत, मेधावी, सत्यनिष्ठ, श्रद्धा-धृति-शक्ति-शांति सम्पन्न, अष्ट गणि-सम्पदा से सुशोभित, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि एवं छत्तीस गुणों के धारक वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण आदि धर्माचार्यों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना–तिक्खुत्तो आयाहिणं....।

णमो उवज्झायाणं–परम श्रुत स्वाध्यायी, धर्मसंघ में आचार्य द्वारा नियुक्त, ग्यारह अंग तथा बारह उपांग के धारक, अध्ययन और अध्यापन में कुशल–इन पचीस गुणों से सुशोभित उपाध्यायों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना–तिक्खुत्तो आयाहिणं....।

णमो लोए सव्वसाहूणं–अध्यात्म-साधना में संलग्न, पांच महाव्रत, पंचेन्द्रिय निग्रह, चार कषाय-विवेक, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमा, वैराग्य, मन-वचन-काय समाहरणता, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सम्पन्नता, वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता–इन सत्ताईस गुणों से सुशोभित, परीषहजयी, प्रासुक एषणीय भोजी, अर्हत् और आचार्य की आज्ञा के आराधक, तपोधन साधु-साध्वियों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना–तिक्खुत्तो आयाहिणं....।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौबीसी

—श्रीमज्जयाचार्य

दूहा

1. ॐ नमः अरिहंत अतनु, आचारज उवझाय।
मुनी पंच परमेष्ठी नुं, ऊँकार रै मांय॥

2. बलि प्रणमूं गुणवंत गुरु, भिक्खू भरत मझार।
दान दयादिक छाण नै, लीधो मारग सार॥

3. भारीमाल पट भलकता, तीजै पट ऋषिराय।
प्रणमूं मन वच काय करी, पांचूं अंग नमाय॥

4. सिध साधु प्रणमी करि, ऋषभादिक चौबीस।
स्तवना करूं प्रमोद धरि, जय-जश कर जगदीश॥

5. मल्लि नेम ए दोय जिन, पाणिग्रहण न कीध।
शेष बावीस जिनेसरू, रमण छांड व्रत लीध॥

6. वासुपूज्य मल्लि नेम जिन, पार्श्व अनै वर्धमान।
कुमर पदे अरु प्रथम वय, धार्‌यो चरण-निधान॥

7. छत्रपती उगणीस जिन, व्रत तीजी वय सार।
उत्कृष्ट आयु जिह समय, तसु त्रिण भाग विचार॥

8. वीर समय उत्कृष्ट स्थिति, वर्ष सवा सय सोय।
भाग तीन कीजै तसु, ए तीनूं वय जोय॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9. इम सगलै उत्कृष्ट स्थिति, त्रिणभागे वय तीन।
अंतिम वय उगणीस जिन, धुर वय पंच सुचीन॥

10. श्वेतवरण चंद सुविधि जिन, पद्म वासुपूज्य लाल।
मुनि सुव्रत रिठनेम प्रभु, कृष्ण वरण सुविशाल॥

11. मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु, नील वरण वर अंग।
षोडस शेष जिनेश तनु, सोवन वरण सुचंग॥

12. श्रेयांस मल्ली सुव्रत जिन, नेम पार्श्व जगदीश।
प्रथम प्रहर दीक्षा ग्रही, पाछिल पहर उगणीस ॥

13. सुमति जीम दीक्षा ग्रही, अठम-भक्त मल्लि पास।
छट्ठ-भक्त जिन वीस वर, वासुपूज्य उपवास॥

14. ऋषभ अष्टापद शिव गमन, वीर पावापुरी दीस।
नेम गिरनारे, वासु चंपा, शिखर-समेत सुबीस॥

15. ऋषभ संथारे शिव-गमन, चउदस-भक्त उदार।
चरम छट्ठ अणसण पवर, बावीस मास-संथार॥

16. ऋषभ वीर अरु नेम जिन, पल्यंकासन पेख।
शेष इक्कीस जिनेसरू, काउसग-मुद्रा देख॥

17. जिन चौबीस तणां सुगुण, रचियै वचन रसाल।
ध्यान सुधावर सार रस, 'जय-जश' करण विशाल॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

1

आदिनाथ स्तवन

प्रणमूं प्रथम जिनन्द नैं जय जय जिन चंदा

1. वन्दू बेकर जोड़ नैं, जुग आदि जिनिन्दा।
कर्म-रिपु-गज ऊपरै, मृगराज मुनिन्दा॥

2. अनुकूल प्रतिकूल सम सही, तप विविध तपंदा।
चेतन तन भिन लेखवी, ध्यान शुकल ध्यावंदा॥

3. पुद्गल-सुख अरि पेखिया, दुख-हेतु भयाला।
विरक्त चित विघट्यो इसो, जाण्या प्रत्यक्ष जाला॥

4. संवेग-सरवर झूलता, उपशम-रस लीना।
निंदा-स्तुति सुख-दुःख में, समभाव सुचीना॥

5. वासी चंदन समपणैं, थिर-चित्त जिन ध्याया।
इम तन-सार तजी करी, प्रभु केवल पाया॥

6. हूं बलिहारी तांहरी वाह! वाह!! जिनराया।
उवा दिशा किण दिन आवसी, मुझ मन ऊम्हाया॥

7. उगणीसै सुदि भाद्रवै, दशमी दीतवारं।
ऋषभदेव रटवै करी, हुओ हरष अपारं॥

लय : *ऐसे गुरु किम पाइयै*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

2

अजितप्रभु स्तवन

अहो प्रभु! तुम ही दायक शिव-पंथ ना।

1. अहो प्रभु! अजित जिनेश्वर आपरो, ध्याऊं ध्यान हमेश हो।
अहो प्रभु! अशरण शरण तूं ही सही, मेटण सकल कलेश हो॥

2. अहो प्रभु! उपशम रस भरि आपरी, वाणी सरस विशाल हो।
अहो प्रभु! मुगति-निसरणी मनोहरू, सुण्यां मिटै भ्रम जाल हो॥

3. अहो प्रभु! उभय बंधण आप आखिया, राग-द्वेष विकराल हो।
अहो प्रभु! हेतु ए नरक निगोद नां, राच्या मूरख बाल हो॥

4. अहो प्रभु! रमणी राखसणी कही, विषबेली मोहजाल हो।
अहो प्रभु! काम-भोग किम्पाक-सा, दाख्या दीन-दयाल हो॥

5. अहो प्रभु! विविध उपदेश देई करी, तें तार्या नरनार हो।
अहो प्रभु! भव-सिन्धु-पोत तूं ही सही, तूं ही जगत-आधार हो॥

6. अहो प्रभु! शरण आयो तुझ साहिबा! बस रह्या हीया मांय हो।
अहो प्रभु! आगम-वयण अङ्गीकरी, रह्यो ध्यान तुझ ध्याय हो॥

7. अहो प्रभु! संवत उगणीसै भाद्रवै, दसमी आदितवार हो।
अहो प्रभु! आप तणा गुण गाविया, वर्त्या जै जै कार हो॥

लय : *अहो प्रिय तुम बाट पाड़ी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3

संभव प्रभु स्तवन

संभव साहिब समरियै।

1. संभव साहिब समरियै, ध्यायो है जिन निर्मल ध्यान कै।
एक पुद्‌गल दृष्टि थाप नै, कीधो है मन मेर समान कै॥

2. तन-चंचलता मेट नै, हुआ है जग थी उदासीन कै।
धर्म शुकल थिर-चित्त धरै, उपशम-रस में होय रह्या लीन कै॥

3. सुख इन्द्रादिक नां सहु, जाण्या है प्रभु अनित्य असार कै।
भोग भयंकर कटुक-फल, देख्या है दुर्गति दातार कै॥

4. सुधा संवेग-रसे भर्‌या, पेख्या है पुद्‌गल मोह पास कै।
अरुचि अनादर आण नैं, आतम ध्यानें करता विलास कै॥

5. संग छांड मन वश करी, इन्द्रिय-दमन करी दुर्दन्त कै।
विविध तपे करी स्वामजी, घाति-करम नौं कीधो अंत कै॥

6. हूँ तुझ शरणे आवियो, कर्म-विदारण तूं प्रभु! वीर कै।
तैं तन मन वच बस किया, दुःकर करणि करण महाधीर कै॥

7. संवत उगणीसै भाद्रवै, सुदि इग्यारस आण विनोद कै।
संभव साहिब समरिया, पाम्यो है मन अधिक प्रमोद कै॥

लय : *हूँ बलिहारी हो जादवां*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4

अभिनन्दन प्रभु स्तवन

अभिनंदण वांदू नित्य मनरली।

1. तीर्थंकर हो चोथा जग भाण,
छांड गृहवास करी मति निरमली।
विषय-विटंबण हो तजिया विष फल जाण॥

2. दु:कर करणी हो कीधी आप दयाल,
ध्यान सुधारस सम दम मन गली।
संग त्याग्यो हो जाणी माया-जाल॥

3. वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल,
अनित्य अशरण-भावन अशुभ निरदली।
जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल॥

4. आतम मिंत्री हो सुखदाता सम परिणाम,
एहिज अमित्र अशुभ भावे कलकली।
एहवी भावन हो भाई जिन गुण-धाम॥

5. लीन संवेगे हो ध्यायो शुकल ध्यान,
क्षायक-श्रेणि चढी हुवा केवली।
प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान॥

6. उपशम-रस नीं हो बागरी प्रभु बाण,
तन मन प्रेम पाया जन सांभली।
तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण॥

7. जिन अभिनंदण हो गाया तन मन प्यार,
संवत उगणीसै भाद्रवै अघ दली।
सुदि इग्यारस हो हुवो हर्ष अपार॥

लय : *सती कलूजी हो थाया संजम नैं त्यार*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5

सुमति प्रभु स्तवन

सुमति जिनेश्वर साहिब शोभता।

1. सुमति जिनेश्वर साहिब शोभता, सुमति करण संसार।
सुमति जप्यां थी सुमति बधै घणी, सुमति सुमति-दातार॥

2. ध्यान सुधारस निरमल ध्याय नैं, पाम्या केवल नाण।
बाण सरस वर जन बहु तारिया, तिमिर हरण जगभाण॥

3. फटिक-सिंहासण जिनजी फाबता, तरु अशोक उदार।
छत्र चमर भामंडल भलकतो, सुर-दुन्दुभि झिणकार॥

4. पुष्प-वृष्टि दिव्य-ध्वनि दीपती, साहिब जग सिणगार।
अनंत ज्ञान दर्शन बल चरण ही, द्वादश गुण श्रीकार॥

5. वाण अमी सम उपशम-रस भरी, दुर्गति-मूल कषाय।
शिव-सुख नां अरि शब्दादिक कह्या, जग-तारक जिनराय॥

6. अंतरयामी! शरणै आपरै, हूँ आयो अवधार।
जाप तुमारो निश-दिन संमरूं, शरणागत सुखकार॥

7. संवत उगणीसै सुदि पख भाद्रवै, बारस मंगलवार।
सुमति जिनेश्वर तन मन स्यूं रट्या, आनंद उपनो अपार॥

लय : *मूरख जीवड़ा रे गाफल मत रहै*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

6

पद्म प्रभु स्तवन

पदम प्रभू नित समरियै।

1. निर्लेप पदम जिसा प्रभू, प्रभु पद्म पिछाण।
संयम लीधो तिण समै, पाया चोथो नाण॥

2. ध्यान शुकल प्रभु ध्याय नैं, पाया केवल सोय।
दीनदयाल तणी दशा, कैणी नावै कोय॥

3. सम दम उपशम रस भरी, प्रभु! आपरी वाण।
त्रिभुवन तिलक तूं ही सही, तूं ही जनक समान॥

4. तूं प्रभु कल्पतरू जिसो, तूं चिंतामणि जोय।
समरण करतां आपरो, मन-वंछित होय॥

5. सुखदायक सहु जग भणी, तूं ही दीनदयाल।
शरण आयो तुझ साहिबा! तूं ही परम कृपाल ॥

6. गुण गातां मन गह-गहै, सुख संपति जाण।
विघन मिटै समरण कियां, पामैं परम कल्याण॥

7. उगणीसै नैं भाद्रवै, सुदि बारस देख।
पद्म प्रभू रट्या लाडनूं, हुओ हरष विशेष॥

लय : *कुशलपुरी में प्रभु जनमिया*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7

सुपार्श्वप्रभु स्तवन

भजियै नित्य स्वामी सुपास ए।

1. सुपास सातमां जिणंद ए, ज्यांनै सेवै सुर नर व्रंद ए।
   सेवक पूरण आश ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

2. जन प्रतिबोधण काम ए, प्रभु बागरै वाण अमाम ए।
   संसार स्यूं हुवै उदास ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

3. पामैं कामभोग थी उद्वेग ए, बलि उपजै परम संवेग ए।
   एहवा तुम वच सरस विलास ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

4. घणी मीठी चक्री नीं खीर ए, बलि खीर-समुद्र नो नीर ए।
   एहथी तुम वच अधिक विमास ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

5. सांभल नै जनव्रन्द ए, रोम-रोम में पामै आनंद ए।
   ज्यांरी मिटै नरकादिक त्रास ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

6. तूं प्रभू! दीन-दयाल ए, तूं ही अशरण-शरण निहाल ए।
   हूं छूं तुम्हारो दास ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

7. संवत उगणीसै सोय ए, भाद्रवा सुदि तेरस जोय ए।
   पहुंची मन नीं आश ए, भजियै नित्य स्वामी सुपास ए॥

लय : *कृपण दीन अनाथ ए*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8

चन्द्रप्रभु स्तवन

प्रभु! चन्द्र जिनेश्वर! चन्द जिसा।

1. हो प्रभु! चंद जिनेश्वर चंद जिसा, वाणी शीतल चंद सी न्हाल हो।
   प्रभु! उपशम रस जन सांभल्यां, मिटै करम भरम मोह जाल हो॥

2. हो प्रभु! सूरत मुद्रा सोहनी, वारु रूप अनूप विशाल हो।
   प्रभु! इंद्र शची जिन निरखता, ते तो तृप्त न होवै निहाल हो॥

3. अहो! वीतराग प्रभु तूं सही, तुम ध्यान ध्यावै चित रोक हो।
   प्रभु! तुम तुल्य ते हुवै ध्यान सूं, मन पायां परम संतोष हो॥

4. हो प्रभु! लीनपणै तुम ध्यावियां, पामै इंद्रादिक नीं ऋद्धि हो।
   बलि विविध भोग सुख संपदा, लहै आमोसही आदि लब्धि हो॥

5. हो प्रभु! नरेंद्र पद पामै सही, चरण सहित ध्यान तन मन्न हो।
   प्रभु! अहमिंद्र पद पामै बलि, कियां निश्चल थारो भजन्न हो॥

6. हो प्रभु! शरण आयो तुझ साहिबा, तुम ध्यान धरूं दिन-रैन हो।
   तुझ मिलवा मुझ मन उमह्यो, तुम समरण स्यूं सुख चैन हो॥

7. हो प्रभु! संवत उगणीसै नैं भाद्रवै, सुदि तेरस नैं बुधवार हो।
   प्रभु! चंद जिनेश्वर समरिया, हुओ आनन्द हरष अपार हो॥

लय : *शिवपुर नगर सुहामणो*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9

सुविधि प्रभु स्तवन

सुविधि भजियै शिरनामी हो।

1. सुविधि करि भजियै सदा, सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो।
पुष्पदंत नाम दूसरो, प्रभु अंतरयामी हो॥

2. श्वेत वरण प्रभु शोभता, वारू वाण अमामी हो।
उपशम रस गुण आगली, मेटण भव भव खामी हो॥

3. समवसरण बिच फाबता, त्रिभुवन-तिलक तमामी हो।
इंद्र थकी ओपै घणां, शिव-दायक स्वामी हो॥

4. सुरेंद्र नरेन्द्र चन्द्र ते, इंद्राणी अभिरामी हो।
निरख-निरख धापै नहीं, एहवो रूप अमामी हो॥

5. मधुकर मरंद तणी परै, सुर नर करत सलामी हो।
तो पिण राग व्यापै नहीं, जीत्यो मोह हरामी हो॥

6. जे जोधा जग में घणां, सिंह साथे संग्रामी हो।
तैं मन इन्द्री वश करी, जोड़ी केवल पामी हो॥

7. उगणीसै पूनम भाद्रवी, प्रणमूं शिरनामी हो।
मन-चिंतित वस्तु मिलै, रटियां जिन स्वामी हो॥

लय : *सोही तेरापंथ पावै हो*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10

शीतल प्रभु स्तवन

सूरत थांरी मन बसै साहिब जी!

1. शीतल जिन शिवदायका साहिब जी!
शीतल चन्द समान हो, निसनेही।
शीतल अमृत सारिषा साहिब जी!
तप्त मिटै तुम ध्यान हो, निसनेही॥

2. वंदे निंदै तो भणी साहिब जी!
राग द्वेष नहीं ताम हो, निसनेही।
मोह-दावानल मेटियो साहिब जी!
गुण-निप्पन तुम नाम हो, निसनेही॥

3. नृत्य करै तुझ आगलै साहिब जी!
इंद्राणी सुर-नार हो, निसनेही।
राग भाव नहिं ऊपजै साहिब जी!
अंतर तप्त निवार हो, निसनेही॥

4. क्रोध मान माया लोभ ए साहिब जी!
अग्नि सूं अधिकी आग हो, निसनेही।
शुकल ध्यान रूप जल करी साहिब जी!
थया शीतलीभूत महाभाग हो, निसनेही॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. इन्द्रिय नोइन्द्रिय आकरा साहिब जी!
दुर्जय नैं दुर्दान्त हो, निसनेही।
तैं जीत्या मन थिर करी साहिब जी!
धर उपशम चित शांत हो, निसनेही॥

6. अंतरजामी! आपरो साहिब जी!
ध्यान धरूं दिन-रैन हो, निसनेही।
उवाही दशा कद आवसी साहिब जी!
होसी उत्कृष्टो चैन हो, निसनेही॥

7. उगणीसै पूनम भाद्रवी साहिब जी!
शीतल मिलवा काज हो, निसनेही।
शीतल जिनजी नैं समरिया साहिब जी!
हिय शीतल हुवो आज हो, निसनेही॥

लय : *हूं देवा आई ओलंभड़ा सासूजी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

11

श्रेयांस प्रभु स्तवन

श्रेयांस जिनेश्वरू! प्रणमूं नित बेकर जोड़ रे।

1. मोक्ष मार्ग श्रेय शोभता, धार्या स्वाम श्रेयांस उदार रे।
जे जे श्रेय वस्तु संसार में, ते ते आप करी अंगीकार रे।
ते ते आप करी अंगीकार, श्रेयांस जिनेश्वरू?....॥

2. समिति गुप्ति दुर्धर घणां, धर्म शुकल ध्यान उदार रे।
ए श्रेय वस्तु शिवदायिनी, आप आदरी हरष अपार रे॥

3. तन चंचलता मेट नैं, पद्मासन आप विराज रे।
उत्कृष्ट ध्यान तणो कियो, आलंबन श्री जिनराज रे॥

4. इंद्रिय विषय विकार थी, नरकादिक रुलियो जीव रे।
किंपाक फल नीं ओपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव रे॥

5. संजम तप जप शील ए, शिव-साधन महा सुखकार रे।
अनित्य अशरण अनंत ए, ध्यायो निर्मल ध्यान उदार रे॥

6. त्रीयादिक नां संग ते, आलंबन दुख दातार रे।
अशुद्ध आलंबन छांड नैं, धार्यो ध्यान आलंबन सार रे॥

7. शरण आयो तुझ साहिबा, करूं बार-बार नमस्कार रे।
उगणीसै पूनम भाद्रवी, मुझ वरत्या जै जै कार रे॥

***लय :** पुत्र वसुदेव रा गजसुखमाल*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

12

वासुपूज्य प्रभु स्तवन

प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी!

1. द्वादशमा जिनवर भजियै, राग द्वेष मच्छर माया तजियै।
प्रभु लाल वरण तन छिब जाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

2. वनिता जाणी वेतरणी, शिव-सुंदर वरवा हूंस घणी।
काम-भोग तज्या किम्पाकाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

3. अंजन-मंजन स्यूं अलगा, बलि पुष्प विलेपन नहिं विलगा।
कर्म काट्या ध्यान-मुद्रा ठाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

4. इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणागर कदेय नहीं कोपै।
वर साकर दूध जिसी वाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

5. स्त्री स्नेह पासा दुर्दन्ता, कह्या नरक निगोद तणां पंथा।
इह भव पर भव दुखदाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

6. गज कुंभ दलै मृगराज-हणी, पिण दोहिली निज आतम दमणी।
इम सुण बहु जीव चेत्या जाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

7. भाद्रवी पूनम उगणीसो, कर जोड़ नमूं वासुपूज्य ईसो।
प्रभु गातां रोम-राय हुलसाणी, प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी॥

लय : *नित जाप जपो श्री नवकारं*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

13

विमल प्रभु स्तवन

साहिब! शरण तिहारै हो।
शरण तिहारै, शरण तिहारै, शरण तिहारै हो।
विमल प्रभु! सेवक नीं अरदास, आयो शरण तिहारै हो॥

1. विमल करण प्रभु विमलनाथजी, विमल आप वर रीत।
विमल ध्यान धरतां हुवै निर्मल, तन मन लागी प्रीत॥

2. विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया, तिण सूं हुवा विमल जगदीश।
विमल ध्यान बलि जे कोई ध्यासी, होसी विमल सरीस॥

3. विमल गृहवासे द्रव्य जिनेन्द्र था, दीख्या लीधां भावे साथ।
केवल उपनां भावे जिनेश्वर, भावे विमल आराध॥

4. नाम स्थापना द्रव्य विमल थी, कारज न सरै कोय।
भाव विमल थी कारज सुधरै, भाव जप्यां शिव होय॥

5. गुण गिरवो गंभीर धीर तूं, तूं मेटण जम-त्रास।
मैं तुम वयण आगम शिर धार्या, तूं मुझ पूरण आश॥

6. तूं ही कृपाल दयाल साहिब! शिव-दायक तूं जगनाथ।
निश्चल ध्यान धरै तुझ ओलख, ते मिलै तुझ संघात॥

7. अंतरजामी आप उजागर, मैं तुम शरणो लीध।
संवत उगणीसै भाद्रवी पूनम, वंछित कारज सीध॥

लय : *कांय न मांगां, कांय न मांगां, कांय न मांगां हो*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

14

अनन्त प्रभु स्तवन

पायो पद जिनराज नौं सुध ध्यान निर्मल ध्याय भलां जी कांई॥

1. अनंत नाम-जिन चवदमां रे, द्रव्य चौथे गुणठाण।
भावे जिन हुवै तेरमे रे, इतलै द्रव्य जिन जाण॥

2. जिन चक्री सुर जुगलिया रे, वासुदेव बलदेव।
पंचम गुण पावै नहीं रे, ए रीत अनादि स्वमेव॥

3. संजम लीधौ तिण समैं रे, आया सप्तम गुणठाण।
अंतरमुहूर्त तिहां रही रे, छठे बहुस्थिति जाण॥

4. आठमा थी दोय श्रेणि छै रे, उपशम क्षपक पिछाण।
उपशम जाय इग्यारमे रे, मोह दबावतो जाण॥

5. श्रेणि उपशम जिन नां लहै रे, खपक श्रेणि धर खंत।
चारित्र मोह खपावतां रे, चढ़िया ध्यान अत्यंत॥

6. नवमे आदि संजल चिहुं रे, अन्त समे इक लोभ।
दसमे सूक्षम मात्र ते रे, सागार उपयोग सोभ॥

7. एकादशम उलंघ नै रे, बारमे मोह खपाय।
त्रिकर्म इक सम तोड़तां रे, तेरम केवल पाय॥

8. तीर्थ थाप जोग रुंध नै रे, चवदमां थी शिव पाय।
उगणीसै पूनम भाद्रवी रे, अनन्त रट्या हरषाय॥

लय : *पायो जुगराज पद मुनि*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

15

धर्म प्रभु स्तवन

अहो प्रभु परम देव प्यारा।

1. धर्म जिन धर्म तणा धोरी, त्रटक मोह-पाश नाख्या तोड़ी।
चरण-धर्म आतम सूं जोड़ी, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

2. शुकल ध्यानामृत रस लीना, संवेग रसे करि जिन भीना।
प्याला प्रभु उपशम नां पीना, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

3. जाण्या शब्दादिक मोहजाला, रमणि-सुख किंपाक सम काला।
हेतु नरकादिक दुख आला, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

4. पुद्गल सुख अरि जाण्या स्वामी, ध्याने थिरचित आतम-धामी।
जोड़ी युग केवल नीं पामी, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

5. थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो, आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांह्यो।
आज्ञा बारै अधरम दुखदायो, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

6. विरत धर्म धर्म-जिनंद ख्याता, अव्रत कही अधरम दुख दाता।
सावद निरवद जू जूआ कह्या खाता, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

7. बहुजन तार मुक्ति पाया, उगणीसै आसू धुर दिन आया।
धर्म जिन रटवै सुख पाया, अहो प्रभु परम देव प्यारा॥

लय : *भीखू पट भारीमाल भलकै*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

16

शान्ति प्रभु स्तवन

बलिहारी हो शांति जिणंद की।

1. शांति करण प्रभु शांतिनाथजी, शिवदायक सुखकंद की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

2. अमृत-वाण सुधा-सी अनुपम, मेटण मिथ्या मंद की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

3. काम भोग राग द्वेष कटुक फल, विष-बेली मोह-धंध की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

4. राखसणी रमणी वैतरणी, पुतली अशुचि दुर्गन्ध की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

5. विविध उपदेश देई जन तार्‌या, हूं वारि जाऊं विश्वनंद की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

6. परम दयाल गोवाल कृपानिधि, तुम जप माला आनंद की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

7. संवत उगणीसै आसू बिद एकम, शांति-लता सुखकंद की।
बलिहारी हो शांति जिणंद की॥

लय : *हूं बलिहारी भीखणजी साध री*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

17

कुन्थु प्रभु स्तवन

प्रभु को समरण कर नीको रे।

1. कुन्थु जिनेश्वर करुणा-सागर, त्रिभुवन सिर टीको रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

2. अद्‌भुत रूप अनूप कुन्थु जिन, दर्शन जग-पी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

3. वाण सुधा सम उपशम रस नीं, वाल्हौ जगती को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

4. अनुकंपा दोय श्री जिन दाखी, मर्म समदृष्टी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

5. असंजती रो जीवणो बांछै, सावद्य तहतीको रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

6. निरवद्य करुणा करि जन तार्‌या, धर्म ए जिनजी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

7. संवत उगणीसै आसू बिद एकम, शरणो साहिबजी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे॥

लय : *भिक्षु म्हारै प्रगट्‌या जी भरत खेतर में*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

18

अर प्रभु स्तवन

मोनैं प्यारा लागै छै जी अर जिनराज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

1. अर जिन कर्म-अरी नां हंता, जगत उधारण ज्हाज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

2. परीषह उपसर्ग रूप अरी हण, पाया केवल पाज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

3. नैण न धापै निरखतांजी, इन्द्राणी सुरराज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

4. वारु रे जिनेश्वर रूप अनूपम, तू सुगणा-सिरताज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

5. वाण विशाल दयाल-पुरुष नीं, भूख तृषा जाए भाज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

6. शरणै आयो स्वाम रै जी, अविचल सुख नै काज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

7. उगणीसै आसू बिद एकम, आणन्द उपनौं आज।
मोनैं वाल्हा लागै छै जी अर जिनराज॥

लय : *देखो सहियां! बनड़ो ए नेमकुमार*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

19

मल्ली प्रभु स्तवन

मल्लि जिनेश्वर नाम समर तरण शरण आयो।

1. नील वर्ण मल्लि जिनेश्वर, ध्यान-निर्मल ध्यायो।
अल्प काल मांहि प्रभू, परम-ज्ञान पायो॥

2. कल्प पुष्पमाल जेम, सुगंध तन सुहायो।
सुर-वधू वर नयन-भ्रमर, अधिक ही लिपटायो॥

3. स्व पर चक्र विविध विघन, मिटत तो पसायो।
सिंघनाद थकी गजेन्द्र, जेम दूर जायो॥

4. वाण विमल निमल-सुधा-रस संवेग छायो।
नर सुरासुर तिरि समाज, सुणत ही हरषायो॥

5. जगदयाल तूं हि कृपाल, जनक ज्यूं सुखदायो।
वच्छल नाथ स्वाम साहिब, सुजश तिलक पायो॥

6. जपत जाप खपत पाप, तपत ही मिटायो।
मल्लिदेव त्रिविध सेव, जग अछेरो पायो॥

7. उगणीसै आसोज कृष्ण, तीज सुदिन आयो।
कुम्भ-नन्द कर आनन्द, हरष थी मैं गायो॥

***लय :** जै गणेश, जै गणेश, जै गणेश....*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

20

मुनिसुव्रत प्रभु स्तवन

प्रभूजी! आप प्रबल बड़ भागी।
त्रिभुवन दीपक सागी रा॥

1. सुमित्रनन्दन श्री मुनिसुव्रत, जगतनाथ जिन जाणी।
चारित्र ले केवल उपजायो, उपशम रस नीं वाणी रा॥

2. चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी, निरखत सुर इन्द्राणी।
संवेग रस नीं वाणी सांभल, हरष स्यूं आंख्यां भराणी रा॥

3. शब्द-रूप-रस-गंध-परस, प्रतिकूल न हुवै तुम आगै।
पंच दरशन थांस्यूं पग नहिं मांडै, (तिम)अशुभ शब्दादिक भागै रा॥

4. सुर कृत जल स्थल पुष्प पुंजवर, ते छांडी चित दीनो।
तुझ निश्वास-सुगंध मुख-परिमल, मन-भ्रमर महा लीनो रा॥

5. पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुम स्यूं, किम होवै दुखदायो।
एकेन्द्री अनिल तजै प्रतिकूलपणुं, बाजै गमतो वायो रा॥

6. रागद्वेष दुर्दंत तै दमिया, जीत्या विषय विकारो।
दीनदयाल आयो तुम सरणै, तूं गति-मति-दातारो रा॥

7. उगणीसै आसोज तीज तिथि, श्री मुनिसुव्रत गाया।
लाडनूं शहर मांहि रूड़ि रीते, आणंद अधिको पाया रा॥

***लय :** भरतजी भूप भया छो*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

21

नमि प्रभु स्तवन

प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे।
मुझ प्यारा प्राण आधारा॥

1. नमिनाथ अनाथां रा नाथो रे, नित्य नमण करूं जोड़ी हाथो रे।
कर्म काटण वीर विख्यातो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

2. प्रभु ध्यान सुधारस ध्याया रे, पद केवल जोड़ी पाया रे।
गुण उत्तम-उत्तम आया, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

3. प्रभु बागरी वाण विशालो रे, खीर-समुद्र थी अधिक रसालो रे।
जगतारक दीनदयालो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

4. थाप्या तीरथ च्यार जिनीन्दो रे, मिथ्या-तम हरण मुनीन्दो रे।
ज्यांनैं सेवत सुर-नर वृन्दो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

5. सुर अनुत्तर विमाण नां सेवै रे, प्रश्न पूछ्यां उत्तर जिन देवै रे।
अवधिज्ञान करी जाण लेवै, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

6. तिहां बैठा ते तुम ध्यान ध्यावै रे, तुम योग-मुद्रा चित चावै रे।
ते पिण आपरी भावना भावै, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

7. उगणीसै आसोज उदारो रे, कृष्ण चौथ गाया गुणधारो रे।
हुवो आणंद हर्ष अपारो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे॥

लय : *परमगुरु पूज्यजी मुझ प्यारा रे*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

22

अरिष्टनेमि प्रभु स्तवन

प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी।
रिठनेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

1. तूं तोरण स्यूं फिर्‌यो जिन-स्वाम, अद्‌भुत बात करी तैं अमाम।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

2. राजिमती छांडी जिनराय, शिव-सुन्दर स्यूं प्रीत लगाय।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

3. केवल पाया ध्यान वर ध्याय, इन्द्र शची निरखै हरषाय।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

4. नेरिया पिण पामैं मन मोद, तुझ कल्याण सुर करत विनोद।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

5. राग-रहित शिव सुख स्यूं प्रीत, कर्म हणै बलि द्वेष रहीत।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

6. इचरजकारी थांरो चरित्त, हूं प्रणमूं कर जोड़ी नित्त।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

7. उगणीसै बिद चौथ कुमार, नेम जप्यां पायो सुखसार।
प्रभु नेम स्वामी! तूं जगनाथ अंतरयामी॥

लय : *व्रजवासी लाला कान*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

23

पार्श्वनाथ प्रभु स्तवन

पारस देव! तुम्हारा दर्शन भाग भला सोई पावै हो।
भाग भला सोई पावै, हूं वारि जाऊं,
जीव मगन हो ज्यावै हो पारस देव!

1. लोह कंचन करै पारस काचो, ते कहो कर कुण लेवै हो।
पारस तूं प्रभु साचो पारस, आप समो कर देवै हो॥

2. तुझ मुख-कमल पासै चमरावलि, चन्द्रकांतिवत सोहै हो।
हंस-श्रेणि जाणै पंकज सेवै, देखत जन-मन मोहै हो॥

3. फटिक-सिंहासण सिंह आकारे, बैस देशना देवै हो।
वन-मृग आवै वाणी सुणवा, जाणक सिंह नै सेवै हो॥

4. चन्द्र समो तुझ मुख महा शीतल, नयन-चकोर लुभावै हो।
इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर रमणी, निरखत तृप्ति न पावै हो॥

5. पाखंडी सरागी आप विरागी, आपस में इम गैरी हो।
वैर भाव पाखंडी राखै, आप त्यांरा नहिं वैरी हो॥

6. जिम सूरज खद्योत ऊपरै, वैर-भाव नहिं आणै हो।
इण विध प्रभु पिण पाखंडियां नैं, खद्योत सरीखा जाणै हो॥

7. परमदयाल कृपाल पारस प्रभु, संवत उगणीसै गाया हो।
कृष्ण पक्ष तिथि चौथ लाडनूं, आणंद अधिको पाया हो॥

लय : *पूज भीखणजी तुम्हारा दर्शन*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

24

महावीर प्रभु स्तवन

नहीं इसो दूसरो जगवीर,
उपसर्ग सहिवा अडिग जिनवर, सुरगिरि जेम सधीर।

1. चरम जिनेन्द्र चौबीसमा रे, अघ हणवा महावीर।
विकट तप वर ध्यान धर प्रभु, पाया भव जल तीर॥

2. संगम दुख दिया आकरा पिण, सुप्रसन्न निजर दयाल।
जग उद्धार हुवै मो थकी रे, ए डूबै इण काल॥

3. लोक अनारज बहु किया रे, उपसर्ग विविध प्रकार।
ध्यान सुधारस लीनता जिन, मन में हरष अपार॥

4. इण पर कर्म खपाय नै प्रभु, पाया केवल नाण।
उपशम रसमय वागरी रे, अधिक अनूपम वाण॥

5. पुद्गल सुख अरि शिव तणां रे, नरक तणा दातार।
छांड रमण किंपाक बेली, संवेग संजम धार॥

5. निंदा नैं स्तुति समपणै रे, मान अनै अपमान।
हरष शोग मोह परहर्‍यां रे, पामै पद निरवाण॥

6. इम बहुजन प्रभु तारिया रे, प्रणमूं चरम जिणंद।
उगणीसै आसोज चौथ बिद, हुओ अधिक आणंद॥

***लय :** पोढ़ो प्रभु द्वारिका*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्री भक्तामर स्तोत्रम्

(आचार्य श्री मानतुंगकृत)

भक्तामर - प्रणत - मौलिमणि - प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥1॥

नमस्कार करते हुए अमर भक्तों के मुकुटमणियों की प्रभा को उद्योतित करने वाले पाप रूपी तमःसमूह को नष्ट करने वाले एवं भव समुद्र में पड़े हुए प्राणियों को आलम्बन देने वाले, जिनेश्वर देव के पादयुग्म को युग की आदि में सम्यक् नमस्कार करता हूं।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रैर् जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

जो समस्त वाङ्मय तत्त्व के बोध से विशिष्ट बुद्धि वाले, सुरेन्द्रों के द्वारा, तीन लोक के चित्त को हरने वाले उदार स्तोत्रों से संस्तुत है। मैं उन प्रथम जिनेश्वर देव की स्तवना करूंगा।

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥3॥

हे विबुधों के द्वारा अर्चित पाद पीठ! मैं लज्जाविहीन बिना ही योग्यता के तुम्हारी स्तवना करने के लिए उद्यत हुआ हूं। क्योंकि पानी में तैरते हुए चन्द्र बिम्ब को भोले बालक के अतिरिक्त और कौन पकड़ने की इच्छा कर सकता है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र! शशांककांतान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥4॥

हे गुण समुद्र! तुम्हारे चन्द्रमा जैसे कान्त गुणों को क्या कोई सुरगुरु जैसा व्यक्ति भी बुद्धि के द्वारा कहने में समर्थ है अथवा प्रलयकाल की पवन से उद्धत महामत्स्यों के समूह वाले समुद्र को क्या कोई अपनी भुजाओं से तैरने में समर्थ है?

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥5॥

हे मुनीश! भक्तिवश मैं शक्तिविहीन होता हुआ भी (तुम्हारी) स्तुति करने के लिए तत्पर हुआ हूं। अहो! क्या मृग प्रीतिवश अपने बलबूते को देखे बिना ही अपने बच्चे की रक्षा के लिए सिंह का सामना नहीं करता?

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु - चाम्र - कलिका - निकरैकहेतुः॥6॥

भगवन्! मुझ जैसे एक अल्पज्ञ और श्रुतज्ञ जनों के सम्मुख उपहास-पात्र को तुम्हारी भक्ति ही स्तुति के लिए मुखरित (प्रेरित) करती है जैसे वसन्त ऋतु में कोयल की मधुर कुहुक को आम्र-मंजरी।

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त - लोकमलिनीलमशेषमाशु -
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्॥7॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भगवन्! तुम्हारी संस्तुति से प्राणीमात्र के जन्म-जन्म के संचित पाप कर्म क्षण मात्र में विनष्ट हो जाते हैं। जैसे—भौंरे जैसे काले, रात्रि के अशेष लोक-व्याप्त अंधेरे को सूर्य की किरणें शीघ्र ही भेद डालती हैं।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः॥8॥

तुम्हारी स्तुति से जन्म-जन्म के पाप क्षण मात्र में नष्ट हो जाते हैं। हे नाथ! मैं यह मानकर मन्दबुद्धि होते हुए भी तुम्हारे प्रभाव से संस्तवना करता हूं। वह सज्जन पुरुषों के चित्त को लुभाने वाली होगी। जैसे कि कमल के पत्ते के प्रभाव से उस पर ठहरी जल की बूंद मुक्ता का आकार धारण कर लोगों को लुभाती है।

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त-दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥9॥

हे देव! समस्त दोषों को दूर करने वाली तुम्हारी यह स्तुति तो दूर, तुम्हारी संकथा (चर्चा) ही जगत के पापों को दूर कर देती है। जैसे—सूर्य के दूर रहते हुए भी उसकी किरणें सरोवर के कमलों को विकसित कर देती हैं।

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति?॥10॥

हे भुवन भूषण! हे प्राणीमात्र के नाथ! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, जो कि जगती-तल में प्रचुर गुणों के द्वारा आपकी स्तवना करते हुए भक्तजन आपके तुल्य बन जाते हैं। क्या कोई समृद्धिशाली व्यक्ति अपने सेवक को अपने तुल्य नहीं बनाता?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत्॥11॥

आप जैसे अनिमेष विलोकनीय पुरुषों को देखकर लोगों के नेत्र अन्यत्र सन्तुष्ट नहीं होते। क्योंकि चन्द्रमा की किरणों जैसी द्युति वाले क्षीर समुद्र का पानी पी लेने पर समुद्र का खारा पानी कौन पीना चाहेगा?

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति॥12॥

हे त्रिभुवन ललाम! जिन शान्त-राग वाले और कान्तिमान परमाणुओं से तुम्हें रचा गया है, वे परमाणु इस धरातल पर उतने ही थे। यही कारण है कि पृथ्वी पर तुम्हारे जैसा दूसरा कोई रूप नजर नहीं आता।

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम्॥13॥

कहां देवता, मनुष्य और नाग-देवताओं के नेत्रों को हरण करने वाला तुम्हारा मुखारविन्द, जिसने तीनों लोक की उपमाओं पर विजय प्राप्त की है और कहां चन्द्रमा का कलंक से मलिन बिम्ब, जो कि दिन में पके हुए ढाक के पत्ते के तुल्य नजर आता है।

सम्पूर्णमंडल-शशांककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्॥14॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हे सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल की कला समूह के तुल्य कान्तिमान! आपके उज्ज्वल गुण तीन लोक में सर्वत्र गाये जाते हैं। हे त्रिजगदीश्वर! जिन्होंने ऐसे एक ही स्वामी का आश्रय ले लिया है, उन्हें इच्छानुसार भ्रमण करने से कौन रोक सकता है?

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्तकाल-मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

भगवन! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, जो देवांगनायें तुम्हारे मन को किंचित् भी विचलित नहीं कर सकीं। क्या कभी प्रलयकाल की पवन से मन्दराद्रि शिखर चलायमान हुआ है?

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः॥16॥

हे नाथ! तुम धूप उत्पन्न करने वाली वर्तिका और तैल-प्रवाह से रहित दीपक होकर भी तीनों लोकों को प्रकाशित करते हो और पर्वतों को हिला देने वाली पवन से भी तुम प्रभावित नहीं होते। अतः भगवन्! समस्त जगत को प्रकाशित करने वाले तुम एक ही विलक्षण दीप हो।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर-निरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

प्रभो! तुम ऐसे दीपक हो जो न कभी अस्त होते हो और न राहु से प्रभावित होते हो और हठात् सारे विश्व को एक ही काल में प्रकाशित कर देते हो। तुम्हारा यह महाप्रभाव बादलों से भी आच्छादित नहीं होता। अतः हे मुनीन्द्र! तुम सूर्य से भी प्रभावशाली महिमा के धनी हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व - शशांकबिम्बम्॥18॥

प्रभो! नित्य उदय होने वाला, मोह के महान्धकार को दलने वाला, राहु के मुख से और बादलों से अगम्य (अप्रभावित) तुम्हारा अनन्त कान्तिवाला मुखारविन्द जगत को प्रकाशित करता हुआ अपूर्व देदीप्यमान शशांक बिम्ब है।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥19॥

हे प्रभो! तुम्हारे मुखचन्द्र से अन्धकार विलीन हो जाने पर रात्रि में चन्द्रमा का और दिन में सूर्य का क्या प्रयोजन है? यदि यह जीवलोक पके हुए शालिवन युक्त है तो फिर जल के भार से नमते हुए मेघों का क्या कार्य है?

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि॥20॥

प्रभो! ज्ञान जिस प्रकार तुम्हारे अन्दर सुशोभित होता है, हरिहरादि नायकों में वैसा नहीं। क्योंकि मणियों से चमकता हुआ तेज जिस प्रकार उच्चस्थान से प्राप्त होता है वैसा किरणों से युक्त होते हुए भी कांच के टुकड़ों में नहीं।

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥21॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभो! हरिहरादि (ब्रह्मा, विष्णु आदि) देवों को मैंने देखा। इसे मैं ठीक समझता हूं, क्योंकि उन्हें देख लेने पर ही मुझे अब तुम्हारे में संतोष प्राप्त हुआ है। तुम्हें देखने से अब दूसरा कोई भी देव दुनिया में मुझे जन्म-जन्मान्तरों में भी आकर्षित नहीं कर सकता।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्॥22॥

देव! सैकड़ों स्त्रियां सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं, किन्तु तुम्हारे जैसा पुत्र अन्य किसी भी माता ने पैदा नहीं किया। यह ठीक है—ग्रह, नक्षत्र और तारे आदि सभी दिशाओं में होते हैं, फिर भी सहस्र किरणों वाले सूर्य को तो पूर्व दिशा ही जन्म देती है।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥23॥

विभो! अंधेरे से परे, मुनि लोग तुम्हें ही परम पुरुष, आदित्य के तुल्य तेज वाले, अमल मानते हैं, और तुम्हें ही अच्छी प्रकार से प्राप्त कर के मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। क्योंकि हे मुनीन्द्र! मुक्ति स्थान के लिए और दूसरा कोई कल्याणकारी मार्ग नहीं है।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

हे नाथ! सन्त लोग तुम्हें अव्यय, व्यापक ज्ञान वाले, मन और वाणी से अगोचर, संख्यातीत, आद्य, ब्रह्म-स्वरूप, ईश्वर, अनन्त काम को जीतने वाले, योगीजनों के ईश्वर, योग के जानने वाले, अमल तथा द्रव्य और भावात्मा की अपेक्षा से एक और अनेक कहते हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धि-बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥25॥

प्रभो! तुम्हारे कैवल्य बोध की विबुद्धजनों ने प्रशंसा की है, पूजा की है, अतः तुम बुद्ध हो। तुम तीनों लोकों का कल्याण करते हो, अतः शंकर हो। धीर! तुम मुक्ति मार्ग के विधि-विधान के कर्ता हो, अतः धाता हो। भगवन्! इस प्रकार स्पष्ट है कि तुम ही एक-मात्र पुरुषोत्तम हो।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥26॥

हे तीन लोक की पीड़ा हरने वाले नाथ! तुम्हें नमस्कार है। क्षितितल के अमलभूषण! तुम्हें नमस्कार है। तीन जगत के परमेश्वर! तुम्हें नमस्कार है। जन्म-मरण रूप समुद्र का शोषण करने वाले हे जिन! तुम्हें नमस्कार है।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥27॥

हे मुनीश! इसमें क्या आश्चर्य है, जो कि तुम बिना किसी अवकाश के अशेष गुणों के आश्रय भूत हो, क्रोध, मान आदि से उत्पन्न विविधाश्रयों में रहने वाले दोषों ने तुम्हें कभी स्वप्न में भी नहीं देखा।

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति॥28॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभो! ऊंचे अशोक वृक्ष पर आश्रित ऊपर की ओर जाने वाली किरणों युक्त तुम्हारा निर्मल रूप देदीप्यमान है। लगता है जैसे–स्पष्ट उल्लसित किरण वाला, अन्धकार समूह को विनष्ट करने वाला, काले मेघ के पार्श्ववर्ती रवि का बिम्ब हो।

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलसदंशुलता-वितानं
तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः॥29॥

मणि किरणों की शिखाओं से विचित्र सिंहासन पर तुम्हारा कंचन के तुल्य शरीर ऐसे शोभित हो रहा है, मानो ऊंचे उदयाचल के शिखर पर, आकाश में चमकती हुई किरण-लताओं वाला सूर्य का बिम्ब।

कुन्दावदात-चलचामर-चारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचिनिर्झर-वारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥30॥

चमेली कुसुमों के तुल्य शुभ ढुलते हुए सुन्दर चमरों के बीच तुम्हारा शरीर तपे हुए स्वर्ण की तरह देदीप्यमान है, मानो उदय होते हुए चन्द्रमा के सदृश-पवित्र जल-प्रपात की धारा वाले मेरु पर्वत का उच्च स्वर्णमय शिखर हो।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥31॥

विभो! तुम्हारे यह ऊंचे स्थित तीन छत्र जो सूर्य-किरणों को भी मात देते हैं, चन्द्रकान्ति के तुल्य सुशोभित हैं। मोतियों के जाल से विशेष शोभा बढ़ाते हुए यह तीन लोक में तुम्हारा अधिपतित्व स्थापित कर रहे हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उन्निद्रहेम-नवपंकजपुंजकान्ती
पर्युल्लसन्-नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥32॥

हे स्वामिन्! खिले हुए नये स्वर्ण-कमलों की कान्ति के सदृश नखों की किरणों के द्वारा चारों ओर अति सुन्दर आभा बिखेरते हुए, तुम्हारे ये चरण जहां भी टिकते हैं, वहीं देवतागण स्वर्ण-कमल स्थापित कर देते हैं।

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि॥33॥

हे जिनेन्द्र! जिस प्रकार धार्मिक उपदेश विविध में तुम्हें जो ख्याति प्राप्त है, वैसी और किसी को नहीं, क्योंकि अन्धकार को नष्ट करने की क्षमता जैसी सूर्य की प्रभा में होती है, वैसी प्रभा प्रकाश-युक्त होने पर भी और ग्रहों की नहीं हो सकती।

श्च्योतन् मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्-भ्रमरनाद-विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥34॥

चूते हुए मद के द्वारा मलिन और चंचल कपोल भाग वाला, भ्रमण करते हुए मस्त मधुकरों के नाद से अत्यन्त बढ़े हुए कोप वाला, इन्द्र के ऐरावत के तुल्य उद्यत हाथी को ऊपर आते देखकर भी तुम्हारे आश्रित जनों को किंचित् भी भय नहीं लगता।

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते॥35॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विदीर्ण किये गए हाथियों के कुम्भ-स्थलों से निकलते हुए, शोणित से सने, उज्ज्वल मुक्ताफल से विभूषित धरातल, कृत संकल्प एवं जिनके पैरों के नीचे लक्ष्य प्राप्त हो चुका है ऐसा हरिणाधिप (सिंह) भी तुम्हारे चरण-रूपी युग पर्वतों का आश्रय लेने वाले भक्त पर आक्रमण नहीं कर सकता।

कल्पान्तकाल-पवनोद्धत-वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम्॥36॥

प्रलयकाल के प्रचण्ड वायु-वेग से उत्पन्न भीषण अग्निकाण्ड वाला, ज्वलित, उज्ज्वल, स्फुलिंग बिखेरता हुआ समस्त विश्व को निगल जाने की इच्छा रखने वाला दावानल भी यदि सामने आ पड़े तो तुम्हारे नाम-रूप कीर्तन का जल उसे सर्वथा शान्त कर देता है।

रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥37॥

भगवन्! जिस पुरुष के हृदय में तुम्हारे नाम-रूपी नागदमनी हो, वह व्यक्ति लाल नेत्रों वाले मदोन्मत्त, कोकिल के कण्ठों के तुल्य नील, क्रोध में व्याकुल, फण किए हुए सर्प को भी पैरों से निःशंक होकर कुचल सकता है।

वल्गत्तुरंग-गजगर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूख-शिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति॥38॥

जिस समर में बलवान भूपतियों की सेना में हाथी और घोड़ों के भयंकर शब्द हो रहे हों, विभो! उस स्थिति में तुम्हारे नाम-कीर्तन मात्र से वह सेना ऐसे छिन्न-भिन्न हो जाती है, जिस प्रकार कि उदय होते हुए सूर्य की किरणों के अग्र-भाग से अन्धेरा विलीन हो जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षाः-
त्वत्पाद-पंकजवनाश्रयिणो लभन्ते॥39॥

भालों की नोक से छिन्न भिन्न हुए हाथियों के रुधिर की नदी के वेग में तैरने में व्याकुल हैं योद्धा जिसमें, ऐस समर में जो दुर्जेय जेय पक्ष से पराजित हैं वे प्राणी भी तुम्हारे पाद पंकज रूपी वन का आश्रय लेने से विजय प्राप्त करते हैं।

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीन-पीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रंगत्तरंग-शिखरस्थित-यानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति॥40॥

भयंकर मगर समूह, भयभीत करने वाले महाकाय मत्स्य और प्रचण्ड बड़वानल आदि से क्षुभित समुद्र में भयंकर तरंगों पर डोलने वाले जहाज भी तुम्हारे स्मरण मात्र से भयभीत होकर पार हो जाते हैं।

उद्भूतभीषणजलोदर-भारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पाद-पंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः॥41॥

भयंकर जलोदर के भार से झुके हुए, जो कि शोचनीय दशा को प्राप्त हैं और जीवन से निराश हो चुके हैं, ऐसे मनुष्य तुम्हारे पादपंकजों की रज रूप अमृत के लेप से कामदेव के तुल्य रूप वाले बन जाते हैं।

आपाद-कण्ठमुरुशृंखल-वेष्टितांगाः,
गाढं बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजंघाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति॥42॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कण्ठों से लेकर पैरों तक जिनका शरीर विशाल श्रृंखलाओं से वेष्टित है और प्रगाढ़ बन्धन के प्रकार से जिनकी जंघाएं रगड़ी जा चुकी हैं, ऐसे लोग भी तुम्हारे नाम-रूप मंत्र का निरन्तर स्मरण करते हुए शीघ्र ही बन्धन के भय से मुक्त हो जाते हैं।

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बंधनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते॥43॥

जो भी कोई बुद्धिशाली व्यक्ति तुम्हारे इस स्तोत्र को पढ़ता है, तो उसके मदोन्मत हाथी, मृगराज, दावानल, भुजंग, संग्राम, समुद्र, जलोदर आदि से उत्पन्न होने वाले समस्त भय विनष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार कि एक भय से दूसरे भय का विलोप हो जाता है।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः॥44॥

हे जिनेन्द्र! तुम्हारे गुण रूप धागे में मैंने जो यह भक्तिपूर्वक रुचिकर वर्ण और विचित्र पुष्पों से स्तुति रूप माला पिरोई है, इसको जो भी कोई इस संसार में निरन्तर अपने कण्ठ में धारण करेगा, उस आत्माभिमानी (मानतुंग) को लक्ष्मी स्वयं विवश होकर वर लेती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विघ्न-हरण

अ. भी. रा. शि. को. उदारी हो, धर्ममूर्ति धुन धारी हो,
विघ्नहरण वृद्धिकारी हो, सुख संपत्ति दातारी हो।
भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो॥

1. भिक्षु भारीमाल ऋषिरायजी, खेतसीजी सुखकारी हो,
हेम हजारी आदि दे, सकल संत सुविचारी हो।
प्रणमूं हर्ष अपारी हो॥

2. दीपगणी दीपक जिसा, जयजश करण उदारी हो,
धर्म-प्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणां रा भण्डारी हो।
नित प्रणमै नर-नारी हो॥

3. सखर सुधारस सारसी, वाणी सरस विशाली हो,
शीतल चन्द सुहावणो, निमल विमल गुण न्हाली हो।
अमीचंद अघ टाली हो॥

4. उष्ण शीत वर्षा ऋतु समै, वर करणी विस्तारी हो,
तप जप कर तन तावियो, ध्यान अभिग्रह धारी हो।
सुणतां इचरजकारी हो॥

5. संत धनो आगे सुण्यो, ए प्रगट्यो इण आरी हो,
प्रत्यक्ष उद्योत कियो भलो, जाणै जिन जय कारी हो।
ज्यांरी हूं बलिहारी हो॥

6. धोरी जिन-शासन धुरा, अहोनिशि में अधिकारी हो,
परम दृष्टि में परखियो, जबर विचारण थांरी हो।
सुजश दिशा अनुसारी हो, प्रगट्यो ऋषि तूं भारी हो॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7\. वृद्ध सहोदर जीत नों, जस धारी जयकारी हो,
लघु सहोदर सरूप नों, भीम गुणां रो भंडारी हो।।
सखर सुजस संसारी हो॥

8\. समरण थी सुख संपजै, जाप जप्यां जस भारी हो,
मन वांछित मनोरथ फलै, भजन करो नर-नारी हो।
वारूं बुद्धि विस्तारी हो॥

9\. रामसुख रलियामणो, तेसठ उदक आगारी हो,
अड़सठ पैंतालिस भला, बलि उगणीस चौविहारी हो।
बड़ तपसी तपधारी हो॥

10\. मन दृढ़ वच दृढ़ महामुनि, शील दृढ़ सुविचारी हो,
परम विनीत पिछाणियो, श्रद्धा दृढ़ सुधारी हो।
समरण सुखदातारी हो॥

11\. शिव वासी लावा तणो, तप गुण राशी उदारी हो,
आश्वासी निज आतमा, षटमासी लग धारी हो।
शीतकाल मझारी हो, सह्यो शीत अपारी हो॥

12\. उष्ण शिला तथा रेत नीं, आतापन अधिकारी हो,
तप वर्णन चौमासा तणो, सुणतां इचरजकारी हो।
गुण निप्पण नाम भारी हो॥

13\. कोदर तप करड़ो कियो, षटमासी लग धारी हो,
ब्यावचियो मुनि बाल हो, छठ-छठ अठम उदारी हो।
जावजीव जयकारी हो॥

14\. शीत-उष्ण बहु तप कियो, सुगुरु थकी इकतारी हो,
परम प्रीत पाळी मुनि, जाझी कीरत ज्यांरी हो।
समरण सुख दातारी हो॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

15. विघ्न मिटै अरियण हटै, प्रगटै सुख भारी हो,
'दल रूप दोहग' दारिद्र दटै, नाम रटै नर-नारी हो।
एहवो भजन उदारी हो॥

16. कर्म निर्जरा कारणै, जाप जपो नर-नारी हो,
निरवद्य कारज निरमलो, शिव सुख नो सहचारी हो।
सावद्य आणा वारी हो॥

17. भीम अमीचन्द मुनि भला, कोदर शिव वृद्धिकारी हो,
राम सुख रलियामणो, समण पंच सिरदारी हो।
जाप परम जस धारी हो॥

18. शिव मंगल सुख साहिबी, संपत सरस सुधारी हो,
अधिक आनन्द सुजस भलो, होवै हरष अपारी हो।
एहवो भजन उदारी हो॥

19. उदधि अग्नि अरि विष तणो, सकल विघ्न परिहारी हो,
सत्य-शील प्रभावे जिन कह्यो, दशमा अंग मझारी हो।
तिमज भजन तंत सारी हो, परम मंत्र सम धारी हो॥

20. तस्कर तास न पराभवै, चर्चा में जयकारी हो,
भूत रोग आपद हरै, अघ दल रूप परिहारी हो।
समरण महा सुखकारी हो॥

21. चन्दपन्नती सूत्र नीं, गाथा द्वितीय विचारी हो,
तिमज भजन ए ऋषि तणो, अधिष्ठायक अधिकारी हो।
थिर दृढ़ आसता थांरी हो॥

22. दवदन्ती सुरी दीपती, जयवन्ती जसधारी हो,।
इन्द्राणी सुरी आदि दे, स्हाज करण सुखकारी हो।
पुण्यवती प्यारी हो॥

23. गुण ठाणे चोथे गुणी, समण-सत्यां हितकारी हो,
अ. सि. आ. उ. सा. नैं सदा, प्रणमै बारम्बारी हो।
तास विचारणा भारी हो॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

24. सिणगारांजी मोटी सती, हरखूजी हितकारी हो,
माता तास सुहामणी, अणसण चरण उदारी हो।
आराध्यो हितकारी हो॥

25. हिम्मतवान सती हुंती, व्यावच करण विचारी हो,
विघ्न हरण बच्छलकरी, दिल संपत्ति दातारी हो।
जयजश हरष अपारी हो॥

26. श्री जिन-शासन शोभतो, अधिष्ठायक अधिकारी हो,
अहोनिशि अवधि प्रजूंझती, वंछित पूरण हारी हो।
सुख संपत्ति सहचारी हो॥

27. जाण तिके नर जाणता, अवर न जाणे लिगारी हो,
धर्म उद्योत करण धुरा, निरवद्य कारज सारी हो।
आणा तास मझारी हो॥

28. परम प्रीत सद्गुरु थकी, विडद वहै इकधारी हो,
पूरण आशा आसता, म्हारा मन मझारी हो।
जबर दिशा जयकारी हो॥

29. अधिक विनय गुण आगलो, थिर दृढ़ आसता धारी हो,
तसु मिटवा जोग उपद्रव मिटै, ते अघ दल रूप परिहारी हो।
निश्चय री बात न्यारी हो, न टलै होणहारी हो।
जिम जिन अतिशय उदारी हो॥

30. उगणीसै तेरे समै, वस्त पंचमी सोमवारी हो,
पंच ऋषि नो परवड़ो, स्तवन रच्यो तंत सारी हो।
प्रसिद्ध शहर सिरियारी हो, गणपति 'जयजश' कारी हो॥

31. विघ्न हरण नीं स्थापना, भिक्षु नगर मझारी हो,
महासुदि चवदश पुष दिने, कीधी हरष अपारी हो,
तास सीख बच धारी हो, तीरथ च्यार मझारी हो।
ठाणां एकाणूं तिवारी हो॥

लय : *सो ही तेरापंथ पावै* ***रचयिता :*** *श्रीमज्जयाचार्य*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुणिन्द मोरा

1. मुणिन्द मोरा, भिक्षु नैं भारीमाल,
वीर गोयम-सी जोड़ी रे, स्वामी मोरा।
अति भली रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, चोथा आरा नीं चाल,
विविध मर्यादा बांधी रे, स्वामी मोरा।
निरमली रे, मोरा स्वाम॥

2. मुणिन्द मोरा, आप मांहि तथा गण में जाण,
सुध संजम जाणो तो रे, स्वामी मोरा।
रहिवो सही रे! मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, ठागां सूं रहिवा रा पचखाण,
बलि अनन्त सिद्धां री साखे रे, स्वामी मोरा।
सम रही रे, मोरा स्वाम॥

3. मुणिन्द मोरा, अवगुण बोलण रा त्याग,
गण में अथवा बाहिर रे, स्वामी मोरा।
बिहुं तणै रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, मुनिवर जे महाभाग,
ए मर्याद आराधै रे, स्वामी मोरा।
हित घणै रे, मोरा स्वाम॥

4. मुणिन्द मोरा, तीजे पट ऋषिराय,
खेतसीजी सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
मुनि-पिता रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, सम दम उदधि सुहाय,
हेम हजारी भारी रे, स्वामी मोरा।
गुण रता रे, मोरा स्वाम॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. मुणिन्द मोरा, जयजश करण जिहाज,
दीप गणी दीपक-सा रे, स्वामी मोरा।
महामुनी रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, गणपति में सिरताज,
विदेह क्षेत्र प्रगटिया रे, स्वामी मोरा।
महाधुनी रे, मोरा स्वाम॥

6. मुणिन्द मोरा, अमियचन्द अणगार,
महातपसी वैरागी रे, स्वामी मोरा।
गुणनिलो रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, जीत सहोदर सार,
भीम जबर जयकारी रे, स्वामी मोरा।
अति भलो रे, मोरा स्वाम॥

7. मुणिन्द मोरा, कोदर तपसी करूर,
रामसुख ऋषि रूड़ो रे, स्वामी मोरा।
राजतो रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, शिव-दायक शिव-सूर,
सतीदास सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
गाजतो रे! मोरा स्वाम॥

8. मुणिन्द मोरा, उभय पिथल वर्धमान,
साम राम युग बन्धव रे, स्वामी मोरा।
नेम सूं रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, हीर बखत-गुण-खान,
थिरपाल फतैचंद जपियै रे, स्वामी मोरा।
प्रेम सूं रे, मोरा स्वाम॥

9. मुणिन्द मोरा, टोकर ने हरनाथ,
अखैराम सुखरामज रे, स्वामी मोरा।
ईश्वरू रे, मोरा स्वाम॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुणिन्द मोरा, राम सम्भू शिव साथ,
जवान मोती जाचा रे, स्वामी मोरा।
दमीश्वरू रे, मोरा स्वाम॥

10. मुणिन्द मोरा, इत्यादिक बहु सन्त,
बलि समणी सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
दीपती रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, कल्लू महा गुणवन्त,
तीन बन्धव नीं माता रे, स्वामी मोरा।
जीपती रे, मोरा स्वाम॥

11. मुणिन्द मोरा, गंगा नैं सिणगार,
जेतां दोलां जाणी रे, स्वामी मोरा।
महासती रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, जोतां महा जश धार,
चम्पा आदि सयाणी रे, स्वामी मोरा।
शोभती रे, मोरा स्वाम॥

12. मुणिन्द मोरा, शासण महा-सुखकार,
अमर सुरी अधिष्ठायक रे, स्वामी मोरा।
दायका रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, दवदन्ती जयवन्ती सार,
अनुकूल बलि इन्द्राणी रे, स्वामी मोरा।
सहायका रे, मोरा स्वाम॥

13. मुणिन्द मोरा, उगणीसै चवदै उदार,
कार्तिक सुदि तिथि दशमी रे, स्वामी मोरा।
गाइयो रे, मोरा स्वाम॥
मुणिन्द मोरा, 'जय-जश' सम्पति सार,
बीदासर सुखसाता रे, स्वामी मोरा।
पाइयो रे, मोरा स्वाम॥

लय : *साहिब मोरा ए....* ***रचयिता :*** *श्रीमज्जयाचार्य*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी

भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में।
ज्यांरो ध्यान धरूं अंतर में॥

1. देश-देश नां लोक आपनों, समरण कर रह्या उर में॥
2. आप तणी बुध नीं परशंसा, बहु लोक करै पुर-पुर में॥
3. मंत्राक्षर-सम नाम तुम्हारो, विघ्न मिटै घर-घर में॥
4. जबर उद्योत कियो जशधारी, एह पंचमें अर में॥
5. आप तणां गण में स्थिर पद सूं, वसियै वास अमर में॥
6. आप तणां गण थी 'उपराठा', उभय भवे दुख भर में॥
7. सांप्रत काले स्वाम गण पायो, आयो चिंतामणि कर में॥
8. आप आचारज महा उपगारी, कल्पवृक्ष जिम 'तर' में॥
9. दृढ़ मर्याद बांधी आप वारु, सतियां ने मुनिवर में॥
10. उगणीसै गुणतीस बैसाखै, सुद छठ बीदासर में॥
11. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जयजश' सुख-मंदर में॥

लय : *लिछमण म्हारै आया जी रमके* ***रचयिता :*** *श्रीमज्जयाचार्य*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुण्य-पाप (आराधना की 8वीं ढाल)

1. पुन्य पाप पूरब कृत, सुख दुःख नां कारण रे,
पिण अन्य जन नहीं, इम करै विचारण रे।
भावै भावना॥

2. पूरब-कृत अघ जे, भोगवियां मुकाई रे।
पिण वेद्यां बिना, नहिं छूटको थाई रे॥

3. जे नरक विषै म्हैं, दुःख सह्यो अनन्तो रे।
तो ए मनुष्य नो, किंचित् दुःख हुंतो रे॥

4. जे समकित बिण म्हैं, चारित्र नीं किरिया रे।
बार अनंत करी, पिण काज न सरिया रे॥

5. हिव समकित चारित, दोनूं गुण पायो रे।
वेदन समपणै, सह्यां लाभ सवायो रे॥

6. ओ तो अल्पकाल में, टूटै अघ-जालो रे।
भगवति सूत्र में, कह्युं परम कृपालो रे॥

7. सूको तृण पूलो, जिम अग्नि विसेहो रे।
शीघ्र भसम हुवै, तिम कर्म दहेहो रे॥

8. जिम तप्त तवे जल, बिन्दु बिललावै रे।
तिम दुख समचिते, सह्यां अघ क्षय थावै रे॥

9. दुःख अल्प काल में, मुनि गजसुकमालो रे।
समभावे करी, लहि शिवपट-शालो रे॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

10. अति तीव्र वेदना, बहु वर्ष विचारो रे।
सहि शिव संचर्या, चक्री सनतकुमारो रे॥

11. जिन कल्पिक साधु, लियै कष्ट उदीरो रे।
तो आव्यां उदय, किम थाय अधीरो रे?

12. सहि चरम जिनेश्वर, वेदन असरालो रे।
समभावे करी, तोड्या अघ जालो रे॥

13. कष्ट अल्प काल रो, पछै सुर-पद ठामो रे।
काल असंख लगै, दुख रो नहिं कामो रे॥

14. सह्या बार अनन्ती, दुःख नरक निगोदो रे।
तो आ वेदना, सहुं आण प्रमोदो रे॥

15. रह्यो गर्भावासे, सवा नव मासो रे।
तो आ वेदना, सहुं आण हुलासो रे॥

16. अति रोग पीड़ाणा, जग दुख बहु पावै रे।
ते संभरी सहै, वेदन समभावै रे॥

17. शूली फांसी फुन, भालां स्यूं भेदै रे।
बहुजन जग विषे, अति वेदन वेदै रे॥

18. ते तो जीव अज्ञानी, हूं तो ज्ञान सहीतो रे।
समभावै सहूं, वेदन धर प्रीतो रे॥

19. ए तो सुख नौं हेतु, सहियां सम भावै रे।
बहु अघ निर्जरै, पुन्य थाट बंधावै रे॥

20. बहु कर्म निर्जर्यां, थोड़ा भव मांह्यो रे।
शिव-पद संचरै, आवागमण मिटायो रे॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

21. सुर सुख नीं बांछा, मन में नहिं कीजै रे।
सुख सुरलोक नां, दुख हेतु कहीजै रे॥

22. सुख आतमीक नीं, बांछा मन करतो रे।
इह विध वेदना, सहै समचित धरतो रे॥

23. पुद्गल सुख पामला, तिण में गृद्ध थावै रे।
(तो) अघ संचो हुवै, अधिको दुःख पावै रे॥

24. नर इंद सुरिंद नां, काम भोग कंटाला रे।
तसु बांछा कियां, दुःख परम पयाला रे॥

25. तिण सूं मुनि वेदन, सहै शिवसुख-कामी रे।
धर्म शुकल भलो, ध्यावै चित-धामी रे॥

26. बहु कर्म-निर्जरा, तिण ऊपर दृष्टी रे।
राखै महामुनि, समता री सृष्टी रे॥

27. स्वजनादिक ऊपर, छांडै स्नेह-पाशा रे।
अति निर्मल चिते, शिवपुर नीं आशा रे॥

28. संग तिरियादिक नां, जाणै भुजंग समाणा रे।
समभावे रहै, मुनिवर महास्याणा रे॥

29. क्रोधादिक टाली, सम भावन सारो रे।
दृढ़ चित करि धरै, ए अष्टम द्वारो रे॥

लय : *साहजी कठै पौढे किण जागां सोवै रे* ***रचयिता :*** *श्रीमज्जयाचार्य*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खमत-खामणा (आराधना की 3 ढाल)

1. सप्त लक्ष जे जाती पृथ्वी नीं, सप्त लक्ष अपकाय,
इत्यादिक चउरासी लख जे, जीवायोनि खमाय।
सुगुणा! खमाविये तज खार॥

2. गण में सन्त सती गुणवन्ता, सगलां भणी खमाय।
निज आतम प्रति नरम करी नै, मच्छर भाव मिटाय॥

3. किणहिक सन्त सती सूं आया, कलुष भाव जो ताम।
कठिन वचन तसु कह्या हुवै तो, खामै ले ले नाम॥

4. इमहिज श्रावक अनैं श्राविका, सगलां भणी खमाय।
कलुष भाव करि कटु वच आख्या, नाम लेई नै ताय॥

5. द्रव्यलिंगी वा अन्यदर्शणी, खामैं सरलपणेह।
क्रोधादिक करि कटु वचन आख्या, नाम लेई पभणेह॥

6. बड़ा सन्त नी करी अशातन, त्रिहुं जोगे करि ताम।
सर्व खमावै उज्जल भावे, लेई जुजूआ नाम॥

7. चिहुं तीरथ अथवा अन्य जन प्रति, राग द्वेष दिल आण।
वचन कह्या हुवै तास खमावूं, इम कहै मुनि सुजाण॥

8. रेकारा तुंकारा किण नै, राग-द्वेष बस दीध।
तेह थी खमत-खामणा म्हांरा, एम वदै सुप्रसीध॥

9. कठिन सीख दीधी हुवै किण नैं, लैर वैर मन आण।
खमत-खामणा म्हांरा तेह थी, वदै नरम इम वाण॥

10. महाउपकारी गणपति भारी, समकित-चरण-दातार।
बारम्बार खमावै त्यांनै, अविनय कियो किवार॥

11. स्वारथ अणपूगां गणपति नां, बोल्या अवरणवाद।
ते पिण बारम्बार खमावै, मेटी मन असमाध॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

12. विनयवन्त गणपति नां त्यांथी, धर्‍या कलुष परिणाम।
बारम्बार खमावै तेहनैं, लेई जूजूआ नाम॥

13. च्यार तीरथ अथवा अन्य जन थी, मेटी मच्छर भाव।
इह विध खमत-खामणा करतो, ते मुनि तरणी नाव॥

14. परम नरम इम आतम करवी, धरवी समता सार।
ए विध वारू रीत बताई, तीजा द्वार मझार॥

तर्ज : सीता आवै रे घर **रचयिता :** *श्रीमज्जयाचार्य*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आठवां प्रकरण : गीत साधना

प्रहसम परम पुरुष नै समरूं

प्रहसम परम पुरुष नै समरूं।
परम पुरुष नै सुध मन समर्‍यां, आतम निरमल होय।
निज में निज-गुण परगट जोय, प्रहसम परम पुरुष नै समरूं॥

1. ॠषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति पद्मप्रभ नाम।
सप्तम स्वाम सुपास चन्दा प्रभु, सुविधि, शीतल अभिराम॥
2. श्रेयांस, वासुपूज्य जिन बन्दूं, विमल, अनन्त विशेष।
धर्म, शान्ति, कुंथू अर मल्लि, मुनि सुव्रत तीर्थेश॥
3. नमि जिन नेमिनाथ पारसप्रभु, चौबीसमां महावीर।
भाव निक्षेपे भजन करंता, पावै भवदधि-तीर॥
4. सिद्ध अनंत अष्ट गुण-नायक, अजरामर कहिवाय।
तीन प्रदक्षिणा देई प्रणमूं, थिर कर मन वच काय॥
5. गौतम आदि इग्यारह गणधर, धर्माचारज ध्येय।
पंचवीस गुण युक्त विराजै, उपाध्याय आदेय॥
6. अढ़ी द्वीप पनरा खेत्रां में, पंच महाव्रत धार।
समिति-गुप्ति-युत जो सुध साधू, बन्दूं बारम्बार॥
7. दुःषम आरे भरत मझारे, प्रगट्या भिक्षु स्वाम।
अरिहंत-देव ज्यूं धर्म दिपायो, पायो जग में नाम॥
8. पटधर भारमल्ल ॠषिराया, जयजश मघ महाराज।
माणकलाल डालगणि कालू, अष्टम पट अधिराज॥
9. भाग्य योग भिक्षु-गण पायो, तेरापंथ प्रख्यात।
परम प्रमोद मनावै गणपति 'तुलसी' वदना-जात॥

***लय :** सुगणा! पाप पंक पाहरिये* ***रचयिता :** आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महावीर स्तुति

जय महावीर भगवान।
मन-मंदिर में आओ, धरूं निरन्तर ध्यान।
जय महावीर भगवान॥

1. पावन नाम तुम्हारा, मंत्राक्षर प्यारा,
मेरी स्वर-लहरी पर, उठे एक ही तान।
जय महावीर भगवान॥

2. राग-द्वेष-विजेता, सिद्धि-सदन-नेता,
क्षमामूर्ति जग त्राता, मिटे सकल व्यवधान।
जय महावीर भगवान॥

3. अनेकान्त-उद्गाता, अनुपम सुखदाता,
जनम-जनम के बंधन, तोड़े कर संधान।
जय महावीर भगवान॥

4. आधि-व्याधि की माया, मिटे प्रेत छाया,
आत्म-शक्ति जग जाए, लघु भी बने महान्।
जय महावीर भगवान॥

5. भक्ति भरा मन मेरा, तोड़ रहा घेरा,
तन्मय बनकर 'तुलसी' करूं सदा संगान।
जय महावीर भगवान॥

लय : *आरती* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिरियारी रो संत

तेरापथ रो भाग्य-विधाता
श्रमण संघ रो सक्षम त्राता
लाखां आंखड़ल्यां रो तारो हार हिया रो लागै।
म्हांनै सिरियारी रो संत प्यारो-प्यारो लागै॥

1. सत्य सिराणै सदा राखतो, त्यागी सारी सुविधावां,
जिनवाणी पर जीवन-जामा, झोंक्या बलिहारी जावां,
बणी साधना सिद्धि स्वयं ही, चीर चल्यो सब बाधावां,
आत्म-समर रै अमर वीर री, म्हे गौरव गाथा गावां,
पावां सुमिरण स्यूं सुखसाता,
बण ज्यावां हां ताजा-माता,
दाता ज्ञान-चक्षु रो, सूरज सो उणिहारो लागै॥

2. त्याग तपोबल प्रबल मनोबल, चकित-चकित मानव रहग्या,
खड्या हुया अवरोध जिता ही, अपणै आप सभी ढहग्या,
प्रतिस्रोत में बढ्यो भले ही, अनुस्रोत में सब बहग्या,
पुण्य पोरसो तेज भोर-सो, घोर विरोधी भी कहग्या,
मन संकल्प-शक्ति ही भारी,
धार्मिक जन जुग-जुग आभारी,
मावस रात में बो पूनम सो उजारो लागै॥

3. पंथ चलाणो लक्ष्य नहीं हो, चल्या चरण बस पंथ बण्यो,
कुण जाणै किण पुळ में दीपां मां अलबेलो पुत्र जण्यो,
बचपन स्यूं बूढ़ापै तांई रह्यो सुरंगो बण्यो-ठण्यो,
ढिगला-ढिगला रतन निकाल्या, नहीं निरर्थक पहाड़ खण्यो,
शासन में अनुशासन थाप्यो,
मानदण्ड स्यूं जाय न माप्यो,
व्याप्यो जन-जन रै मन-मन में मोहनगारो लागै॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

4. बिन वैराग भेष साधू रो, भार गधै पर हाथी रो,
काच मिणकलो कठै, कठै बो अणमोलो संयम हीरो,
बड़ै घराणै रो चाहे वैधव्य सरावै कुण कीं-रो,
समझदार समझै है खोटै सिक्कै री कीमत जीरो,
आ है सांवरियै री वाणी,
अनुभव रै छकणै स्यूं छाणी,
कानां घणी सुहाणी झालर-सो झणकारो लागै॥

5. संविधान जद गढ्यो, बढ्यो जस, हुई बगावत भी सागै,
घबराहट रो काम नहीं, चढ़ चल्यो स्वयं नाजुक धागै,
चंदो[1] वीरो[3], चंदु[4] वीरां[5] फत्तू[6] च्यारां रै सागै,
भेळो आ'र नहीं थारै म्हारै जो पैर धर्‌यो आगै,
रुकग्या चरण सतजुगीजी रा,
सुणता रेग्या संत सधीरा,
आंखै झांखै बाबलियै रो काम करारो लागै॥

6. तू कद दीक्षा लेसी? जब तक जिवै मेरण्यां मगरै री,
दुलहिन रोवै न्याय, दूल्हो रोवै कुण सी दुविधा हेरी,
सुण्यां बात संजम री ताव चढ़ै तब दीक्षा में देरी,
एक मर्‌यां दोन्यां नै लेणी पड़सी अणसण री सेरी,
इण विध कर कर कड़ी कसौटी,
चुपकै खींची सब री चोटी,
ज्यूं-त्यूं मूंडणो बाबै नै जैर खारो लागै॥

---

1. विधवापन 2. चन्द्रभाणजी 3. वीरभाणजी 4. आर्या चंदूजी
5. आर्या वीरांजी 6. फत्तूजी आदि चार साध्वियां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

7\. आज्ञा धर्म अनाज्ञा अधरम चल्यो सफल अभियान जो,
सही समझ दी धार्मिक जग नै, ओ मोटो अवदान जो,
जाग्रत जीवन जीयो राखी, सम्मुख साध्य महान जो,
प्राप्त अतीन्द्रिय ज्ञान, अपूरब साहस रो संधान जो,
इच्छा मृत्यु वरी ज्योतिर्धर,
पद्मासन में समता निर्झर,
स्वामी भवसागर रो जाणक लियो किनारो लागै॥

8\. संवत दो हजार उणचालीस सन् बैंयासी खास है,
वरसां स्यूं आश्वासित पायो राणावास प्रवास है,
नव-निर्वाचित आया राष्ट्राध्यक्ष स्वयं सोल्लास है,
निर्वाणोत्सव रो ज्ञानीजी गढ्यो अजब इतिहास है,
मेहरा राज्यपाल रस पावै,
माथुर मुदित मुदित गुण गावै,
जनता सरिता में न समावै,
कांठै री कलियां खिल ज्यावै,
गगन धरा गुंजावै जय भिक्षु रो नारो लागै॥

9\. चंदन बैद वित्त मंत्री, शिक्षा मंत्री विख्यात है,
श्रावक-निष्ठा-पत्र पढ्यो आ नई हुई शुरूआत है,
दीक्षा-सीन नवीन निहारो म्हारो यातायात है,
आस्थामय उपवास हजारां सारो संघ सनाथ है,
हेम-मातृभूमी सिरियारी,
भिक्षु-तपोभूमी सिरियारी,
अंतिम अनशन स्थल सिरियारी,
स्वाम-समाधिस्थल सिरियारी,
श्रद्धानत ठाकुर सिरियारी,
तुलसी सिरियारी रो निरखण जिस्यो निजारो लागै॥

लय : *म्हानै गंगाजी रो पाणी खारो-खारो लागै* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लाग रह्यो चौमास

बड़ै भाग स्यूं मिल्यो श्रावकां! थांनै ओ अवकाश है।
असली किम्मत आंको इणरी, लाग रह्यो चौमास है॥

1. पावस में थ्यावस स्यूं मानव, धरम धान धन निपजावै,
जावै देशावर धन खातर, धान उगावण हल ब्हावै।
त्याग तपस्या सात्विक समता रो आछो अभ्यास है॥

2. संतां रो सतियां रो अब स्यूं, च्यार महीना स्थिरवासो,
करणी रूप कतरणी ले, काटो कर्मां रो गळफासो।
आध्यात्मिकता धार्मिकता स्यूं अंतरंग इकलास है॥

3. सुणो नित्य व्याख्यान ध्यान स्यूं, भावो पावन भावना,
और करो निरवद्य दलाली, जो सन्तां रै चावना।
कल्पाकल्प अशुद्ध-शुद्ध रो, ध्यान राखणो खास है॥

4. जाण देव गुरु धर्म-मरम नौ तत्त्वां री पहचाण करो,
सीखो तत्त्व-प्रवेश दीपिका, सही अर्थ रो भान करो।
बढ़ै मनोबल श्रद्धा स्यूं, आवश्यक ज्ञान प्रकाश है॥

5. धारो चरचा बोल थोकड़ा, गहन बोध है भावां रो,
करो सोच-संकोच मेट कर, समाधान शंकावां रो।
आखिर तो आचार्यां री वाणी पर दृढ़ विश्वास है॥

6. रात्री-भोजन वर्षा-ऋतु में, हर दृष्टि स्यूं त्याज्य है,
ब्रह्मचर्य अरु त्याग सचित रा, धर्म अंग अविभाज्य है।
छोड़ो बाइस-कोप सिनेमा, रमो न चोपड़ तास है॥

7. प्रातः सायं करो वंदना, बनणा पांच पदां री थे,
दरसण सामायिक मत भूलो, राखो रीत सदा री थे।
बड़ी तपस्या अरु मंडावो, बारी रा उपवास है॥

8. नवकरवाली आतम-चिन्तन सखर अणुव्रत-साधना,
करो ध्यान स्वाध्याय, चितारो चौबीसी आराधना।
भैक्षव शासन खिल्यो बगीचो, 'तुलसी' दिल सोल्लास है॥

***तर्ज :** अरे धार्मिकों किस प्रवाह में....* ***रचयिता :** आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संवत्सरी दिवस

(महापर्व-संगान)

आयो जैन-जगत रो प्रमुख पर्व संवत्सरी रे।
छायो सकल संघ में रंग, धर्म-जड़ हरी-भरी रे॥

पर्युषण पर्व नाम कहायो, भाद्रव महीनो सदा सुहायो,
नियमित धवल पक्ष निरमायो, प्रायः पांचम रो दिन पायो।
आयो जैन जगत रो प्रमुख पर्व संवत्सरी रे॥

1. लाखां लोग आज उपवासी, पौषध पचख्या वा पचखासी,
रात्रि-दिन छिन-छिन जिन ध्यासी।
पल-पल सफल बितासी, आज समाज घरोघरी रे॥

2. पुर-पुर संघ अभंग मिलासी, मंजुल मंडप सो खिल ज्यासी,
श्रमण-सती व्याख्यान सुणासी।
आर्हत्-मत री आज बजासी मधुरी बांसरी रे॥

3. सदिया भदिया सब मिल ज्यासी, कदिया पिण करतूत दिखासी,
गुरु-चरणां निज अंग झुकासी।
हिल-मिल धार्मिक ज्योत जगासी देश दिशावरी रे॥

4. सायं सुबह प्रतिक्रमण करासी, जीवा-जोणी लख-चौरासी,
हार्दिक भावे खमत खमासी।
तज मन-मच्छरता बण ज्यासी, आज अमच्छरी रे॥

5. जीवन सिंहालोक लहासी, वार्षिक विवरण हृदय बतासी,
निज-निज खलता-खोड़ मिटासी।
'तुलसी' संत सदा वर्षासी पावस री झरी रे॥

***तर्ज :** मूंदड़ी* — ***रचयिता :** आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्षमा दिवस

बड़े प्रेम से मिलजुल सीखें, मैत्री-मंत्र महान रे।
औरों से लें क्षमा स्वयं, औरों को करें प्रदान रे॥

1. व्यक्ति-व्यक्ति में जाति-जाति में, वैमनस्य जो बढ़ता,
प्रांत-प्रांत में राष्ट्र-राष्ट्र में, अन्तर जाता पड़ता।
यह भारी, विश्व-शान्ति को खतरा, हो इसका अवसान रे॥

2. औरों की भूलों को भूलें, अपनी भूल सुधारें,
कभी न करता मैं गलती, इस अहं वृत्ति को मारें।
खुद झुकें, झुकाएं दुनिया को, यह सरल मनोविज्ञान रे॥

3. अपनी भूल जान लेने पर भी, जो अकड़े रहते,
लातें खाने पर भी पूंछ, गधे की पकड़े रहते।
इस अकड़-पकड़ को छोड़, बढ़ाएं मानवता का मान रे॥

4. छोटी सी भी बात डाल देती, है बड़ी दरारें,
गलतफहमियों से खिंच जाती, आंगन में दीवारें।
इसका हो समुचित समाधान, ज्यों मिट जाए व्यवधान रे॥

5. कटुता मिटे परस्पर, वैसा वातावरण बनाएं,
बढ़े सुजनता 'तुलसी' ऐसे मैत्री दिवस मनाएं।
हो निश्छल, निरभिमान मानव मन, यह अणुव्रत अभियान रे॥

तर्ज : *कोटि-कोटि कण्ठों से गाएं* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विजय गीत

लक्ष्य है ऊंचा हमारा, हम विजय के गीत गाएं।
चीरकर कठिनाइयों को, दीप बन हम जगमगाएं॥

1. तेज सूरज-सा लिए हम,
शुभ्रता शशि-सी लिए हम।
पवन-सा गतिवेग लेकर, चरण ये आगे बढ़ाएं॥

2. हम न रुकना जानते हैं,
हम न झुकना जानते हैं।
हो प्रबल संकल्प इतना, सफल हो सब कल्पनाएं॥

3. हम अभय निर्मल निरामय,
है अटल जैसे हिमालय।
हर कठिन जीवन-घड़ी में, फूल बनकर मुस्कराएं॥

4. हे प्रभो! पा पन्थ तेरा,
हो रहा अब नव सवेरा।
स्वस्थ तन मन, स्वस्थ चिन्तन, चेतना की लौ जलाएं॥

तर्ज : *भाव-भीनी वन्दना* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर, जीवन अर्पण है सारा।
बढ़े चलें, हम रुकें न क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प हमारा॥

1. प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभाएंगे,
नहीं अपेक्षा है औरों की, स्वयं लक्ष्य को पाएंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का, भगवन्! प्रतिपल सबल सहारा॥

2. ज्यों-ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे, स्वतः मार्ग बन जाएगा,
हटना होगा उसे बीच में, जो बाधक बन आएगा।
रुक न सकेगी, मुड़ न सकेगी, सत्य क्रांति की उज्ज्वल धारा॥

3. आत्मशुद्धि का जहां प्रश्न है, सम्प्रदाय का मोह न हो,
चाह न यश की और किसी से भी, कोई विद्रोह न हो।
स्वर्ण विघर्षण से त्यों सत्य, निखरता संघर्षों के द्वारा॥

4. आग्रह-हीन गहन चिन्तन का, द्वार हमेशा खुला रहे,
कण-कण में आदर्श तुम्हारा, पय-मिसरी ज्यों घुला रहे।
जागे स्वयं जगाएं जग को, हो यह सफल हमारा नारा॥

5. नया मोड़ हो उसी दिशा में, नयी चेतना फिर जागे,
तोड़ गिराएं जीर्ण-शीर्ण, जो अन्ध-रूढ़ियों के धागे।
आगे बढ़ने का यह युग है, बढ़ना हमको सबसे प्यारा॥

6. शुद्धाचार विचार-भित्ति पर, हम अभिनव निर्माण करें,
सिद्धांतों को अटल निभाते, निज-पर का कल्याण करें।
इसी भावना से भिक्षु का, 'तुलसी' चमका भाग्य सितारा॥

लय : *वृंदावन का कृष्ण* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणुव्रत गीत (1)

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में, जन-जन मन पावन हो॥

1. अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा,
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस परिवर्तन हो॥

2. मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए,
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो॥

3. विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी,
नर हो नारी, बने नीतिमय जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता में, गतिशील चरण हो॥

4. प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की, पूजा कर सकते हैं,
प्रामाणिक बनकर ही संकट-सागर तर सकते हैं।
आज अहिंसा-शौर्य-वीर्य संयुत, जीवन-दर्शन हो॥

5. सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में पसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो॥

***लय :** चैत्य पुरुष जग जाए* ***रचयिता :** आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणुव्रत गीत (2)

बदले युग की धारा,
नई दृष्टी हो, नई सृष्टी हो अणुव्रतों के द्वारा,
बदले युग की धारा॥

1. मानवीय मूल्यों की रक्षा, अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता प्रामाणिकता, उसका अमल हृदय है।
हिंसा के इस गहन तिमिर में, अणुव्रत एक उजारा॥

2. धार्मिक है, पर नहीं कि नैतिक बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का, यह कैसा अभिनय है?
इस उलझन का धर्म क्रांति ही, है कमनीय किनारा॥

3. मूल्यपरक शिक्षा के युग में, संयम का अंकन हो,
सत्य अहिंसा से आप्लावित जन-जन का जीवन हो।
भोगवाद के चक्रवात से, सहज मिले छुटकारा॥

4. व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो, स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का उपचार अणुव्रत देगा।
प्रकटे अब परमार्थ चेतना, उपकृत हो जग सारा॥

5. बढ़े प्रबल पुरुषार्थ सभी में अभिनव आस्था जागे,
जोड़ें सबके अन्तर मानस को करुणा के धागे।
'तुलसी' मैत्री मन्त्र अचल हो, नभ में ज्यों ध्रुवतारा॥

लय : *नैतिकता की सुर-सरिता* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान गीत

आत्म साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा।
स्वप्न हो साकार इस अभियान के द्वारा॥

1. आत्मना आत्मावलोकन है यही दर्शन,
अंतरात्मा में सहज हो सत्य का स्पर्शन।
क्षीण हो संस्कार, अंतर्धान के द्वारा॥

2. मानसिक-संतुलन, जागृति और चित्त समाधि,
निकट आती, दूर जाती व्याधि, आधि, उपाधि।
प्रेम का विस्तार, निज संधान के द्वारा॥

3. बदल जाते हैं रसायन, ग्रंथियों के स्राव,
बदलते व्यवहार सारे बदलते हैं भाव।
बदलता संसार, आनापान के द्वारा॥

4. समस्या आवेग की है विकटतम जग में,
आदतों की विवशता है व्याप्त रग-रग में।
हो रहा उपचार, इस अवदान के द्वारा॥

5. अनुप्रेक्षा और लेश्याध्यान कायोत्सर्ग,
श्वास-प्रेक्षा से धरा पर उतर आए स्वर्ग,
हृदय हो अविकार केवल-ज्ञान के द्वारा।
हृदय हो अविकार 'तुलसी' ज्ञान के द्वारा॥

***लय :** मेरा जीवन कोरा....* ***रचयिता :** आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संघ गीत

जय-जय धर्म-संघ अविचल हो।
संघ संघपति प्रेम अटल हो॥

1. हम सबका सौभाग्य खिला है, प्रभु यह तेरापंथ मिला है।
   एक सुगुरु के अनुशासन में, एकाचार विचार विमल हो॥

2. दृढ़तर सुन्दर संघ-संगठन, क्षीर-नीर-सा यह एकीपन।
   है अक्षुण्ण संघ-मर्यादा, विनय और वात्सल्य अचल हो॥

3. संघ-संपदा बढ़ती जाए, प्रगति-शिखर पर चढ़ती जाए।
   भैक्षव शासन नन्दन वन की, सौरभ से सुरभित भूतल हो॥

4. 'तुलसी' जय हो सदा विजय हो, संघ चतुष्टय बल अक्षय हो।
   श्रद्धा-भक्ति बहे नस-नस में, पग-पग पर प्रतिपल मंगल हो॥

लय : *अमर रहेगा धर्म हमारा* ***रचयिता :*** *आचार्य तुलसी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चैत्य पुरुष

चैत्य पुरुष जग जाए।
देव! तुम्हारा पुण्य नाम मेरे मन में रम जाए॥

1. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ, ॐ ॐ ॐ उद्गाता,
अर्हं अर्हं अर्हं अर्हं, अर्हं अर्हं त्राता।
ॐ ह्रीं श्रीं जय ॐ ह्रीं श्रीं जय, विजय ध्वजा लहराए॥

2. ॐ जय भिक्षु, भिक्षु जय ॐ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं,
विघ्न शमन ॐ, व्याधि शमन ॐ, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं।
नाम मंत्र तव व्रण-संरोहण सतत अमृत बरसाए॥

3. मिटे विषमता तन की, मन की, अनुभव की, चिंतन की,
पल-पल, पग-पग मिले सफलता, तन्मयता चेतन की।
नाम मंत्र तव भयहर विषहर, साम्य सिंधु गहराए॥

4. आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, तुमने मंत्र पढ़ाया,
आत्मा अचल अरुज शिव शाश्वत, नश्वर है यह काया।
आत्मा आत्मा के द्वारा ही, आत्मा में लय पाए॥

5. तुम निरुपद्रव, हम निरुपद्रव, तुम हम सब हैं आत्मा,
तव जागृत आत्मा से हम सब, बन जाएं परमात्मा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः अन्तर्मल धुल जाए॥

लय : *नैतिकता की सुरसरिता में* ***रचयिता :*** *आचार्य महाप्रज्ञ*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वरूप चिन्तन

आएं आएं हम आएं, अपने घर भीतर आएं।
अपने घर भीतर आकर, हम सदा सुखी बन जाएं॥

1. मैं समझ रहा था तन को, यह मेरा अपना घर है,
मैं समझ रहा था मन को, यह मेरा ही अनुचर है।
पर टूट गया भ्रम मेरा, जीवन में ज्योति जगाएं॥

2. यह तन है पावन नौका, इससे भव-जल तरना है,
यह नाविक मेरी आत्मा, इससे उद्यम करना है।
प्रतिकूल हवा को अब हम, अपने अनुकूल बनाएं॥

3. मैं कौन कहां से आया, है और कहां पर जाना?
क्या है मेरा अपना वह? मैंने न जिसे पहचाना।
हम भूत और भावी से, अब वर्तमान में आएं॥

4. यह भूख-प्यास की पीड़ा, अब मुझको नहीं सताती,
मैं केवल ज्ञाता-द्रष्टा, यह जलती चिन्मय बाती।
संवेदन की भूमि से, ऊपर अब हम उठ जाएं॥

5. मैं मुक्त मृत्यु के भय से, ना मुझको व्याधि सताती,
ना कष्ट मुझे अब छूते, चेतन धारा लहराती।
अपना हित अपने द्वारा, यह मंत्र सतत दोहराएं॥

6. नाणं सरणं सरणं मे, सन्नाणं सरणं सरणं,
दंसण सरणं सरणं मे, सद्-दंसण सरणं सरणं।
तप संयम सरणं सरणं, शरणागत हम बन जाएं॥

7. शरणं भगवं श्री वीरो, सरणं श्री गुरुवर सरणं,
सरणं मम निर्मल आत्मा, सरणं रत्नत्रय सरणं।
अत्राण रहे हम अब तक, अब त्राण स्वयं बन जाएं॥

लय : *इठलाना सब ही छोड़ो...* ***रचयिता :*** *आचार्य महाप्रज्ञजी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विमल-विवेक

सुगुणा साधजी, वर समता वसावो रे।
कर करणी कर्म काट नै, अमरापुर जावो रे॥

1. विमल विवेक विचार नैं रे, आतम वश कर आप।
मन संकोचै मांहिलो रे, तो मिटै कर्मां नीं ताप॥
सखर गुण सागरु उर संवेग धरिये रे॥

2. सुगुण सुज्ञानी मानवी रे, पण्डित जे बुधवान।
इन्द्रयां दमै आतम वश करै रे, विवेक दीप घट आण॥

3. पूरब कर्म बांध्या तिके रे, उदै आवे किण बेर।
सम परिणामां भोगवी रे, लीजै चित नैं घेर॥

4. ए देही मुझ काच-सी रे, जिम पींपल नों पान।
डाभ अणीं जल बिन्दुवो रे, जिम कुंजर नों कान॥

5. ऊपर दीसै ओपती रे, सुन्दर तन सिणगार।
अन्तर अशुचि थकी भली रे, मूरख मत कर प्यार॥

6. रोगादि तन आवियां रे, समभावै सहै शूर।
जिनकल्पी गजसुकुमाल नै रे, कीजै याद जरूर॥

7. शालिभद्र धन्नो मुनि रे, चक्री सनतकुमार।
चौबीसमां जिन आदि दे रे, कहितां किम लहूं पार॥

8. बां कष्ट सह्या उज्ज्वल मनैं रे, तो म्हांरी सी-बात।
अै राग-द्वेष वश मानवी रे, पापे पिंड भरात॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9. दश लाख जोधा जीत नैं रे, शूर कहावे जेह।
एक आतम जीतै आपरी रे, ते अधिको गुण गेह॥

10. काम कटुक किम्पाक-सा रे, शिव-सुख नां अरि जेह।
हेतु नरक-निगोद नां रे, मत कर तिण स्यूं नेह॥

11. भोग भयंकर जिन कह्या रे, जेहवा जाणै फणिन्द।
विपद क्लेश नां दायका रे, तजिये तेह मुणिन्द॥

12. तीव्र मोह उदै आवियां रे, वश करवानां उपाय।
उभय कह्या जिनरायजी रे, अहो-निशि याद अणाय॥

13. उपवास बेलादि तप करै रे, भूख-तृषा सी-ताप।
तन श्रृंगार निवारतां रे, कष्ट कटै बहु आप॥

14. बाह्य एह उपाय छै रे, भीतर मन संतोष।
क्रोध चोकड़ी नै दमै रे, टालै आतम दोष॥

15. भावै बहुविध भावना रे, ध्यान धरै दिन रैन।
मद आठूंई मार नै रे, खपावै कर्म री श्रेण॥

16. विविध वैराग्य नीं वारता रे, हिये बसावे एम।
धिक्कार मन चंचल भणी रे, आतम-वश करूं केम॥

17. तीव्र मोहणी कर्म नीं रे, मोटी है मतवाल।
दुर्गति जातां जीव रै रे, बधै बहु जंजाल॥

18. सूक्ष्म बुध स्यूं पेखिए रे, शब्द-रूप-रस-गंध-फास।
ए सर्व बन्धक पांच छै रे, मत कर तेहनी आश॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

19. मनोगम पांचूं देखनै रे, दिल आणै बहु राग।
द्वेष धरै भूण्डा मझै रे, तो लागै कर्मां नों दाग॥

20. आपो परवश जेहवो रे, कदेय न करणो काम।
मन समझावै मांहिलो रे, ते चतुराई ताम॥

21. मन नीं लहर मिटायवा रे, एहिज करै अभ्यास।
विमल विवेक विचार नैं रे, तुरत टूटै मोह पास॥

22. सोवत बैठत ऊठतां रे, सम परिणामां रहन्त।
मानसिक दुख मेटिया रे, ते मोटा मतिमन्त॥

23. पुद्गल सुख छै कारमा रे, तेहनैं जाणै असार।
सुगन्ध-दुर्गन्ध जिन कह्या रे, दुर्गन्ध-सुगन्ध धार॥

24. चिन्ता रूंख प्रमाद छै रे, ते कापण नै कुहाड़।
ध्यान-सज्झाय सिद्धान्त थी रे, मूल थी न्हाखै उपाड़॥

25. को करै प्रशंसा तांहरी रे, मन आणी मत रीझ।
निन्दा शब्द सुणी करी रे, तिण ऊपर मत खीझ॥

26. औगुण देखी पारका रे, क्रोध करी मत खीज।
अवर तणां सुख देख नै रे, डीलां स्यूं मत छीज॥

27. स्वर्ग तणां सुख कारमा रे, पाम्या बहुली बार।
रुलियो नरक-तिर्यंच में रे, सही घणेरी मार॥

28. लघुता पद बहु पावियो रे, पायो पद नरेश।
एहवो तत्त्व विचार नै रे, स्यूं अहंकार करेस॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

29. जनम-मरण री वेदना रे, गर्भ-वेदन असमान।
अशुचि-भखी दिन काढ़िया रे, कांय करे तोफान॥

30. ए मारग पायो जिन तणो रे, श्रद्धा आई हाथ।
सफल जमारो छै सही रे, ए पाया गणनाथ॥

31. ए मारग साचो अछै रे, श्रेष्ठ अने परधान।
उत्तम दायक मोक्ष नों रे, कलंक रहित अमाम॥

32. निःशल्य अने निरलोभता रे, कर्म खपावण हार।
मारग जावा मोक्ष नों रे, एहिज छै आधार॥

33. सन्देह रहित निश्छल अछै रे, सर्व दुःख भांजण भूर।
ए मारग स्थित मानवी रे, सिझस्ये अरि नैं चूर॥

34. लोकालोक विलोकस्ये रे, कलह दावानल छोड़।
अनन्त करस्ये सर्व दुःख तणो रे, ए मारग सिर मोड़॥

35. एहवो शासण पावियो रे, ए पाया गणिराज।
भव सागर में डूबतां रे, मिलिया तारण ज्याज॥

36. शरण आया जे मानवी रे, लहस्ये सुख अपार।
हिवड़ा पंचम काल में रे, आप तणो आधार॥

37. जिन नहीं जिन सारखा रे, जाहिर तेज दिनन्द।
शरणै आयो आपरै रे, ए मुझ हुवो आनन्द॥

38. भिक्षु-भारीमाल-ऋषिरायजी रे, जयगणी चौथे पाट।
तास प्रसादे छै मुझे रे, नित नवला गहघाट॥

39. उगणीसै बाईस में रे, श्रावण सुद दूज कहीस।
'सरूपशशि' प्रसाद थी रे, लाडणूं विश्वावीस॥

लय : *जम्बू कह्यो मानले रे* ***रचयिता :*** *मुनि श्रीकालूजी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्तिम बाजी

श्रावक जी! अब सैंठा रहिज्यो।
लियो भार पहुंचाय पार थे, जग में जश लीज्यो॥

1. नीठ-नीठ मानव भव पायो, पांचूं इन्द्रयां तन्त।
आरज क्षेत्र मिल्यो कुल उत्तम, गुरु तुलसी गुणवन्त॥

2. घणां बरस श्रावक-व्रत पाल्या, करी गुरां री सेव।
छेहड़ै जबर विचारी पचख्यो, संथारो स्वयमेव॥

3. भूख तृषा वश तन कुमलावै, जावै रसना सूक।
अधिक कष्ट मरणांत देखकर, थे मत जाज्यो चूक॥

4. सूर चढ़े संग्राम में, बैर्‌यां साम्हो जाय।
रग-रग नाचे तन-मन राचै, पग पाछा नहिं ठाय॥

5. तिमहिज कर्म रिपु संग मांड्यो, थे भारी संग्राम।
अल्प समय में जीत फतै अब, रखज्यो दृढ़ परिणाम॥

6. देव गुरु री खरी आसथा, राखीज्यो मन मांय।
चौरासी लख जीवा जोणी, लीज्यो सर्व खमाय॥

7. सुखे-सुखे भव करतां, थे तो करस्यो मुक्ति नजीक।
संथारा में श्रावक जी नै, आ 'सोहन' री सीख॥

***तर्ज :** तावड़ा धीमो पड़ज्या रे* ***रचयिता :** मुनि सोहनलालजी 'चूरू'*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रायश्चित्त गीत

जो कुछ भी पाप हुआ मुझसे, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं,
भगवान आपकी साक्षी से, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं,
गुरुदेव! आपकी साक्षी से, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं,
अपनी आत्मा की साक्षी से, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

1. पंचाश्रव पाप अठारह का, जो सेवन किया कराया हो।
इस भव में या पिछले भव में, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

2. कर्मों के कर्ता राग द्वेष, ये नाच नचाते हैं मुझको।
इनके वश जो दुष्कर्म किये, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

3. कहां-कहां पर मैंने जन्म लिए? कहां-कहां पर कैसे मरण किए?
है अता पाता कुछ भी न कहीं, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

4. कितनों से नाता जोड़ा है, कितनों से नाता तोड़ा है।
उन सबसे खमत खामणा कर, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

5. जो मद-प्रमाद में पाप हुए, अनजान-जान में पाप हुए।
उन सबका आतम साक्षी से, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

6. सम्यग्-दर्शन सद्ज्ञान-चरण, का कभी नहीं आचरण किया।
भटका मिथ्यात्व मोह में जो, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

7. भव-भव में मुझ को बोध मिले, संयम समता के फूल खिले।
मुनि शोभा आत्म शांति पाने, मिच्छा मि दुक्कडं लेता हूं॥

तर्ज : *वह धर्म नहीं बस धोखा है...* ***रचयिता :*** *मुनि शोभालालश्री*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सोलह सती स्तवन

आदिनाथ आदि जिनवर बंदी, सफल मनोरथ कीजिये ए।
प्रभाते उठी मांगलिक कामे, सोलह सती नो नाम लीजिये ए॥

1. बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरत नीं बेनड़ी ए।
घट-घट व्यापक अक्षर रूपे, सोलह सती मांही जे बड़ी ए॥

2. बाहुबल भगिनी सती सिरोमणि, सुन्दरी नामे ऋषभसुता ए।
अंक सरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनूपम गुणयुता ए॥

3. चन्दनबाला बाल पणे थी, शीलवती शुद्ध श्राविका ए।
उड़द ना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए॥

4. उग्रसेन धुआ धारिणी नन्दिनी, राजीमती नेमी बल्लभा ए।
यौवन वय में काम नैं जीत्यो, संयम लेई देव दुल्लभा ए॥

5. पंच भरतारी पाण्डव नारी, द्रुपद तनया बखाणीए ए।
एक सौ आठे चीर पुराणा, शील महिमा तसु जाणिये ए॥

6. दशरथ नृपनीं नारी निरुपम, कौशल्या कुल चन्द्रिका ए।
शील सलूणी राम जणेता, पुण्य तणी प्रणालिका ए॥

7. कौशाम्बिक ठामे सतानिक नामे, राज करे रंग राजियो ए।
तसु घर धरणी मृगावति सति, सुर भवने यश गाजियो ए॥

8. सुलसा साची शील न काची, राची नहीं विषया रसे ए।
मुखड़ो जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

9. राम रघुवंशी तेहनीं कामिनी, जनक सुता सीता सती ए।
जग सहु जाणे धीज करंता, अनल शीतल थयो शील थी ए॥

10. काचे तांतण चालणी बांधी, कुआ थकी जल काढ़ियो ए।
कलंक उतारवा सती सुभद्रा, चम्पा द्वार उघाड़ियो ए॥

11. सुर नर वन्दित शील अखण्डित, शिवा शिव पदगामिनी ए।
जेहना नामे निर्मल थइए, बलिहारी तसु नामिनी ए॥

12. हस्तिनापुर पाण्डुराय नीं, कुन्ता नामे कामिनी ए।
पाण्डव माता दशे दशारनी, बहन पतिव्रता पद्मिनी ए॥

13. शीलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वन्दिए ए।
नाम जपंता पातक जाये, दर्शन दुरित निकन्दिए ए॥

14. निषिधा नगरी नल नरिन्द नीं, दमयन्ति तसु गेहनी ए।
संकट पड़तां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीरति तेहनी ए॥

15. अनंग अजिता जन जन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए।
विश्व विख्याता कामति दाता, सोलहवीं सती पद्मावती ए॥

16. वीरे भाखी शास्त्रे साखी, 'उदयरतन' भाखै मुदा ए।
व्हाणुं वहतां जे नर भणशे, ते लहशे सुख संपदा ए॥

लय : *प्रभाती* ***रचयिता :*** *मुनि उदयरतनजी*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परमेष्ठी स्तुति

प्रातः उठकर शुद्ध भाव से, परमेष्ठी का ध्यान धरूं।
देव, गुरु, जिन-धर्म शरण से, भव सागर को पार करूं॥

1. वन्दूं में प्रतिदिन अर्हम् को, श्री सिद्धं आचार्यवरम्।
उपाध्याय सद्-ज्ञान प्रदाता, मुनिवर महाउपकारकरम्॥

2. ॐ अरिहन्त देव अघहरणं, सिद्ध निरंजन सुखकरणम्।
श्री आचार्य भवोदधितरणं, उपाध्याय मुनिवर शरणम्॥

3. मस्तक पर अरिहन्त विराजित, भृकुटि भाग में सिद्ध रहे।
हृदय कमल में गुरु, नाभि में उपाध्याय, मुनि चरण बहे॥

4. संकट कष्ट कटे भव संचित, महामंत्र के दृढ़ बल से।
भूत प्रेत बाधाएं टलती, अभिमंत्रित नव पद जल से॥

5. ॐ ह्रीं क्लीं विघ्न-विनाशक, महामंत्र जग का त्राता।
सच्चे दिल से जपने वाला, सुख, शांति, वैभव पाता॥

तर्ज : *प्रभाती* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महामंत्र महिमा

महामंत्र नवकार, सुमिरण नित्य करो जी, नित्य करो।
जैनागम का सार, प्रातः ध्यान धरो जी, ध्यान धरो॥

1. श्रावक का आचार, पहला बतलाया जी, बतलाया।
शुभ मन जपते जाप, मुक्ति-पद पाया जी, पद पाया॥

2. है स्वार्थ भरा संसार, कोई नहीं अपना जी, नहीं अपना।
सुख-दुःख में आधार, नव पद है शरणा जी, है शरणा॥

3. ले शरण सुदर्शन सेठ, जाता दर्शन को जी, दर्शन को।
शूल बनी झट फूल, विस्मय जन-जन को जी, जन-जन को॥

4. बढ़ा द्रौपदी चीर, नव पद जपने से जी, जपने से।
बच गया अमर कुमार देखो मरने से जी, मरने से॥

5. नाग बना गलहार, श्रीमती हरसाई जी, हरसाई।
अनल हुई झट शान्त, सीता जय पाई जी, जय पाई॥

6. रोग शोक व्यवधान, सारे कट जाते जी, कट जाते।
कष्टों के तूफान, पल में हट जाते जी, हट जाते॥

7. महामंत्र ही सार, माला नित जपना जी, नित जपना।
क्या मिट्टी से प्यार, आखिर जग सुपना जी, जग सुपना॥

लय : *चांद चढ्यो गिगनार....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर स्तुति

तीर्थंकर चौबीस, नित उठ ध्यान धरूं जी, ध्यान धरूं।
मंगलमय जगदीश, महिमा गान करूं जी, गान करूं॥

1. ऋषभ, अजित भगवान, संभव सुखकारी जी, सुखकारी।
अभिनन्दन जग त्राण, सुमति जयकारी जी, जयकारी॥

2. पद्म सुपारसनाथ, चन्दन चन्द्रप्रभु जी, चन्द्र प्रभु।
सुविधि शीतल श्रेयांस, वंदन वासुप्रभु जी, वासु प्रभु॥

3. विमल अनन्त विशेष, जिनवर धर्मप्रभु जी, धर्म प्रभु।
शांति-शांति अखिलेश! पावन कुंथुप्रभु जी, कुंथु प्रभु॥

4. अर मल्ली तीर्थेश! मन का भार हरो जी, भार हरो।
सुव्रतनाथ जिनेश! भव जल पार करो जी, पार करो॥

5. नमि नेमि गुणधाम, कर दो अविकारी जी, अविकारी।
पार्श्वनाथ का नाम, कितना गुणकारी जी, गुणकारी॥

6. त्रिशला नन्दन वीर, मेरी पीर हरो जी, पीर हरो।
दिखलाओ भव तीर, चिन्मय रूप करो जी, रूप करो॥

7. क्रोध मान का त्याग, सच्चा धर्म यही जी, धर्म यही।
पर भावों में राग, बन्धन मार्ग सही जी, मार्ग सही॥

लय : *चांद चढ्यो गिगनार....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वीतराग! भव पार करो

हे वीतराग! भव पार करो,
कण-कण में समता भाव भरो॥

1. श्री ऋषभ, अजित, संभव स्वामी, है अभिनंदन अन्तर्यामी!
नित सुमति, पद्म, सुपार्श्व स्मरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

2. श्री चन्द्र, सुविधि, शीतल सुखकर, श्रेयांस, वासुजिन, विमलप्रवर।
योगीश! अनन्त विकार हरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

3. श्री धर्म, शांति, कुंथु, अर है, मल्ली, मुनिसुव्रत जिनवर है।
नमि नेमिनाथ का ध्यान धरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

4. श्री पार्श्वनाथ महावीर प्रभो, अरिहंत, सिद्ध, आचार्य विभो।
श्री उपाध्याय, मुनि, भार हरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

5. गौतम आदि ग्यारह गणधर, श्री स्थूलिभद्र शासन शेखर।
जिन धर्म शुद्ध संस्कार भरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

6. ब्राह्मी, सुलसा, चन्दनबाला, कौशल्या, जनक-सुता, चूला।
हे मृगावती! कल्याण करो, हे वीतराग! भव पार करो॥

7. कुन्ती, दमयन्ती, प्रभावती, द्रुपदा, पद्मावती, शिवासती।
सब राजीमती का नाम स्मरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

8. है सती सुभद्रा सुखकारी, श्री ऋषभ सुता सबको प्यारी।
सोलह सतियां भव ताप हरो, हे वीतराग! भव पार करो॥

9. श्री भिक्षु, भारी, रिषि, जीतगणी, मघ, माणिक, डालिम, कालुगणी।
तुलसी, महाप्रज्ञ का जाप करो, हे वीतराग! भव पार करो॥

***तर्ज :** महावीर मुझे पावन कर दो....* ***रचयित्री :** साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगल वीतराग भावना

राखो हिरदै में मंगल वीतराग भावना।
अपणो कल्याण करसी अपणी साधना॥
मंगल वीतराग भावना॥
जागै भीतर में शक्ति वर्धमान ज्यूं,
भक्ति हनुमान ज्यूं, विरक्ति भरत महान ज्यूं,
मुक्ति जम्बू प्रधान ज्यूं, मंगल वीतराग भावना॥

1. रिषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुखकारी है,
श्री सुपार्श्व चंदाप्रभु सुविधि, शीतल साताकारी है,
हो प्रभुवर! मीठी लागै है वाणी, अमृत पान ज्यूं,
मंगल वीतराग भावना॥

2. श्री श्रेयांस, वासु, विमल जिन, श्री अनन्त धर्म शरणो।
ओम् शान्ति, कुंथु अर मल्ली, मुनिसुव्रत अमृत झरणो,
हो जिनवर! दीपै तीर्थंकर सारा, केवलज्ञान स्यूं,
मंगल वीतराग भावना॥

3. नमि नेमि श्री पार्श्वनाथ, महावीर प्रभु है जयकारी,
सीमंधर युगमंधर आदि, विहरमाण है भयहारी,
हो जिनवर! मुक्ति पावै है उज्ज्वल शुकल ध्यान स्यूं,
मंगल वीतराग भावना॥

4. चत्तारि मंगल अरिहन्ता, सिद्धा साधु मंगल है,
धर्म अहिंसा संयम तप स्यूं, बणै आतमा निर्मल है,
हो गुरुवर! लागै जिनशासन सुन्दर, स्वर्ग विमान ज्यूं,
मंगल वीतराग भावना॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

5. ग्यारह गणधर सोलह-सतियां, जैन संघ में नाम कर्यो,
श्री भिक्षु रो बाग अनोखो, नन्दन-वन सो हर्यो-भर्यो,
हो स्वामी! तुलसी महाप्रज्ञ चमकै, सूरज-चांद ज्यूं,
मंगल वीतराग भावना॥

लय : *चमकै दुनिया में देखो लाडनूं रो हीरो*

रचयित्री : *साध्वी राजीमती*

तपस्या री प्रेरणा

करल्यो-करल्यो अठायां, अब मास खमण थे करल्यो हो।
तप ही जीवन रो साचो सार हो।

1. मन रो मेल उतर, तन होज्या सागीड़ो नीरोग हो।
साचो गंगाजल तप है आपणै॥

2. हाड़-मांस मिट्टी री काया, चमक देख क्यूं चकरावै।
कांई भरोसो बोलो सांस रो॥

3. बड़ी तपस्या कम खाणो, गम खाणो, ओ नम ज्याणो हो।
मन रे घोड़ै ने सीखो मोड़णो॥

4. जागो जागो नींद उड़ावो, शासन मां बतलावै है।
अवसर रा बाया मोती नीपजै॥

5. जैन-संघ में हुया तपस्वी एक एक स्यूं मोटा हो।
'धनजी खंदक' नै करल्यो याद थे॥

तर्ज : *तेजा रे....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चन्दना री पुकार

म्हांरे मन्दिर में दिवलो जलाद्यो महावीर!
म्हांरी नावड़ली पार लगाद्यो महावीर!
मैं हूं जगत में दुःखियारी॥

1. कष्टां री कहाणी जीवन, नाटकियै रो खेल है।
फिर क्यूं सुख-दुःख रो मेळो मांड्यो, बीच म्हांरा जीव॥

2. राजा दधिवाहन हार्‌यो, नगरी लुंटाई।
आयो महलां मैं दोड़्यो, सैनिक एक शूरवीर॥

3. माता महाराणी बैठी, धारणी एकान्त में।
बोल्यो आवो झट दोन्यू म्हारै, साथ महाभाग॥

4. हाथां स्यूं खींच जीह्वा, मौत नै बुलाई।
हा! हा! मावड़ली चाली, टूट्या मोतीड़ां रा हार॥

5. कंपित कर स्युं बीण लकड़्यां, चिता है जलाई।
होवै भावी रै आगे सब री हार, म्हांरा जीव॥

6. जल्दी बताद्यो नाथ! साथ कांई ल्याया।
बोली तड़कै स्यूं सैनिक पत्नी, आय म्हांरा नाथ॥

7. काढ़ो काढ़ो बाहर इणनै, बेचद्यो बाजार में।
म्हारै घर में नहीं इणरो, कोई काम म्हांरा नाथ॥

8. नगरी, कोशाम्बी लेग्यो, चौड़ै रै बाजार में।
आई लेवण नै गणिका, झट दौड़ विकराल॥

9. कांई काम करणो पड़सी, पहली थे बताओ।
करजै महलां में मौज, आठूं याम म्हांरी बहन॥

10. इतलै में धनाओ सेठ, आ गयो बाजार में।
मनै चावै है चन्दना जैसी, बाल म्हांरा बीर॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

11. चांद जिस्यो चेहरो देख, चमकी सेठाणी।
म्हारै घर में क्यूं ल्याया बोलो, सोत म्हांरा सेठ॥

12. मूलां रो मिजाज बिगड्यो, योजना बणाई।
इणरी सुन्दरता करस्यूं सारी, नष्ट म्हांरा सेठ॥

13. कमर तक लटकता केश, काट्या ले कतरणी।
घाली हाथां में हथकड़ी, बेड़ी पैर मूलां मात॥

14. भूमि घर में न्हाख, तालो मोटो सो लगायो।
देखो निर्दय मूलां रा निन्दित, काम सारा लोक॥

15. महामंत्र सुमरै बैठी, भूखी प्यासी चन्दना।
हा! हा! करमां स्यूं होग्या हाल-बेहाल म्हांरा जीव॥

16. तीजै दिन धनावो आयो, पाई नहीं चन्दना।
मैं तो बैठी हूं भूमि घर में, बन्द म्हांरा तात॥

17. खावण उड़द बाकला दे, लुहार ल्यावण चाल्यो।
आया इतलै में भिक्षा लेवण, वीर महावीर!

18. बारह बोल मिलग्या रहग्यो, बाकी एक तेरमो।
घूम्या बढ़ता चरणां स्यूं पाछा, धीर महावीर!

19. मात-पिता स्यूं बिछुड़ी नाथ, बिकी मैं बाजार में।
म्हांरी कौण सुणैला, अब पीर महावीर!

20. आपरो आधार म्हारै, आपरो है शरणो।
म्हारै आंगणियै आय, मत जाओ महावीर!

21. उड़द बाकला बहर प्रभुजी, गजगति चाल्या।
बरस्या रत्न सोनैया अपरम्पार, आंगण मांय॥

22. वीर संघ में पहली साध्वी, चन्दनबाला होवै।
महिला जाति रो उज्ज्वल है, इतिहास महावीर!

तर्ज : *घूमर....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गौतम स्तुति

गौतम गणधर बड़े महान, रिद्धि सिद्धि का देते दान।
जिनके जप से नवों निधान, मिलता सच्चा आत्मिक ज्ञान॥

1. महावीर के शिष्य बड़े,
करते घण्टों ध्यान खड़े।
बिना सहारे शिखर चढ़े,
बन गये ज्ञानी बिना पढ़े॥

2. गौतम जप से मिटते रोग,
टलते भूत-प्रेत के योग।
मन-वांछित सब मिलते भोग,
कटते दुष्ट कर्म-संयोग॥

3. पृथ्वी मां वसुभूति विलास,
वर्ष पचास रहे गृहवास।
तीस वर्ष तक प्रभु के पास,
द्वादश केवल ज्ञान प्रकाश॥

4. थी अक्षीणलब्धि विख्यात,
गौतम के कर में साक्षात।
नहीं खूटते घृत, मधुभात,
जो जपता गौतम को प्रात॥

तर्ज : *रघुपति राघव राजाराम....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आओ-आओ भिक्षु स्वामी!

आओ-आओ भिक्षु स्वामी! अब तो म्हारै आंगणियै,
ऊभा अडिकां कदका आपनै।
पक्ष उजळो तिथि है तेरस, घट में म्हारै चान्दणियो,
श्रद्धा रा फूल बिछावां सामनै।

1. शब्द-शब्द और सांस सांस मैं, भिक्षु री झणकार उठै,
खातां-पीतां सोतां उठतां, खोजां भिक्षु गया कठै।
दर्शण तो देणा पड़सी आपनै॥

2. इसी जग्यां नहीं म्हारै घर मैं, जठै आपरो नाम नहीं,
आंख्यां मैं उतरो तो स्वामिन्! पाऊं मैं आराम सही।
म्हें तो नहीं भूलां थारै जापनै॥

3. कष्टां री काली रातां मैं, एक आपरो ही शरणो,
एकर तो संभाल्यां सरसी, बैठ्या कदका दे धरणो।
भव-भव मैं शरणो थांरो मांहनै॥

4. ई कलियुग मैं आप सरीखा, संत पुरुष मिलणा मुश्किल,
अपणै श्रम स्यूं ही पावै है, वीर पुरुष अपणी मंजिल।
जग नै समझायो रात्यूं जाग नै॥

5. थारैं गण उपवन री शोभा, लहर-लहर लहरावै है,
गण गुम्बज पर आज देखल्यो, धर्म-ध्वजा फहरावै है॥
'तुलसी' सा मालिक मिलग्या संघ नै॥

तर्ज : *तेजा....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु रो आसरो

भिक्षु स्वामी! अन्तर्यामी! करद्यो बेड़ा पार।
आपरो आसरो है, केन्द्र विश्वास रो है॥

1. काळजै री कोर म्हांरै, मन में रम्यो है थांरो नाम ओ,
सब कुछ अर्पण थांरै, थे ही म्हांरा राम घनश्याम हो।
पलक बिछावां, दर्शण चावां खोलो अन्तर-द्वार॥

2. गंगा में न्हाल्यो चाहे, काशी बणाल्यो अपणै धाम में,
चौसठ तीरथ मिलग्या, म्हांनै तो सांवरियै रै नाम में।
रिद्धि-सिद्धि, होवै वृद्धि, कल्पवृक्ष साकार॥

3. ऊंचो है दर्शन थारो, ऊंची है तेरापथ री साधना,
पूजा में फूल चन्दन, दीप नहीं है शुद्ध उपासना।
शत-शत वन्दन, दीपानन्दन, अभिनन्दन उपहार॥

4. संयम री चांदनी में, चमचम चमकै थांरो संघ है,
मेंहदी ज्यूं रमग्यो म्हांरी, श्रद्धा में एक थांरो रंग है।
नयो नजारो, दिव्य सितारो, तुलसी तारण हार॥

तर्ज : *मिलो न तुम तो....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय जय श्री तुलसी गुरुवर

जय-जय श्री तुलसी गुरुवर, तुम राष्ट्र संत कहलाए।
मानव को राह दिखाने, तुम दीप शिखा बन आए॥

1. पावन है नाम तुम्हारा, पावन है आत्म कहानी,
पावन बन जग में छाए, तुम तप की अमर निशानी।
ले तेरा पुण्य सहारा, हम भी पावन बन जाएं॥

2. हम हैं कितने सौभागी, तुम जैसे पाए नेता,
जो भक्त अभक्त सभी की, है जीवन नैय्या खेता।
नव-ज्योति किरण से देखो, ज्योतित है दशों दिशाएं॥

3. तुम युग चिन्तक! युग प्रहरी! तुम युग के एक उजारे,
तुमको प्रणाम ये करते, नभ के सब चांद-सितारे।
तुम कलाकार मतवाले, अगणित तेरी कलनाएं॥

4. अणुव्रत का दीप जलेगा, घर-घर सूने आंगन में,
बन शंखनाद गूंजेगा, मानवता के कानन में।
हे चिरंजीव चिरायु! धरती की प्यास बुझाएं॥

तर्ज : *ऐ मेरे वतन के लोगों....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चातुर्मासिक साधना

लाग्यो लाग्यो चौमासो अब, नई प्रेरणा लेणी है।
संतां री वाणी करसी चान्दणो॥

1. मनड़ै नै वश करणो दोरो, समता रो पथ है झीणो।
पापां स्यूं डरतो रहणो साधना॥

2. ब्रह्मचर्य री करो साधना, मूल साधना है आ ही।
कड़वा मत बोलो मुख स्यूं बोल थे॥

3. चवदस आठम करो पोरसी, हरी सब्जियां नहीं खाणी।
राखो नवकारसी रो ध्यान थे॥

4. प्रातः सायं करो प्रार्थना, बच्चां नै देवो शिक्षा।
खाणै-पीणै री शुद्धि मूल है॥

5. बेला तेला पंचोलां री, गहरी झड़ी लगाणी है।
लम्बी तपस्या स्यूं बणज्या ख्यात भी॥

6. महामंत्र री फेरो माला, प्रेक्षा ध्यान लगाणो है।
घंटा इक बीते थांरी मौन में॥

7. चौमासा में रात्रि भोजन, जमीकन्द परहेज करो।
खावो मिठाई मत बाजार री॥

8. साधर्मिक संबंध बड़ो है, मिलो प्रेम स्यूं सब भाई।
खमणै वालो ही मोटो आदमी॥

तर्ज : *तेजा रे....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पर्युषण मनावां

आया-आया पर्युषण, बरसै रिमझिम भादूड़ो।
सोने री किरणां उतरी, आंगणे॥

1. जैन-धर्म रो प्राण पर्व ओ, आत्म जागरण रो हेतु।
हिलमिल मनावां आवो, ठाठ स्यूं॥

2. जनम-मरण रो खेल जिन्दगी, एक दिवस तो जाणो है।
बुझग्या जगमगता दिवला, देखल्यो॥

3. आत्मा रो हित साधन करणो, पर्युषण रो मतलब है।
खमणो खमाणो ऊंचो, काम है॥

4. आठ दिनां तक रात्रि भोजन, हरी सब्जियां नहीं खाणी।
तेरह द्रव्यां री सीमा, राखणी॥

5. पांच समाई प्रतिदिन करणी, ध्यान, मौन स्वाध्याय भी।
छोड़ो सब खेल सिनेमां, ताश नै॥

6. पौषध आत्मा री शांति रो, सब स्यूं ऊंचो साधन है।
साधु जीवन रो लेणो, स्वाद है॥

7. गुरुवर तुलसी री करुणा स्यूं, घर-घर में तप रंग है।
भायां-बायां में भक्ति, जोर है॥

तर्ज : *तेजा रे....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खाद्य-संयम दिवस

खाने में संयम करना होगा।
तब ही तो सुखमय जीवन होगा॥

1. जब-तब खाने का भाव मिटाएं,
कैसे कितना क्या कब खाएं।
इसका चिन्तन करना होगा॥

2. मन की मर्यादा टूट गई तो,
और विरक्ति छूट गई तो।
रोगी बन कर मरना होगा॥

3. भोजन से शोधन होता तन का,
भोजन से शोधन होता मन का।
तन से भव-जल तरना होगा॥

4. सब रोगों की एक दवा है,
नियमित भोजन शुद्ध हवा है।
भोजन को सात्विक करना होगा॥

तर्ज : *जीवन अखण्ड बनाना होगा....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खाने में संयम

अनासक्त भावों से भगवन्! सात्विक भोजन सदा करें।
'संयम से खाना जीवन', इस वीर वचन को याद करें॥

1. चाहे जैसा भी भोजन हो, रहे वृत्तियों में समता।
बढ़े नहीं आवेग तनिक भी, प्राप्त करें ऐसी क्षमता॥

2. भोजन करते समय नहीं हो, ईर्ष्या, क्रोध, घृणा के भाव।
कर्म शक्तियां कुंठित होती, हो जाते आंतों में घाव॥

3. 'तन्मना भुंजीत भोजनं', दक्षिण स्वर के चलने पर।
अन्न पाक में रहे निरंतर, मन प्रसन्नता बन सहचर॥

4. हलका भोजन शुद्ध हवा है, सब रोगों की एक दवा।
जागृत नहीं विवेक अगर तो, क्या कर सकती पुष्ट दवा॥

5. इसी देह नौका से भगवन्! भव सागर को पार करें।
आमंत्रित सब है आदर से, ले भोजन कृत कृत्य करें॥

तर्ज : *प्रभाती* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सामायिक दिवस

सोई शक्तियां जगाने आया पर्युषण,
समता-साधना सिखाने आया पर्युषण,
पावन प्रेरणा सुनाने आया पर्युषण,
सामायिक का दिवस मनाये,
आत्म-शुद्धि का संदेश लाया पर्युषण॥

1. क्यों किससे हम, द्वेष बढ़ाएं,
पल-पल समता, भाव जगाएं।
क्षमा याचना का पाठ लाया पर्युषण॥

2. तन, मन, वाणी, तीनों सम हो,
व्यवहारों में पूरा गम हो।
मैली चादर धोने साबुन लाया पर्युषण॥

3. सामायिक का स्वाद निराला,
मानो अमृत रस का प्याला।
मिटते तन मन के तनाव, आया पर्युषण॥

4. बिना सामायिक, मुक्ति कहां है,
सच्ची शांति, समता जहां है।
ज्ञान-दीप को जलाने आया पर्युषण॥

***तर्ज :** स्वामी भीखणजी रो नाम* ***रचयित्री :** साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वाध्याय दिवस

करो सदा स्वाध्याय, जीवन चमकेगा जी, चमकेगा।
समता का सदुपाय, कोई समझेगा जी, समझेगा॥

1. मैं हूं आखिर कौन, पूछे अपने से जी, अपने से।
फल लायेगा मौन, निश्चित तपने से जी, तपने से॥

2. मिलता नया प्रकाश, आत्मिक चिन्तन से जी, चिन्तन से।
अपना पूर्ण विकास, होता मंथन से जी, मंथन से॥

3. प्रतिदिन प्रातः रोज, अर्हं जाप करो जी, जाप करो।
करने अंतर बोध, प्रेक्षा-ध्यान धरो जी, ध्यान धरो॥

4. है सच्चा धन ज्ञान, इसको मत खोना जी, मत खोना।
आत्म खेत में धान, विकृत मत बोना जी, मत बोना॥

5. चंचल मन व्यवधान, बनता पढ़ने में जी, पढ़ने में।
क्रोध लोभ अभिमान, बाधक बढ़ने में जी, बढ़ने में॥

6. श्वास-श्वास पर ध्यान, रखना पल पल में जी, पल पल में।
होगा अनुभव-ज्ञान, कैसे कल-कल में जी, कल-कल में॥

तर्ज : *चांद चढ़्यो गिगनार....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ध्यान दिवस

ओ प्रेक्षा ध्यान सिखावै सबनै, सुख-शान्ति स्यूं रहणो।
सुख-शान्ति स्यूं रहणो, अपने मन नै वश में करणो रे॥

1. ध्यान सजगता, ध्यान संतुलन, ध्यान सहज समता है,
निर्विचार, अंतर्मुखता और, परिवर्तन क्षमता है।
है ध्यान आत्म संधान जी, है अंतर रो विज्ञान जी,
चिन्तन मुक्त चेतना में अब, सीखो अविरल बहणो रे॥

2. अब तक घूम्या बारै-बारै, अब भीतर में आवां,
बाहर स्यूं कितनो सुन्दर है, अन्तर रूप रिझावां।
पर-घर में नहीं आराम जी, मिलसी घर में विश्राम जी,
तमसावृत आतम मन्दिर में, जगमग ज्योति भरणो रे॥

3. एक-एक अवयव ने ढीलो, सुस्थिर शान्त बणावां,
तन-मन रा छूटै तनाव ज्यूं, कायोत्सर्ग बढ़ावां।
है चेतन भिन्न शरीर जी, है मन री सारी पीरजी,
तन री प्रेक्षा करता-करतां, देह मुक्तता वरणो रे॥

4. श्वास और प्रश्वास देखतां, मनड़ो होज्या हळको,
शुद्ध चेतना दर्पण में, आत्मा रो पड़ज्या भळको।
फिर करां चित्त री प्रेक्षाजी, ज्यूं फल ल्यावै अनुप्रेक्षाजी,
सहज विरक्ति जाग उठै जद बरसै अमृत झरणो रे॥

तर्ज : *स्वामीजी थांरी साधना री....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मौन दिवस

मधुर भाषी मानव जग को, अपना बनाता है।
भाषा विवेक ही तो, धर्म यह सिखाता है॥

1. बोलना सीखा नहीं तो, साधना करेगा क्या?
खोजना न जाना खुद को, वासना हरेगा क्या?
स्वयं का निर्माण करने, स्वयं तू विधाता है॥

2. दुनियां के आधे झगड़े, बोलने से होते हैं,
बोलकर बनाते इज्जत, बोलकर ही खोते हैं।
है सही पहचान वाणी, बोल क्यों गंवाता है॥

3. शब्द में बड़ी है ताकत, शब्द मंत्र होता है,
एक तो हंसाता जग को, दूसरा रुलाता है।
तोल करके शब्द बोलो, मौन शक्ति दाता है॥

4. मांग होती है उसी की, समय पर जो बोलता,
सोचकर परिणाम भावी, होठ अपने खोलता।
अल्प-भाषी जिन्दगी में, पुण्य को कमाता है॥

तर्ज : *जनम स्यूं कुंवारो रहग्यो....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणुव्रत-दिवस

जिन्दगी का सार संयम-साधना कर लो।
बैठ अणुव्रत नाव पर भव-सिंधु को तर लो॥

1. नियम छोटे हैं तथापि, शांति के आधार,
भेद भाषा वर्ण जाति, का नहीं स्वीकार।
रिक्त झोली सद्गुणों से, आज ही भर लो॥

2. सभी धर्मों में विवर्जित, मांस का आहार,
देख लो प्रत्यक्ष कितना, बना नर खूंखार।
है नशीली वस्तुओं से, पतन तुम स्मर-लो॥

3. नीति का फल है मधुर, क्यों खो रहे मौका?
है मिलावट और शोषण, स्वयं को धोखा।
चौर्य वेश्या गमन की, अब आदतें बदलो॥

4. मांग कर लेना तिलक, क्या है नहीं सौदा?
लोभ से ही सूखता है, धर्म का पौधा।
बेचते क्यों वोट अपने, बुद्धि भ्रम हर लो॥

5. स्वस्थ-साधक मार्ग-दर्शक, बन बढ़ो आगे।
प्राप्त कर नव चेतना को, मनुजता जागे।
है तुम्हें आह्वान, श्री गुरुदेव का सुन लो॥

तर्ज : *मेरा जीवन कोरा....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तपो–गीत

महावीर रै शासण री, महिमा महकावां।
स्वामी भीखणजी रै संघ री, गुण गाथा गावां॥
आओ तपस्या री गंगा में,
संयम साबुन स्यूं आ आतमां री, चादर धोवां॥

1. तप री गरमी तेज बढ़ावै,
तन मन का सब रोग मिटावै।
शासन माता रा सब आओ, मिलजुल गीत गावां॥

2. बिना तपस्या त्याग अधूरो,
तप स्यूं टलज्या संकट दूरो।
देव, दानव, राक्षस तप स्यूं, सारा साध पावां॥

3. मंत्र सिद्धि में तपस्या जरूरी,
तंत्र साधना हो ज्यावै पूरी।
तप है साचो मंगल आवो, मंगल बण-ज्यावां॥

4. तप है अमृत रस रो प्यालो,
शिवनगरी रो खोलै तालो।
फळज्या आशा वांछा मन री सारी, कामनावां॥

5. मन नै वश में करणो तपस्या,
नमणो खमणो दमणो तपस्या।
जीणो अल्पाहारी जीवन आपां, सीख जावां॥

तर्ज : *स्वामी भीखणजी रो नाम....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तपस्या रो रंग

ओ तपस्या रो रंग॥
तप रो त्योंहार मनावोजी! नस-नस में जोश जगावोजी।
ओ तपस्या रो रंग॥

1. जो तप री ज्योत जलावै, वो अजर-अमर बण ज्यावै,
थे समता स्रोत बहावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥

2. जो लेवै तप रो शरणो, बह ज्यावै अमृत झरणो,
निज घर में मौज उड़ावोजी।
ओ तपस्या रो रंग॥

3. सुरपति आ शीश झुकावै, नरपति निज भाग सरावै,
माटी रो मोल चुकावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥

4. तपसीजी री आ जोड़ी, करमां री कारा तोड़ी,
गण गौरव खूब बढ़ावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥

5. तप आत्म शांति रो पथ है, शिवपुर जावण रो रथ है,
तपसी बण नाम कमावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥

तर्ज : *ओ म्हांरा गुरुदेव* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तपस्या निराली रे

तपस्या निराली रे देखो, चमके है तपसी रो दीदार,
खुल ज्यावै सुरगां रा भी द्वार,
मिट ज्यावै जनमां रा विकार,
संयम री शक्ति, तपस्या निराली रे॥

1. करड़ो काम तपस्या रो, विरला ही कोई कर पावै,
नाम सुण्या ही जीवड़ो कांपै, धड़कन भी तो बढ़ ज्यावै।
दीखै है दिन में तारा, आंख्यां में अंधियार,
संयम री शक्ति, तपस्या निराली रे॥

2. धीरै-धीरै चालै तपसी, धीरै-धीरै बोलै है,
अपनी धुन में बैठ्यो-बैठ्यो, भीतर गांठां खोलै है।
समता रा दीप जलावै, समता ही सुखकार,
संयम री शक्ति, तपस्या निराली रे॥

3. धर्म-ध्यान रो मेळो लाग्यो, होडा होड लगाई है,
गली-गली में तप री चर्चा, शासन माता आई है।
भिक्षु रो शासण प्यारो, तुलसी रो आधार,
संयम री शक्ति, तपस्या निराली रे॥

तर्ज : *सावण आयो रे....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तपस्या रो हेलो

एक बार आओ तप रा गीत आपां गावां।
कर्मां रो मैल सारो धो पावां॥
तप री नौका स्यूं भव जल तर ज्यावां।
तप रा गीत आपां गावां॥

1. जनम-जनम रा कष्ट काटै, तप संयम री साधना,
काया कंचन-सी हो ज्यावै, मिटज्या मन री वासना।
आओ तप की गंगा में, हो ऽऽऽऽ न्हाकर सुख पावां॥

2. खाणै में विवेक राख्यां, रोग सारा मिट ज्यावै,
जीभड़ी रो स्वाद छोड्यां, शेष संयम सध पावै।
तपसी सन्तां रा आपां, हो ऽऽऽऽ गुण गावां॥

3. भैक्षव-गण में हुया तपस्वी, एक-एक स्यूं जबरा हो,
हो ज्यावो तैयार सारा, कसकर काठी कमरां हो।
बरसै है रिमझिम सावण, हो ऽऽऽऽ आपां हरसावां॥

4. एक वास करणै वालो भी, कर्म खपावै है भारी,
मासखमण कर लाखां ही, अपणी आत्मां नै तारी।
'महाश्रमण' शासन में सब, हो ऽऽऽऽ मौज मनावां॥

***तर्ज :** अपने पिया की....* ***रचयित्री :** साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चन्दना का पारणा

म्हारै आंगण अब तो आओ जी, ओ म्हांरा भगवान।
बन्दी नै मुक्त बणाओजी, ओ प्यारा भगवान॥

1. मैं पल-पल रटन लगाऊं, कद प्रभु रा दर्शन पाऊं।
सोनेलो सूर्य उगाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

2. मैं खड़ी भावना भाऊं, ल्यो उड़द बाकला ल्याऊं।
थोड़ो सो व्रत निपजाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

3. मैं तीन दिनां स्यूं भूखी, देखो आ काया सूखी।
मुरझी कलियां नै सरसाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

4. मैं कद स्यूं शरणै बैठी, आखिर तक रहस्यूं सैंठी।
क्यूं चन्दना नै तरसाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

5. देखी हथकड़ियां बेड्यां, मुड़ चाल्या उण ही घड़ियां।
क्यूं खाली हाथां जाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

6. छल-छल आंसूड़ा आया, प्रभु पाछा कदम बढ़ाया।
अब तो करुणा बरसाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

7. सोनैया सुर बरसावै, कौशाम्बी हद हरसावै।
भिक्षु स्थल में सुख पाओ जी, ओ म्हांरा भगवान॥

तर्ज : *ओ म्हांरा गुरुदेव....*　　　　***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati　For Personal & Private Use Only　https://books.jvbharati.org

अक्षय तृतीया

आया आदीश्वर भगवान, चमकै आंगणियो जी, आंगणियो।
बरसी तप रो आज, करसी पारणियो जी, पारणियो॥

1. मरुदेवी रा लाल, नाभिनन्दन है जी, नन्दन है।
तारक दीन दयाल, सौ सौ वन्दन है जी, वन्दन है॥

2. राज-रिद्धि ने त्याग, संयम स्वीकार्‌यो जी, स्वीकार्‌यो।
कितो बड़ो वैराग, मौनी-व्रत धार्‌यो जी, व्रत धार्‌यो॥

3. एक बरस तक आहार, प्रभुजी नहीं पायो जी, नहीं पायो।
चेला च्यार हजार, दिलड़ो घबरायो जी, घबरायो॥

4. बोलै नहीं भगवान, सोचै के करणो जी, के करणो।
म्हैं तो सब अणजाण, बैठ्‌या ले शरणो जी, ले शरणो॥

5. बळदां रो भगवान, मुखड़ो क्यूं बांध्यो जी, क्यूं बांध्यो।
कितो हुयो नुकसान, अन्न-जल नहीं लाध्यो जी, नहीं लाध्यो॥

6. भाव भेंटणों थाल, ल्यावै नर-नारी जी, नर-नारी।
गज घोड़ा सुखपाल, देवै असवारी जी, असवारी॥

7. अन्तराय रो अंत, आखिर आवै है जी, आवै है।
हस्तिनापुर रै पंथ, प्रभुवर जावै है जी, जावै है॥

8. महलां स्यूं श्रेयांस, देखै प्रभु प्यारा जी, प्रभु प्यारा।
घड़ा भर्‌या शत आठ, इक्षु रस धारा जी, रस धारा॥

9. उलट भाव स्यूं दान, बरस्या सोनैया जी, सोनैया।
पोते रा अरमान, तरज्या अब नैया जी, अब नैया॥

***तर्ज :** चांद चढ्यो गिगनार....* ***रचयित्री :** साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

निर्वाण ज्योति

आओ दीवाली मनावां,
आपां वर्धमान गुण गावां,
मन मन्दिर नै साफ बणावां।
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै।
गणधर गौतम रै शरणे स्यूं संकट दूर भागै॥

1. त्रिशला रा दुलारा प्यारा, सिद्धारथ रा लाल है,
वैशाली रा कुंवर लाडला, चमकै भाल विशाल है।
भरी जवानी में घर त्याग्यो, धन दौलत सब माल है,
कुंकुम, केसर, चन्दन, दीप, पूजा रो ओ थाल है।
थांरो पल-पल ध्यान लगावां,
ज्योति ज्ञान री जगावां,
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै॥

2. धरती रै कण-कण में गूंजै, वीर प्रभु रा गीत है,
खुद पर संयम करणै वालो, पावै जग में जीत है।
आवो म्हांरा बंधन तोड़ो, लागी थांस्यूं प्रीत है,
करै जिस्या फल पावै आखिर, आही जग री रीत है।
बन्धन करमां रा हटावां,
चिन्मय चेतन म्है बण ज्यावां,
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. चण्डकौशियो चरण शरण में, आकर निज उद्धार कर्‌यो,
दर-दर घूमी चन्दनबाला, रो भारी उपकार कर्‌यो।
अर्जुनमाली, शालिभद्र रो, बेड़ो थे ही पार कर्‌यो,
सुप्त चेतना मेघमुनि री, जाग उठी जद हाथ धर्‌यो।
पल-पल एक भावना भावां,
खुद नै कद भगवान बणावां,
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै॥

4. केवल ज्ञान सूर्य दर्शन रो, दशमी नै शुभ स्वप्न फळ्यो,
सत्य अहिंसा री क्रांति रो, एक अनूठो दीप जळ्यो।
गौतम सो ज्ञानी वैरागी, घोर तपस्वी शिष्य मिळ्यो,
त्याग तपस्या री सौरभ स्यूं, सारो जिन उद्यान खिल्यो।
म्है तो म्हांरो भाग सरावां,
दर्शन सुपनै में कद पावां,
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै॥

5. पावा में अंतिम चौमासो, तेरस नै अनशन धार्‌यो,
भांति-भांति री शिक्षा देकर, जैन-संघ नै प्रभु तार्‌यो।
जीवन रा दो क्षण बढ़ ज्यावै, इन्द्र प्रार्थना कर हार्‌यो,
रात अमावस री अन्धेरी, में नश्वर तनड़ो डार्‌यो।
गौतम गणधर नै अब ल्यावां,
वीर पथ पर बढ़ता जावां,
म्हांनै वीर प्रभु रो नाम प्यारो प्यारो लागै॥

तर्ज : *सिरियारी रो सन्त* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधना गीत-1

मैं करूं सरल बण साधना हो मुगति पथ री।
घट जागै नवल उजास, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

1. मैं हूं शुद्ध स्वरूपमय चिन्मय चेतन।
क्यूं राग द्वेष संस्कार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

2. आशा, वांछा कामना, पुद्गल-सुख री।
है दुर्गति रा दृढ़ द्वार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

3. क्रोध मान माया घणी, म्हारै मन में।
किम पास्यूं भव रो पार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

4. चंचल मन री चाल नै किण विध रोकूं।
मन दमणो दुक्करकार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

5. वाणी री कटुता मिटे, समता व्यापै।
झट बणे मित्र संसार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

6. खाणो पीणो पहरणो आवश्यक है।
फिर क्यूं आसक्त विचार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

7. तन, धन यौवन सम्पदा, क्षण भंगुर है।
क्यूं बढ़ै अहं ममकार, खिण-खिण ध्यान धरूं॥

8. संकट में छोड़ूं नहीं, आस्था गण री।
है भिक्षु रो आधार, खिण-खिण ध्यान धरूं।
है तुलसी रो आधार खिण-खिण ध्यान धरूं।
है शासन रो आधार खिण-खिण ध्यान धरूं॥

तर्ज : *रुणझुणियों* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधना गीत-2

म्हारो मनड़ो ओ साधना में अब ढलसी?
आतम रूप रो आभास मनै अब मिलसी?
पल-पल सोचूं रोज सबेरे।
मैली आतमां री चादर म्हांरी अब धुलसी?

1. ओरां ने तूं कांई सुधारै, अपनी कुटिया क्यूं न बुहारे।
दीयै तले ओ अन्धेरो, अब कियां चलसी॥

2. निर्मल मन है सुख रो कारण, विकृत मन रो करणो निवारण।
अब मान माया लोभ री, चट्टान हिलसी॥

3. निन्दा प्रशंसा में सम रहणो, तातो ठण्डो सब कुछ सहणो।
राख्यां उजला विचार, सारा पाप झड़सी॥

4. जन्म मरण रो मेळो लाग्यो, बण सौदागर रात्यूं भाग्यो।
देणदारी रो हिसाब, आखिर देणो पड़सी॥

5. मैं ही म्हांरो भाग्य विधाता, सुख रो दाता दुःख रो दाता।
बन्द चेतना रा द्वार, म्हांरा अब खुलसी॥

तर्ज : *स्वामी भीखणजी रो नाम* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बाल शिविर गीत

अच्छे बच्चे बनना है, शिविर साधना करना है।
संयम नहीं सीखा तो, कुछ नहीं सीखा, संयम ही तो जीवन है।

1. शिविर सिखाता अनुशासन, प्रतिदिन करना योगासन।
त्याग नहीं सीखा तो, कुछ नहीं सीखा, त्याग ही तो जीवन है।

2. क्यों किसका अपमान करें, बोले मीठे और खरे।
ज्ञान नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा, ज्ञान ही तो जीवन है।

3. होटल में नहीं जाना है, बार-बार नहीं खाना है।
स्वास्थ्य नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा, स्वास्थ्य ही तो जीवन है।

4. चोरी कभी न करना है, सदा झूठ से डरना है।
सत्य नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा, सत्य ही तो जीव है।

5. आंख बन्द कर ध्यान करें, आधा घण्टा मौन करें।
ध्यान नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा, ध्यान ही तो जीवन है।

6. शिविर याद ही आएगा, फिर-फिर मन ललचाएगा।
धर्म नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा, धर्म ही तो जीवन है।

तर्ज : *बातें सीखो ज्ञान की* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मन नै साफ राखीजै

रे चेतन! जीणो है दिन च्यार, मन नै साफ राखीजै।
रे मनवा! पापां रो ओ भार, सिर पर मतना बांधीजै॥

1. मन नै साफ राखणियां तो कोई-कोई है।
मैली वृत्त्यां पर नियन्त्रण, पूरो-पूरो राखीजै॥

2. मन है चंदन-बाग, मन है कांटां री झाड़ी।
मन है कल्प-वृक्ष री छाया, बैठ मौज मनाईजै॥

3. मन रै लारै-लारै चाल्यां, संकट भारी है।
इणरी चलगत नै पीछाणे, बांरी संगत राखीजै॥

4. अपणै पग री शूल काढ़लै, मंजिल मिल ज्यासी।
निर्मल मन ही सुख रो कारण, थोड़ो चेतो राखीजै॥

5. छुप-छुप करके पाप कर्‌योड़ा कद तक छुपसी रे।
मन री शुद्धि रो उपाय, पल-पल समता राखीजै॥

6. मन रै भीतर जातां जातां, मन खो ज्यावै है।
रे पंछी! एक डाल पर बैठ, स्थिरता योग साधीजे॥

तर्ज : *माता वंदनाजी री लाडलो....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक-संकल्प

म्है तो शासन सेवा करस्यां,
म्है तो शासन नै ही भरस्यां,
गण में कुर्बाणी रो काम पड़े जद जोश जागै।
म्हांनै तुलसी रो दरबार प्यारो प्यारो लागै॥

1. शासण ही है वीणा और, शासण ही झंकार है,
शासण है संगलां री शोभा, शासण रो आधार है।
शासण रो ओ बड़लो देखो, कितनो छायादार है,
शासण रो अनुशासन प्राण, मर्यादा श्रृंगार है।
म्है बलिदान स्वयं रो देस्यां,
जिम्मेदारी कान्धा लेस्यां,
म्है गणपति रा होकर रहस्यां,
गण में कुर्बाणी रो काम पड़ै जद जोश जागै॥

2. पटवोजी सी श्रद्धा राख्यां, ईं गण में सम्मान हुवै,
गोठीजी री ज्ञान धारणा पर सबनै अभिमान हुवै।
शासण री ईं बलिवेदी पर, वफादार कुर्बान हुवै,
खून स्यूं सिंच्योड़ा बीज, निश्चित ही फळवान हुवै।
म्है तो नव इतिहास, बणास्यां,
साचो अब विश्वास जमास्यां,
मिल-जुल बाबै रा गुण गास्यां,
गण में कुर्बाणी रो काम पड़ै जद जोश जागै॥

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

3. महावीर री वाणी ऊपर, कुछ करके दिखलाणो है,
सुप्त चेतना जाग उठै ज्यूं, ऐसो शंख बजाणो है।
नयो मोरचो बणा कार्यकर्ता में, जोश जगाणो है,
सौ बरसां री नींव लगावण, संगठन बणाणो है।
वीर प्रभु रो मान बढ़ास्यां,
घर घर में अणुव्रत पहुंचास्यां,
नैतिकता रा दीप जलास्यां,
गण में कुर्बाणी रो काम पड़ै जद जोश जागै॥

4. साचो श्रावक सदा आतमां रो ही राखै ध्यान है,
आचारजां री दृष्टि नै जो, समझे जीवन प्राण है।
व्यवहारां में नैतिकता और, दिल में दया महान है,
दास हुवै साधु सतियां रा, विनयवान गुणवान है।
म्हे तो अन्तर-ज्ञान जगास्यां,
म्हे तो प्रेक्षा-ध्यान लगास्यां,
म्है तो शासण-शान बढ़ास्यां,
गण में कुर्बाणी रो काम पड़े जद जोश जागै।
म्हांनै तुलसी रो दरबार प्यारो प्यारो लागै॥

तर्ज : *सिरियारी रो सन्त प्यारो-प्यारो लागै....*

रचयित्री : *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शान्ति का आधार

शांति का आधार प्रेक्षा-ध्यान है,
रोग का उपचार प्रेक्षा-ध्यान है।
स्वयं के द्वारा स्वयं पहचान है,
शान्ति का आधार प्रेक्षा-ध्यान है॥

1. ज्योति खुद में है अमित, क्यों भटकते?
झांकलो भीतर यही संधान है॥

2. हर एक क्षण का मूल्य, अब तो जान लें।
श्वास का दर्शन स्वयं का ज्ञान है॥

3. क्रोध, ईर्ष्या, कामनायें, बढ़ रही।
चित्त निर्मलता सही अवदान है॥

4. जन्म कितने हो गये, बदले नहीं।
दृष्टि परिवर्तन सही प्रस्थान है॥

तर्ज : *दिल के अरमां....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वागत गीत

वन्दना करते तुम्हारी, स्वागतम् है स्वागतम्,
अर्चना करते तुम्हारी स्वागतम् है स्वागतम्!

1. धन्य वह आंगन जहां पर संत के टिकते चरण,
मुक्ति पद पाता जो लेता संत की पावन शरण।
आपके सब हैं आभारी॥

2. है मिलन पावन तुम्हारा, आत्म पथ की साधना,
विमल गंगा नीर जैसी लोक हित की भावना।
मेटते जग की बीमारी॥

3. हम सभी तो कर रहे हैं, साधना संसार की,
रात दिन चिन्ता लगी है, एक ही व्यापार की।
सफल हो यात्रा तुम्हारी॥

4. तुलसी का शासन मिला और महाप्रज्ञ महामना,
संत, साध्वी, श्रावकों से, संघ यह मधुवन बना।
पूर्ण हो इच्छा हमारी॥

तर्ज : *संयमः खलु जीवनम्* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शिविर-संगान

जागरण का है समय अब, तिमिर को घर से भगाएं।
सुप्त मन के देवता को, योग साधन से जगाएं॥

1. शिविर है अपना निरीक्षण, शिविर है अपना परीक्षण।
है शिविर आयाम नूतन, शिविर से हम ज्योति पाएं॥

2. प्रगति का है सूत्र संयम, प्रगति का है सूत्र शम-दम।
मंजिलों पर चांदनी ज्यों, आज सब मिल मुस्कुराएं॥

3. कौन है अपना पराया, भेद इतना क्यों बढ़ाया।
भिन्न है जड़ से यह चेतन, भार ममता का मिटाएं॥

4. आसनों से तन सबलता, ध्यान से मन की विमलता।
चेतना का दीप चिन्मय, चैत्य मन्दिर में जलाएं॥

5. शान्ति हो प्रत्येक घर में, क्रांति हो प्रत्येक स्वर में।
स्वयं के द्वारा है निर्मित, दुःख दुविधा वेदनाएं॥

तर्ज : *भाव-भीनी वंदना* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शिविर साधना

ईं साधना शिविर स्यूं आपां, जीवन नै चमकावां।
जीवन नै चमकावां, आपां ज्योति किरण बण ज्यावां रे॥

1. शिविर सिखावै मौन और कंट्रोल राखणो खुद पर,
भलो बुरो कुण करै दूसरो, आपां अपणां ईश्वर।
सब स्यूं मीठो व्यवहार जी, राखां उज्ज्वल आचार जी,
मैत्री करुणा संयम री, सरिता रा श्रोत बहावां रे॥

2. जीवन में यदि शांति नहीं तो, धर्म स्वयं स्यूं धोखो,
नर-भव रो ओ कितनो सुन्दर, पायो आपां मोको।
पर निंदा चुगली त्याग जी, है क्रोध मान दो नाग जी,
आत्मां री चादर नै आओ, आपां मल-मल धोवां रे॥

3. प्रेम पूर्ण व्यवहार बणावां, कड़ा शब्द नहीं बोलां,
कितो बोलणो, कठै बोलणो, बोल्यां पेली तोलां।
है संयम धर्म महान जी, ओ जीवन रो विज्ञान जी,
बुरी आदतां छोड़ शिविर रो, साचो लाभ उठावां रे॥

4. महामंत्र री माला फेरां, सामायिक गुरु वन्दन,
पात्र दान भक्ति स्यूं देवां, करां संत अभिनन्दन।
है तत्त्व ज्ञान ही सार जी, है भैक्षव-गण आधार जी,
प्राण देवता श्री तुलसी रै, चरणां शीष झुकावां रे॥

तर्ज : *स्वामी जी थांरी साधना री* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जिन शासन तेज बढ़ाया रे

जिन शासन तेज बढ़ाया रे, तीर्थंकर भगवान!
है कल्पवृक्ष की छाया रे, तीर्थंकर भगवान!
कितनों को पार लगाया रे, तीर्थंकर भगवान!

1. अर्हत है महिमा शाली, प्रवचन की छटा निराली।
द्वादश गुण रूप कहाया रे, तीर्थंकर भगवान॥

2. है सिद्ध मुक्त अविकारी, शुभ आठ गुणों के धारी।
है चिन्मय चेतन काया रे, तीर्थंकर भगवान॥

3. आचार्य संघ के प्रहरी, उनमें हो निष्ठा गहरी।
छत्तीस गुणों को पाया रे, तीर्थंकर भगवान॥

4. है उपाध्याय श्रुतधारी, जिनवाणी के अधिकारी।
पच्चीस गुणों की माया रे, तीर्थंकर भगवान॥

5. मुनिपद है सबसे सुन्दर, है छुपी शक्तियां अन्दर।
गुण सप्तवीस सुहाया रे, तीर्थंकर भगवान॥

6. भिक्षु ने बाग लगाया, तुलसी ने उसे सजाया।
अब महाप्रज्ञ का साया रे, तीर्थंकर भगवान॥

7. पावस का रंग लगा है, सबमें उत्साह जगा है।
बढ़ने का मार्ग दिखाया रे, तीर्थंकर भगवान॥

तर्ज : *कैसी वह कोमलकाया* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीर्थंकर स्तुति

1. आपणै तो देव गुरु धर्म रो आधार,
करसी तीर्थंकर भवस्यूं पार वन्दन-वन्दन है।

2. ऋषभ अजित संभव स्वामी,
प्यारा अभिनन्दन जगत्राण, वन्दन-वन्दन है।

3. सुमति पद्म सुपार्स चन्दा,
सुविधि शीतल श्रेयांस जगभाण, वन्दन-वन्दन है।

4. वासुपूज्य श्री विमल अनन्त,
धर्म, शांति, कुंथु भगवान, वन्दन-वन्दन है।

5. अर, मल्लि श्री मुनि सुव्रत,
नमि, नेमिनाथ गुणवान, वन्दन-वन्दन है।

6. ॐ पार्श्वनाथ महावीर प्रभु,
करस्यां प्रतिदिन निर्मल ध्यान, वन्दन-वन्दन है।

7. सांवरिया स्वामीजी म्हांनै पार करसी,
गुरुवर तुलसी रो संघ महान, वन्दन-वन्दन है।
महाप्रज्ञजी रो संघ महान, वन्दन-वन्दन है।
महाश्रमणजी रो संघ महान, वन्दन-वन्दन है॥

तर्ज : *मेघो छोटो सो* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय वीर प्रभु

वीर प्रभु रो सुमिरण करल्यो, सुमिरण करल्यो,
संकट दूर भगावै है, जय वीर प्रभु।
वीरं वीरं घड़ी घड़ी जपल्यो, घड़ी घड़ी जपल्यो,
नैया पार लगावै है, जय वीर प्रभु॥

1. त्रिशला रा लाल प्यारा, सगलां स्यूं न्यारा हो,
तेज रा सितारा जाणै, चान्द रा उजारा हो।
वैशाली रंग ल्यावै है, जय वीर प्रभु॥

2. मीठी-मीठी वाणी थांरी, रूप, अनूप हो,
साधना ही समता री, छांह चाहै धूप हो।
भव-बन्धन कट ज्यावै है, जय वीर प्रभु॥

3. चेतना रै चान्दणै में, रूप नै निहार्‍यो हो,
आतमां रै आंगणै में, रंग नै निखार्‍यो हो।
शिव-सुख अनहद पावै है, जय वीर प्रभु॥

4. शूली रो सिंहासन बणग्यो, प्रभुजी रै नाम स्यूं,
चन्दनां री बेड़्यां टूटी, आपरै ही जाप स्यूं।
नई रोशनी ल्यावै है, जय वीर प्रभु॥

5. भेद री दीवारां तोड़, एकता सिखाई ही,
भक्त स्यूं भगवान बणै, कला बा बताई ही।
अर्जुन भी तर-ज्यावै है, जय वीर प्रभु॥

6. गोरख धन्धा छोड़ भजै, भाव स्यूं भगवान नै,
बो ही भक्त पावै आखिर, साचै आतम-ज्ञान नै।
शान्त-सुधा बरसावै है, जय वीर प्रभु॥

तर्ज : *बादलियो आंखड़ल्यां में....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नैय्या पार

जनम जनम रो सपनो फलग्यो-2
नैया पार लगाई है पलभर में।
आठ करम रो कचरो जलग्यो-2
आतम ज्योति जगाई है, पलभर में।

1. आपरै सरीखी समझै, दूसरे री आतमां।
वो ही जीव पावै सुख, बणै परमातमां।
भिक्षु प्रतिमा ठाई है, पलभर में॥

2. राज, ताज, माता, पिता, सोभा नै भी छोड़ दी।
मोह री जंजीर देखो, एक दिन में तोड़ दी।
सुसरो पाग बंधाई है, पलभर में॥

3. एक कांटों लागतां ही, चान्दणो सो होवै है।
शोक, बीमारी में तो, घणा जीव रोवै है।
समताधार बहाई है, पलभर में॥

4. जय जय बोलो सारा, जय जय बोलो हो।
गजसुकुमाल जियां, अंतर आंख्यां खोलो हो।
मुक्ति-वधू ने पाई है, पलभर में॥

तर्ज : *बादलियो* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ सांवरिया स्वाम

अब दर्शन देवण आओजी, ओ सांवरिया स्वाम,
म्हारो सुणल्यो शीघ्र बुलाओजी....ओ सांवरिया स्वाम,
थांरी सूरत आय दिखाओजी....ओ सांवरिया स्वाम॥

1. म्हें कागद दे दे थाक्या, थे किण किण ने प्रभु! बांच्या।
मिलणै रो मार्ग बताओजी....॥

2. सांसा में भिक्षु स्वर है, फिर के दुनिया रो डर है।
भक्तां ने गले लगाओजी....॥

3. थे म्हारा अन्तर्यामी, काढ़ोनी म्हांरी खामी।
नामी संतां में आओजी....॥

4. थे जन जन रा उपकारी, लाखां री विपदा टारी।
अब म्हां पर नजर टिकाओजी....॥

5. थांरो शासण गंगाजल है, ओ कल्पवृक्ष रो फल है।
सब जय जय जय गूंजाओजी....॥

6. है तेरापथ रो शरणो, तेरापथ में ही मरणो।
तेरस रो मान बढ़ाओजी....॥

तर्ज : *कैसी यह कोमल काया* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ मेरे गुरुदेव!

ओ मेरे गुरुदेव!
तुमसे ही जीवन पाया रे।
कैसी थी दुर्लभ माया रे। ओ मेरे....॥

1. आस्था के महासमन्दर, हर क्षण तुम मेरे अन्दर।
समता का तरु लहराया रे, ओ मेरे....॥

2. तुम तृतीय नेत्र के धारी, तुम चैत्य पुरुष अविकारी।
थी चिन्मय चेतन काया रे, ओ मेरे....॥

3. सूरत थी योगी जैसी, निश्छलता बालक जैसी।
चन्दन सी शीतल छाया रे, ओ मेरे....॥

4. करने को सब कुछ करते, पर अपने भीतर रहते।
नव ज्योति रूप दिखलाया रे, ओ मेरे....॥

5. मन महासिन्धु सा गहरा, रखते थे खुद पर पहरा।
पौरुष का दीप जलाया रे, ओ मेरे....॥

6. की इतनी जल्दी कैसे, पल भर में बदले जैसे।
अब महाश्रमण का साया रे, ओ मेरे....॥

तर्ज : *कैसी यह कोमल काया* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ स्तुति

म्हांनै महाप्रज्ञ रो नाम लागै, प्राणां स्यूं भी प्यारो।
प्राणां स्यूं भी प्यारो, चमक्यो बण विश्व सितारो॥

1. आंख्यां ही अमृत झरणो, लेता चरणां रो शरणो।
म्हारै सामनै घूमै है थांरो, वो पावन उणियारो॥

2. श्री तुलसी रे आसन ऊपर, शोभ्या दिव्य दिवाकर।
वत्सलता, शीतलता, समता, मीठो सो जीकारो॥

3. चाल लागती ही योगी सी, स्थिरता ही योगी सी।
प्रवचन सुणतां ही होज्यातो, अन्तर में उजियारो॥

4. दर्पण सो उजलो जीवन, चंदन सो शीतल जीवन।
कालू तुलसी री करुणा, थे ल्याया नव वरतारो॥

5. रग रग में म्हारे भक्ति, कुछ तो देवो नी शक्ति।
ओ चैत्य पुरुष जग ज्यावै गुरुवर! अब तो जल्दी म्हांरो॥

6. थे शासन घणो दिपायो, दुनिया में नाम कमायो।
सपने में प्रभु! दर्शन दीज्यो, करज्यो एक इशारो॥

तर्ज : *म्हारी छोटी सी वेरागण....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अमृत महोत्सव अभिवन्दना

नेमानन्दन दीपता म्हांरा गणमाली, म्हैं करां आरती आज।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली।
अमृत बांटो विश्व ने म्हारां गणमाली।
थे करो जुगो जुगराज म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥

1. जन्म दिवस पच्चासवों है जयकारी, म्हैं गांवा मंगल गीत।
म्हारैं मन सदा विराजो गणमाली॥

2. शांतिदूत! साता करो ईं दुनिया में। होसी कदम-कदम पर जीत।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥

3. युगनायक! शत वंदना झेलो म्हांरी, अभिनन्दन परम पुनीत।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥

4. तुलसी जैसी दिव्यता प्रगटी जाणै, करुणा कोमल नवनीत।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥

5. विजय वरो, विभुता वरो, प्रज्ञा गहरी, ओ संघ बड़ो सुविनीत।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥

6. चातुरगढ़ में ठाठ स्यूं आठूं सतियां, गावै झूम-झूम संगीत।
म्हारै मन सदा विराजो गणमाली॥
म्हैं करां आरती आज।

तर्ज : *बाबा दुंधाला* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाश्रमण अभिवन्दना

जय जय श्री महाश्रमण का, पावन अभिधान सुहाये,
ज्योतिर्मय महा सितारे, जन-जन को राह दिखाये॥

1. जिस मां ने जन्म दिया था, वह मां देवी जैसी थी।
धरती से जाकर पूछो, वह शान्तमना कैसी थी।
तुम महातपस्वी साधक, पापों का ताप मिटाये॥

2. तुम शान्त शिरोमणि सुन्दर, समता सिंधु करुणामय।
अपने में रहते बहते, कहते सच बनकर निर्भय।
जय जय श्री जैन दिवाकर, तेरापथ नाथ कहाये॥

3. नेतृत्व तुम्हारा सुन्दर, तुमने नव फूल खिलाये।
वह सौरभ तुम्हें मुबारक, श्रद्धा से शीश झुकायें।
तुम आगम विज्ञ विशारद, हमको पहचान सिखायें॥

4. मानव ने संयम खोया, वह इसीलिए दुःख पाता।
तुम त्राण शरण बन जाओ, हो जाये घर घर साता।
अब अमृत सिंचन द्वारा, युग का संकट टल जाये॥

तर्ज : *ऐ मेरे वतन के लोगों....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक-साधना

धर्म रो मोटो शरणो है, धर्म रो मोटो शरणो है।
कोई महावीर रो शासन पायो, फिर के डरणो है।
कोई श्री भिक्षु रो शासन पायो, फिर के डरणो है॥

1. वीतरागता लक्ष्य आपणों, देव गुरु आधार।
समता राख्यां, मिटसी ममता, तप संयम आचार।
श्रावकपण शीतल झरणो है॥

2. श्रावक मोटा पाप करै नहीं, करै झूठ परिहार।
निन्दा, चुगली और मिलावट, आत्म पतन रा द्वार।
पाप स्यूं पल-पल डरणो है॥

3. महावीर रे युग में श्रावक, कामदेव, आनन्द।
श्री भिक्षु रै संघ शोभजी, पटवा-विजयचन्द।
ई गण में जीणो मरणो है॥

4. जीवा जीव तत्त्व रा ज्ञाता, श्रावक सुखदाई।
धर्म संघ री निष्ठा राखो, प्रण में करड़ाई।
भाव स्यूं भवजल तरणो है॥

5. श्रावक जीवन ऊंचो जीवन, हुवै सफलतम जोर।
महाप्रज्ञ शासन अनुशासन, सबल संगठन डोर।
ध्यान स्यूं शिव-सुख वरणो है॥

तर्ज : *तावड़ा धीमो* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करमां री कहानी

करमां स्यूं राखो टालो, मत अंधेरे में चालो रे।
मत रांत गले में घालो रे, करमां स्यूं राखो टालो॥

1. निज हित छोड़ परायो साधै, क्यूं घर ने भूल्यो जावै।
कर्म बांध मत आगे जाणो, कोई नहीं साथ निभावै रे॥

2. सगला ठाट अठै रह जासी, जीव अकेलो जावै रे।
करे जको ही भरे जगत में, ओ सत्य समझ में आवै रे॥

3. होटल बोटल है दुःखदायी, हाथां स्यूं मौत बुलावै रे।
क्रोध, मान और लोभ भाव, आत्मा ने घणा सतावै रे॥

4. साच निभायां शक्ति आवै, साचे ने प्रभु मिल ज्यावै रे।
संतां री संगत में बैठो, भक्ति ही पार लगावै रे॥

5. कर्म बांधतां खुशि मनावै, उदयकाल में रौवै रे।
समता राखणियां आखिर तक, सुख शय्या में सोवै रे॥

तर्ज : *जीरो* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

काम आने के बाद कीमती सामान भी कचरा है,
जो काम आए वह कचरा भी कीमत भरा है,
दुनिया में उपयोगिता ही मापदंड है,
उसे नहीं समझना ही अस्तित्व के लिए खतरा है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चित्त समाधि गीत

चित्त समाधिमय हो
करें स्वयं का आत्म-निरीक्षण, पावन सरल हृदय हो।

1. हो उद्देश्य हमारा पहला पूर्ण चित्त निर्मलता,
धीरे-धीरे बढ़ती जाए आत्मा की उज्ज्वलता,
प्रेक्षा की पावन धारा से, ज्योतिर्मय चिन्मय हो॥

2. बीत गया है काल अनन्ता, खुद को नहीं पहचाना,
जन्म मरण की दुनिया में फिर केवल आना जाना,
शान्ति समता में रम जाएं, पल पल अन्तर लय हो॥

3. सहना सीखें, कहना सीखें, अहंकार को छोड़ें,
कोई नहीं पराया जग में, सबसे दिल को जोड़ें,
क्रोध और आवेग सभी, भावों पर पूर्ण विजय हो॥

4. कौन किसी को दुःख देता है केवल झूठा भ्रम है,
शान्त रहे सहवास हमारा आत्म धर्म उपशम है,
उपयोगी योगी बन जीयें, सदा धर्म की जय हो॥

5. कायोत्सर्ग योग से तन की चंचलता घट जाए,
लम्बे गहरे मन्द श्वास से चित्त शान्त हो जाये,
हर घटना में सहज भाव हो, तन मन सदा अभय हो॥

***लय :** संयममय जीवन हो....* ***रचयित्री :** साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपणै घर में

आखिर तो आणो ही पड़सी अपणै घर में जीवड़ला।
बारै बारै के घूमे बावरा!

1. सुख में फूलै, दुःख में रोवे, अपणी करणी क्यूं भूलै?
बांध्या करमां ने पड़सी भोगणा॥

2. समता राख्यां नया करम रो, बंध सहज ही टल ज्यावै।
खंदक मुनिवर री ऊंची साधना॥

3. तन में उपजै घोर वेदना, याद करो गज मुनिवर ने।
धगधगता खीरां पर शुभ भावना॥

4. सरस, नीरस भोजन करतां क्यूं, लोलुपता मन में आवै।
मन री चंचलता ही तो वासना॥

5. वीतराग बणणै रो साधन, मैत्री भाव बढ़ाणो है।
जीणै मरणै री छोड़ो कामना॥

तर्ज : *तेजा....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ध्यान साधना

बदले जीवन धारा।
करें स्वयं का आत्म निरीक्षण, हम प्रेक्षा के द्वारा॥

1. है उद्देश्य ध्यान का पहला, पूर्ण चित्त निर्मलता,
धीरे-धीरे बढ़ती जाती, आत्मा की उज्ज्वलता।
इन्द्रिय मन के अनुशासन से, मिलता कर्म किनारा॥

2. है पदार्थ ही सुख का कारण, मन की आस्था बदले,
चिन्ता और तनावों से, पीड़ित मानव अब सम्भले।
ग्रन्थिस्राव के परिवर्तन से, मिलता सही सहारा॥

3. कायोत्सर्ग-योग से तन की, चंचलता घट जाए,
लम्बे गहरे मन्द श्वास से, चित्त शान्त हो जाए।
हर घटना में सहज भाव रख, पाएं दिव्य किनारा॥

4. वर्ष अनन्त बीतते जाते, खुद को नहीं पहचाना,
जो अपना नहीं उसको, अब तक कैसे अपना माना।
अब भी आओ अपने भीतर, देखो रूप सुनहरा॥

तर्ज : *संयममय जीवन हो....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनशन गीत

लागी लागी नाव किनारे अब लागी हो।
जनम सुधार्‌यो थे तो सांतरो॥

1. कुण बेटो कुण बाप जगत में, सारी सुपने री माया।
ममता मत करज्यो नश्वर देह री॥

2. बड़ो कठिन है मन नै दमणो, खमणो और खमाणो हो।
गांठां मत रखज्यो मन में नेह री॥

3. कुण है अपणो और परायो, नाम प्रभु रो जपणो हो।
ओ ही है सम्बल साचो जीव रो॥

4. जीती जबरी बाजी थे तो, सफल कियो अवतार हो।
कित्ती समता है थारै त्याग में॥

5. सरलभाव स्यूं खमत-खामणा, अब सारा स्यूं करलिज्यो हो।
खमणो-खमाणो मोटो धर्म है॥

6. जैन धर्म और भिक्षु शासन, तुलसी सा गण नाथ मिल्या।
त्यागी संतां रो शरणो सार है॥

7. शरणो है अरिहंत देव रो, सिद्ध साधु रो शरणो है।
शरणो साचो है जिन धर्म रो॥

तर्ज : *तेजा रे....* ***रचयित्री :*** *साध्वी राजीमती*

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उद्घोष (नारे)

जैन धर्म :

संयमः खलु जीवनम्	–	संयम ही जीवन है।
श्रमण भगवान महावीर स्वामी की	–	जय हो।
जिनवाणी का यह सुविधान	–	अपने से अपना कल्याण।
जैन धर्म की क्या पहचान	–	सत्य, अहिंसा, दया प्रधान।
महावीर का एक ही घोष	–	देखो अपना-अपना दोष।
महावीर ने क्या सिखलाया	–	समता धर्म, समता धर्म।
महावीर का क्या संदेश	–	सीखो समता, छोड़ो द्वेष।
महावीर के संदेश को	–	घर-घर में पहुंचाएंगे।
अमर रहेगा	–	धर्म हमारा।
जैन धर्म की	–	जय हो।
मानव धर्म की	–	जय हो।
सत्य धर्म की	–	जय हो।

तेरापंथ :

क्रांतिकारी आचार्यश्री भिक्षु की	–	जय हो।
गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की	–	जय हो।
आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की	–	जय हो।
जय जय ज्योति चरण, जय जय महाश्रमण		
गुरु भिक्षु ने क्या दिखलाया	–	तेरापंथ तेरापंथ।
जयाचार्य ने क्या सिखलाया	–	मर्यादा और अनुशासन।
आलोकित नभ धरा दिगंत	–	हे प्रभो! यह तेरापंथ।
श्री तुलसी का क्या उद्घोष	–	जन-जन में हो नैतिक जोश।
तेरापंथ की क्या पहचान	–	एक गुरु और एक विधान।
तेरापंथ की क्या पहचान	–	सत्य अहिंसा त्याग प्रधान।
तेरापंथ की क्या पहचान	–	व्यसन-मुक्त जीवन संधान।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रेक्षा ध्यान योग :

कैसे बदले जीवन धारा	–	प्रेक्षाध्यान साधना द्वारा।
घर-घर में हो योग प्रचार	–	मिट जाएंगे रोग विकार।
सुबह शाम का योगाभ्यास	–	भरता जीवन में उल्लास।

सामयिक :

अणुव्रतों का यह संदेश	–	व्यसनमुक्त हो सारा देश।
बदले युग की धारा	–	अणुव्रतों के द्वारा।
जन जन में जागे विश्वास	–	संयम से व्यक्तित्व विकास।
संघ पुरुष	–	चिरायु हो, चिरायु हो, चिरायु हो।

जैनत्व के प्रतीक

1. पारस्परिक मिलन के अवसर पर 'जय जिनेन्द्र' शब्द का प्रयोग।
2. पत्र व्यवहार में 'जिनेन्द्राय नमः' से प्रारम्भ।
3. गृह सज्जा में जैनत्व बोधक चित्र एवं प्रतीकों का उपयोग जैसे अर्हम्, नमस्कार महामंत्र, तीर्थंकर-आचार्य नामावली, ऐतिहासिक व बोधप्रद चित्र।
4. गृह, दुकान आदि के प्रवेशद्वार पर 'जय जिनेन्द्र', 'नमस्कार महामंत्र', 'जिनेन्द्राय नमः' जैन प्रतीक आदि का आलेखन।
5. अपने नाम के साथ जैन शब्द का प्रयोग।
6. जनगणना में धर्म के कॉलम में अपने को जैन लिखने की सजगता।
7. जन्म, विवाह एवं मृत्यु पर जैन संस्कार-विधि का उपयोग।
8. दीपावली पर्व अथवा नये खातों के शुभारम्भ के अवसर पर निर्दिष्ट जैन संस्कार विधि का उपयोग।
9. पर्व दिवस पर एवं अन्य विशेष कार्यक्रमों में जैन प्रतीक एवं जैन ध्वज का उपयोग।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुपूर्वी

अनुपूर्वी पढ़ने की विधि

जहां 1 है, वहां णमो अरहंताणं पढ़ें।

जहां 2 है, वहां णमो सिद्धाणं पढ़ें।

जहां 3 है, वहां णमो आयरियाणं पढ़ें।

जहां 4 है, वहां णमो उवज्झायाणं पढ़ें।

जहां 5 है, वहां णमो लोए सव्वसाहूणं पढ़ें।

(1)

1	2	3	4	5
2	1	3	4	5
1	3	2	4	5
3	1	2	4	5
2	3	1	4	5
3	2	1	4	5

(2)

1	2	4	3	5
2	1	4	3	5
1	4	2	3	5
4	1	2	3	5
2	4	1	3	5
4	2	1	3	5

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(3)

1	3	4	2	5
3	1	4	2	5
1	4	3	2	5
4	1	3	2	5
3	4	1	2	5
4	3	1	2	5

(4)

2	3	4	1	5
3	2	4	1	5
2	4	3	1	5
4	2	3	1	5
3	4	2	1	5
4	3	2	1	5

(5)

1	2	3	5	4
2	1	3	5	4
1	3	2	5	4
3	1	2	5	4
2	3	1	5	4
3	2	1	5	4

(6)

1	2	5	3	4
2	1	5	3	4
1	5	2	3	4
5	1	2	3	4
2	5	1	3	4
5	2	1	3	4

(7)

1	3	5	2	4
3	1	5	2	4
1	5	3	2	4
5	1	3	2	4
3	5	1	2	4
5	3	1	2	4

(8)

2	3	5	1	4
3	2	5	1	4
2	5	3	1	4
5	2	3	1	4
3	5	2	1	4
5	3	2	1	4

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(9)

1	2	4	5	3
2	1	4	5	3
1	4	2	5	3
4	1	2	5	3
2	4	1	5	3
4	2	1	5	3

(10)

1	2	5	4	3
2	1	5	4	3
1	5	2	4	3
5	1	2	4	3
2	5	1	4	3
5	2	1	4	3

(11)

1	4	5	2	3
4	1	5	2	3
1	5	4	2	3
5	1	4	2	3
4	5	1	2	3
5	4	1	2	3

(12)

2	4	5	1	3
4	2	5	1	3
2	5	4	1	3
5	2	4	1	3
4	5	2	1	3
5	4	2	1	3

(13)

1	3	4	5	2
3	1	4	5	2
1	4	3	5	2
4	1	3	5	2
3	4	1	5	2
4	3	1	5	2

(14)

1	3	5	4	2
3	1	5	4	2
1	5	3	4	2
5	1	3	4	2
3	5	1	4	2
5	3	1	4	2

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

(15)

1	4	5	3	2
4	1	5	3	2
1	5	4	3	2
5	1	4	3	2
4	5	1	3	2
5	4	1	3	2

(16)

3	4	5	1	2
4	3	5	1	2
3	5	4	1	2
5	3	4	1	2
4	5	3	1	2
5	4	3	1	2

(17)

2	3	4	5	1
3	2	4	5	1
2	4	3	5	1
4	2	3	5	1
3	4	2	5	1
4	3	2	5	1

(18)

2	3	5	4	1
3	2	5	4	1
2	5	3	4	1
5	2	3	4	1
3	5	2	4	1
5	3	2	4	1

(19)

2	4	5	3	1
4	2	5	3	1
2	5	4	3	1
5	2	4	3	1
4	5	2	3	1
5	4	2	3	1

(20)

3	4	5	2	1
4	3	5	2	1
3	5	4	2	1
5	3	4	2	1
4	5	3	2	1
5	4	3	2	1

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सूर्योदय सूर्यास्त की समय-सारणी

महीना		कलकत्ता		दिल्ली		मुंबई		मद्रास		बैंगलोर		लाडनूँ	
		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	1..	6.17	5.03	7.14	5.35	7.12	6.12	6.29	5.54	6.42	6.04	7.25	5.44
	15..	6.19	5.12	7.15	5.46	7.15	6.21	6.34	6.03	6.46	6.12	7.27	5.55
फरवरी	1..	6.16	5.24	7.10	6.00	7.13	6.31	6.38	6.11	6.47	6.21	7.22	6.09
	15..	6.09	5.32	7.00	6.11	7.08	6.38	6.30	6.16	6.43	6.25	7.12	6.20
मार्च	1..	5.58	5.40	6.47	6.20	6.58	6.44	6.24	6.18	6.36	6.28	6.59	6.29
	15..	5.46	5.46	6.32	6.29	6.48	6.48	6.16	6.20	6.27	6.31	6.45	6.37
अप्रैल	1..	5.30	5.52	6.12	6.39	6.33	6.52	6.05	6.21	6.17	6.31	6.26	6.46
	15..	5.17	5.57	5.56	6.47	6.22	6.56	5.57	6.22	6.08	6.32	6.11	6.52
मई	1..	5.04	6.03	5.41	6.56	6.11	7.02	5.49	6.24	5.59	6.35	5.56	7.01
	15..	4.57	6.09	5.31	7.04	6.05	7.06	5.45	6.28	5.54	6.38	5.46	7.10
जून	1..	4.52	6.17	5.24	7.14	6.01	7.12	5.43	6.32	5.52	6.42	5.40	7.18
	15..	4.52	6.22	5.23	7.20	6.01	7.17	5.45	6.37	5.53	6.47	5.39	7.25
जुलाई	1..	4.55	6.25	5.27	7.23	6.05	7.20	5.48	6.39	5.58	6.50	5.44	7.27
	15..	5.01	6.24	5.33	7.21	6.10	7.19	5.52	6.39	6.01	6.50	5.48	7.25
अगस्त	1..	5.08	6.17	5.42	7.12	6.16	7.14	5.55	6.36	6.05	6.47	5.57	7.18
	15..	5.13	6.08	5.50	7.01	6.20	7.06	5.58	6.29	6.08	6.40	6.05	7.06
सितम्बर	1..	5.19	5.54	5.59	6.43	6.24	6.53	5.59	6.19	6.09	6.31	6.14	6.50
	15..	5.23	5.40	6.06	6.26	6.26	6.41	5.58	6.09	6.09	6.21	6.20	6.35
अक्टूबर	1..	5.28	5.24	6.14	6.07	6.29	6.27	5.58	5.58	6.10	6.10	6.27	6.16
	15..	5.33	5.12	6.22	5.52	6.33	6.16	5.59	5.49	6.11	6.01	6.34	6.01
नवम्बर	1..	5.42	4.59	6.33	5.36	6.39	6.05	6.02	5.42	6.14	5.54	6.45	5.46
	15..	5.49	4.53	6.44	5.27	6.46	6.00	6.07	5.39	6.20	5.50	6.55	5.37
दिसंबर	1..	6.00	4.51	6.56	5.24	6.56	6.00	6.13	5.41	6.27	5.51	7.07	5.33
	15..	6.09	4.54	7.06	5.26	7.04	6.04	6.22	5.46	6.34	5.56	7.18	5.35

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बारह व्रती श्रावक की साधना

श्रावक का जीवन सादा, स्वच्छ एवं सौहार्दपूर्ण हो इसलिए निम्न विषयों की साधना बारह व्रती श्रावक के लिए अनिवार्य है–

1. मैं यथासंभव तामसिक भोजन नहीं करने का अभ्यास करूंगा/करूंगी।

2. मैं प्रतिदिन कुछ समय के लिए ध्यानासनों का अभ्यास करूंगा/करूंगी।

3. मैं निन्दा, विकथा तथा कषाय-प्रभाव से स्वयं को दूर रखने का प्रयत्न करूंगा/करूंगी।

4. मैं प्रतिदिन एक घण्टे मौन का अभ्यास करूंगा/करूंगी।

5. मैं किसी से मनमुटाव होने पर 15 दिन के अन्दर-अन्दर उनसे सरल मन से क्षमायाचना करूंगा/करूंगी।

6. मैं धीरे-धीरे बाहरी आकर्षणों को घटाने का प्रयास करूंगा/करूंगी।

7. भाव-शुद्धि के बिना क्रिया का कोई महत्त्व नहीं है। क्रिया से दबायी हुई वासनाएं अवसर पाकर फिर उभर जाती है। अतः काम, क्रोध आदि कषायों को जड़ से मिटाने का प्रयास करूंगा/करूंगी।

8. जान-बूझकर व्यवहार-विरुद्ध कार्य नहीं करूंगा/करूंगी।

9. निंदा बहुत बड़ा पाप है, किन्तु अपने प्रति उसका उपयोग किया जाए तो बहुत बड़ा धर्म बन जाता है। मन को पवित्र रखने के लिए परनिंदा नहीं करूंगा/करूंगी।

10. साल में एक बार शिविर में अवश्य भाग लूंगा/लूंगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं (राज.) 341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
e-mail : books@jvbharati.org

Books are available Online at http://books.jvbharati.org

ISBN 978-81-937447-6-5
9 788193 744765

₹ 220.00